अनुवाद विज्ञान

एम.ए , हिन्दी Semester-III, Paper-IV

पाठ के लेखक

डॉ. सूर्य कुमारी. पी.
एम.ए, एम.फिल, पी-एच.डी.
हिन्दी विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय

डॉ.डी. नागेश्वर राव
एम.ए, एम.फिल, पी-एच.डी.
सहायक फ्रोफेसर (सीनियर)
SCSVMV डीम्ड यूनिवर्सिटी
काँचीपुरम –तमिलनाडू

डॉ. ए. सरला देवी
एम.ए, एम.फिल, पी-एच.डी, बि.ईडी,
एस. एस & एन कालेज
नरसरावपेट

लेखक और संपादक

डॉ. एम. मंजुला
एम.ए, एम.फिल, पी.एच.डी.
हिन्दी विभाग
रामकृष्ण हिन्दू हाई स्कूल
अमरावती, गुंटूर।

निर्देशक

डॉ . नागराजुबट्टू
दूरस्थ शिक्षा केंद्र, आचार्या नागार्जुना विश्वविद्यालय
नागार्जुना नगर – 522510
Phone No-0863-2346208, 0863-2346222,
0863-2346259 (अध्ययन सामाग्री)
Website: www.anucde.info
E-mail: anucdedirector@gmail.com

एम. ए, हिन्दी - अनुवाद विज्ञान

First Edition :2023

© Acharya Nagarjuna University

This book is exclusively prepared for the use of students of एम.ए, हिन्दी Centre for Distance Education, Acharya Nagarjuna University and this book is meant for limited circulation only.

Published by:

Dr. NAGARAJU BATTU,

Director

Centre for Distance Education

Acharya Nagarjuna University

Printed at:

FOREWORD

Since its establishment in 1976, Acharya Nagarjuna University has been forging ahead in the path of progress and dynamism, offering a variety of courses and research contributions. I am extremely happy that by gaining 'A' grade from the NAAC in the year 2016, Acharya Nagarjuna University is offering educational opportunities at the UG, PG levels apart from research degrees to students from over 443 affiliated colleges spread over the two districts of Guntur and Prakasham.

The University has also started the Centre for Distance Education in 2003-04 with the aim of taking higher education to the door step of all the sectors of the society. The centre will be a great help to those who cannot join in colleges, those who cannot afford the exorbitant fees as regular students, and even to housewives desirous of pursuing higher studies. Acharya Nagarjuna University has started offering B.A., and B.Com courses at the Degree level and M.A., M.Com ,M.Sc., M.B.A., and L.L.M., courses at the PG level from the academic year 2003-2004onwards.

To facilitate easier understanding by students studying through the distance mode, these self-instruction materials have been prepared by eminent and experienced teachers. The lessons have been drafted with great care and expertise in the stipulated time by these teachers. Constructive ideas and scholarly suggestions are welcome from students and teachers involved respectively. Such ideas will be incorporated for the greater efficacy of this distance mode of education. For clarification of doubts and feedback, weekly classes and contact classes will be arranged at the UG and PG levels respectively.

It is my aim that students getting higher education through the Centre for Distance Education should improve their qualification, have better employment opportunities and in turn be part of country's progress. It is my fond desire that in the years to come, the Centre for Distance Education will go from strength to strength in the form of new courses and by catering to larger number of people. My congratulations to all the Directors, Academic Coordinators, Editors and Lesson-writers of the Centre who have help edit the seen devours.

Prof.P.RajaSekhar
Vice-Chancellor
Acharya Nagarjuna University

SEMESTER – III

PAPER –IV: TRANSLATION

304HN21 – अनुवाद विज्ञान

प्रथम खण्ड –क

पाठ्य पुस्तक :-

अनुवाद विज्ञान – डॉ . भोलानाथ तिवारी , किताब महल , दिल्ली।

पाठ्यांश :

1. अनुवा शब्द की व्युत्पत्ति , परिभाषा और स्वरूप।
2. अनुवाद की प्रक्रिया।
3. अनुवाद के प्रकार।
4. अनुवाद की शैलियाँ
5. अनुवाद और भाषा विज्ञान।
6. अनुवाद क्या है ? शिल्प , कला , विज्ञान।

द्वितीय खण्ड - ख

1. मुहावरों तथा लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ ।
2. काव्यानुवाद की समस्याएँ।
3. अनुवाद की व्यावहारिक कठिनाइयाँ।
4. वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ।
5. कार्यालय साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ।
6. साहित्यक के अनुवाद की समस्याएँ।
7. पारिभाषिक व तकनीकी शब्दावली का निर्माण।
8. अनुवाद: अभ्यास (मुहावरों का ,कहावतों का,तकनीकी शब्दावली व विभिन्न विषयक गद्यामशों का)

सहायक ग्रंथ :-

1. प्रयोजन मूलक हिन्दी सिद्धांत और व्यवहार – डॉ. रघुनंदन प्रसाद शर्मा , विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणासी।
2. अनुवाद विज्ञान – भोलानाथ तिवारी , किताब महल।
3. अनुवाद कला – विश्वनाथ अय्यर , पराग प्रकाशन , दिल्ली।
4. प्रामाणिक आलेखन और टिप्पणी – विराज , विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5. व्यावहारिक हिन्दी :डॉ . कैलाश चंद्र भटिया , तक्षशिला प्रकाशन, अंसारी रोड , दिल्ली – 110 002 .
6. अनुवाद काला –सिद्धांत और प्रयोग – डॉ . कैलाश चंद्र भटिया , तक्षशिला प्रकाशन, अंसारी रोड , दिल्ली -110 002 .
7. हिन्दी में सरकारी कामकाज , राज विनायक सिंह , हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा . सी . 21/30 पिशाचमोचन , वारणासी – 221 010 .
8. प्रयोजन मूलक हिन्दी, डॉ. विनोद गोदरे , वाणी प्रकाशन , 21 –ए , दरियागंज , नई दिल्ली – 110 002 .
9. प्रयोजन मूलक हिन्दी डॉ. रामप्रकाश , डॉ. दिनेश गुप्त , राधाकृष्ण प्रकाशन , अंसारी मार्ग , दरियागंज , नई दिल्ली – 110 002 .
10. व्यवहारिक हिन्दी और भाषा संरचना , डॉ . दिनेश प्रसाद सिंह , नरेंद्र प्रकाश जैन , मोतीलाल बनरसीदास , बंगलो रोड , दिल्ली – 110 002 .
11. प्रयोजन मूलक हिन्दी , डॉ . कमाल कुमार बॉस , क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी , 28 शांपिग सेंटर , करभूपरा , नई दिल्ली – 110 005 .

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड :

1. अनुवाद की व्युत्पत्ति अर्थ परिभाषा और स्वरूप 1.1-1.14

2 . अनुवाद की प्रकृति और प्रकार 2.1-2.19

3. अनुवाद और भाषा-विज्ञान 3.1-3.12

4. अनुवाद क्या है? शिल्प, कला अथवा विज्ञान 4.1-4.13

द्वितीय खण्ड :

5. साहित्यकअनुवाद की समस्याएँ काव्यानुवाद 5.1-5.12

6. साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ - 6.1-6.17

नाटक, कथा साहित्य, मुहावरे तथा लोकोक्तियों की अनुवाद

7. अनुवाद की व्यावहारिक कठिनाइयाँ 7.1-7.11

8. वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ 8.1-8.15

9. कार्यालय साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ 9.1-9.15

10. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का निर्माण-सिध्दांत 10.1-10.19

11. अनुवाद - साहित्यिक अनुवाद 11.1-11.19

(तकनीकी शब्दावली व विभिन्न विषयक गद्यांश का अनुवाद)

1. अनुवाद की व्युत्पत्ति अर्थ परिभाषा और स्वरूप

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद हम अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति कैसे हुई, अनुवाद शब्द का अर्थ, परिभाषा, महत्व और अनुवाद के स्वरूप के बारे में जान सकेंगे।

इकाई की रूपरेखा :

1.1. प्रस्तावना

1.2. अनुवाद की व्युत्पत्ति - अर्थ

1.3. अनुवाद की परिभाषाएँ

1.4. अनुवाद का स्वरूप

1.4.1. अनुवाद का व्यापक स्वरूप

1.4. 2. अनुवाद का सीमित स्वरूप

1.5. अनुवाद का क्षेत्र

1.5.1. व्यापक संदर्भ

1.5.2. सीमित स्वरूप

1.6. अनुवाद का महत्व

1.7. अनुवाद का गुण

1.8 . सारांश

1.9. बोध प्रश्न

1.10. सहायक ग्रंथ

1.1. प्रस्तावना :

'अनुवाद' शब्द आज कल सब लोगों के लिए सुपरिचित हो गया है। एक भाषा में व्यक्त की गई बात को दूसरी भाषा में व्यक्त करना ही अनुवाद है। यह कार्य इतना आसान कार्य नहीं जितना दिखाई देता है। अनुवाद की परिभाषा, अनुवाद शब्द का अर्थ समझना और समझाना एक बात है तो अनुवाद कार्य करना दूसरी बात है। अर्थात अनुवाद की सैद्धांतिक पक्ष एक वस्तु है तो उसके व्यावहारिक पक्ष की अपनी समस्या होती हैं। अनुवाद एका भाषिक प्रक्रिया है। अनुवाद वास्तव में दो भाषाओं के बीच सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। हर भाषा की संरचना अपने में विशिष्ट और अलग होती है। अनुवाद करते समय यह आवश्यक नहीं है कि दोनों भाषाओं में अनुवादक की समान अभिव्यक्तियाँ मिल ही जाए। भाषा का मुख्य उद्देश्य संप्रेषण या विचारों का आदान प्रदान करना है। भाषा एक प्रतीकात्मक व्यवस्था है तो अनुवाद में अनुवादक की दो प्रतीक व्यवस्थाओं से जूझना पड़ता है। वह एक प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त अर्थ को दूसरी प्रतीक व्यवस्था में अंतरित करता है। इसलिए एक ओर अनुवाद

के स्वरूप को समझना पड़ता है तो दूसरी ओर प्रतीक की संकल्पना को समझना होता है। अनुवाद दो भाषाओं के मध्य होने वाला 'भाषान्तरण' है।

अनुवाद के अनेक रूप होते हैं, परंतु सामान्य रूप से अनुवाद का आशय यही है कि एक भाषा में कही हुई बात की हम दूसरी भाषा में या यथा सार्थक और प्रभावक ढंग से प्रस्तुत कर सकें। इसी बात को दूसरे रुप से यूँ भी समझाया जा सकता है कि किसी एक भाषा की ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी पाठ्य - सामग्री का दूसरी भाषा में रूपान्तरण या पुनः कथन 'अनुवाद' है।

इस इकाई में हम अनुवाद के व्युत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा और स्वरूप के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे।

1.2. अनुवाद की व्युत्पत्ति और अर्थ :

अनुवाद संस्कृत का तत्सम शब्द है। इसका संबंध 'वद्' धातु से है जिसका अर्थ होता हैं 'बोलना' या कहना। 'वद्' धातु में 'घन' प्रत्यय लगने से 'वाद' शब्द बनता है और उसमें 'पीछे' बाद में 'अनुवर्तिता' आदि अर्थों में प्रयुक्त 'अनु' उपसर्ग जुड़ने से अनुवाद शब्द निष्पन्न होता है। इस प्रकार अनुवाद शब्द के दो खण्ड हुए 'अनु' और 'वाद। पीछे और कहना या बोलना। इस प्रकार 'अनुवाद' शब्द का अभिप्राय हुआ - किसी कही हुई बात के बाद कहना या 'पुनः कथन', किसी के कहने के बाद कहना आदि।

प्राचीन काल से हमारे देश में गुरुकुलों में शिक्षा देते समय गुरु या आचार्य जो कुछ बोलते या मंत्रों का उच्चार करते थे; शिष्य उन कथनों के पीछे-पीछे उन्हीं बातों को दोहराते थे। इसी को अनुवचन या अनुवाद कहा जाता था। पाणिनी ने अपनी अष्टाध्यायी में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग किसी ज्ञात बात को कहने के संदर्भ में किया है – 'अनुवाद' चरणानाम्। इसी तरह भर्तृहरि ने भी 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग दुहराने या पुनर्कथन के अर्थ में ही किया है – आवृत्तिश्रुवादों वा। जैमिनीय न्यायमाला में भी अनुवाद को ज्ञात का पुनर्कथन ही माना गया है - ज्ञातस्य कथनमनुवादः। 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग प्राचीनकाल में संस्कृत भाषा में ठीक उसी अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता था, जिस अर्थ में आज-कल हिन्दी में हो रहा है। संस्कृत में कहीं-कहीं भाषानुवाद जैसा प्रयोग भी मिलता है- इसका अर्थ है - बोलचाल की भाषा में की गयी टीका या व्याख्या। जहाँ-जहाँ भावानुवाद भाषान्तर के रुप में हुआ करते थे, वे सब आज-कल के 'अनुवाद' के अभिप्राय के अधिक निकट हैं। आजकल हिन्दी में अनुवाद की प्रयोग जिस अर्थ में चल रहा है, उससे आशय है - एक भाषा में कही हुई बात को दूसरी भाषा में कहना। इसे भाषान्तरण भी कह सकते हैं।

आज अनुवाद शब्द को अंग्रेजी के 'Translation' पर्याय शब्द के रूप में ग्रहण किया जाता है। अंग्रेजी का Translation शब्द भी लैटिन के दो शब्दों Trans तथा Lation के संयोग से बना है जिसका अर्थ होता है - पार ले जाना। वस्तुतः अनुवाद में एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में ले जाया जाता है। अतः एक भाषा के पार (दूसरी भाषा में) ले जाने की प्रक्रिया के लिए ही 'ट्रान्सलेशन शब्द अंग्रेजी में प्रचलित हो गया। लेकिन इसके समान लगने वाला दूसरा शब्द भी अंग्रेजी में उपलब्ध है- 'Transcription' इसे हिन्दी में 'लिप्यंतरण' कहते हैं। दोनों शब्द सतही तौर पर समानार्थक होने का भ्रम पैदा कर सकते हैं, किन्तु दोनों में गम्भीर भिन्नता है। कहना न होगा कि 'अनुवाद' के सन्दर्भ में 'भाषान्तर' की बात करते समय मूल भाव-विचार को दूसरी (लक्ष्य) भाषा में उसके स्वभाव और प्रकृति के अनुसार अन्तरित करना है न कि मात्र लिप्यंतरण। ट्रान्सलेशन शब्द में भी लग-भग यही अर्थ निकलता है कि अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत एक भाषा के पाठ में व्यक्त अर्थ को दूसरी भाषा में ले जाया जाता है। इस प्रकार दोनों दृष्टियों में कोई मौलिक भेद नहीं है। एक में अर्थ को दोहराने की बात कही गई दूसरी में अर्थ को एक भाषा से उठाकर दूसरे भाषा में ले जाने की बात कही गई है।

अनुवाद शब्द का प्रयोग भारतीय दर्शन के ग्रंथों में विशेषकर न्याय और मीमांसा में काफी हुआ है। इनमें पहले से कही हुई बात के समर्थन में कहे गए दूसरे वचन को अनुवाद कहा गया है। न्यायशास्त्र में वाक्य के तीन प्रकार बनाए गए हैं: विधि, अर्थवाद और अनुवाद। विधि के पुन: कथन को 'अनुवाद' की संज्ञा दी गई है। अनुवाद का सामान्य अर्थ था- एक बात की पृष्टि में कही गई दूसरी बात अथवा एक ही बात की अधिक और स्पष्ट पुनः व्याख्या। किन्तु यह 'अनुवाद' पुनरुक्ति मात्र नहीं होता। पुनरुक्ति प्रायः निरर्थक होती है, किंतु वह पुनः कथन पहले कही हुई बात को अधिक और स्पष्ट करने के लिए होता था। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य में अनुवाद का एक समानार्थी शब्द 'अनुवाक्' भी मिलता है। बाद में इस शब्द का प्रयोग वेद के अनुभाग के अर्थ में होने लगा। इस प्रकार प्राचीन काल में अनुवाद का प्रयोग मुख्यतया 'व्याख्या' और 'टीका' या 'भाष्य' के अर्थ में होता था, जिसे आज के संदर्भ में 'अंत: भाषिक अनुवाद' अथवा 'अन्वयांतर' की संज्ञा दी गई है।

इस विवेचन में यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद शब्द का प्रयोग आज जिस अर्थ में हो रहा है, वह है एक भाषा में कही हुई बात को दूसरी भाषा में व्यक्त करना। जिस भाषा में मूलतः यह बात कही गई थी, उस भाषा को "स्त्रोत भाषा" कहा जाता है और जिस दूसरी भाषा में उसका अनुवाद, करना हो, उसे 'लक्ष्य भाषा" करते हैं। स्त्रोत भाषा में कही गई बात को बिना किसी परिवर्तन अथवा घटाव-बढ़ाव के लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करना अनुवाद है। इसमें यह भी अपेक्षा की जाती है कि स्त्रोत भाषा में कही गई बात का जो प्रभाव स्त्रोत भाषा के पाठक पर पड़ता है, वही प्रभाव लक्ष्य भाषा में कही गई बात का लक्ष्य भाषा के पाठक पर पड़े। इसी परिप्रेक्ष्य में भाषिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ परक आयामों से गुजरना पड़ता है ताकि स्त्रोत भाषा की पाठ्य सामग्री की पूर्ण रूप से समान अभिव्यक्ति लक्ष्य भाषा में हो सके। इस पूर्ण रूप से समान अभिव्यक्ति की आयाम निकटतम अभिव्यक्ति से भी हो सकता है। अतः स्त्रोत भाषा में व्यक्त पाठ्य सामग्री का निकटतम समतुल्यता के आधार पर लक्ष्य भाषा की पाठ्य सामग्री में पुनसृजन करना अनुवाद।

1.3. अनुवाद की परिभाषाएँ :

परिभाषा की दृष्टि से आधुनिक लेखकों व विचारकों ने 'अनुवाद' की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं। भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ प्रेषित हैं। कुछ भारतीय विचारकों की परिभाषाएँ इस प्रकार है_

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार: "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन अर्थात एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनतः और कथ्यतः) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग।"

एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।"

2. पटनायक के अनुसार: "अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव को एक भाषा - समुदाय से दूसरे भाषा- समुदाय में संप्रेषित किया जाता है।"

3. डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल के अनुसार: "स्त्रोतभाषा से लक्ष्य भाषा में किसी विषयवस्तु या सन्देश की समतुल्य अभिव्यक्ति अनुवाद है।"

4. स. ही वात्सायन के अनुसार- "समस्त अभिव्यक्ति अनुवाद है, क्योंकि वह अव्यक्त (या अदृश्य आदि) की भाषा (या रेखा या रंग में) प्रस्तुत करती हैं।"

5. डॉ. सुरेश कुमार के अनुसार "भाषा वेद के विशिष्ट पाठ को दूसरी भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना अनुवाद है, जिस में वह मूल के भाषिक अर्थ, प्रयोग के वैशिष्ट्य को यथा सम्भव संरक्षित रखते हुए दूसरी भाषा के पाठक को स्वाभाविक रूप से ग्राह्य प्रतीत होता है।"

बीसवीं शताब्दी में भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से अनुवाद पर जो चिंतन हुआ, उसमें अनुवाद का अर्थ स्पष्ट करने और उनकी परिभाषा के सर्वांगीण बनाने का प्रयास किया गया। पाश्चात्य विद्वानों ने इस प्रकार अनुवाद की परिभाषाएँ प्रस्तुत किए है-

I. नाइडा के अनुसार–"अनुवाद का तात्पर्य है स्त्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लिए लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती हैं फिर शैली के स्तर पर।"

'Translating consists in producing in the receptor Language the closest natural equivalent to the message of the source Language first in meaning and secondly in style.'

II. जे. सी. कैटफर्ड के अनुसार "अनुवाद स्त्रोत भाषा की पाठ्य सामग्री का लक्ष्य भाषा की समतुल्य पाठ्य सामग्री द्वारा प्रतिस्थापन करना है।"

The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language.

III. रुसी विद्वान फाइदोराव के अनुसार- "एक भाषा के माध्यम से पहले से व्यक्त की गई किसी बात को दूसरी भाषा के माध्यम से निष्ठापूर्वक और पूर्ण रूप से की गई अभिव्यक्ति ही अनुवाद हैं।"

To translate means to express faithfully and fully with the media of one language what has already been said with the media of another language.

IV. फारेस्टेन के अनुसार- "किसी एक भाषा के पाठ की विषय-वस्तु को दूसरी भाषा के पाठ में अन्तरित करना अनुवाद है।"

"Translation in the transference of content of a text from one language into another."

V. रूसी विद्वान बर्खुदारोव ने कहा कि- "एक भाषा के कथन का दूसरी भाषा के कथन में रूपांतरण अनुवाद है, जिसमें कथावस्तु अर्थात् अर्थ को बिना किसी परिवर्तन के बनाए रखा जाए।"

Translation is the transformation of an utterance in one language into utterance in another language, maintaining unchanged the Plane of content i. e. meaning.

1.4 अनुवाद का स्वरूप :

अनुवाद के स्वरूप के सन्दर्भ में विद्वानों में अनेक मतभेद हैं। कुछ विद्वान अनुवाद की प्रकृति को ही अनुवाद का स्वरूप मानते हैं; जबकि कुछ भाषा विज्ञानी अनुवाद के प्रकार को ही उसके स्वरूप के अन्तर्गत स्वीकारते हैं। इस सम्बन्ध में डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव का मत ग्रहणीय है। उन्होंने अनुवाद के स्वरूप को सीमित और व्यापक के आधार पर दो वर्गों में बांटा है। इसी आधार पर अनुवाद के सीमित स्वरूप और व्यापक स्वरूप की चर्चा की जा रही है।

1.4.1 अनुवाद का व्यापक स्वरूप :

अनुवाद का अर्थ तथा परिभाषा से यह सिद्ध होता है कि इसमें अर्थ को एक भाषा पाठ में दूसरी भाषा के पाठ में अंतरित किया जाता है। यह तो अनुवाद का सीमित संदर्भ है। व्यापक संदर्भ में यह माना जाता है कि दो भिन्न 'प्रतीक व्यवस्था' के बीच होने वाला अर्थ का अंतरण ही अनुवाद है। इसका अर्थ यही है कि अनुवाद के अंतर्गत एक प्रतीक व्यवस्था में कही गयी बात को बिना अर्थ परिवर्तन किए दूसरी प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त किया जाता हैं। इस दृष्टि से यहाँ यह माना जाता है कि अनुवाद अर्थ या कथ्य का प्रतीकान्तरण हैं। (दो प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच होने वाला अन्तरण है) इस प्रतीकान्तरण को समझने के लिए पहले हमें प्रतीक विज्ञान को जानना चाहिए।

प्रतीक विज्ञान वह विज्ञान है जिसके अंतर्गत हम प्रतीकों का अध्ययन करते हैं। प्रश्न उठता है कि प्रतीक क्या है? इस संबंध में सी. एस. पीयर्स ने प्रतीक को वस्तु माना है जो किसी व्याख्याता के लिए अन्य वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त होती है। उदाहरण के लिए शिवलिंग भगवान शिव का प्रतीक है। मंदिर में लोग शिवलिंग पर जल चढ़ाते हैं। उसे भगवान शिव का प्रतीक मानता है। यद्यपि वह एक पाषाण खंड है, किन्तु भक्त के लिए वह कुछ विशेष संदर्भों में भगवान शिव के स्थान पर प्रयुक्त होता है और दूसरे के लिए मात्र पत्थर का एक टुकडा इसमें व्याख्याता या प्रयोक्ता के सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक आदि कई संदर्भ जुड़े होते हैं। इसीलिए फ्रांसीसी विद्वान फर्दिना दा सस्यूर ने समाज के भीतर के प्रतीकों के जीवंत पक्षों और उसके प्रकार्यात्मक संदर्भों का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिक दृष्टि अपनाने पर बल दिया था। उन्होंने भाषा को भी प्रतीकों की व्यवस्था के रुप में परिभाषित करने प्रयास किया। उदाहरण के लिए, उच्चरित या लिखित रूप में 'घोड़ा' शब्द स्वयं वास्तविक घोड़ा पशु नहीं है। वह 'घोड़ा' पशु या प्राणी के लिए प्रयुक्त प्रतीकजन्य भाषिक वस्तु है, जिसे उसके प्रयोक्ता या व्याख्याता वास्तविक घोड़े के स्थान पर प्रयुक्त करते हैं। इसी तरह भाषा में जितने भी शब्द प्रयुक्त होते हैं वे 'सब' प्रतीकात्मक होता है या 'प्रतीक' होते हैं। उदाहरण के लिए कुर्सी, मेज, कलम, दवात, आम, अमरूद, मकान, छत आदि सभी शब्द किसी न किसी वस्तु को व्यक्त कर रहे हैं। 'कलम' शब्द लिखने की वस्तु का प्रतीक है तथा 'कुर्सी' शब्द बैठने की वस्तु का। यहाँ शिवलिंग भगवान शिव का प्रतीक तथा घोड़े का चित्र चित्रात्मक प्रतीक है वहाँ कुर्सी, कलम, दवात आदि

शब्द ऐसे भाषिक प्रतीक है जो विभिन्न ध्वनियों के संयोग बनते हैं। ऐसे प्रतीकों को 'ध्वन्यात्मक प्रतीक' कहा जाता है। इसीलिए भाषा को 'ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था" कहा जाता है।

वास्तव में 'प्रतीक' अक्सर किसी न किसी वस्तु (object) के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं तथा प्रतीकों का महत्व तथा उनका अर्थ किन्हीं निश्चित प्रयोक्ताओं के लिए ही होता है। जैसे शिवलिंग केवल शिव भक्तों के लिए ही भगवान शिव की प्रतीक है। कुर्सी, मेज शब्द हिन्दी भाषियों के लिए ही वस्तु कुर्सी-मेज के लिए 'ध्वनि प्रतीक' है। अंग्रेजी भाषा - भाषी के लिए तो 'चेयर'- 'टेबल' शब्द ही इन वस्तुओं के लिए प्रतीक होंगे। प्रतीक शास्त्री 'पीयर्स' ने प्रतीक की परिभाषा देते हुए कहा कि- "प्रतीक वह वस्तु है किसी प्रयोक्ता के लिए किसी दूसरी वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त होती है।"

"A sign --- is something that stands to somebody for something else in some respect of capacity."

इस प्रतीकजन्य भाषिक वस्तु की अवधारणा त्रिवर्गीय संकेतन इकाइयों के संबंधों पर आधारित हैं।

1. वस्तु या संकलित वस्तु (Referent)
2. अर्थ या संकेतार्थ (Referena)
3. संकेतन प्रतीक (sign)

वस्तु का संबंध तो भौतिक जगत से होता है जैसे कुर्सी, मेज, कलम, दावत आदि भौतिक वस्तुएँ नित्य हमारे सामने आती है। सभी वस्तुएँ हमारी इन्द्रियों का गोचर बनती हैं और हमारे मन में इनका एक बिंब खड़ा होता है। जैसे मेज - कुर्सी को हम आँख से देखते है, गंध को नाक से सूंघते हैं, खट्टा, मीठा, कड़वा आदि का बोध हमारे स्वाद (जिह्वा) से होता है, ठंडे, गर्म आदि की अनुभव हमें स्पर्श से होता है। अर्थात भौतिक जगत की वस्तुओं के बिन हमारे मानस पटल पर विभिन्न इन्द्रियों के माध्यम से बनते हैं। भौतिक वस्तुओं का यह मानसिक बोध या बिंब ही उस वस्तु का अर्थ या संकेतार्थ (Referena) कहलाता है। वस्तु तथा उसका 'अर्थ' संस्कृत में सब के लिए समान होता है। 'कमल' वस्तु तथा उनका अर्थ तो हिन्दी भाषी, संस्कृत भाषी , पंजाबी, गुजराती , मराठी, तमिल भाषा, अंग्रेजी भाषा, जापानी रूसी भाषी सभी के लिए समान होते हैं। अंतर तो केवल उनकी प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति में है। कोई उसे 'कमल' कहता है, कोई उसे 'जलज' कहता है, तो कोई उस 'लोटस' करता है।

इस प्रकार प्रतीक की संकल्पना को हम 'वस्तु' अर्थ तथा प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के त्रिवर्गीय संबंधों में ही समझ सकते हैं-

संकेतार्थ (कथ्य)

प्रतीक (अभिव्यक्ति) रूप में प्रयुक्त शब्द

यहाँ यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि 'प्रतीक' का 'वस्तु' के साथ सीधा संबंध नहीं होता। प्रत्येक, प्रतीक से पहले हम उसके अर्थ पर पहुंचते है और फिर अर्थ से उसकी 'वस्तु' तक। साथ ही भाषा में

यह 'प्रतीक' ही अभिव्यक्ति है और अर्थ उसका कथ्य है अतः यह कहा जा सकता है कि भाषा 'कथ्य और अभिव्यक्ति की समन्वित इकाई है।'

यहां पर भी ध्यान देने की बात है कि संकेतार्थ के निर्माण में मात्र बाह्य जगत की वस्तुओं का ही योग नहीं रहता वरन् प्रयोक्ता के जातीय इतिहास, उसकी सभ्यता, उसके समाज और संस्कृति का भी योगदान रहता है। इसी कारण संकेतार्थ में अर्थ की अगाध संभावनाएँ निहित रहती हैं। अर्थ की इन संभावनाओं को मुख्य रूप से चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

बोधात्मक अर्थ: या कोशगत अथवा संकल्पनात्मक अर्थ है। इससे वस्तु या पदार्थ का मूल भाव या उसकी जातीय और विशिष्ट संकल्पना मन में उभरती है और वह यथार्थ वस्तु के रूप में दिखाई देती हैं। उदाहरण के लिए- कलम, घोड़ा आदि से एक प्रकार के फूल या पशु का भाव उठता है।

संरचनात्मक अर्थ: इसका आधार भाषिक संरचना है। इसमें शब्द या वाक्य की संरचना में अतिरिक्त अर्थ का भी द्योतक होता है; उदा – 'जलज' और 'पंकज' शब्दों में 'कमल' पुष्प की जातीय संकल्पना के साथ-साथ जल से उत्पन्न हुआ अर्थात् मोह-माया से मुक्त और 'पंक से उत्पन्न हुआ' अर्थात् 'गुदडी का लाल' का भाव भी उत्पन्न होता है, जो एक अतिरिक्त अर्थ है।

सामाजिक अर्थ: इसका संबंध सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था अथवा परिवेश से जुड़ा हुआ है। वह यथार्थ वस्तु से भिन्न अर्थ प्रदान करता है। जैसे - तू, तुम, आप मध्यम पुरुष सर्वनाम के प्रयोग से वक्ता और श्रोता के सामाजिक संबंधों का परिचय मिलता है। किसी मृत व्यक्ति के 'दोह संस्कार' अथवा 'फूल चुनना' या 'फूल प्रवाहित करना' अभिव्यक्तियों में सांस्कृतिक परिवेश निहित रहता है।

सांस्थानिक अर्थ: यह लाक्षणिक और व्यंजनापरक अर्थ है। इसमें ऐसे अर्थ की व्यंजना होती है जिसका समाहार मूल अर्थ में नहीं हो सकता है, उदा- अरे ! मोहन तो शेर है; इसका दिमाग ऊंचा है; अभिव्यक्तियों में शेर बहादुरी का और 'ऊँचा' अहंकार का अर्थ व्यंजित कर रहा है।

अतः अनुवाद में अनुवादक एक भाषिक प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त अर्थ को दूसरी भाषिक प्रतीक व्यवस्था के माध्यम से व्यक्त करने का कार्य करता है। इस दृष्टि से जब हम अनुवाद को व्याख्यायित करने का कार्य करते हैं तो यह मान कर चलते है कि अनुवाद वह व्यापार है जो दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के मध्य घटित होता है तथा जिसके माध्यम से 'अर्थ' या 'कथ्य' की एक प्रतीक व्यवस्था से दूसरी प्रतीक व्यवस्था में अन्तरित किया जाता है। इसीलिए व्यापक संदर्भ में अनुवाद को 'अर्थ' का 'प्रतीकान्तरण' कहा जाता है।

1.4.2 अनुवाद का सीमित स्वरूप

अनुवाद को सीमित संदर्भ में देखने से यह मानना होगा कि अनुवाद दो भिन्न भाषाओं के बीच होने वाला वह व्यापार है जिसमें एक भाषा से दूसरी भाषा में अर्थ या कथ्य का अंतरण किया जाता है। इसका अर्थ यही हुआ कि सीमित संदर्भों में अनुवाद की 'भाषान्तरण' (एक भाषा से दूसरी भाषा में अर्थ का अन्तरण) के रूप में ग्रहण किया जाता है। जब अनुवाद को 'भाषान्तरण' के रुप में लिया जाता है तब यह मानकर चला जाता है कि अनुवाद पर भाषा-विज्ञान के सिध्दांत लागू होते हैं। अतः अनुवाद के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए भाषा-विज्ञान के सिद्धांतों को आधार बनाकर चलना होता है। इस प्रकार अनुवाद को किसी भी संदर्भ में लें अनुवाद या तो प्रतीक सिद्धांतों का अनुप्रयोगात्मक रूप है अथवा भाषा-सिध्दांतों का। अतः अनुवाद

के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए हमें प्रतीक विज्ञान तथा भाषा विज्ञान दोनों को ही आधारभूत सिद्धांतों को समझाना जरूरी है।

1.5. अनुवाद के क्षेत्र: अनुवाद को दो संदर्भ में देखा जाता है। व्यापक संदर्भ और सीमित संदर्भ।

1.5.1. व्यापक संदर्भ: व्यापक संदर्भ में अनुवाद को प्रतीक सिध्दांत के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है अर्थात कथ्य का प्रतीकांतरण अनुवाद। प्रतीक व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में सुविख्यात भाषा-विज्ञानी रोमन याकोब्सन ने भाषिक पाठ का प्रतीकांतरण तीन रूपों में देखने का प्रयास किया है।

(अ) अंतः भाषिक अनुवाद [Intralingual Translation]: जब एक भाषा की एक प्रकार की प्रतीक - व्यवस्था को उसी भाषा की दूसरी प्रकार की प्रतीक-व्यवस्था में अन्तरित किया जाता है, तो उसे अतः भाषिक अनुवाद कहा जाता है। संस्कृत में किसी कृति का जो 'भाष्य' या 'टीका' होती थी, वह भी एक प्रकार का अंत: भाषिक अनुवाद है। इसे 'अन्वयांतर' भी कहते हैं। किसी एक भाषा के पद्य रुप का गद्य में, नाटक का कहानी में, औपचारिक शैली का अनौपचारिक शैली, भाषा की एक बोली के पाठ को दूसरी बोली में किए गए रूपांतरण अतः भाषिक अनुवाद के रूप हैं।

उदा: तीस अश्वारोहियों का दल क्षिप्र गति से रण-क्षेत्र की ओर खींचा जा रहा था।

तीस घुड़सवार तेजी से युद्ध के मैदान की ओर बढ़ रहे थे।

(आ) अन्तर भाषिक अनुवाद: जब एक भाषा की प्रतीक - व्यवस्था को दूसरी भाषा की प्रतीक - व्यवस्था में परिणत किया जाता है, तब वह अन्तर-भाषिक अनुवाद माना जाता है। यह सरल कार्य नहीं है। लक्ष्य भाषा (जिस भाषा में अनुवाद करना है) की प्रकृति और बाह्या-भ्यन्तर बुनावट में सिद्ध होने के साथ-स्त्रोत भाषा (जिस भाषा में अनुवाद करना है) की संरचना और मूल ग्रन्थ को समझाना भी उतना ही आवश्यक है। अनुवादक को दो भाषाओं के बीच अनुवाद करते समय यह ध्यान रखना होता है कि भाषा एक संरचना मात्र नहीं होती। भाषा तो प्रयोग की वस्तु है। विभिन्न प्रयोग संदर्भ, उसे अर्थ के विभिन्न आयाम प्रदान कर सकते हैं।

भाषा की संरचना में सामाजिक - सांस्कृतिक मूल्य अंतर्मुक्त होकर आते है। काव्यात्मक समझ, मर्म तक पहुंचने की सूझ-बूझ, द्विभाषिक कौशल, अभ्यास प्रवणता आदि जितने भी अनुवादक के गुण अपेक्षित हैं वे सभी अन्तर भाषिक अनुवाद कार्य के लिए आवश्यक हैं। अन्तर भाषिक अनुवाद करते समय सम्पूर्ण प्रक्रिया को ध्यान में रखना अनिवार्य हो जाता है। अनुवाद केवल एक शब्द के लिए समानान्तर शब्द ही नहीं ढूंढ रहा, अपितु एक प्रकार से दो संस्कृतियों का भी आरोपण-प्रतिस्थापन कर रहा है। उदाहरण के लिए my father is coming to day. वाक्य का अनुवाद "आज मेरा पिता आ रहा है।" कर सकता है क्योंकि, संरचनागत नियम के अनुसार तो यह वाक्य ठीक है। परंतु व्यवहार के स्तर पर हिन्दी भाषी इस वाक्य को स्वीकार नहीं करेगा। अनुवाद को संरचना तथा उसके नियमों के साथ यह भी जानना होगा कि हिन्दी में सम्मान देन के लिए एक वचन कर्ता के साथ बहुवचन क्रिया रुप का प्रयोग किया जाता है और तब उपयुक्त अनुवाद होगा- "आज मेरे पिताजी आ रहे हैं।"

(इ) अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद: यह अनुवाद का अल्प - प्रचलित रुप है, फिर भी प्राचीन काल में इसके विविध उदाहरण उपलब्ध हो जाते हैं। इसमें अनुवादक किसी भाषा की प्रतीक व्यवस्था से किसी अन्य भाषेतर प्रतीक व्यवस्था में अनुवाद किया जाता है। जब एक भाषा की प्रतीक-व्यवस्था का भाषा से इतर किसी अन्य माध्यम में अन्तरण किया जाये तो उसे अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद करेंगे। उदाहरण के लिए किसी कहानी या नाटक को फिल्म के रूप में अंतरित करना वस्तुतः अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद के अंतर्गत आता है। "गोदान, गबन, साहब बी बी और गुलाम, तीसरी कसम आदि अनेक उपन्यासों को लेकर जो फिल्में बनी हैं वे अंतर प्रतीकात्मक का उदाहरण ही हैं।

1.5.2 सीमित संदर्भ: अनुवाद के सीमित संदर्भ की चर्चा करने पर अन्तर भाषिक अनुवाद को ही अनुवाद का वास्तविक क्षेत्र कहकर अभिहित किया जाता है। अनुवाद के इस अन्तर भाषिक सन्दर्भ में कुछ विद्वानों द्वारा अन्तरण की अपेक्षा प्रतिस्थापन की बात कही गयी है, क्योंकि मूल अर्थ का अन्तरण सम्भव ही नहीं है। ऐसा प्रयास किया जा सकता है कि अनूदित पाठ की बुनावट यथासम्भव मूलपाठ के अनुरूप हो। इसलिए इसमें दो भाषाओं के बीच अनुवाद को ही वास्तविक, अनुवाद माना जाता है। इस प्रकार के अनुवाद (अन्तर भाषिक अनुवाद) को भी दो आयामों में देख सकते हैं - पाठ धर्मी आयाम, प्रभावधर्मी आलम।

अ) पाठ धर्मी आयाम: इसमें मूल पाठ को स्वायत और स्वनिष्ठ मानते हुए अनुवाद को उससे बाहर जाने की छूट नहीं होती। अनुवादक पहले मूलपाठ की भाषा का अध्ययन और विश्लेषण करता है और उसमें निहित अर्थ को अनूदित पाठ में व्यंजित करने के लिए मूल पाठ की संरचना और बुनावट को अपना केंद्र बिन्दु बनाए रखता है। इस दृष्टि से वह पाठ की प्रकृति और प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए उसके वाक्य विन्यास और अर्थ परक विश्लेषण को आधार बनाए रखता है। अतः अनुवादक मूल पाठ की संरचना तथा बुनावट को ध्यान में रखकर ही अनुवाद करे तथा अनूदित पाठ की संरचना तथा बुनावट यथासंभव मूल पाठ के अनुरूप ही हो। अनुवादक को यहाँ यह अनुमति नहीं है कि वह मूल भाषा पाठ के अंश से भिन्न कुछ भी अपनी ओर से अनूदित पाठ में जोड़ने-घटाने का कार्य करे। यहाँ तो अनुवादक से यही अपेक्षा की जाती है कि अनूदित पाठ की संरचना और बुनावट मूल भाषा पाठ के अनुरूप ही हो।

इस प्रकार अनुवाद का पाठधर्मी आयाम अनुवाद के उस स्वरूप को प्रतिष्ठित करता है जहाँ अनुवादक ऐसा अनूदित पाठ प्रस्तुत करे जिसकी प्रकृति स्त्रोत भाषा के पाठ की प्रकृति से मेल खाती हो। जिस तरह की संरचनाएँ मूल पाठ में आई हैं वैसी ही संरचनाएँ अनुवाद में भी प्रस्तुत की जाएं।

आ) प्रभावधर्मी आयाम: इस में मूल पाठ को लेखक और पाठक के बीच संबंध स्थापना का एक उपकरण माना जाता है। अनुवादक इस पाठ का मूल्यांकन पाठक पर पड़े प्रभाव के आधार पर करता है। इसमें अनूदित पाठ का इस रूप में प्रस्तुत किया जाता है कि उस पाठ से उसके पाठकों पर भी वही प्रभाव पड़े जो मूलपाठ के पाठक पर पड़ता है। अतः अनुवाद का प्रभावधर्मी आयाम इस मान्यता को लेकर चलता है कि अनुवादक मूल भाषा पाठ की संरचना तथा बुनावट की अपेक्षा उस प्रभाव को पकड़ने की कोशिश करे जो स्त्रोत भाषा के पाठकों पर पड़ा है। फिर अपन अनूदित पाठ के माध्यम से लक्ष्य भाषा के पाठकों के मन में भी वही प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास करें। उदाहरण के लिए कविता के अनुवाद में अनुवादक से यह अपेक्षा करना कि वह अनूदित पाठ में वैसी ही संरचनाएँ, छन्द, लय आदि ले आए यह उचित नहीं हैं। रामचरितमानस की चौपाइयों का किसी अन्य भाषा में चौपाई जैसे छंद में अनुवाद करें यह संभव नहीं होता। अतः अनुवाद का प्रभावधर्मी

आयाम इस मान्यता को लेकर चलता है। विशेषकर सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में सर्जनात्मक साहित्य में भी विशेष कर कविता के अनुवाद में तो प्रभावधर्मी अनुवाद की ही आश्रय लेना होता है।

1.6. अनुवाद का महत्व:

किसी कार्य के महत्व के बारे में जानना चाहते है तो पहले इस बात पर विचार करना चाहिए कि वह कार्य क्यों कर रहे हैं तो उसका महत्व हमारे सामने सुनिश्चित हो जाएगा। इस दृष्टि से यदि हम इस बात पर विचार करते है कि अनुवाद की आवश्यकता क्या है या अनुवाद क्यों किया जाता है तो अनुवाद के महत्व संबंधी कई पहलू हमारे सामने आ जाएंगे। आज संपूर्ण विश्व में सभी का आपसी सहयोग, व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का बड़ी तेजी से विकास हो रहा है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी अपनी जानकारी व्यापक रखना चाहते हैं। देश - विदेश में हुए अनुसंधान एवं विकास की निरंतर जानकारी प्राप्त करना चाहता है। दूसरी भाषाओं की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक अंशों की गहनता एवं व्यापकता का अध्ययन करना चाहते हैं। यह सब अनुवाद के माध्यम से ही संभव होता है। इसी तरह हम देखते है कि वर्तमान संदर्भ में बिना अनुवाद हम अन्धकार में ही रह जाएंगे। भारत जैसे बहुभाषी देश में तो बिना अनुवाद विकास की बात करना अर्थहीन सा है। यहाँ के जन - जन तक पहुँचने के लिए अनुवाद एक अनिवार्यता है। भारतीय भाषाओं और बोलियों के विराट समुद्र में अनुवाद ही एक ऐसा साधन है जो हमारे बीच सेतु का कार्य करता है।

भारत की महान परंपरा व अपार ज्ञान राशी का लाभ विश्व ने उठाया है। हमारे संस्कृत ग्रंथों व हमारे चिन्तन एवं आध्यात्मिक संपदा जो विश्व में धूम मची है उसका श्रेय अनुवाद को ही जाता है। आज भी हमारे उपलब्धियाँ विश्व भर में दर्शाने का एक मात्र साधन अनुवाद है। अनुवाद से हम विश्व-साहित्य से भी परिचित होते।

अनुवाद साहित्य की एक विशिष्ट विधा है। इसके द्वारा जहाँ हम किसी कृति को अन्य भाषा-भाषी समुदाय तक पहुँचाते हैं, वही दूसरी ओर से सृजन का सुख भी प्राप्त करते हैं। अतः अनुवाद साहित्य की समृद्धि में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अतः सृजन के क्षेत्र में भी अनुवाद का महत्व अति महत्वपूर्ण हैं ।

आज विज्ञान के विकास के साथ - साथ सूचना का महत्व बढ़ा है। विज्ञान के क्षेत्र में खोजों की जानकारी वैज्ञानिक तुरंत पाना चाहते हैं। जिस भाषा में वह उपलब्ध हो उसे तुरंत अपनी भाषा में पाने के लिए उन्हें अनुवादकों की जरूरत पड़ती है। ज्ञान के क्षेत्र के अतिरिक्त व्यापार, उद्योग, पर्यटन आदि के क्षेत्र में दुनिया सिमट कर काफी छोटी हो गई है । भूमंडलीकरण (Globalization) के जमाने में लोग उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए और भी निकट आ रहे है तो अनुवाद की जरूरत और ज्यादा बढ़ गई है।

अनुवाद का महत्व शिक्षा के क्षेत्र में भी बड़ गयी है। विश्वस्तर पर प्राप्त ज्ञान को शिक्षा में समाहित करना अनुवाद द्वारा ही सम्भव है। हम अपनी शिक्षा-व्यवस्था में विश्व - स्तर पर हो रहे परिवर्तनों का शामिल करते हुए अपनी शिक्षा-व्यवस्था को व शिक्षा में हो रहे अनुसंधान को भी जान सकते हैं। प्राइमरी स्तर पर ही दी जा रही शिक्षा में भी अनुवाद का महत्व बहुत है। आज हर बच्चा अपनी क्षेत्रीय भाषा में अध्ययन करता है, परंतु उसे बाद में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता करनी होती हैं। तब उन्हें अनुवाद के

जरिए ही अन्य अंशों को सीखना पड़ता है। भारत के दक्षिण एवं मध्य तथा पूर्व के विद्यालयों में क्षेत्रीय भाषा सीखते समय क्षेत्रीय भाषा से हिन्दी में या अंग्रेजी में अनुवाद सिखाया जाता है। पर अनुवाद के महत्व को स्वतः सिध्द करता है।

शिक्षा के बाद अगर संचार माध्यमों की ओर देखें, तो संचार माध्यम चाहे वे मुद्रण से जुड़े हों अथवा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़े हो, अनुवाद उनकी प्राणवायु हैं। आज अनुवाद के बिना संचार माध्यमों का उद्देश्य ही अपूर्ण रह जाता है। आज समाचार -प्रेषण एजेंसियाँ अपने समाचार अंग्रेजी या हिंदी में भेजती है, परंतु क्षेत्रीय समाचार - पत्र तत्काल उनका अनुवाद करते हैं व उन्हें समाचार पत्रों में अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशित करते है। मीडिया में अनुवाद और अनुवादकों का जमघट लगा रहता है, परंतु इन्हें अनुवादक न कहकर सहायक सम्पादक, उपसम्पादक आदि के पदनामों से भी जाना जाता है।

अनुवाद की आवश्यकता तुलनात्मक अध्ययनों के लिए भी महत्वपूर्ण है। यदि हमें किसी भी क्षेत्र में किन्हीं दो देशों या दो प्रान्तों के किसी विषय या ज्ञान राशि का अथवा, सामाजिक, आर्थिक या अन्य क्षेत्र का तुलनात्मक अध्ययन करना हो तो भी अनुवाद का आश्रय लेना पड़ता है । यदि दो विभिन्न भाषा के साहित्यकारों या साहित्य की तुलना करनी पड़ती है, तो अनुवाद के द्वारा ही यह कार्य सम्पन्न हैं। अतः तुलनात्मक अध्ययन के अनुवाद का अत्यधिक महत्व है।

व्यवसाय एवं रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व बहुत ही व्यापक और अपरिहार्य है। किसी उद्योग विशेष से संबंधित नई जानकारी दुनिया की जिस किसी भाषा में उपलब्ध हो उससे जब तक अपनी भाषा में न लाया जाए तब तक उसका औद्योगिक इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए किसी चीज या किसी उद्योग से संबंधित जानकारी चीनी या जर्मनी में उपलब्ध हो, जब तक उसे अंग्रेजी में अनुवाद नहीं करते अन्य देशों में इसका उपयोग नहीं कर पाते हैं। अनुवाद की इस आवश्यकता को देखते हुए बड़े औद्योगिक संस्थान तुरंत अनुवाद कराने की व्यवस्था अपने पास रखते है। ये संस्थान अपने से बनाए हुए माल को विभिन्न देशों में अथवा प्रदेशों में बेचने के लिए जो प्रचार साहित्य तैयार करते हैं उसको भी कई भाषाओं में अनूदित कराते हैं। इसी तरह पर्यटन के क्षेत्र में भी अनुवाद की आवश्यकता बढ़ गयी है। पर्यटन का संबंध राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों से होता है। इनमें यात्रा, आवास, मनोरंजन, मार्गदर्शन तथा पर्यटन स्थल संबंधी सूचना, प्रचार आदि शामिल होते हैं। इस क्षेत्र में अनुवाद के लिखित और मौखिक दोनों रूपों का आवश्यकता एवं उपयोगिता रहती है। पर्यटकों के साथ आने जाने वाले गइडों को कई भाषाओं में पर्यटन संबंधी जानकारी देनी पड़ती है। इसके साथ ही विशिष्ट पर्यटन स्थलों के बारे में छापी पुस्तकों का भी कई भाषाओं में उपलब्ध कराना पड़ता है। वास्तव में पर्यटन ऐसा उद्योग है जो निरंतर अनुवाद के सहारे चलता है ।

अनुवाद, का महत्व सामाजिक, सांस्कृतिक विकास में तो ज्यादा रहती है लेकिन भारत जैसे बहुभाषी देश में राष्ट्रीय एकता की दृष्टि में इसका महत्व अक्षुण्ण और अद्वितीय हैं। क्यों कि अनेकता में एकता के मंत्र का उच्चार भाषा के स्तर पर करने का संकल्प अनुवाद के सहयोग से ही पूरा हो सकता है। भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक दृष्टियों से हमारा देश बहुकोणीय है। यहाँ कई धर्मों, कई संप्रदायों, कई जातियों, कई भाषाओं और कई आचार - व्यवहारों का समन्वय बनाई रखती हैं। इस भिन्नता को एक सूत्र में बाँध रखने में अनुवाद की उपादेयता सर्वाधिक उल्लेखनीय है। वास्तव में अनुवाद वह सशक्त माध्यम

है, जिसके द्वारा भारत जैसे राष्ट्र की एक सूत्राता की सही दिशा मिलती हैं। अनुवाद की सुविधा के अभाव में हम अपने विशाल बहुभाषी राष्ट्र में ही अपरिचित जैसे रह जाते। अनुवाद ने संपूर्ण राष्ट्र की एकता के बंधन में बाँध रखा है और राष्ट्रीयता के सूत्रों को बिखरने से रोखा।

अगर हम आज के युग को अनुवाद का युग कहा आए तो अतिशयोक्ति न होगी। सोच और व्यवहार के हर स्तर पर हम अनुवाद पर आश्रित है, अनुवाद के आग्रही है आज शायद ऐसा कोई श्रोत्र हो, जिसमें अनुवाद की उपादेयता प्रमाणित न की जा सके। अनुवाद एक व्यापक और प्रासंगिक स्थिति है। नए संसाधनों का विकास, व्यापक मानवीय संपर्कों के संदर्भ में अनुवाद का होना स्वाभाविक ही है। संसार भर में प्रयुक्त पाँच हजार से अधिक भाषाओं और बोलियों के बीच वैचारिक, सर्जनात्मक और कार्यात्मक स्थापित रखने के लिए अनुवाद ही सर्वाधिक लोकप्रिय एवं उपयोगी माध्यम बन गया है।

1.7. अनुवादक के गुण:

अनुवाद कार्य सरल और सृजन न होकर अत्यन्त दुष्कर होता है। इसीलिए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी कहते हैं- "एक प्रकार से मौलिक लेख लिखना जितना आसान है, किसी दूसरी भाषा में अनुवाद करना उतना ही कठिन है। मेरे निजी अनुभव है कि मैं अंग्रेजी से हिन्दी में और हिन्दी से अंग्रेजी में उतनी आसानी से अनुवाद नहीं कर सकता, जितनी आसान से बोल या लिख सकता हूँ। गहन विषयों का अनुवाद की और भी अधिक कठिन हो जाता है। अनुवादक को केवल उन दोनों भाषाओं का जिनमें एक से दूसरी में अनुवाद करना है, अच्छा ज्ञान होना ही अनिवार्य नहीं, बल्कि उस विषय पर भी अच्छा अधिकार होना चाहिए जिस विषय से वह अनुवाद किए जाने वाला ग्रन्थ संबंध रखता है। इसलिए किसी को यह नहीं समझना चाहिए कि अगर वह दो भाषाओं को मामूली तौर से जानता है, तो वह एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद कर सकता है।"

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि श्रेष्ठ और सफल अनुवादक को न केवल बहुभाषा का ज्ञाता ही होना चाहिए अपितु उसे भाषा का विशेषज्ञ और महान ज्ञान भी होना चाहिए। अनुवाद को लक्ष्य-भाषा और स्त्रोत भाषा पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। भाषा का अल्प ज्ञान या काम चलाऊ ज्ञान होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। अनुवादक को दोनों भाषाओं के अर्थ, प्रकृति, मुहावरे, उपभाषा एवं बोलियों में भी जानकारी होनी चाहिए। अनुवादक को स्त्रोत भाषा और लक्ष्य-भाषा के समाजों की, उनके परिवेश की संस्कृति एवं सभ्यता की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। अनुवादक जिस विषय की अनुवाद कर रहा हो उस विषय का अच्छा ज्ञान होना चाहिए, अन्यथा अनुवाद अर्थहीन होगा या कभी -कभी उल्टा अर्थ देने वाला भी अनुवाद हो जाता है। उदाहरण के लिए Post शब्द का बैंकिंग जगत् में अर्थ होता है - प्रविष्टि, पद या तैनाती सामान्य जनता व सामान्य बोलचाल में इसका अर्थ होता है - डाक तथा क्रिया - रूप में प्रयोग करने पर अर्थ हो जाता है - पत्र डालना/ यदि डिग्री के साथ लगे तो 'उत्तर' जैसे Post Graduate (स्नातकोत्तर) यदि अन्य शब्दों में उपसर्ग की भाँति लगे तो अर्थ होगा 'बाद का' जैसे - (postdated) (तारीख के बाद का) और शब्द के बाद में लगे तो जैसे- Lamp-post (निगरानी चौकी) (warden Post) (वार्डन पोस्ट) में अर्थ थोड़ा सा भिन्न होगा। अतः विषय के अनुसार शब्दों के अर्थ बदल जात है, इसलिए अच्छे अनुवादक के लिए विषय का ज्ञान उत्तम गुण माना जाता है।

अनुवादक को सामान्य और पारिभाषिक/शब्दों का ज्ञान होना आवश्यक है। पारिभाषिक शब्द का ज्ञान न होने से सही अनुवाद हो ही नहीं सकता है। अनुवादक को अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान होना चाहिए। अन्यथा निष्ठा के अभाव में अनुवाद अपूर्ण तो होगा ही, साथ ही बीच-बीच में अनुवाद छोड़ना, कठिन शब्दों का अधिकाधिक लिप्यंतरण व निर्जीव अनुवाद जैसी बुराइयाँ आ जायेंगी।

अनुवादक के लिए भी नितांत जरूरी है कि वह अनुभवी व परिपक्व विचार वाला हो। गैर जिम्मेदार तथा लापरवाही व जल्दबाजी करने वाले स्वभाव का व्यक्ति न तो अनुवाद सही कर पाता है और न ही त्रुटि - संशोधन। अनुवादक का विश्वासनीय होना इसलिए जरूरी है कि अनुवादक एकमात्र व्यक्ति होता है जो मूल पाठ और अनूदित पाठ दोनों को जानता है। यदि वह विश्वसनीय नहीं होगा तो वह गलत अनुवाद द्वारा गलत सूचना देगा, जिससे बड़ी हानि होने का भय सदैव बना रहता है, गैर - अनुभवी व्यक्ति में जिम्मेदारी की। भावना अपेक्षाकृत कम होती है, क्योंकि उसे गलत अनुवाद से होने वाली हानियों का पता नहीं होता। अतः अनुवादक का अनुभवी और विश्वसनीय होना भी एक गुण है।

अनुवादक मूलतः सर्जक होता है। उसमें रचनाशीलता स्वभावतः होती ही है। अनुवादक में यदि रचनाशीलता नहीं होगी तो वह सहृदय पाठक भी नहीं होगा, क्योंकि रचनाशील व्यक्ति ही भावनाओं की गहराई तक बैठ सकता है। अनुवादक भी सृजन करता है। स्त्रोत भाषा से तो वह कथ्य लेता है, शेष रचना : जैसी शब्द एवं प्रस्तुति वह स्वयं करता है। अतः रचनाशीलता अनुवादक का श्रेष्ठ गुण है, यही रचनाशीलता उसकी सर्जनात्मक प्रतिभा के रूप में प्रस्फुटित होती है। अनुवादक मूल लेखक के मन - मस्तिष्क में प्रवेश करके उसकी भावना के साथ तादात्म्य स्थापित करता है। इस प्रकार वह मूल लेखक की अनुभूतियों को स्वयं भोगता है, तब ही वह उसी प्रकार का अनुवाद दे पाता है। अतः अनुवादक को परकाया - प्रवेश में निपुण होना चाहिए। अनुवादक को पाठकों की क्षमता के अनुसार भाषा के स्तर को बनाये रखना होता है।

अनुवाद में कभी ऐसा भी होता है कि मूल को छोड़कर स्वतन्त्र अनुवाद अधिक सरल होता परन्तु अनुवादक को चाहिए कि वह मूल के प्रति सदैव निष्ठावान रहे अर्थात मूल से अधिक हटाकर न चले। अतः मूल दूर न हटना भी अनुवादक का गुण है।

अनुवादक का कार्य लेखन की तरह विशेष दक्षता की अपेक्षा रखता है। केवल भाषा के मान्य ज्ञान के बलबूते पर कोई विशिष्ट विषयों की सामग्री का अनुवाद नहीं कर सकता। सभी भाषाओं में कुछ निश्चित सीमा तक मुहावरों और कहावतों के प्रयोग होते हैं। इसका संश्लिष्ट और प्रच्छान्न ज्ञान एक महान और सक्षम अनुवादक को अवश्यहीन होना चाहिए अन्यथा उसका अनुवाद निराधार और निरर्थक सिध्द होगा। इस सम्बन्ध में यह ध्यान देना चाहिए कि मूल भाषा में प्रयुक्त कहावतों और मुहावरों का शब्दानुवाद नहीं करना चाहिए, बल्कि उनके निहित या प्रच्छन्न व संश्लिष्ट अर्थ को ही व्यक्त करना चाहिए।

साहित्य के क्षेत्र में आदर्श अनुभव की कसौटी यह होती है कि अनुवाद पढ़ते समय मूल रचना पढ़ने का-सा प्रभाव अनुभव हो। लक्ष्य भाषा की रवानगी, मुहावरे आदि जिस अनुवाद में न हो वह पाठकों को प्रसन्न नहीं करता, किन्तु अनुवादक को यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं मूल रचना को अनुवाद में किसी भी रूप में प्रस्तुत कर सकता हूँ। प्रायः अनुवादक साहित्यकार, खासकर कवि, जब किसी मूल भाषा की रचना का अनुवाद करते, है, तब मूल सामग्री तो लेते है पर उसे ऐसा जमा देते हैं कि लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत होने पर

वह अनुवादक कवि के व्यक्तित्व से अभिभूत हो जाती हैं और मूल कवि उपेक्षित - सा रह जाता है। इतनी आजादी लेना आदर्श अनुवाद की दृष्टि से उचित नहीं है।

1.8 सारांश :

अनुवाद का अर्थ है एक भाषा में कही गयी बात को दूसरी भाषा में यथा साध्य बताना यह बहुत कठिन काम है। इस कठिन काम को वैज्ञानिक तौर पर करने से ही ठीक अनुवाद कर पाता है। अनुवाद का अर्थ, उत्पत्ति, क्षेत्र आदि को देखने से यह मालूम होता है कि यह कार्य प्राचीन काल से ही आरहे है। उसकी परिभाषाएँ, स्वरूप आदि को जानने से यह मालूम होता है कि आज का युग अनुवाद के बिना पंगू हो सकता है। अनुवादक को स्त्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा का संपूर्ण ज्ञान होना अनिवार्य है। इस इकाई में हम इन सभी अंशों का विस्तृत अध्ययन कर चुके हैं।

1.9 बोध प्रश्न :

1. अनुवाद का व्युत्पत्ति और अर्थ के बारे में बताते हुए अनुवाद की परिभाषाओं का विवेचन कीजिए
2. अनुवाद के स्वरूप के बारे में बताइए।
3. अनुवाद के क्षेत्र को किन-किन संदर्भों में प्रस्तुत कर सकते हैं।
4. आज का युग अनुवाद का युग है सोदाहरण विवेचन कीजिए।
5. अच्छे अनुवादक के गुण क्या-क्या हो सकते हैं।

1.10 सहायक ग्रंथ :

1. अनुवाद विज्ञान- भोलानाथ तिवारी, किताब महल।
2. व्यवहारिक हिन्दी- डॉ. कैलाश चन्द्र भटिया, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. कमल कुमार बोस, नई दिल्ली।

****

- डॉ. एम .मंजुला

2. अनुवाद की प्रकृति और प्रकार

उद्देश्य

इस इकाई में हमारा उद्देश्य'अनुवाद क्या है?','अनुवाद की प्रकृति क्या है?', 'क्या अनुवाद विज्ञान, शिल्प अथवा कला है?'जैसे सामान्य प्रश्नों का हल ढूँढना है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- अनुवाद की सामान्य परिभाषा प्रतिपादित कर सकेंगे।
- अनुवाद की प्रकृति से परिचित होंगेऔर अनुवाद की प्रकृति बता सकेंगे।
- अनुवाद क्रिया कला के अन्तर्गत आता है या विज्ञान के या शिल्प केसमझ सकेंगे।
- अनुवाद के विभिन्न प्रकारों में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
- सारानुवाद, शब्दानुवाद, भावानुवाद आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- अनुवाद के अर्थों एवं उन के विभिन्न प्रकारों की भूमिका को परिभाषित कर सकेंगे, तथा
- अनुवाद के संबंध में सामान्य विचार-विमर्श करते समय विशिष्ट शब्दों और उनकी अभिव्यक्तियों का अर्थ औरउनके प्रयोग की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई की रूपरेखा :

2.1 प्रस्तावना

2.2 अनुवाद

2.2.1 अनुवाद की परिभाषा

2.3 अनुवाद और अर्थ

2.4 अनुवाद की प्रकृति

2.4.1 अनुवाद का वैज्ञानिक पक्ष

2.4.2 अनुवाद का कला पक्ष

2.4.3 अनुवाद का शिल्प पक्ष

2.4.4 अनुवाद में कला-विज्ञान - शिल्प के तीनों तत्त्व

2.5 अनुवाद के प्रकार

2.6 सारंश

2.7 बोध प्रश्न

2.8 सहायक ग्रंथ

2.1.प्रस्तावना :

अनुवाद शब्द का क्या अर्थ है? इसके प्रकार क्या है? कहानी लेखन की तरह क्या हम अनुवाद को कला मान सकते हैं अथवा, क्या अनुवाद वैज्ञानिक गतिविधि है, जिसके अपने निश्चित विस्तृत नियम है? अथवा, क्या अनुवाद भी बर्तन बनाने जैसी शिल्प है, जिसे बार-बार तथा लगातार अभ्यास द्वारा ही बेहतर रूप में सीखा जा सकता है ?अनुवाद और अनुवाद कर्म के सामान्य परिचय पाने के उपरान्त प्रस्तुत अध्याय में अनुवाद की प्रकृति (अर्थात् अनुवाद - क्रिया कला के अन्तर्गत आताहै या विज्ञान के या शिल्प के) के साथ-साथ अनुवाद के विविध प्रकार एवं प्रभेद की भी चर्चा की जा रही है।

अनुवाद, लक्ष्योन्मुखी गतिविधि है। इसमें अनुवादक उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं के अनुरूप ही अपनी तकनीक में तथा अनूदित सामग्री में संशोधन करता है। आवश्यकताओं के अनुरूप किया गया इस प्रकार का संशोधन ही अनुवाद के विभिन्न प्रकारों को जन्म देता है। अनुवाद के विभिन्न प्रकारों में शब्दानुवाद, भावानुवाद अथवा सारानुवाद आदि प्रकार देखे जा सकते हैं। सामान्यतःएक विशेष प्रकार का किया गया अनुवाद किसी अन्य प्रकार के अनुवाद में भी समाहित होता है। अनुवाद के क्षेत्र में कार्य कर रहे विद्वान, अनूदित सामग्री की विशिष्ट समस्याओं संबंधी खोज करने के लिए कभी-कभी पुनरानुवाद (अनुवादानुवाद) की सहायता भी लेते हैं। अनुवादों के मूल्यांकन के लिए भी पुनरानुवाद का सहारा लिया जाता है।

इलैक्ट्रानिकी और कंप्यूटरों के क्षेत्र में हुई प्रगति का हमें आभार व्यक्त करना चाहिए, जिनके कारण अनुवाद के लिए मशीनों की सेवाएं ली जा रही हैं। इससे एक नए प्रकार के अनुवाद का अभ्युदय हुआ है। इस प्रकार के अनुवाद को'यांत्रिक अनुवाद'और'यांत्रिक-इतर अनुवाद'कहा जाता है। हम अनुवाद के किसी भी प्रकार को चुनें, लेकिन अनुवाद में मुख्य समस्या मूल लेख के सही अर्थ को समझने की है।चूंकि विभिन्न पाठों में अर्थ को कई तरीकों से व्यवस्थित किया जा सकता है, इसलिए यही अनुवाद के विभिन्न तरीकों को प्रभावित करता है।

इस इकाई के विभिन्न भागों में हम इन्हों पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करेंगेजैसा कि हम आगे देखेंगे, अनुवाद कोई आसान कार्य नहीं है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य और उसके अनुवादों को देखिए:

You are responsible for wear and tear.

अनुवाद-1: "पहनने और फाड़ने के लिए आप जिम्मेदार हैं।" (कपड़ों के अर्थ में)

अनुवाद-2: "टूट-फूट के लिए आप जिम्मेदार हैं।"

जिस व्यक्ति को अंग्रेजी भाषा के मुहावरों का बहुत ही कम ज्ञान होगा वह व्यक्ति अंग्रेज़ी के उपर्युक्त वाक्य को **अनुवाद-1**वाले भाव में समझेगा और उसी रूप में अथवा मिलते-जुलते रूप में उसका अनुवाद करेगा। दूसरी ओर, वह व्यक्ति जो wear and tear का जो सही भाव है, उसे समझ लेगा तो ठीक वैसा ही सही अनुवाद करेगा, जैसा कि **अनुवाद-2**में दर्शाया गया है। परिणामस्वरूप अनुवादक को जिस भाषा से और जिस भाषा में वह अनुवाद कर रहा है न केवल उसका ही ज्ञान होना चाहिए, बल्कि उसे दोनों

भाषाओं (स्रोतभाषा एवं लक्ष्य भाषा) के मुहावरों, लोकोक्तियों, अर्थभेदोंऔर सांस्कृतिक संदर्भों का ज्ञान भी होना चाहिए। "अनुवाद की समस्याओं" से संबंधित विषय पर हम खंड 2 में विस्तार से चर्चा करेंगे। आइए, सबसे पहले हम यह जानें कि"अनुवाद"से अभिप्राय क्या है।

2.2 अनुवाद :

यदि हम हिंदी से अंग्रेज़ी में अथवा अंग्रेज़ी से हिंदी में एक वाक्य बनाने के लिए कहें तो यह बहुत आसान कार्य लगेगा। हम सभी हिंदी के उस वाक्य को ध्यान से पढ़ेंगे और उसमें प्रयुक्त शब्दों के अंग्रेज़ी में समतुल्य शब्दों पर विचार करेंगे तथा फिर वाक्य को अंग्रेज़ी में लिख परिवर्तित कर देंगे।

उदाहरण के लिए: **राम मेरा दोस्त है। Ram is my friend**ही सरल और पर्याप्त वाक्य है। लेकिन आप निम्नलिखित अंग्रेज़ी वाक्य को किस प्रकार हिंदी में बदलेंगे:

I wonder if this is true! जी हाँ, इस वाक्य को हिंदी में बदलने से पहले आपको सोचना पड़ेगा। क्या आप सोचते हैं कि निम्नलिखित वाक्य सही है।

"यदि यह सच है तो मुझे आश्चर्य है।" अथवा क्या आप इस वाक्य को इस प्रकार लिखना चाहेंगे:

"मुझे इस सच्चाई में संदेह है।"

जैसा कि आपने देखा, अनुवाद करना कोई आसान काम नहीं है क्योंकि यह माना जाता है कि इस कार्य में समय, सक्षमता और श्रम की आवश्यकता पड़ती है।सबसे पहले हम अनुवाद की परिभाषा और उसके बाद में अनुवाद के प्रकार पर विचार किया जाएगा ।

2.2.1 अनुवाद की परिभाषा :

अनुवाद को हम"जिस भाषा (स्रोत भाषा) में मूल सामग्री उपलब्ध हो, उससे अलग भाषा (लक्ष्य भाषा) में प्रस्तुतिकरण"के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। हमें यह परिभाषा पर्याप्त नज़र आती है जबकि, ऐसा है नहीं। लेकिन ऐसा भी हो सकता है और वास्तविकता यह है कि ऐसा कभी-कभी होता भी है कि किसी अन्य भाषा के लिए आप अथवा कोई अनुवादक भी मूल पाठ में व्यक्त भाव को अनुवाद करते समय सही तरह नहीं बता पाता। उदाहरण के लिए, हम निम्नलिखित वाक्य को लेते हैं:

The house is seized of this matter.

अनुवाद-1 "इस विषय को लेकर घर जब्त कर लिया गया है।"

अनुवाद-2 "सभा इस विषय पर ध्यान दे रही है।"

जैसा कि हम इस**"अनुवाद-1"**में देख रहे हैं, यह स्पष्ट है कि केवल समतुल्य शब्दों कोढूंढ लेना ही पर्याप्त नहीं है। इसमें ऐसा करने से मूल वाक्य का भाव बिल्कुल ही विकृत हो गया है। जबकि अंग्रेज़ी के इस वाक्य का भाव वही है, जो **"अनुवाद-2"**में व्यक्त किया गया है। जबकि ऐसा भी हो सकता है कि आप अथवा कोई अन्य अनुवादक अनुवाद करते समय पाठ के मूल भाव को उतने प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत नहीं कर पाए, जिस ढंग से मूल पाठ में प्रस्तुत किया गया हो। परिणामस्वरूप अनुवाद के संबंध में दी गई उपर्युक्त परिभाषा अपर्याप्त है। मूल पाठ के अर्थ अथवा भाव को बताने वाला तथ्य अनुवाद की

परिभाषा में जरूर शामिल होना चाहिए। इस कारण हम अनुवाद की मूल परिभाषा में थोड़ा-बहुत संशोधन कर, इसे इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं:'Translation is an act of presenting a text in a language other than the one in which it was originally written, in order to convey the meaning of the original text. "अनुवाद मूल पाठ को स्रोत भाषा से इतर किसी अन्य (लक्ष्य) भाषा में रूपांतरित करने की वहप्रक्रिया है, जिसमें मूल पाठ के भाव-सम्प्रेषण का पूरा ध्यान रखा जाता है।"इस परिभाषा को अनुवाद को सामान्य परिभाषा के रूप में देखा जा सकता है। हालांकि इस परिभाषा में और भी संशोधन करना संभव है, लेकिन अब हम"अनुवाद के प्रकार"से सम्बद्ध अन्य विषयों पर विचार करेंगे।

2.3 अनुवाद और अर्थ :

अनुवाद में अर्थ को प्रतिस्थापित करने के संदर्भ में दो भाषाओं के शब्दों, वाक्यों, और शैली की तुलना नहीं की जा सकती। यह भी कह सकते हैं कि अनुवाद की गतिविधि में महत्त्वपूर्ण तत्त्व दूसरी भाषा में अर्तांतरण है।संक्षेप में अनुवाद के अर्थ की प्रकृति को देखें। तब, मूल के अर्थ की सही अभिव्यक्ति में अनुवाद के समुचित प्रकार के चयन में आसानी रहेगी।

2.3.1 अभिधार्थ (Denotative Meaning)

जिनमें अर्थ स्पष्टतः पता चलता है । साथ ही, वह इस ढंग से व्यवस्थित भी होता है, जो अधिक अर्थ न व्यक्त करके सिर्फ एक ही अर्थ व्यक्त करता है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित वाक्य को देखिए :

Most trees shed their leaves in autumn.

इस प्रकार के पाठों में शब्द का अर्थ लगभग स्पष्ट है और इसमें विषय के संबंध में कोई विवाद नहीं है। उपर्युक्त कथन**"पतझड़"** (autumn) के नाम से ज्ञात विशिष्ट मौसम में पेड़ों द्वारा पत्तियाँ गिराने जैसी घटना से संबंधित है। यही इसी वाक्य का अर्थ अथवा भाव है। सामान्यतः कोई भी व्यक्ति इस वाक्य का कोई अन्य अर्थ न निकालकर केवल यही अर्थ ही समझेगा। यह इस वाक्य का**"शाब्दिक"** अर्थ है। निम्नलिखित वाक्यों को देखिए :

1) This stone is heavy.

2) The sky was overcase with dark clouds.

3) It is a fox.

ये तीनों ही उदाहरण शाब्दिक अर्थ वाले वाक्य है।"शाब्दिक अर्थ"वाले इस प्रकार के वाक्यों को**"अभिधार्थ"**वाले वाक्यों के नाम से भी जाना जाता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी शब्द को इस प्रकार प्रयुक्त किया जाता है कि उसका अर्थ एकदम स्पष्ट नहीं हो पाता। निम्नलिखित वाक्य को देखिए :

He is a fox.

इस वाक्य में प्रयुक्त शब्द'fox'का अर्थ इससे पहले वाक्य 'Itisafox'में प्रयुक्त'fox'शब्द के अर्थ से भिन्न है। जब हम कहते है कि 'He is a fox'तो इसका यह अभिप्राय नहीं है कि वह पशु 'fox'है। शाब्दिक अर्थ में इसका भाव पशु के संदर्भ में लिया जाएगा, जबकि इस वाक्य में 'fox'से अभिप्राय उस

(व्यक्ति) में चतुर और कपटी गुण होने से है। सामान्यतः इस प्रकार के गुण'लोमड़ी' (fox) जानवर में पाए जाते हैं। इसलिए इस वाक्य He is a fox का अर्थ है कि वह (व्यक्ति) लोमड़ी की तरह चतुर और कपटी है। यह अर्थ अथवा भाव इस प्रकार के वाक्य के लक्ष्यार्थ के नाम से भी जाना जाता है।

2.3.2 लक्ष्यार्थ (Connotative Meaning)

बहुत से शब्दों में उसके अपने प्रत्यक्ष अर्थ से अतिरिक्त भी कई अर्थ जुड़े होते हैं। यह तभी स्पष्ट हो पाता है जब हम यह जान लें कि-

(1) शब्दों का इस्तेमाल कौन करता है।

(2) किन परिस्थितियों में शब्दों का इस्तेमाल किया जा रहा हैऔर

(3) अन्य किन शब्दों के संबंध में शब्दों को इस्तेमाल किया गया है। इसे अतिरिक्त अर्थ (additional meaning) अथवा साहचर्य अर्थ (associative meaning) अथवा भावात्मक अर्थ (emotive meaning) के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ यह जानना महत्त्वपूर्ण नहीं है कि अर्थ के इस प्रकार को व्यक्त करने के लिए कौन-सा शब्द इस्तेमाल किया जाता है। अर्थ के इस प्रकार का इस्तेमाल करने वाले की अभिवृत्ति की भूमिका यहाँ अधिक महत्त्वपूर्ण है।एक आसान-सा उदाहरण लेते हैं। समाज के कई वर्गों, विशेषतः ऊपरी मध्यम वर्गों में'टॉयलट' (शौचालय) शब्द का सीधे प्रयोग नहीं किया जाता । कई लोग इसके बदले 'men'sroom', 'ladies' room', 'wash room', 'powder room'आदि शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। जबकि आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों से संबंधित लोग ऐसा नहीं करते। वे'शौचालय', 'टॉयलट'अथवा'लैट्रिन'शब्द का इस्तेमाल करते हैं और हम सभी ने कई बार उन्हें इन्हीं शब्दों का प्रयोग करते सुना भी होगा । जब हम 'wash room'अथवा इससे भी आसान 'loo'शब्द इस्तेमाल करते हैं तो हम जानते है कि इसका'टॉयलट'की अपेक्षा अधिक विस्तृत अर्थ है और वास्तविकता भी यह है कि इसका टॉयलट की अपेक्षा अधिक व्यापक अर्थ है। साथ ही, लोग मज़ाक अथवा व्यंग्य के भाव में भी इसी शब्द का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए-**'आप तो बड़े आदमी हैं।'**इस तरह के वाक्य में'बड़ा आदमी'का भाव सामान्यतः (हमेशा नहीं) कटाक्ष के भाव में इस्तेमाल किया जाता हैऔर इस वाक्य में भी यही भाव समाविष्ट है। जैसा कि हमने ऊपर बताया है, इस प्रकार के अतिरिक्त पहलू, शब्द को अन्य भाव वाला अथवा अलग प्रकार का बना देते हैं। इसे ही लक्ष्यार्थ कहते हैं अर्थात् जो कहा जाए उससे पृथक एक अन्य अर्थ उसमें निहित हो, जो प्रकट न होकर लक्षित हो। इसलिएअनुवादक को अनुवाद करते समय इस अंतर को ध्यान में रखना चाहिए। यदि वह इसे ध्यान में नहीं रखेगा तो यह हो सकता है कि अनुवाद'सही'न हो या फिर अनूदित रूप का उसके पाठकों पर जो असर पड़े, वह मूल लेखक द्वारा व्यक्त किए गए मूल भाव से अलग अथवा उल्टा हो।

अर्थ के दो प्रकारों के बीच विद्यमान इस अंतर के आधार पर अनुवादक को अनुवाद के विभिन्न प्रकारों में से उस प्रकार का चयन करना पड़ता है, जो अन्य की अपेक्षा अधिक उचित हो। साथ ही, अनुवाद करते समय अनुवादक को अभिधार्थ अथवा लक्ष्यार्थ में से किसी एक को समाहित करना पड़ता है। उदाहरण के लिए जो पाठ लक्ष्यार्थ अथवा गुणार्थक नहीं होते उनके लिए शब्दशः अनुवाद और शब्दानुवाद उपयुक्त है। सामान्यतः इस प्रकार के पाठ वैज्ञानिक और पारिभाषिक शब्दों वाले पाठ होते हैं।

अतः जिन पाठों में शब्दों का बाहुल्य होता है, उनका लक्ष्यार्थ सहित मुक्तानुवाद और भावानुवाद अधिक उपयुक्त है। सामान्यतः कविताओं, कहानियों और उपन्यासों जैसी साहित्यिक सामग्रियों में अर्थ विशेष होता है। तब उस स्थिति में शब्द को कैसे पहचानेंगे जो अभिधार्थ अधवा लक्ष्यार्थ भाकम व्यक्त हआ हो? पाठ को ध्यान से पढ़कर ही हम उस शब्द विशेष को पहचान पाएँगे। अर्थ की दृष्टि से इस पहलू पर विस्तार से व्याख्या इस पाठ्यक्रम की अन्य इकाइयों में की जाएगी।

2.4 अनुवाद के प्रकृति :

'अनुवाद' एक कर्म के रूप में बेहद जटिल क्रिया है और एक विधा के रूप में बहुत संश्लिष्ट। यही कारण है कोई इसे 'अनुवाद कला' कहता है, कोई 'अनुवाद शिल्प', तो कोई 'अनुवाद विज्ञान' । अनुवाद कर्म के मर्म को समझने के लिए अनुवाद की प्रकृति और अनुवाद के प्रभेद को जानना-समझना बहुत ज़रूरी है। चर्चा की शुरुआत अनुवाद की प्रकृति से करते हैं।

अनुवाद सिद्धान्त एवं व्यवहार पर उपलब्ध पुस्तकों के शीर्षकों को देखने से मन में यह प्रश्न स्वतः उठता है कि आखिर अनुवाद की प्रकृति क्या है ? विद्वानों का एक वर्ग इसे 'कला' मानता आया है तो दूसरा वर्ग इसके विपरीत इसे 'विज्ञान' की श्रेणी में रखना पसन्द करता है। एक वर्ग ऐसा भी है जो अनुवाद को कला या विज्ञान की श्रेणी से अलग शिल्प की कोटि में रखता है। ऐसे में अनुवाद की प्रकृति पर विचार करना ज़रूरी हो जाता है। पहले हम इसके विज्ञान पक्ष पर विचार करते हैं।

2.4.1 अनुवाद का वैज्ञानिक पक्ष :

विज्ञान का साधारण अर्थ होता है 'विशिष्ट ज्ञान'। मगर आज 'विज्ञान' शब्द केवल विशिष्ट ज्ञान तक सीमित न रह कर समूचे वैज्ञानिक व तकनीक चिन्तन, अनुशासनोंयथा- भौतिकी, रसायन, गणित, जीवविज्ञान, कम्प्यूटर आदि को अपने में समाहित कर चुका है जिसमें पूर्ण सार्वभौमिक सत्यता (universal truth) विद्यमान होती है। इसे सार्वभौमिक सत्यता इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह सामान्यतः स्थान, समय व परिवेश से प्रभावित नहीं होती। इसमें हमेशा 2 + 2 = 4 या H2 +0=H20 होता है । परन्तु अनुवाद में ऐसी सार्वभौमिक सत्यता नहीं होती। हर अनुवादक से उसे एक नया रूप मिलता है। फिर अनुवाद में अनिवार्यतः अनुवादक के युग, समाज, भौगोलिक परिवेश आदि का प्रभाव भी मौजूद रहता है। अनुवाद को उस अर्थ में विज्ञान नहीं कहा जा सकता जिस अर्थ में भौतिकी, रसायन, गणित, जीवविज्ञान आदि को विज्ञान कहा जाता है। अनुवाद को विज्ञान मानने के पीछे कारण यह है किअनुवाद की प्रक्रिया में विज्ञान की भाँति ही विश्लेषण, तुलना, निरीक्षण, अनुशीलन आदि सोपान होते हैं।

डार्टेस्ट ने अनुवाद को अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान (Applied Linguistics) की एक शाखा के रूप में परिभाषित करते हुए लिखा है कि अनुवाद, अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान की वह शाखा है जिसमें विशेषतः एक प्रतिमानित प्रतीक समूह से दूसरे प्रतिमानित प्रतीक समूह में अर्थ को अन्तरित करने की समस्या या तत्सम्बन्धी तथ्यों पर विचार-विमर्श किया जाता है :

Translation is that branch of applied science of language which is specifically concerned with the problem -or the fact- of the transference of meaning from one set

of patterned symbols into another set of patterned symbols. (-Loche & Booth, 1995, pg. 124)

अनुवाद को अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान के अन्तर्गत शामिल करने का कारण यह है कि अनुवाद कर्म में स्रोत भाषा से लक्ष्य-भाषा तक पहुँचने में हम जिन प्रक्रियाओं से होकर गुजरते हैं उसका वैज्ञानिक विश्लेषण (scientific analysis) किया जा सकता है। भाषा विज्ञानियों का मानना है कि अनुवाद क्रिया में पहले स्रोत भाषा का विकोडीकरण (decoding of Source Language) होता है जिसका बाद में लक्ष्य भाषा में पुनः कोडीकरण (encoding of Target Language) किया जाता है। अतः अनुवाद कर्म में विज्ञान का कुछ गुण अवश्य है परन्तु इतने भर से इसको पूर्णतः वैज्ञानिक विधा नहीं माना जा सकता।

2.4.2 अनुवाद का कला पक्ष :

कला एक प्रकार की सर्जना (creation) है। शायद यही कारण है कि सृजनात्मक साहित्य को कला की श्रेणी में रखा जाता है। जब सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद किया जाता है तो वह मात्र शाब्दिक प्रतिस्थापन नहीं होता बल्कि अनुवादक को मूल लेखक के उस महान् जीवन क्षण को फिर से जीना होता है जिससे अभिभूत होकर कवि या रचनाकार ने उस रचना को अंजाम दिया। इसलिए आग्निस गेर्गली ने कहा है Translation must find and reproduce the impulse of the original work. हमेशा सहज समतुल्यता की खोज में अनुवादक को अक्सर पुनः सृजन (Recreation) करना पड़ता है, जिसमें अनुवादक के सौन्दर्यबोध एवं सृजनशील प्रतिभा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शैली के शब्दों में कहें तो सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद एक प्रकार से कलात्मक प्रक्रिया है। साहित्यिक अनुवाद का पुनःसृजित रूप निम्नलिखित दो अनुवादों से स्पष्ट हो जाएगा :

उदाहरण-1

मूल : लूटि सकै तौ लूटियौ, राम नाम है लूटि ।
पीछे ही पछिताहुगे, यह तन जैहै छूटि ॥

- **कबीर**

अनुवाद:

Rejoice O Kabir
In this great feast
of Love!
Once death
knocks at your door,
This golden moment
will be gone Forever!

-Translated by Sahdev Kumar

उदाहरण-2

मूल: One Moment in Annihilation's Waste,
One Moment, of the Well of Life to taste-
The Stars are setting and the Caravan,
Starts for the dawn of Nothing- oh, make haste!

-Rubaiyat of Omar Khayyam

(Fitzgerald)

अनुवाद:

अरे, यह विस्मृति का मरू देश
एक विस्तृत है, जिसके बीच
खिंची लघु जीवन-जल की रेख,
मुसाफिर ले होठों को सींच ।
एक क्षण, जल्दी कर ले देख

बुझे नभ-दीप, किधर पर भोर बढ़ चला शून्य उषा की ओर !

कारवाँ मानव का कर कूच **- ख़ैयाम की मधुशाला**

हिन्दी अनुवाद: हरिवंशराय बच्चन

उपर्युक्त दोनों अनुवाद मूल के आधार पर नई रचनाएँ बन गई हैं। ये अनुवाद नहीं बल्कि मूल का 'अनुसृजन' है। इसमें मूल लेखक की भाँति अनुवादक की सृजनशील प्रतिभा की स्पष्ट झलक देखने को मिल रही है। राजशेखर दास ने ठीक ही कहा है कविता का अनुवाद कितना ही सुन्दर क्यों न हो वह केवल मूल विचारों पर आधृत एक नई कविता ही हो सकती है।यही कारण है कि साहित्यिक अनुवाद को एक कलात्मक प्रक्रिया माना गया है।

2.4.3 अनुवाद का शिल्प पक्ष :

कई भाषाविज्ञानियों का मानना है कि अनुवाद - कार्य एक शिल्प-कर्म है। उनका तर्क है कि स्रोत भाषा में व्यक्त सन्देश को लक्ष्य - भाषा में प्रस्तुत करने में अनुवादक के कौशल, उसके भाषा - चातुर्य की अहम भूमिका होती है। यह शिल्प शब्द अंग्रेजी के skill व craft के निकट पड़ता है। न्यूमार्क ने अनुवाद कर्म को 'शिल्प' स्वीकारा है 'अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में लिखित सन्देश को दूसरी भाषा में उसी सन्देश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है। फिर अनुवाद में जितना अधिक अभ्यास किया जाएगा या प्रशिक्षण लिया जाएगा, अनुवाद उतना ही सुन्दर होता जाएगा। इसके अलावा कला और शिल्प का अभिन्न सम्बन्ध भी रहा है। जहाँ कला होगी वहाँ निश्चय ही शिल्प होगा और इसके विपरीत जहाँ शिल्प होगा वहाँ अनिवार्यतः कला होगी। अतः अनुवाद में अंशतः शिल्प का तत्त्व भी समाहित है।

2.4.4 अनुवाद में कला-विज्ञान - शिल्प के तीनों तत्त्व :

नाइडा द्वारा प्रस्तावित अनुवाद प्रक्रिया में निम्नलिखित तीन सोपानों का उल्लेख है :

1.विश्लेषण, 2.अन्तरण और 3.पुनर्गठन

दरअसल ये तीनों चरण क्रमानुसार विज्ञान, शिल्प और कला के ही तीनों सोपान हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अनुवाद प्रक्रिया का पहला चरण है मूल पाठ का 'वैज्ञानिक विश्लेषण', दूसरा सोपान है मूल पाठ केसन्देश व शिल्प का 'अन्तरण' कौशल तथा तीसरा सोपान है लक्ष्य भाषा में उसका 'कलात्मक पुनर्गठन' । मगर अनुवाद में ये तीनों (कला, विज्ञान और कौशल) का अनुपात सदैव समान नहीं रहता। इन तीनों का अनुपात अनुद्य सामग्री की प्रकृति पर निर्भर रहता है। सृजनात्मक सामग्री में कला तत्त्व काप्राधान्य होने के कारण इसके अनुवादक में भी सृजनात्मक प्रतिभा का होना अपरिहार्य माना गया है। यही कारण है कि साहित्यिक अनुवादक अनुवाद को कलात्मक क्रिया मानते आए हैं। इसके विपरीत तकनीकी या वैज्ञानिक सामग्री के अनुवादक को अनुद्य विषय का सम्यक ज्ञान होना ज़रूरी है। अनुवादक का विषय ज्ञान जितना अधिक होगा अनुवाद उतना सटीक होगा। अन्यथा 'woody portion' का अनुवाद 'काष्ठमय अंश' हो जाने में देर नहीं लगती।

इसके अलावा तकनीकी - वैज्ञानिक सामग्री के अनुवाद में हमें कुछ नियमों का अनुसरण भी करना पड़ता है। इसीलिए तकनीकी विषय के अनुवाद में अनुवादक का कौशल बखूबी काम करता है। इस सन्दर्भ

में नाइडा का कथन C Translation is far more than a Science, it is also a Skill and in the ultimate analysis fully satisfactory translation is always an Art.'अर्थात् अनुवाद विज्ञान से बढ़कर है, वह कौशल भी है और अन्तिम विश्लेषण में पूर्णतः सन्तोषजनक अनुवाद हमेशा एक कला रहा है। परन्तु डॉ. नगेन्द्र अनुवाद को एक स्वतंत्र विधा मानते हैं। उनका कहना है: 'अनुवाद पारिभाषिक अर्थ में न विज्ञान है और न कला। इसके अतिरिक्त उसे निश्चित रूप से शिल्प भी कहना तर्कसंगत नहीं होगा। वास्तविक स्थिति यह है कि आधार विषय के अनुसार अनुवाद में इन तीनों के ही तत्त्वों का यथानुपात समावेश रहता है। साहित्यिक अनुवाद विशेष रूप से काव्यानुवाद का अन्तर्भाव जहाँ कला की परिधि में ही हो जाता है, वहाँ वैज्ञानिक तथा शास्त्रीय अनुवाद में विज्ञान के आधार तत्त्वों का प्राधान्य रहता है जबकि शिल्प का प्रयोग प्रायः सर्वत्र ही मिलता है। इस प्रकार अनुवाद एक स्वतंत्र विधा है।'

2.5 अनुवाद के प्रकार :

अनुवाद एक प्रायोगिक विधा है। इसकी प्रक्रिया में प्रयोग, प्रयोजन, प्रयोक्ता आदि कई तत्व समाविष्ट होते हैं।इसी आधार पर अनुवाद को अनेक भेदों-प्रभेदों में विभाजित किया जा सकता है।

1. प्रक्रिया के आधार पर

प्रक्रिया के आधार पर वर्गीकरण में मूलपाठ की संरचना, बुनावट और उसमें निहित प्रभाव तथा कथ्य को आधारपर बनाया जाता है। इसके अतंर्गत पाठधर्मी और प्रभावधर्मी अनुवाद आते हैं जोअनुवाद के एकअलग परिप्रेक्ष्यकी निर्मिति करते हैं।

(अ)पाठधर्मी अनुवाद

इस अनुवाद प्रकार में अनुवादक पाठ को स्वायत्त एवं स्वनिष्ठ मानता है और अनुवाद को पाठ से बाहर जाने की छूट नहीं देता। पाठ की भाषा के विभिन्न स्तरों पर वह पहले अध्ययन-विश्लेषण करता है और तत्पश्चात् उसमें निहित अर्थ को अनूदित पाठ में व्यंजित करने के लिए मूलकृति की संरचना और बुनावट को अपना मॉडल बनाता है। पाठ का यह आयाम मूलतः वाक्य-विन्यास और अर्थविज्ञान पर आधारित है । अनुवाद का यह रूप वैज्ञानिक साहित्यों एवं कानूनी दस्तावजों के साथ-साथ विधि एवं संसदीय साहित्य के अनुवाद में ज्यादा प्रभावशाली है ।

(आ) प्रभावधर्मी अनुवाद

इसमें अनुवादक पाठ को लेखक और पाठक के बीच संबंध स्थापन का एक उपकरण मानता है। लेखक इस स्थापित संबंध से उत्पन्न प्रभाव का पाठक पर पड़े प्रभाव के आधार पर मूल्यांकन करता है। यह आयाम वाक्य-विन्यास और अर्थविज्ञान के साथ-साथ भाषा व्यवहार शास्त्रा (प्रैग्मेटिक्स) परअपना ध्यान केंद्रित करता है। इससे यह अपेक्षा रखी जाती है कि मूलपाठ पढ़ते समय मूल पाठक केऊपरजिस प्रकार का प्रभाव पड़ता है, ठीक उसी प्रकार का प्रभाव लक्ष्यभाषा के पाठकों पर भी पड़नाचाहिए।सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में इसी प्रकार के अनुवाद की अपेक्षा रहती है।

2. पाठ के आधार पर : अनूदित पाठ कथ्य और अभिव्यक्त कार्य का समन्वित रूप होता है तथापि कहीं कथ्य प्रधान हो जाता है तो कहीं अभिव्यक्ति प्रधान ।

(अ) पूर्ण अनुवाद

इस अनुवाद प्रकार में स्रोतपाठ का 'पाठ' सभी दृष्टियों से लक्ष्यभाषा में पूर्ण रूप से अनूदित किया जाता है अर्थात् प्रत्येक अंश का, यानि शब्द, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य, अनुच्छेद आदि को पूर्ण रूप से अनूदित किया जाना पूर्ण अनुवाद कहलाता है।

(आ) आंशिक अनुवाद

इस प्रकार के अनुवाद में स्रोतभाषा के पाठ के किसी अंश या कुछ अंशों के बिना अनुवाद में स्रोतभाषा के कुछ शब्दों और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का अनुवाद नहीं हो पाता। इसी प्रकार आँचलिक शब्दों का भी अनुवाद नहीं हो पाता। इस प्रकार अननुवादनीय होने के कारण उनको छोड़ दिया जाता है। उदाहरण स्वरूप-भारतीय संस्कृति के ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, संन्यास, ब्राह्मण, ठाकुर आदि का अनुवाद नहीं हो सकता। ग्लास्नोस्त, स्पूतनिक और आर्यभट्ट आदि भी इसी प्रकार के शब्द हैं जिनको यथावत छोड़ दिया जाता है। यहाँ यह ध्यान दिलाना संगत होगा कि प्रभावधर्मी अनुवाद आमतौर पर पूर्ण अनुवाद सापेक्ष होता है जबकि पाठधर्मी अनुवाद आंशिक अनुवाद की ओर अधिक झुका प्रतीत होता है।

(इ) समग्र अनुवाद

समग्र अनुवाद से अभिप्राय यह है कि स्रोतभाषा पाठ के सभी भाषिक स्तरों को लक्ष्यभाषा के पाठ में प्रतिस्थापित किया जाए। यद्यपि इसमें प्रतिस्थापन का प्रयत्न समग्र रूप में होता है, किंतु यह प्रतिस्थापन समतुल्यता के आधार पर सभी स्तरों पर नहीं हो पाता । इस प्रकार के अनुवाद में समतुल्यता की अनिवार्यता को बनाए रखना संभव नहीं है, क्योंकि इसमें स्रोतपाठ को सभी स्तरों पर अनूदित करने का प्रयास रहता है।

(ई) परिसीमित अनुवाद

स्रोतभाषा की पाठ्य सामग्री का समतुल्यता के आधार पर लक्ष्यभाषा की पाठ्य सामग्री में भाषा व्यवस्था के किसी एक स्तर पर प्रतिस्थापन करना परिसीमित अनुवाद है। यह अनुवाद केवल ध्वन्यात्मक या लेखिमिक स्तर पर अथवा व्याकरणिक और शब्दगत स्तरों में से किसी एक स्तर पर होगा। परिसीमित अनुवाद में व्याकरणिक और कोशगत स्तरों का एक साथ अनुवाद करने से ही सार्थक अनुवाद संभव है। परिसीमित अनुवाद के चार भेद होते हैं, जैसे

(i) स्वनिमिक, (ii) लेखिमीय, (iii) व्याकरणिक, और (iv) शब्दकोशीय आदि।

(i) स्वनिमिक अनुवाद

इसका संबंध केवल उच्चारण से है जिसमें मूल भाषा की स्वनिम व्यवस्था के स्थान पर लक्ष्यभाषा की स्वनिम व्यवस्था आ जाती है। परंतु सामान्यतया व्याकरण तथा शब्दकोश अप्रभावित रहते हैं। इसका आधार है- मूलभाषा तथा लक्ष्यभाषा के समान स्वनिक अभिलक्षणों- घोषत्व, प्राणत्व आदि स्वनिमिक इकाइयाँ हैं। मूलभाषा की उन स्वनिमिक इकाइयों के स्थान पर लक्ष्यभाषा की वे स्वनिमिक इकाइयाँ आ जाती हैं जिनमें स्वनिक अभिलक्षणों की अधिकतम समानता मिलती है; जैसे अंग्रेजी 'फ़' के स्थान पर मराठी 'फ़' (जैसे अंग्रेजी: फ़ार्मेसी- मराठीः फार्मेसी) उर्दू के ज़ के स्थान पर हिंदी में ज का प्रयोग भी ऐसा ही

है। स्वनिमिक अनुवाद का स्वेच्छा से व्यवहार करने वालों में उल्लेखनीय हैं अभिनेता और विदूषक लोग। जब वे कला प्रदर्शन के दौरान विदेशी भाषा या बोली की ध्वनियों का सायास अनुकरण (उच्चारण) करते हैं तो वे लक्ष्यभाषा की उच्चारण व्यवस्था को स्वभाषा में ले आते हैं- स्वभाषा में उसका अनुवाद (ट्रांसफर-संक्रमण) कर देते हैं। यही स्थिति विदेशी भाषा सीखने वाले छात्रों के अशुद्ध उच्चारणों में होती है जो वे अनायास तथा असतर्कतापूर्वक करते हैं। दूसरी स्थिति को भाषा-अधिगम के प्रसंग में स्वनिमिक व्याघात कहा जाता है- मातृभाषा की व्यवस्था को अन्य भाषा (लक्ष्यभाषा) की स्वनिम व्यवस्था पर आरोपित किया जाता है। परंतु अनुवाद की शब्दावली में इसे हम अन्य भाषा (लक्ष्यभाषा) से मातृभाषा में स्वनिमिकअनुवादकहेंगे।

स्वनिमिक अनुवाद के अनेक प्रसंगों में व्याकरण तथा शब्दकोश अप्रभावित रहते हैं। परंतु कुछ ऐसी परिस्थितियाँ भी हैं जिनमें लक्ष्यभाषा के ऐसे शब्दों का चयन किया जाता है जिनकी स्वनिक संरचना में मूलभाषा के शब्दों की स्वनिक संरचना से अधिकतम निकटता होती है। ऐसी परिस्थितियाँ है फिल्म डबिंग तथा कविता का अनुवाद। इन स्वनिमिक विशेषताओं को स्वनिमिक अनुवाद के नाम से भी अभिव्यक्ति किया जा सकता है।

(ii) लेखिमीय अनुवाद

इसका संबंध किसी लिपि के चिह्नों (लेखिमों/वर्णों) की केवल आकृति से है, उच्चारण से बिल्कुल नहीं। किसी एक लिपि के किन्हीं चिह्नों को किसी अन्य लिपि के समान या लगभग समान चिह्नों से प्रतिस्थापित करना लेखिमीय अनुवाद कहलाता है।

(iii) व्याकरणिक अनुवाद

इसमें मूलभाषा पाठ की व्याकरणिक इकाइयों के स्थान पर लक्ष्यभाषा पाठ की समानार्थक व्याकरणिक इकाइयों का प्रयोग किया जाता है। परंतु शब्दकोश मूलभाषा-पाठ का ही रहता है।

मूल अंग्रेजी: ही विल ट्रैवल बाइ एक्सपे्रस ट्रेन। (Hewill travel by express train)

लक्ष्य हिंदी: वह एक्सपे्रस ट्रेन से ट्रैवल करेगा।

द्विभाषिकता की स्थिति में इसी को 'कोडमिश्रण' कहते हैं जो एक सामान्य और वास्तविक स्थिति है।

(iv) शब्दकोशीय अनुवाद

मूलभाषा पाठ के शब्दकोश के स्थान पर लक्ष्यभाषा पाठ का शब्द कोश आ जाता है, परंतु व्याकरण मूल का ही रहता है।

मूल अंग्रेजी- ही विल ट्रैवल बाइ एक्सप्रेस ट्रैन ।

लक्ष्य हिंदी: ही विल जा बाई तेज रफ्तार रेलगाड़ी।

यह भी द्विभाषिकता से संबंधित कोडमिश्रण का एक रूप है परंतु इसका व्यवहार अत्यंत सीमित है। महानगरवासी कॉलेज छात्रों की स्लैंग में इसके उदाहरण प्रायः मिल जाते हैं। यथा-वह स्पेशल ट्रेन से जाएगा

अथवा वह उस खास गाड़ी से जाएगा वह मैथ का कोर्स ले लेगा। इसमें शब्द प्रति शब्द, शाब्दिक और मुक्त अनुवाद के रूप भी दिखाई देते हैं।

1. शब्द प्रति शब्द अनुवाद

यह अनुवाद शब्द के स्तर पर होता है। इसमें रूपिमिक व्यवस्था को भी ध्यान में रखा जाता है। इस प्रकार के अनुवाद में शब्द पर ही ध्यान दिया जाता है न कि वाक्य योजना पर जैसे -

मूल:He is going.
अनु: वह है जा रहा।
मूल:I am going home.
अनु: मैं हूँ जा रही घर।
मूल:I am going home.

अनु: यदि कस्टम अधिकारी है नहीं सावधान।

चूँकि यह एक प्रकार का अनुवाद 'शब्द संग्रह' प्रतीत होता है। अतः यह अनुवाद प्रकार सामान्यतः श्रेष्ठ नहीं माना जाता, क्योंकि भाषा की लघुतम इकाई वाक्य होने से 'शब्द' अनेकाधिक अवसरों पर अनूदित होने के पश्चात अपने 'एकल' अर्थ से गौण हो जाते हैं। इसे मक्षिका स्थाने मक्षिका निपात भी कहा जाता है।

2. **शाब्दिक अनुवाद**

मूलपाठ के शब्दक्रम की अपेक्षा इसमें वाक्य संरचना को ध्यान में रखकर अनुवाद किया जाता है। वाक्य-विन्यास के अनुसार मूल पाठ का यथासंभव अनुवाद किया जाता है। इसमें एक भाषा के भावों का दूसरी भाषा में रूपातंरण करते हुए प्रत्येक शब्द, पदबंध, वाक्य, उपवाक्य, आदि का अनुवाद किया जाता है। इसे स्थानापन्न अथवा कभी-कभी कोशगत अनुवाद भी कहा जाता है क्योंकि मूल रचना के प्रत्येक शब्द के लिए शब्द रखना होता है। ज्ञान, विधि, प्रौद्योगिकी तथा गणित से संबंधित सूचनापरक साहित्य में यह पद्धति अपनाई जाती है। इसमें प्रत्येक शब्द और वाक्य का अपना आशय होता है। प्राचीन धर्म ग्रंथों के अनुवाद में भी इस विधि का प्रयोग किया जाता है क्योंकि इसमें मूल रचना के शब्दों का विशेष महत्व होता है तथापि साहित्यिक पाठ के लिए यह विधि अधिक उपयोगी नहीं है।

मूल: Burn the lamp
अनु: बत्ती जलाओ
मूल: It is an Interesting point.
अनु: यह एक रोचक बिंदु है।
मूल: There is a custom amongst the Red Indians

अनु: लाल भारतीयों (रेड इंडियन्स) में एक रिवाज है।

3. भावानुवाद

इसमें मूल कृति के शब्द चयन, वाक्य-रचना आदि पर ध्यान न देकर उसके भावार्थ को पकड़ने का प्रयास रहता है। शाब्दिक अनुवाद में अनुवादक का ध्यान मूल सामग्री की भाषा पर होता है लेकिन भावानुवाद में अनुवादक का ध्यान लक्ष्यभाषा की शब्द-रचना, वाक्य विन्यास, मुहावरे-सौष्ठव आदि की योजना पर अधिक होता है। कोशगत अनुवाद के विपरीत भावानुवाद में स्रोतभाषा की भाषिक अभिव्यक्तियों की गंध लक्ष्यभाषा में नही आ पाती किन्तु भाव-संवेदना की उसमें अभिव्यिक्ति अवश्य होती है। अति लघुतम एवं संश्लिष्ट अर्थ-छवियों की यहाँ भी प्रधानता रहती है। कभी-कभी इसे sense for sense translation अथवा Free Translation भी कहा जाता है। जोड़ने-छोड़ने की प्रवृत्ति लगातार बनी रहती है। अतः अनुवादक को सावधानी बरतनी चाहिए। यदाकदा मूलपाठ का रसास्वादन लक्ष्यपाठ में पाठक नहीं कर पाता है। शेक्सपीयर और प्रेमचंद के नाटकों के संवाद में इस प्रकार के अनुवाद प्रायः देखे गए हैं।

मूल: तरूण तपस्वी -सा वह बैठा।

अनु: He set envisaging the death of God.

मूल: आपने मुझसे ज्यादा देखी है।

अनु: You are far more experienced than me.

मूल: खून का घूंट पीना।

अनु: To suppress one's furry.

4. **छायानुवाद**

स्रोतपाठ पढ़ने के बाद अनुवादक जो समझता या अनुभव करता है तथा उसके मन पर उसका जो प्रभाव पड़ता है, उसके संदर्भ में वह मूलपाठ का लक्ष्यभाषा में जिस प्रकार 'कथ्य' का रूपांतरण करता है उसे छायानुवाद कहते हैं। इसमें अनुवादक को पूरी छूट होती है कि वह मुख्य भाव को लेकर लक्ष्यपाठ की रचना करें। इस प्रकार छायानुवाद में मूल की छाया मात्रा होती है। अर्थात् उसके कथ्य का अनुकूलन लक्ष्यभाषा की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों के अनुसार किया जाता है। यह एक प्रकार का रूपांतरण है जो देशीयता के पुट से कथ्य को सशक्ता प्रदान करता है।शेक्सपीयर के नाटक 'डमतबींदजवि अमदपबम' का अनुवाद भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 'दुर्लभ बंधु' या 'वंशपुर का महाजन' नाम से किया है, जिसमें भारतेन्दु ने सभी पात्रों के नामों का और वातावरण का भारतीयकरण किया है। इस प्रकार छायानुवाद मूल कृति के कथ्य को लिए होता है, किंतु इसका सारा परिधान एवं परिवेश लक्ष्यभाषा की स्थानीय संस्कृति से जुड़ा हुआ होता है। इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक की सर्जनात्मक प्रतिभा का होना वांछित होता है तभी मूल रचना का आत्मसातीकरण संभव होता है।

3. गद्य-पद्य के आधार पर अनुवाद :

1. गद्यानुवाद

गद्यानुवाद सामान्यत: गद्य में किए जानेवाले अनुवाद को कहते हैं। किसी भी गद्य रचना का गद्य में ही किया जाने वाला अनुवाद गद्यानुवाद कहलाता है। किन्तु कुछ विशेष कृतियों का पद्य से गद्य में भी अनुवाद किया जाता है। जैसे 'मेघदूतम्' का हिन्दी कवि नागार्जुन द्वारा किया गद्यानुवाद।

2. पद्यानुवाद

पद्य का पद्य में ही किया गया अनुवाद पद्यानुवाद की श्रेणी में आता है। दुनिया भर में विभिन्न भाषाओं में लिखे गए काव्यों एवं महाकाव्यों के अनुवादों की संख्या अत्यन्त विशाल है। इलियट के 'वेस्टलैण्ड', कालिदास के 'मेघदूतम्' एवं 'कुमारसंभवम्' तथा टैगोर की 'गीतांजलि' का विभिन्न भाषाओं में पद्यानुवाद किया गया है। साधारणत: पद्यानुवाद करते समय स्रोत-भाषा में व्यवहृत छन्दों का ही लक्ष्य-भाषा में व्यवहार किया जाता है।

3. छन्दमुक्तानुवाद

इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक को स्रोत-भाषा में व्यवहार किए गए छन्दों को अपनाने की बाध्यता नहीं होती। अनुवादक विषय के अनुरूप लक्ष्य-भाषा का कोई भी छन्द चुन सकता है। साहित्य में ऐसे अनुवाद विपुल संख्या में उपलब्ध हैं।

4. साहित्य विधा के आधार पर अनुवाद

1. काव्यानुवाद

स्रोत-भाषा में लिखे गए काव्य का लक्ष्य-भाषा में रूपान्तरण काव्यानुवाद कहलाता है। यह आवश्यकतानुसार गद्य, पद्य एवं मुक्त छन्द में किया जा सकता है। होमर के महाकाव्य 'इलियड' एवं कालिदास के 'मेघदूतम्' एवं 'ऋतुसंहार' इसके उदाहरण हैं।

2. नाट्यानुवाद

किसी भी नाट्य कृति का नाटक के रूप में ही अनुवाद करना नाट्यानुवाद कहलाता है। नाटक रंगमंचीय आवश्यकताओं एवं दर्शकों को ध्यान में रखकर लिखा जाता है। अत: इसके अनुवाद के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। संस्कृत के नाटकों के हिन्दी अनुवाद तथा शेक्सपियर के नाटकों के अन्य भाषाओं में किए गए अनुवाद इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

3. कथा अनुवाद

कथा अनुवाद के अन्तर्गत कहानियों एवं उपन्यासों का कहानियों एवं उपन्यासों के रूप में ही अनुवाद किया जाता है। विश्व प्रसिद्ध उपन्यासों एवं कहानियों के अनुवाद काफ़ी प्रचलित एवं लोकप्रिय हैं। मोपासाँ एवं प्रेमचन्द की कहानियों का दुनिया की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है। रूसी उपन्यास 'माँ', अंग्रेजी उपन्यास 'लैडी चैटर्ली का प्रेमी' तथा हिन्दी के 'गोदान', 'त्यागपत्र' तथा 'नदी के द्वीप' के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुए हैं।

4. अन्य साहित्यिक विधाओं के अनुवाद

अन्य साहित्यिक विधाओं के अन्तर्गत रेखाचित्र, निबन्ध, संस्मरण, रिपोर्ताज, डायरी एवं आत्मकथा आदि के अनुवाद आते हैं। पं. जवाहर लाल नेहरू की कृति 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' तथा महात्मा गांधी एवं हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथाओं के विभिन्न भाषाओं में किए गए अनुवाद इसी श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं।

5. विषय की प्रकृति के आधार पर अनुवाद :

विषय या प्रयुक्ति के आधार पर अनुवाद के अनेक भेद किए जा सकते हैं। जैसे सरकारी रिकार्डों का अनुवाद,गजेटियरों का अनुवाद, पत्रकारिता से संबद्ध अनुवाद, विधि-साहित्य का अनुवाद, ऐतिहासिक साहित्य, धार्मिकसाहित्य तथा ललित साहित्य का अनुवाद।

6. अनुवाद की प्रकृति के आधार पर :

1. मूलनिष्ठ

मूलनिष्ठ अनुवाद कथ्य और शैली दोनों की दृष्टि से मूल का अनुगमन करता है। इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक का प्रयास रहता है कि अनूदित विचार या कृति स्रोत-भाषा के विचारों एवं अभिव्यक्ति के निकट रहे।

2. मूलमुक्त

मूलमुक्त अनुवाद को भोलानाथ तिवारी ने मूलाधारित अथवा मूलाधृत अनुवाद भी कहा है। वैसे तो मूलमुक्त का अर्थ ही होता है मूल से हटकर, किन्तु किसी भी अनुवाद में विचारों के स्तर पर परिवर्तन की गुँजाइश नहीं होती। अत: यहाँ मूल से भिन्न का अर्थ है शैलीगत भिन्नता तथा कहावतों एवं उपमानों का देशीकरण करने की अनुवादक की स्वतंत्रता।

7. अनुवाद के अन्य प्रकार :

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के कुछ अन्य प्रकार भी देखे जा सकते हैं; जैसे शब्दानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद, रूपांरतण, व्याख्यानुवाद, आदर्शानुवाद और छायानुवाद। इनमें से कुछ पर पहले ही चर्चा की जा चुकी है। कुछ अन्य प्रकार निम्नवत हैं:

1.सारानुवाद

सारानुवाद मूल की मुख्य बातों का मूल-मुक्त अनुवाद होता है, परंतु इसमें महत्वपूर्ण यह है कि मूलपाठ का एकाधिक पठन करने के उपरांत ही मूल-अर्थ को ग्रहण किया जाता है। इसमें केंद्रीय विचार को बनाए रखने की आवश्यकता होती है। पहले मूल का सार पाठ बनाया जता है, तदुपरांत उसका अनुवाद किया जाता है। यह संक्षिप्त, अति संक्षिप्त, अत्यंत संक्षिप्त आदि कई प्रकार का होता है। अपनी संक्षिप्तता, सरलता-स्पष्टता तथा मूल और लक्ष्यभाषा के स्वाभाविक-सहज प्रवाह के कारण व्यावहारिक कार्यों के सामान्य अनुवाद की तुलना में सारानुवाद ही अधिक उपयोगी है। न्यायालयों द्वारा दिए गए लंबे निर्णयों तथा महत्वपूर्ण व्यक्तियों के वक्तव्यों और प्रशासनिक एवं संसदीय मामलों के सार इसी रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं। इसमें मूलपाठ का सावधानीपूर्वक पठन तथा केंद्रीय भाव को बनाए रखने की चुनौती होती है।

2. व्याख्यानुवाद

इसमें मूलपाठ का व्याख्यात्मकता के साथ अनुवाद होता है। स्पष्ट है कि इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक अथवा व्याख्याता अपने व्यक्तित्व, ज्ञान और विषय संबंधी अनुभव के आधार पर कथ्य में स्पष्टीकरण के लिए कुछ अतिरिक्त उदाहरण, प्रमाण इत्यादि जोड़ सकता है। संस्कृत श्लोकों या सूत्रों पर

भाष्य, टीका आदि इसके उदाहरण हैं । तार्किक संयोजनों में अनेक प्रसंग जोड़े जाते हैं ताकि मूल के निहितार्थ को स्पष्ट किया जा सके। हालाँकि इसमें मूल लेखक के वक्तव्य का ह्रास होने की संभावना भी बन जाती है । अतः अनुवादक को सीमा रेखा तय कर लेनी चाहिए। संस्कृत के दर्शन ग्रंथों तथा लोकमान्य तिलक के 'गीतानुवाद' के कुछ अन्य निदर्शन इसी प्रकार के अनुवाद के उदाहरण हैं। वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में वर्णनात्मक शैली भी इसी का उदाहरण है।

3. रूपांतरण

रूपांतरण का अर्थ है स्रोतभाषा के पाठ के रूप को बदलना । इसमें रूपांतरणकार मूलपाठ को अपनी रूचि, सुविधा तथा आवश्यकता के अनुसार रचनात्मक तरीके से लक्ष्य पाठक अथवा दर्शक की रुचि और आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित करके लक्ष्यभाषा में रखता है । इसमें मूल सामग्री, संक्षिप्त या विस्तृत, सरल या कठिन तथा विधा-रूप में परिवर्तित होकर आती है; जैसे उपन्यास या कहानी का नाट्य-रूपांतरण जिसमें मूलपाठ की विधा, परिवेश, पात्रा, स्थान आदि परिवर्तित हो जाते हैं । भारतीय सिनेमा तथा रंगमंच पर रूपांतरण के सफल एवं उत्तम प्रयोग द्रष्टव्य हैं। इस पाठ्यक्रम की 'रूपांतरण' इकाई में इस पर विस्तृत चर्चा की जाएगी । अनुवाद के प्रकारों की उपरोक्त स्थितियों के अतिरिक्त भाषा का आधार मानते हुए भी विद्वानों ने बहुपक्षीयता के आधार पर वर्गीकरण किया है । इसमें भाषा-बाह्य, भाषा-केंद्रित तथा मिश्रित अर्थात गौण अनुवाद प्रकारों की चर्चा आगे की जाएगी।

4. परोक्ष अनुवाद

मूल भाषा से अनुवाद न कर जब मध्यवर्ती पाठ filterसे अनुवाद किया जए तो यह परोक्ष अनुवाद कहलाता है। इसमें पहले किसी भाषा में किए गए अनुवाद से अनुवाद किया जाता है।

5. पुनरानुवाद

मूल भाषा पाठ के अनुवाद की पुनः भाषा में पुनरावृत्ति करना पुनरानुवाद है। इसमें अनुवाद कार्य दो बार होता है- पहली बार में जो लक्ष्यभाषा पाठ निष्पन्न होता है वही दूसरी बार में मूल भाषा पाठ बन जाता है, और जो भाषा पहली बार में मूल भाषा होती है वह दूसरी बार में लक्ष्यभाषा बन जाती है; जैसे- एक अंगे्रजी पाठ का हिंदी में अनुवाद और फिर उस हिंदी पाठ का अंग्रेजी में अनुवाद। कभी-कभी भारतीय भाषाओं में भी यह प्रवृत्ति देखी गई है। यह आवश्यक है कि अनुवादक तथा पुनरानुवादक अलग-अलग व्यक्ति हों तथा पुनरानुवादक मूलपाठ से परिचित न हो। इसका उद्देश्य है प्रथम अनुवाद की विशुद्धता की जाँच करना। पुनरानुवाद में निष्पन्न पाठ से मूलपाठ की 'सर्वतोमुखी निकटता' की मात्रा के अनुपात में प्रथम अनुवाद की विशुद्धता की मात्रा निर्धारित होगी। अनुवाद मूल्यांकन के लिए इस पद्धति का प्रायः प्रयोग किया जाता है।

6. सूचनानुवाद

मूलपाठ की विधा संबंधी विशेषता की उपेक्षा कर केवल विषयवस्तु अर्थात कथ्य या संदेश का अनुवाद करना सूचनानुवाद है। यह सारांश और संक्षेप से लेकर अविकल अनुवाद तक हो सकता हे। यह प्रायः व्याख्यात्मक हो जाता है और रूप, बिंब, लक्षण; शैली आदि पूर्णतः उपेक्षित रहती हैं। प्राचीन

शास्त्रीय ग्रंथों का समसामायिक भाषाओं में सूचनानुवाद करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। प्राचीन भाषाओं के माध्यम से प्रस्तुत ज्ञान के प्रति समसामयिक पाठकों को परिचित कराना इसका उद्देश्य है।

7. शैक्षिक अनुवाद

भारत तथा अनेक दूसरे देशों में जहाँ बहुभाषिकता जैसी स्थितियाँ है वहाँ ज्ञान साहित्य अमानक तथा अर्थ-साहित्यिक विधाओं में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अतः मूल रचनाओं का (लोक-साहित्य को इसमें लिया जा सकता है) मानक साहित्यिक शैली में अनुवाद करने की आवश्यकता बनी रहती है, जिससे शिक्षित वर्ग मूल रचनाओं का कुछ आस्वाद कर सके और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित व संवर्धित भी किया जा सके। यह ज्ञानात्मक साहित्य में होने वाले अनुवाद से इतर अनुवाद है।

8. रूप-प्रधान अनुवाद

रूप प्रधान अनुवाद में मूल के अर्थ पक्ष की उपेक्षा कर उसके ध्वनि-योजना पक्ष (रूप पक्ष) को संरक्षित रखते हुए लक्ष्यभाषा में अंतरित किया जाता हे। प्रायः बाल कविताओं के अनुवाद के लिए इस प्रणाली का प्रयोग किया जाता है ताकि मूलपाठ की ध्वनि योजना बनी रहे परंतु पात्र अथवा ज्ञान संकेत स्थानीय हों। यहाँ ध्वनिगत पैटर्न की समानता रखी जाती है और उनके अवसरों पर अर्थगत समानता प्रासंगिक नहीं रहती है।

8. ललित साहित्यानुवाद

ललित साहित्यानुवाद के अन्तर्गत साहित्यिक विधाओं को रखा जाता है। कविता, ललित निबन्ध, कहानी, डायरी, आत्मकथा, उपन्यास आदि। इसकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है।

9. धार्मिक-पौराणिक साहित्यानुवाद

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है धार्मिक-पौराणिक साहित्यानुवाद में विभिन्न धमोर्ं के मानक धर्मग्रंथों, गीता, भागवत, कुरआन, बाइबिल आदि का अनुवाद किया जाता है। वेद, उपनिषद आदि भी इसके साथ शामिल हैं।

10. वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामग्री के अनुवाद

वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद में विषय मुख्य है और शैली गौण। साहित्यिक अनुवाद में प्रायः 'क्यों' से ज्यादा 'कैसे' का महत्व होता है जबकि वैज्ञानिक अनुवाद में 'कैसे' से ज्यादा 'क्या' का महत्व होता है। इसमें भावानुवाद त्याज्य है और प्रायः शब्दानुवाद अपेक्षित है। इसमें पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग अपेक्षित है, ध्वन्यात्मक या व्यंग्यात्मक शब्दावली का नहीं। कुल मिलाकर इस प्रकार के अनुवाद में सूचना, संकल्पना तथा तथ्य महत्त्वपूर्ण होते हैं। सबसे ज़रूरी बात यह कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद में अनुवादक विषय का सम्यक् जानकार हो और साथ ही प्रशिक्षित भी। तभी वह अनुवाद के साथ न्याय कर पाएगा।

11. विधि का अनुवाद

इसमें एकभाषा की विधि सम्बन्धी अर्थात् कानून की सामग्री को दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है। कानून की किताबें, अदालत के मुकद्दमे, तत्सम्बन्धी विभिन्न आवेदन-पत्र, कानूनी संहिताएँ, नियम-अधिनियम, संशोधित अधिनियम आदि कानूनी अनुवाद के प्रमुख हिस्से हैं। इस प्रकार के अनुवाद में प्रत्येक शब्द का अपना विशेष महत्त्व होता है। इसमें भावार्थ नहीं शब्दार्थ महत्त्वपूर्ण होता है। इसके प्रत्येक

शब्द का अर्थ स्पष्ट होता है। एक शब्द का एक ही अर्थ अपेक्षित होता है। इस प्रकार के अनुवाद की भाषा पूरी तरह तकनीकी प्रकृति की होती है।

12. प्रशासनिक अनुवाद

प्रशासनिक अनुवाद से तात्पर्य है वह अनुवाद जिसमें एक भाषा की प्रशासन सम्बन्धी सामग्री को दूसरी भाषा में परिवर्तित किया जाता है। प्रशासनिक अनुवाद का सम्बन्ध सरकारी कार्यालयों से होने के कारण इसे कार्यालयी अनुवाद भी कहा जाता है। इस अनुवाद के अन्तर्गत प्रशासन के सभी कागजात, सरकारी पत्र, परिपत्र, सूचनाएँ-अधिसूचनाएँ, नियम-अधिनियम, प्रेस विज्ञप्तियाँ आदि आते हैं। केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, संसद, विभिन्न मंत्रालय आदि में द्विभाषी तथा बहुभाषी स्थिति के कारण प्रशासनिक अनुवाद के बिना काम नहीं चलता। यहाँ भी पारिभाषिक शब्दावली का सहारा लिया जाता है। प्रशासनिक अनुवाद में 'कथ्य' अर्थात् 'कही गई बात' महत्त्वपूर्ण होती है।

13. मानविकी एवं समाजशास्त्र का अनुवाद

मानविकी एवं समाजशास्त्र से सम्बन्धित सामग्रियों के अनुवाद के लिए अनुवादक का विषय ज्ञान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है। इस तरह का अनुवाद अनुसंधान, सर्वेक्षण, परियोजना एवं शैक्षिक आवश्यकता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता है। इस तरह के अनुवाद में सरलता एवं स्पष्टता अपेक्षित होती है।

14. संचार माध्यमों की सामग्री का अनुवाद

वर्तमान युग के संचार माध्यमों ने मानव-विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। संचार माध्यमों के जरिए ही वह देश-विदेश और समग्र दुनिया की जानकारी हासिल करता है। किन्तु विविध देशों में विविध भाषाएँ होने के कारण संचार माध्यम की सामग्री का अनुवाद महत्त्वपूर्ण बना हुआ है। इस अनुवाद के अन्तर्गत मुख्यत: दैनिक समाचार, सभी प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं, दूरदर्शन तथा आकाशवाणी आदि क्षेत्रों की सामग्री के अनुवाद आते हैं। इन सम्पर्क माध्यमों में दुनिया के सारे ज्ञान-विज्ञान की सामग्री समाहित होती है। इसमें राजनीति, व्यापार, खेल, विज्ञान, साहित्य आदि की अर्थात् जीवन से सम्बन्धित सभी विषय-क्षेत्रों की सामग्री होती है।उपर्युक्त प्रकारों के अलावा विषयाधारित अनुवाद में संगीत, ज्योतिष, पर्यावरण, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अभिलेखों, गजेटियरों आदि की सामग्री, वाणिज्यानुवाद, काव्यशास्त्र, भाषाविज्ञान सम्बन्धी अनेकानेक विषयों को शामिल किया जा सकता है।

2.6 सारांश :

सारांश के रूप में कहा जा सकता है कि अनुवाद में कला, विज्ञान और शिल्प तीनों विधाओं के तत्त्व अंशतः विद्यमान हैं। दूसरे शब्दों में, अनुवाद के विश्लेषण में वैज्ञानिकता है, उसकी सिद्धि में कलात्मकता जिसके लिए आवश्यकता होती है शिल्पगत कौशल की। अनुवाद की परिभाषा तथा अनुवाद के प्रकार को भी विस्तृत रूप से जाना है।

- अनुवाद कितने प्रकार का होता है और साथ ही प्रत्येक प्रकार के अनुवाद की कौन-कौन सी मुख्य विशेषताएँ हैं।
- अर्थ के विभिन्न प्रकार और अनुवाद में उनकी क्या महत्ता है, तथा

- एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद के लिए उसके समुचित प्रकार के चयन और मूल पाठ की प्रकार के बीचक्या संबंध होता है।

2.7 बोध प्रश्न :

1. अनुवाद की परिभाषाऔर अनुवाद का अर्थ को लिखिए।
2. अनुवाद के प्रकारों को सोदाहरण रूप से लिखिए।

2.7 संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. अनुवाद विज्ञान – भोलानाथ तिवारी **,** किताब महल।

2. अनुवाद कला – विश्वनाथ अय्यर **,** पराग प्रकाशन **,** दिल्ली।

3. प्रामाणिक आलेखन और टिप्पणी – विराज **,** विश्वविद्यालय प्रकाशन।

****

- डॉ. सूर्य कुमारी. पी.

3. अनुवाद और भाषा-विज्ञान

उद्देश्य

- इस इकाई में आप भाषा का अनुवाद एवं अनुवाद की भाषा के बारे में सामान्य परिचय पा सकेंगे।
- अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान एवं अनुवाद के सम्बन्ध को रेखांकित कर सकेंगे।
- भाषा-विज्ञान एवं अनुवाद के अंतः सम्बन्ध को पहचान सकेंगे।
- अनुवाद का महत्व 'अनुवाद और भाषा-विज्ञान' में अनुप्रयुक्त होने वाली भाषा-विज्ञान के सामान्य परिचय प्राप्त करेंगे।
- अंतः अनुवाद और भाषा-विज्ञान के सम्बन्ध में विस्तृत रूप में जानकारी प्राप्त करेंगे।

इकाई की रूपरेखा

3.1. प्रस्तावना

3.2. अनुवाद और भाषा-विज्ञान

3.2.1.भाषा का अनुवाद और अनुवाद की भाषा

3.2.2.अनुवाद और अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान

3.3.अनुवाद और भाषा-विज्ञान का अन्तर संबंध

3.3.1 भाषा-विज्ञान एवं अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान

3.3.2 अनुवाद एवं व्यतिरेकी भाषा-विज्ञान

3.3.3 अनुवाद एवं ध्वनि-विज्ञान

3.3.4 अनुवाद एवं अनुलेखन

3.3.5 अनुवाद एवं रूप-विज्ञान

3.3.6 अनुवाद एवं शब्द-विज्ञान

3.3.7 अनुवाद एवं अर्थ-विज्ञान

3.3.8 अनुवाद एवं वाक्य-विज्ञान

3.4. सारांश

3.5. बोध प्रश्न

3.6. सहायक ग्रंथ

3.1.प्रस्तावना :

भाषा वैज्ञानिकों ने अनुवाद के अध्ययन की जो भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि का विकास किया है उसका सीधा सम्बन्ध अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान (Applied Linguistics) से है। साहित्य के क्षेत्र में भाषा-विज्ञान के महत्व के बारे में विशेष रूप से कुछ कहने की आवश्यकता को हम महसूस कर सकते हैं क्योंकि स्पष्ट रूप से न तो सही, प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि भाषा-विज्ञान का संबंध केवल साहित्य से नहीं, बल्कि सिनेमा, नाटक आदि विधाओं से कितना संबंध ठहराता है। इस संबंध से हमें अवगत होने के कारण ही साहित्य में, नाटक में साधारण मुसलमान व्यक्ति का संस्कृतनिष्ठ वार्तालाप और ब्राह्मण परिवार के व्यक्ति का अरबी-फारसी पर अधिष्ठित वार्तालाप वह पसंद करता, बल्कि उसपर कटाक्ष करता है।

मुख्य रूप से 'अनुवाद' में दो भाषाओं पर विचार होता है। एक स्त्रोत भाषा और दूसरा लक्ष्य भाषाओं को पहचानकर, उन्हें नहीं तो उनमें वर्णित विचारों को परस्पर एक दूसरे के निकटलाना ही 'अनुवाद' का मुख्य उद्देश्य रहता है। इससे यह स्पष्ट विदित है कि 'अनुवाद' कोसार्थक एवं सफल बनाने के लिए, अनुवादक के लिए यह अनिवार्य है कि वह दोनों भाषाओं की वैज्ञानिक विशेषताओं को अच्छी तरह पहचाना तथा समझ लें। यह उतना आसानी कार्य नहीं है क्योंकि तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य से ही नहीं बल्कि व्यतिरेकी दृष्टिकोण से भी इसपर विचार करना पड़ता है। दूसरे शब्दों में कह दिया जाय तो भाषा-वैज्ञानिक तथ्यों की नींव ही अनुवाद अधिष्ठित रहता है, ठीक उसी प्रकार जैसे कि कहानी, उपन्यास और नाटक के तत्वों के आधार पर कहानी, उपन्यास और नाटक। अनुवाद के तत्वों यानी भाषा-वैज्ञानिक तत्वों से गुज़रना और अधिक मुश्किल है क्योंकि प्रत्येक भाषा की वैज्ञानिक विशेषताएँ उसकी अपनी रहती है। फिर भी, भाषाओं के वैज्ञानिक तत्वों को, उनकी विशेषताओं को जानने में रुचि रखनेवाला, उनके व्यावहारिक प्रयोग पर विशेष दृष्टिकोण रखनेवाला एक अनुवादक सचमुच सफल बन सकता है।

इस प्रकार के प्रयोजनों पर विहंगम दृष्टि तो हम डाल चुके हैं, अब हम यह देखें कि भाषा-विज्ञान के इतने सारे संदर्भ या पहल होने के बावजूद भी भाषा-वैज्ञानिक क्षेत्र में 'अनुवाद और भाषा-विज्ञान' में अनुप्रयुक्त होने वाली भाषा-विज्ञान के सामान्य परिचय कराने के साथ-साथ अनुवाद एवं भाषा-विज्ञान के सम्बन्ध में विस्तृत रूप में जानकारी प्राप्त करेंगे।

3.2 अनुवाद और भाषा-विज्ञान :

अनुवाद एक भाषिक कला है। सामान्य अर्थ में, एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना 'अनुवाद' है। यहाँ कथन या अभिव्यक्ति का माध्यम है 'भाषा'। स्पष्ट है कि अनुवाद क्रिया पूर्णतः भाषा पर आधारित है। कदाचित इसीलिए भोलानाथ तिवारी जी ने अनुवाद को 'भाषान्तर' कहा है। एक भाषिक क्रिया होने के नाते अनुवाद का भाषा से ही नहीं, भाषा-विज्ञान से भी गहरा सम्बन्ध है, क्योंकि भाषा-विज्ञान में 'भाषा' का वैज्ञानिक अध्ययन होता है। भाषा की संरचना में ध्वनि, शब्द, रूप, अर्थ, वाक्य आदि कई स्तर होते हैं। इनके आधार पर भाषा-विज्ञान के अन्तर्गत ध्वनि-विज्ञान, रूप-विज्ञान, अर्थ-विज्ञान, वाक्य-विज्ञान आदि का विधिवत

व वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। अनुवाद में भी ध्वनि, शब्द, रूप आदि की दृष्टि से स्रोत–भाषा और लक्ष्य-भाषा की तुलना करनी होती है। इन विविध स्तरों पर दो भाषाओं की प्रकृति, संरचना, शैली आदि में जो अन्तर होते हैं, वे समान प्रतीत होने वाले प्रसंगों में भी अलग-अलग अर्थ भर देते हैं। अनुवाद में भाषान्तरण के बावजूद अर्थ की रक्षा अपरिहार्य होती है। अतः अनुवादक को स्रोत-भाषा तथा लक्ष्य-भाषा की प्रकृति, संरचना, विविध भाषिक तथा व्याकरणिक स्तरों, विभिन्न शैलियों तथा इन तमाम पक्षों से सम्बद्ध अर्थ व्यंजनाओं का सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

3.2.1 भाषा का अनुवाद और अनुवाद की भाषा :

भारतवर्ष विभिन्न भाषाओं एवं उपभाषाओं रूपी सरिताओं का संगम है । यहाँ एक ओर संस्कृति की पावन गंगा प्रवाहित है जिसने अमृत वाङ्मय से समस्त क्षेत्रीय भाषाओं को भी अनुप्राणित किया है, दूसरी ओर हमारी संस्कृति की अंतर्ज्ञान सरस्वती है जो विविध वेशभूषा, रीति-रिवाजों के बाह्य भेदों की विद्यमानता के बावजूद समस्त भारत को रागात्मकता के एक सूत्र में बाँधे हुए हैं । भाषा ही वह जीवन-ज्योति है जो मानव को मानव से जोड़ती है । यह विचारों के आदान-प्रदान में सहायक होने के साथ-साथ परम्पराओं, संस्कृतियों और मान्यताओं एवं विश्वासों को समझने का सशक्त माध्यम भी है । किसी भी देश की धड़कन उसकी भाषा में ही निहित होती है । जहाँ भाषा विचारों की संवाहिका है, वहीं अनुवाद विविध भाषाओं एवं विविध संस्कृतियों से साक्षात्कार कराने वाला साधन । अनुवादक अपने भगीरथ प्रयास से दो भिन्न एवं अपरिचित संस्कृतियों, परिवेशों एवं भाषाओं की सौन्दर्य चेतना को अभिन्न और परिचित बता देता है ।

अनुवाद उतना ही प्राचीन है जितनी कि भाषा । हमारा भारत भाषाओं और उनके बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से यूरोप से बहुत बड़ा है । दुनिया की पचास बड़ी भाषाओं में से एक तिहाई भारत की भाषाएँ हैं। अनादि काल से वे मनुष्य जाति के पारस्परिक आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम रही हैं। भाषा और साहित्य हमारी संस्कृति के उद्गाता और संवाहक रही हैं। भाषा और अनुवाद का भविष्य परस्पर अन्योन्याश्रित है । भाषा का भविष्य अनुवाद का भी भविष्य है । वर्तमान भाषा के रूप को पहचानते हुए भविष्य की कल्पना की जाती है । आज कई प्रकार के भाषा-रूप हैं, जैसे बोलचाल की भाषा, साहित्यिक भाषा, माध्यम भाषा, सम्पर्क भाषा, जनसंचार माध्यम की भाषा इत्यादि । बोलचाल की भाषा में व्याकरण के ज्ञान की आवश्यकता नहीं, जबकि साहित्यिक भाषा में रचना-धर्मिता प्रकट होने के कारण व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है । माध्यम भाषा के द्वारा शिक्षण प्राप्त करते हैं । जनसंचार की भाषा के प्रिंट और 'इलेक्ट्रॉनिक' दो अलग प्रकार के माध्यम हैं । इसका मुख्य उद्देश्य जनता को सूचना देना, प्रशिक्षण, प्रबोधन, अभिप्रेरणा, प्रोत्साहन तथा मनोरंजन करना है । इसी कारण इस माध्यम में भाषा को रोचक रूप में प्रस्तुत करने का विशेष प्रयास रहता है ।

यह अलग बात है कि बाज़ारवाद के चलते आज भाषा का व्यावसायीकरण हो गया है। इंटरनेट, कंप्यूटर आदि के कारण दैनंदिन जीवन की आवश्यकताओं में प्रयोग होने वाली भाषा पर विस्तार देने का प्रयास होने लगा है। भाषा में दिनों दिन परिष्कार हो रहा है, जिससे शब्दों में निखार आता जा रहा है। पहले 'Public Latrine' शब्द लिए 'संडास' शब्द का प्रयोग किया जाता था, जो सुनने और बोलने में बड़ा अरुचिकर लगता था, परन्तु धीरे-धीरे इसके स्थान पर प्रसाधन, सुलभ शौचालय, जन सुविधाएँ आदि शब्द आए, ये शब्द ज्यादा गरिमा मंडित हैं।

भाषा की सबसे बड़ी शक्ति उसकी ग्रहण क्षमता है, जिस भाषा में यह गुण नहीं, वह भाषा दम तोड़ है। किसी भी भाषा से अनुवाद करते समय अनुवाद के सरलीकरण का प्रयास रहना चाहिए। यदि अनुवाद को जटिल बनाने का प्रयास किया गया तो स्थिति बिगड़ने की संभावना रहती है। संप्रेषण ग्राह्यता जब तक भाषा में नहीं होगी, वह अनुवाद या भाषा सम्पर्क का माध्यम नहीं बन सकती। भाषा भावाभिव्यक्ति के साथ-साथ चिन्तन का भी माध्यम है। हर शब्द की व्यंजना, प्रकृति, प्रवृत्ति, संस्कृति, इतिहास अलग होता है। अतः अनुवाद करते समय इसे समझना होगा। भाषा और शब्द की प्रकृति से भलीभाँति परिचित होना होगा।

3.2.2 अनुवाद और अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान :

आधुनिक युग को अनुवाद का युग कहेंगे अतिशयोक्ति न होगी। क्योंकि अनुवाद–अध्ययन और अनुसंधान आधुनिक युग की पुकार है। दूसरे शब्दों में, आधुनिक युग में जीवन के अनेक क्षेत्रों के विकास के साथ-साथ भाषायी स्तर पर, संप्रेषण-व्यापार हेतु अनुवाद एक अहम आवश्यकता के रूप में उभरकर सामने आया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब हम किसी एक भाषा में अभिव्यक्त भाव या विचारों के लिखित रूप को किसी अन्य भाषा–भाषी समुदाय के संप्रेषणार्थ, दूसरी भाषा में यथासाध्य मूलनिष्ठ किन्तु बोधगम्य रूप में परिवर्तित करते हैं तो यह भाव या विचारों के सोद्देश्यपूर्ण भाषान्तर–प्रक्रिया 'अनुवाद' कहलाती है।

आधुनिक भाषा-विज्ञान में भाषा के अनुप्रायोगिक पक्ष पर भी चिन्तन हुआ है। 'भाषा का सैद्धान्तिक विश्लेषण और वाक्य, रूपिम, स्वनिम आदि उसके व्याकरणिक स्तरों का वैज्ञानिक अध्ययन भाषा-विज्ञान का सिद्धान्त कहलाता है, जबकि सैद्धान्तिक भाषा-विज्ञान के नियमों सिद्धान्तों, तथ्यों और निष्कर्षों का किसी अन्य विषय में अनुप्रयोग करने की प्रक्रिया ओर क्रियाकलाप का विज्ञान ही अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान (Applied Linguistics) है।' कृष्ण कुमार गोस्वामी अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान प्रायोगिक एवं कार्योन्मुख एक ऐसी वैज्ञानिक विधा है, जो मानव कार्य-व्यापार में उठने वाली भाषागत समस्याओं का समाधान ढूँढ़ती है। भाषिक क्षमता एवं भाषिक व्यवहार के सन्दर्भ में अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान का सम्बन्ध प्रत्यक्ष व्यवहार पक्ष से जुड़ा हुआ है। यदि भाषा-विज्ञान प्रत्येक 'क्या' का उत्तर देता है अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान प्रत्येक 'कैसे' तथा 'क्यों का उत्तर देता है। यह उपभोक्ता सापेक्ष होता है, जिसमें भाषा के उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं द्वारा निर्धारित लक्ष्य के सन्दर्भ में भाषा-सिद्धान्तों का अनुप्रयोग होता है। वास्तव में भाषा से हम क्या-क्या काम ले सकते हैं, अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान उस दिशा में काम करता है। इसलिए जैसे-जैसे इसकी उपयोगिता बढ़ती गई, देश एवं काल के अनुसार

उसे भिन्न-भिन्न विधाओं से सम्बद्ध किया जाता रहा है; यथा भाषा-शिक्षण, अनुवाद, कोश-विज्ञान, शैली-विज्ञान, कंप्यूटर भाषा-विज्ञान, समाज भाषा-विज्ञान।

सामान्यतः अनुवाद से अभिप्राय एक भाषाई संरचना के प्रतीकों के द्वारा सम्प्रेष्य अर्थ को दूसरी भाषा की संरचना के प्रतीकों में परिवर्तित करने से लिया जाता है। 'डार्टेस्ट' ने अनुवाद को अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान की एक शाखा के रूप में परिभाषित करते हुए लिखा है कि अनुवाद, अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान की वह शाखा है जिसमें विशेषतः एक प्रतिमानित प्रतीक समूह से दूसरे प्रतिमानित प्रतीक समूह में अर्थ को अन्तरित करने की समस्या या तत् सम्बन्धी तथ्यों पर विचार-विमर्श किया जाता है :

Translation is that branch of applied science of language which is specifically concerned with the problem -or the fact- of the transference of meaning from one set of patterned symbols into another set of patterned symbols. (-Loche & Booth, 1995, pg. 124)

अनुवाद को अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान के अन्तर्गत शामिल करने का कारण यह है कि अनुवाद कर्म में स्रोत-भाषा से लक्ष्य-भाषा तक पहुँचने में हम जिन प्रक्रियाओं से होकर गुजरते हैं उसका वैज्ञानिक विश्लेषण (scientific analysis) किया जा सकता है। भाषा विज्ञानियों का मानना है कि अनुवाद क्रिया में पहले सोत-भाषा का विकोडीकरण (Decoding of Source Language) होता है जिसका बाद में लक्ष्य-भाषा में पुनः कोडीकरण (Encoding of Target Language) किया जाता है। निम्नलिखित क्रम को देखें :

1. सोत-भाषा (Encoding of Source Language)

2. श्रोत-भाषा का कोडीकृत संदेश (Encoded message S.L.)

3. अन्तरण अर्थात् स्त्रोत-भाषा का विकोडीकरण (Decoding of S.L.)

4. लक्ष्य-भाषा का कोडीकृत संदेश (Encoded message of Target Language)

5. लक्ष्य-भाषा (Encoding of T.L.)

अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान के क्षेत्र के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, भोलानाथ तिवारी और कृष्ण कुमार गोस्वामी ने अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान के कार्यक्षेत्र का अध्ययन करते हुए उसके तीन सन्दर्भ बताए हैं :

1. ज्ञान-क्षेत्र का सन्दर्भ

2. विधा-क्षेत्र का सन्दर्भ

3. भाषा शिक्षण का सन्दर्भ

ज्ञान क्षेत्र में भाषा-विज्ञान और उसके सिद्धान्तों का अनुप्रयोग ज्ञान के अन्य क्षेत्रों को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। जैसे मनोभाषाविज्ञान, समाज भाषा-विज्ञान, कंप्यूटर भाषा-विज्ञान आदि। विधा-क्षेत्र में भाषा-

वैज्ञानिक सिद्धान्तों का अनुप्रयोग विशेष विधाओं में किया जाता है। शैली-विज्ञान, अनुवाद-विज्ञान, कोश-विज्ञानआदि।

जहाँ तक भाषा शिक्षण का प्रश्न है, दूसरी भाषा शिक्षण (Second Language Teaching) अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण शाखा है। भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में दूसरी भाषा' पद एक पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है जिसकी एक निश्चित संकल्पना है। मातृभाषा हमारी प्रथम भाषा (First Language) होती है। दूसरी भाषा को सीखने में माध्यम बनती है मातृभाषा। दूसरी भाषा के रूप में जब वह कोई अन्य भाषा पढ़ता है तब उसके सोचने-समझने में मातृभाषा उसकी व्यावहारिक भाषा रहती है क्योंकि वह व्यक्ति की जीवन पद्धति, आचार-विचार और व्यवहार की भाषा होती है। दूसरी भाषा शिक्षण में अनुवाद की प्रक्रिया को भाषा सीखने की प्रक्रिया के रूप में अपनाया जाता है। अनुवाद भाषा-शिक्षण की परम्परागत और सिद्ध पद्धति है। मातृभाषा अथवा प्रथम भाषा का जो संरचनागत ढाँचा व्यक्ति के मस्तिष्क में व्यावहारिक स्तर पर विद्यमान होता है, उसका उपयोग इस पद्धति से दूसरी भाषा सिखाने में कर लिया जात है और व्यक्ति धीरे-धीरे सुविधाजनक ढंग से दूसरी भाषा व्यवहार में दक्षता अर्जित कर लेता है। अनुवाद-प्रक्रिया की भाँति उसे अपनी भाषा (स्रोत–भाषा) की शब्दावली के पर्याय उसे दूसरी भाषा में खोजकर याद करने होते हैं, इन शब्दों के विभिन्न रूपों से परिचय प्राप्त करना होता है तथा भाषा के संरचनागत (व्याकरण संबंधी) नियमों की जानकारी हासिल करनी होती है। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य-रचना करते समय वह नियमों का सतर्कतापूर्वक पालन करता है। ऐसा करते समय वह अपनी भाषा में सोचता है, फिर उस बात को उस भाषा में पढ़ता है, उस पाठ के पर्याय अपनी भाषा में तलाशता है और कथ्य को दूसरी भाषा (लक्ष्य-भाषा) में प्रस्तुत करता है।

अनुवाद के माध्यम से दूसरी भाषा-शिक्षण दुनिया भर में बहुत समय से प्रचलित रहा है। सदियों से लोग इस पद्धति से भाषा सीखते रहे हैं।

3.3 अनुवाद और भाषा-विज्ञान का अन्तर सम्बन्ध :

3.3.1 भाषा-विज्ञान एवं अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान

भाषा का विधिवत एवं वैज्ञानिक अध्ययन भाषा-विज्ञान सिद्धान्त कहलाता है जबकि सैद्धान्तिक भाषा-विज्ञान के नियमों, सिद्धान्तों, तथ्यों और निष्कर्षों का किसी अन्य विषय में अनुप्रयोग करने की प्रक्रिया और क्रियाकलाप का विज्ञान ही अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान है। दूसरे शब्दों में कहें तो, अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान में भाषा-विज्ञान से प्राप्त सैद्धान्तिक जानकारी का विभिन्न क्षेत्रों में अनुप्रयोग करते हैं। अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञानी अपने ज्ञान भंडार के विवेचनात्मक परीक्षण के पश्चात उसका अनुप्रयोग उन क्षेत्रों में करता है जहाँ मानव-भाषा एक केन्द्रीय घटक होती है जिससे उन क्षेत्रों की कार्य क्षमता का संवर्धन किया जा सकता है।

अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान एक ऐसी प्रायोगिक, कार्योन्मुख वैज्ञानिक विधा है जो मानव कार्य-व्यापार में उठने वाली भाषागत समस्याओं का समाधान ढूँढ़ती है। भाषिक क्षमता एवं भाषिक व्यवहार के सन्दर्भ में अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान का सम्बन्ध प्रत्यक्ष व्यवहार पक्ष से जुड़ा हुआ है। यदि भाषा-विज्ञान प्रत्येक 'क्या' का

उत्तर देता है तो अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान प्रत्येक 'कैसे' तथा 'क्यों' का उत्तर देता है। चूंकि अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान का सम्बन्ध विशेष विधाओं से है, अतः इसमें भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्तों का जो अनुप्रयोग किया जाता है उसका लक्ष्य सक्रियात्मक होता है। सक्रियात्मक रूप में शैली-विज्ञान, अनुवाद-विज्ञान, कोश-विज्ञान, व चिकित्सा विज्ञान आदि विषयों में भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्तों का अनुप्रयोग अनिवार्यतः होता है। क्योंकि ये मुख्यतः भाषा से सम्बद्ध हैं। इन विधाओं को एक निश्चित सैद्धान्तिक सन्दर्भ देने में और उसके अध्ययन विश्लेषण के लिए एक सुनिश्चित वैज्ञानिक तकनीक विकसित करने में भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्त एवं प्रणाली के अनुप्रयोग का सर्वाधिक योगदान है।

3.3.2 अनुवाद एवं व्यतिरेकी भाषा-विज्ञान

'व्यतिरेक' का अर्थ है 'असमानता' या 'विरोध'। 'व्यतिरेकी भाषा-विज्ञान' में दो भाषाओं की तुलना करके दोनों की असमानताओं का पता लगाया जाता है। अनुवाद के सन्दर्भ में कहें तो व्यतिरेकी विश्लेषण का मुख्य उद्देश्यरूपात्मक, तुलनात्मकता और उस तुलनात्मकता के आधार पर स्रोत–भाषाऔर लक्ष्य भाषा में विद्यमान असमानताओं की व्याख्या करना है। इस प्रकार व्यतिरेकी तकनीक के रूप में अनुवाद में स्रोत-भाषा और लक्ष्य-भाषा के बीच व्याप्त असमानताओं के प्रति भाषायी सजगता पैदा करना है। उदाहरण के लिए हिन्दी में तीन मध्यम पुरुष : तू, तुम, आप हैं जबकि अंग्रेजी में केवल 'लवन'। इस प्रकार निम्नलिखित वाक्यों में अंग्रेजी के 'small' शब्द के समानान्तर हिन्दी में 'छोटा', 'छोटी', 'छोटे' तीनों का प्रयोग हुआ है। उदाहरणके लिए-

Small boy -छोटा लड़का

Small girl -छोटी लड़की

Small boys -छोटे लड़के

अन्य उदाहरण इस प्रकार है-

हिन्दी के 'गानेवाली' शब्द का अंग्रेजी में अनुवाद सन्दर्भानुसार 'singer' और 'about to sing' होगा। इस प्रकार 'टोपीवाला' का अनुवाद 'wearing cap' और 'cap seller' होगा। अतः कहा जा सकता है कि अनुवाद का सीधा सम्बन्ध व्यतिरेकी विश्लेषण से है।

3.3.3 अनुवाद एवं ध्वनि-विज्ञान

'ध्वनि' भाषा की मूलभूत इकाई होती है तथा हर भाषा की अपनी अलग ध्वनि व्यवस्था होती है। दो भाषाओं के बीच कुछ समान, कुछ लगभग समान और कुछ भिन्न ध्वनियाँ होती हैं। यहाँ अंग्रेजी और हिन्दी भाषा की समान ध्वनियों की तुलना करते हैं:

हिन्दी : क ग ज ट न प फ ब म र ल व श स

अंग्रेजी : k g j t n p f b m r lv sh s

तुलना से स्पष्ट है कि अंग्रेजी में हिन्दी की 'त' ध्वनि नहीं है तो 'v' और 'W' का सूक्ष्म अन्तर हिन्दी में नहीं है। ऐसे और कई उदाहरण ढूँढे जा सकते हैं। जैसा कि ऊपर कहा गया, भाषा की मूलभूत इकाई है 'ध्वनि' और सार्थक ध्वनियों से 'शब्द' का निर्माण होता है। यह शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तब वह 'रूप' बन जाता है। अनुवाद कर्म में हमेशा दो भाषाओं के बीच स्थित समानार्थक शब्दों की तलाश रहती है। मगर यह जरूरी नहीं कि एक भाषा की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति किसी दूसरी भाषा में उपलब्ध हो। हर भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिसके समानार्थक शब्द दूसरी भाषा में उपलब्धनहीं होते, जैसे पारिभाषिक शब्द, विशेष से जुड़े शब्द, सांस्कृतिक शब्द आदि। ऐसे में हम मूल शब्द का अनुवाद न कर उसे लक्ष्य-भाषा की लिपि में परिवर्तित कर ज्यों का त्यों ग्रहण कर लेते हैं। इसके लिए हमें लिप्यंतरण या Transliteration का सहारा लेना पड़ता है और लिप्यंतरण में ध्वनि-विज्ञान का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। कुछ शब्दों का लिप्यन्तरण द्रष्टव्य है :

Bureau - ब्यूरो,

Voucher - वाउचर,

McBath – मैकबेथ आदि।

3.3.4 अनुवाद एवं अनुलेखन

अनुलेखन का अर्थ है स्रोत-भाषा के शब्द की वर्तनी पर ध्यान न देकर उसके उच्चारण को आधार मान कर लक्ष्य भाषा में उस उच्चारण के अनुरूप लिखना। अनुलेखन को प्रतिलेखन भी कहा जाता है। अनुवाद प्रक्रिया के दौरान अनुद्य सामग्री में हमें दो प्रकार के शब्द मिलते हैं :

1. जिनका अनुवाद किया जाना है और
2. जिनका अनुवाद न कर थोड़े-बहुत रूपान्तर के साथ प्रायः मूल रूप में ही लक्ष्य-भाषा में लिख दिया जाता है।

अनुलेखन में स्रोत–भाषा के ऐसे शब्दों को लक्ष्य भाषा में लिखने की समस्या पर विचार किया जाता है जिसका सम्बन्ध लिपि विज्ञान से है। भोलानाथ तिवारी इसे स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि अनुवाद में ऐसी समस्या दो रूपों में आती है। यदि अनुवादक किसी से कोई बात सुनकर उसका अनुवाद करके लिख रहा है तो वह स्रोत-भाषा की ध्वनि को पहले लक्ष्य भाषा की ध्वनि में परिवर्तित करता है और फिर लक्ष्य-भाषा की उन ध्वनियों को प्रतिनिधि लिपि-चिह्नों में उन्हें लिखता है।

सोत-भाषा ध्वनि- लक्ष्य-भाषा ध्वनि- लक्ष्य-भाषा लिपि चिह्न

किन्तु यदि वह किसी लिखित सामग्री से अनुवाद कर रहा हो तो इस क्रम में वृद्धि हो जाती है

1.सोत-भाषा लिपि चिह्न

2..सोत-भाषा ध्वनि

3. लक्ष्य-भाषा ध्वनि

4.लक्ष्य-भाषा लिपि चिह्न।

अनुवाद में स्रोत-भाषा लिपि चिह्न से सीधे लक्ष्य-भाषा लिपि चिह्न तक पहुँचने की प्रक्रिया सही नहीं होती। उदाहरण के लिए यदि लिपि चिह्नों के आधार पर 'Jesperson' का अनुवाद 'जेस्पर्सन' कर दिया जाए तो गलत होगा क्योंकि इसका सही अनुवाद तो 'येस्पर्सन' है। ऐसे ही 'Rousseau' और 'Meillet' का अनुवाद क्रमानुसार 'रूसो और 'मेइये' होगा, न कि 'राउस्सेअउ' तथा 'मेइल्लेत।

3.3.5 अनुवाद एवं रूप-विज्ञान

रूप-विज्ञान के अन्तर्गत भाषा की रूप-रचना का अध्ययन होता है। रूप-रचना में व्याकरणिक नियमों का आकलन एवं निर्धारण किया जाता है। इसके अध्ययन का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है। चूंकि भाषा के रूप-विन्यास पर ही मूल का आशय छिपा रहता है, इसीलिए अनुवादक को स्रोत–भाषा और लक्ष्य-भाषा, दोनों की रूप-रचना, व्याकरणिक नियमों आदि से भलीभाँति परिचित होना चाहिए। उदाहरण के लिए अंग्रेजी के दो वाक्यों का गलत और सही अनुवाद द्रष्टव्य है :

उदाहरण-1

Prima has a pair of scissors.

क- प्रीमा के पास एक जोड़ी कैंची हैं। (-गलत अनुवाद)

ख- प्रीमा के पास एक कैंची है। (-सही अनुवाद)

उदाहरण-2

Her hair is beautiful.

क- उसका सुन्दर बाल है। (-गलत अनुवाद)

ख– उसके बाल सुन्दर हैं। (-सही अनुवाद)

कहने की ज़रूरत नहीं कि अंग्रेजी में 'a pair of scissors', 'a pair of trousers' आदि का प्रयोग होता है, मगर हिन्दी में उसे 'एक जोड़ी कैंची' या 'एक जोड़ी पायजामा' न कहकर सिर्फ 'एक कैंची या 'एक पायजामा' कहा जाता है। ऐसे ही अंग्रेजी में 'hair' शब्द एकवचन के रूप में प्रयोग होता है, जबकि हिन्दी में 'बाल' बहुवचन में।

3.3.6 अनुवाद एवं शब्द-विज्ञान

किसी भाषा की सार्थक ध्वनियों के समुच्चय को शब्द कहते हैं। शब्द-विज्ञान में शब्दों को परिभाषित करके विभिन्न आधारों पर उनका वर्गीकरण किया जाता है। अनुवाद में शब्दों के मूल अर्थ का स्रोत या प्रयोग

सन्दर्भ को जानने के लिए शब्द का वैज्ञानिक विश्लेषण और वर्गीकरण करना पड़ता है। उदाहरण के लिए 'पानी शब्द को लीजिए :

पानी

1 23 456 78 9 1011 12

जल वारि नीर अम्बु सलिल अंभ तोय उदक घनसार तृसाह प्रजाहित सर

निश्चय ही इन समानार्थी शब्दों का प्रयोग भी कुछ हद तक निश्चित ही है और अनुवादक को सन्दर्भानुसार इन शब्दों में से एक ही प्रतिशब्द को ग्रहण करना पड़ता है। जैसे :

क– गंगा जल (गंगा नीर या गंगा पानी नहीं)

ख- पीने का पानी (पीने का नीर या जल नहीं)

ग- नीर ढलना (जल या पानी ढलना नहीं)

(नीर ढ़लना = आँसू बहाना)

अर्थ-विज्ञान में भाषा के अर्थ पक्ष का अध्ययन किया जाता है। चूंकि अनुवाद में शब्द का नहीं अर्थ का प्रतिस्थापन होता है, इसीलिए अनुवाद में अर्थ-विज्ञान की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। साथ ही अनुवाद कर्म में अनुवादक केवल अभिधार्थ के सहारे आगे नहीं बढ़ता, बल्कि निहितार्थ (लक्षणा और व्यंजना) को भी बराबर साथ लिए चलता है। उदाहरण के लिए एक पक्षी के सन्दर्भ में 'वह उल्लू है' कहना साधारण अर्थ का बोध कराता है, मगर एक व्यक्ति के सन्दर्भ में जब 'वह उल्लू है' कहा जाता है तो व्यंग्यार्थ का बोध कराता है। फिर जो 'उल्लू' हिन्दी में मूर्ख का प्रतीक है, वही 'owl' अंग्रेजी में 'विद्वान' का प्रतीक है। इतना ही नहीं, कुछ शब्दों के कई अर्थ होते हैं। जैसे 'वारि शब्द की तीन अर्थ छवियों को देखिए : 3- हाथी बाँधने की जंजीर अनुवादक को सन्दर्भानुसार इन अर्थ छायाओं में से एक अर्थ को ग्रहण करना पड़ता है।

3.3.8 अनुवाद एवं वाक्य-विज्ञान

अनुवाद में वाक्य-विज्ञान की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वाक्य-विज्ञान में भाषा विशेष के सन्दर्भ में वाक्य रचना और इसके विभिन्न पक्षों का विश्लेषण किया जाता है। अनुवाद में भी लक्ष्य-भाषा की प्रकृति, व्याकरणिक नियम आदि का ध्यान रखना पड़ता है। उदाहरण के लिए 'वह भोजन कर रहा है' का अंग्रेजी अनुवाद 'He is doing meal.' न होकर 'He is taking meal.' होगा। यहाँ 'भोजन करना हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुकूल है और 'taking meal अंग्रेजी भाषा की प्रकृति के। ऐसे ही 'घोंघा धीरे-धीरे चल रहा है' का अंग्रेजी अनुवाद 'Snail is slowly slowly creeping.' न होकर 'Snail is creeping slowly. होगा। कहने की ज़रूरत नहीं कि हिन्दी भाषा की संरचना 'कर्ता + कर्म + क्रिया विशेषण + क्रिया' नियम पर आधारित होती है, जबकि अंग्रेजी भाषा की संरचना 'कर्ता + कर्म + क्रिया + क्रिया विशेषण' नियम पर।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अनुवाद का भाषा-विज्ञान, खासकर अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान एवं व्यतिरेकी भाषा-विज्ञान से बहुत गहरा सम्बन्ध है। हर अनुवादक को भाषा-विज्ञान के इन नियमों की जानकारी होना जरूरी है, अन्यथा वह सही और सार्थक अनुवाद कर ही नहीं सकता।

3.4. सारांश :

भाषा में ध्वनि, शब्द, अर्थ, रूप, वाक्य और लिपि आदि प्रमुख इकाइयों के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद पर विचार करने के उपरांत यह बात कहा जा सकता है कि अनुवाद एक ऐसा कार्य है जिसका संबंध इन तीनों तत्वों से अप्रत्यक्ष रूप में रहता है। स्त्रोत एवं लक्ष्य भाषा की जानकारी के साथ-साथ भाषा-वैज्ञानिक तत्वों का यथानुकूल ज्ञान भी अनुवाद की सफलता के लिए अनिवार्य है। अंतः और एक बात को हम ध्यान देने की आवश्यकता है कि भाषा-वैज्ञानिक तत्वों को उसी रूप में अनुवाद पर लागू करने के बजाय व्यावहारिक दृष्टिकोण से विचार करना जरूरी है।

एक भाषिक क्रिया होने के नाते अनुवाद का भाषा से ही नहीं, भाषा-विज्ञान से भी गहरा सम्बन्ध है, क्योंकि भाषा-विज्ञान में 'भाषा' का वैज्ञानिक अध्ययन होता है। भाषा की संरचना में ध्वनि, शब्द, रूप, अर्थ, वाक्य आदि कई स्तर होते हैं। इनके आधार पर भाषा-विज्ञान के अन्तर्गत ध्वनि-विज्ञान, रूप-विज्ञान, अर्थ-विज्ञान, वाक्य-विज्ञान आदि का विधिवत व वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। अनुवाद में भी ध्वनि, शब्द, रूप आदि की दृष्टि से स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना करनी होती है। इन विविध स्तरों पर दो भाषाओं की प्रकृति, संरचना, शैली आदि में जो अन्तर होते हैं, वे समान प्रतीत होने वाले प्रसंगों में भी अलग-अलग अर्थ भर देते हैं। अनुवाद में भाषान्तरण के बावजूद अर्थ की रक्षा अपरिहार्य होती है।

भाषा और अनुवाद का भविष्य परस्पर अन्योन्याश्रित है। भाषा का भविष्य अनुवाद का भी भविष्य है। वर्तमान भाषा के रूप को पहचानते हुए भविष्य की कल्पना की जाती है। आज कई प्रकार के भाषा-रूप हैं, जैसे बोलचाल की भाषा, साहित्यिक भाषा, माध्यम भाषा, सम्पर्क भाषा, जनसंचार माध्यम की भाषा इत्यादि। बोलचाल की भाषा में व्याकरण के ज्ञान की आवश्यकता नहीं, जबकि साहित्यिक भाषा में रचना-धार्मिकता प्रकट होने के कारण व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। अंतः यह कहा जा सकता है कि भाषा-विज्ञान भाषा के इतिहास को भविष्य से मिलाने का प्रयास कर कहा है जिसमें भाषा की संभावनाओं, विशेषताओं व प्रवृत्तियों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार किया जा रहा है।

3.5 बोध प्रश्न :

1. अनुवाद एवं अर्थ-विज्ञान के अंतर संबंध की चर्चा कीजिए।
2. भाषा-विज्ञान और अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान के संबंध को स्पष्ट कीजिए।

3. अनुवाद और भाषा-विज्ञान के अंतर संबंधों पर विस्तृत रूप से चर्चा कीजिए।

3.6 सहायक ग्रंथ :

1. सामान्य भाषा-विज्ञान- बाबू राम सक्सेना, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्र.स. 1983.

2. हिन्दी भाषा का रूपिमीय विश्लेषण-डॉ. लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा, अंशुकमल, प्रकाशन, पाटना, प्र. स. 1983.

3. बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, दिल्ली, प्र.स. 1973.

****

- डॉ. सूर्य कुमारी. पी.

4. अनुवाद क्या है? शिल्प, कला अथवा विज्ञान

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आप अनुवाद कला, शिल्प अथवा विज्ञान के बारे में बता सकेंगे। इसके साथ-साथ ही-

- अनुवाद की प्रकृति और स्वरूप के बारे में बता सकेंगे।
- अनुवाद को सला, शिल्प और विज्ञान में से किस वर्ग में रख सकते हैं और रखा जा सकते हैं इसके बारे में भी विस्तार रूप से बाता पाएंगे।
- अनुवाद केवल कला है या केवल शिल्प है या केवल विज्ञान है अथवा इन तीनों में से किन्हीं दोनों का मिश्रण है और इन तीनों का है इस बात को भी स्पष्ट कर सकेंगे।

इकाई की रूपरेखा

4.1. प्रस्तावना

4.2. कला, शिल्प अथवा विज्ञान की दृष्टि से अनुवाद - कार्य पर विचार करने की सार्थकता

4.3. अनुवाद का व्यवहारपरक रूप

4.4. कला, शिल्प तथा विज्ञान का स्वरूप

4.5. क्या अनुवाद कला है ?

4.6. क्या अनुवाद शिल्प है ?

4.7. क्या अनुवाद विज्ञान है ?

4.8. अनुवाद में कला, शिल्प और विज्ञान तीनों के तत्त्व

4.9. सारांश

4.10. बोध प्रश्न

4.11. सहायक ग्रंथ

4.1 प्रस्तावना :

अनुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना के विविध विषयों के बारे में तो आप सभी जानते हैं। अब यहाँ हम अनुवाद कार्य के व्यावहारिक स्वरूप से परिचित हो जाएंगे। इस इकाई में अनुवाद कर्म

केव्यवहारमूलक स्वरूप को विश्लेषित करती हैव्यवहारमूलक कार्यकलाप के तीन प्रमुख क्षेत्र हैं- कला, शिल्प और विज्ञान। इस इकाई में आप पढ़ेंगे कि अनुवाद कार्य कोकला, शिल्प अथवा विज्ञान में से किस श्रेणी में रखा जा सकता है। इन तीनों क्षेत्रों के विशिष्ट स्वरूप पर विचार करते हुए यह देखने का प्रयास कर सकते हैं कि अनुवाद को किस अर्थ में कला, शिल्प अथवा विज्ञान को कहाजासकता है।

4.2 कला, शिल्प अथवा विज्ञान की दृष्टि से अनुवाद कार्य पर विचार करने की सार्थकता :

अनुवाद कार्य परकला, शिल्प अथवा विज्ञान की दृष्टि से विचार करने की सार्थकता इस बात में है कि अनुवाद के यथार्थ स्वरूप का निश्चय किया जा सके, उसके संबंध में प्रचलित भ्रांतियों को दूर किया जा सकें तथा उसकी ठीक-ठीक प्रक्रिया को निश्चित किया जा सके। जब अनुवाद पर सैद्धांतिक चर्चा की जाती है तब अनेक विवाद उठ खड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई पूछे कि अनुवाद क्या है तो हमें इसके अनेक उत्तर मिलेंगे, अनुवाद की अनेक परिभाषाएँ मिलेंगी। डॉ. जॉनसन् के अनुसार"तात्पर्य को सुरक्षित रखते हुए अन्य भाषा में पाठ-परिवर्तन अनुवाद है।"इस परिभाषा को लेकर प्रश्न उठता है कि'पाठ'से तात्पर्य क्या है- शाब्दिक अर्थ, व्यंजित अर्थ, लेखक का मूल मन्तव्य अथवा पाठक द्वारा एक पात्र में रखे पदार्थ को दूसरे पात्र में रखने जैसी कोई क्रिया है अथवा एक व्यक्ति के मूल वस्त्रों को उतार कर पहना देना है ? अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद के सिद्धांत और व्यवहार पक्ष के संबंधों की चर्चा प्रायः की जाती है। कुछ विद्वानों का मत है कि'अर्थान्तरण'या'शाब्दिक प्रतिस्थापन'अनुवाद है, क्योंकि अनुवाद स्रोत भाषा के पाठ के कथ्य का लक्ष्य भाषा के पाठ में अन्तरण करता है या उस पाठ की भाषिक इकाइयों को दूसरी भाषा भाषिक इकाइयों द्वारा प्रतिस्थापन कर पाठ का पुनर्गठन करता है।इस स्थापना को सामने रखने वाले अनुप्रयुक्त विज्ञान के कुछ विद्वानों का कहना है कि अनुवाद की यह वैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसकी पुष्टि वे भाषा वैज्ञानिक सिद्धांतों से करते हैं। लेकिन यहाँ भी अनेक प्रश्न उठ खड़े होते हैं क्या कोई भाषा इतनी स्थिर और एकरूप होती है कि उसे दूसरी'में प्रतिस्थापित किया जा सके ? क्या कोई भाषा इतनी यांत्रिक और निर्जीव होती है कि दूसरी भाषा में प्रस्तुत कथ्य ज्यों-का-त्यों ग्रहण कर लें ? क्या भाषा अनुवादक के लिए ऐसा लचीला साधन नहीं है, जिसका उपयोग वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार करता है ? क्या वह अनुवाद करते समय अनुवाद्य सामग्री में अपनी ओर से कुछ जोड़ता घटाता नहीं है? और बहुत से प्रश्न हमारे सामने, उपस्थित होते हैं। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए हम अनुवाद की मौलिक प्रकृति को जानना चाहते हैं। हमारी जिज्ञासा की सार्थकता इसी बात में है।

4.3 अनुवाद का व्यवहारपरक रूप :

अनुवाद की सैद्धांतिक चर्चा का उपयोग तो मार्ग दर्शन मात्र है। मार्ग-दर्शन की सार्थकता तभी है जब मार्ग पर चला जाए। असली समस्याएँ तो मार्ग पर चलने के सामने आती हैं। जब तक व्यावहारिक स्तर पर अनुवाद न किया जाए तबतक सिद्धांत चर्चा व्यर्थ है।

व्यावहारिक स्तर पर अनुवाद को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। एक वर्ग उन रचनाओं के अनुवाद का हो सकता है, जिनमें तथ्य प्रस्तुत किये जाते हैं और सूचनाएँ दी जाती हैं। ऐसी रचनाओं के अंतर्गत भौतिक विज्ञानों, समाज-विज्ञानों, दैनन्दिन व्यवहार, कार्यालयों, पत्रकारिता आदि से संबंधित अनुवाद को रखा जा सकता है। इस वर्ग के अनुवाद की प्रकृति और प्रवृत्ति दूसरे प्रकार अनुवाद से अलग होती है। ऐसे अनुवाद के पीछे शुद्ध उपयोगितावाद प्रेरक होता है। भौतिकी अथवा अर्थशास्त्र की पुस्तक का अनुवाद, अनुवाद के द्वारा प्राप्त होने वाले सुख मात्र के लिए शायद ही कोई व्यक्ति करे। इसके विपरीत ऐसे अनेक अनुवादक मिल जाएंगे, जो किसी साहित्यिक कृति का अनुवाद इसलिए करते हैं कि उसके अनुवाद से उन्हें एक मानसिक सुख मिलता है। ऐसा अनुवाद अनेक बार रोचक परिश्रम होता है। इस प्रकार के अनुवाद को हम व्यावहारिक स्तर पर अनुवाद का दूसरा वर्ग मान सकते हैं। पहले प्रकार के लिए पाठधर्मी अनुवाद अनिवार्य है। पहले वर्ग में आने वाले अनुवाद के लिए यह आवश्यक है कि अनुवादक तटस्थ रहकर अनुवाद करे और पाठ के प्रति निष्ठावान रहे। वह पाठ में साथ छूट नहीं ले सकता पाठ को घटाने, बढ़ाने या उसमें परिवर्तन करने की छूट उसे नहीं है। दूसरे वर्ग की रचनाओं का अनुवाद पाठधर्मी भी हो सकता है और प्रभावधर्मी भी । साहित्यिक कृतियों के ऐसे तमाम उदाहरण हमें मिलते हैं जिनमें अनुवादक ने मूल रचना में अपनी ओर से बहुत कुछ जोड़ दिया है या घटा दिया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने'किरातार्जुनीयम्' का अनुवाद करते समय पाठ का विस्तार भी किया है। उन्होंने भूमिका में इस संबंध में लिखा है-"हमें प्रायः अर्थ विस्तार भी करना पड़ा है, पर इसकी परवाह न करके मूल का मतलब अच्छी तरह से समझने के लिए, हमने अधिक वाक्यों के व्यय में कमी नहीं की। प्रसंग का मेल मिलाने के लिए कहीं-कहीं तो हमने अपनी तरफ से भी कुछ नहीं दिया है।""लाइट ऑफ एशिया'का'बुद्धचरित'के नाम से अनुवाद करते समय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी यही किया है। द्विवेदी जी की तरह शुक्ल जी ने भी भूमिका में अपना मन्तव्य स्पष्टतः व्यक्त कर दिया है- यह'बुद्धचरित'अंग्रेजी के..... (लाइट ऑफ एशिया) का हिंदी काव्य के रूप में अवतरण है। यद्यपि ढंग इसका ऐसा रखा गया है कि एक स्वतंत्र हिंदी काव्य के रूप में इसका ग्रहण हो, पर साथ ही मूल पुस्तक के भावों को स्पष्ट करने का भी पूर्ण प्रयत्न किया गया है। दृश्य वर्णन जहाँ अपर्याप्त प्रतीत हुए वहां बहुत कुछ फेरबदल करना या बढ़ाना भी पड़ा है। अंग्रेजी अलंकार, जो हिंदी में आने वाले नहीं थे, वे खोल दिये गये हैं।जैसे मूल में यह वाक्य था-

.....where the Teacher Speake

. .....wisdom and Sower.....

इसमें Hendiadys नामक अलंकार था, जिसमें किसी संज्ञा का गुणवाचक शब्द उसके आगे एक संयोजक शब्द डालकर संज्ञा बनाकर रख लिया जाता है- जैसे, ज्ञान और ओज- ओजपूर्ण ज्ञान । उक्त वाक्यहिन्दी में इस प्रकार किया गया है- 'ओजपूर्ण अपूर्व भाख्यो ज्ञान श्रीभगवान ।''तात्पर्य यह कि मूल के भावों का भी ध्यान रखा गया है ।'

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी 'विद्यासुन्दर', 'रत्नावली', 'मुद्राराक्षस','सत्यहरिश्चन्द्र'नाटकों के अनुवाद में इसीपद्धति को अपनाया । शुक्ल जी की आकांक्षा थी कि उनके अनुवाद'बुध्दचरित'को मौलिक रचना के रूप में

अपनाया जाये। उनकी आकांक्षा पूरी नहीं हुई, लेकिन भारतेन्दु के'सत्य हरिश्चन्द्र'को मौलिक रचना का सम्मान मिला था। उन्होंने शेक्सपियर के नाटक –'द मर्चेन्ट ऑफ वेनिस'का अनुवाद करते समय इतनी छूट लीं कि पात्रों, स्थानों आदि के नाम बदल कर उनका भारतीयकरण कर दिया। उन्होंने वेनिस को वंशपुर बना दिया, एण्टोनियो को अनन्त, सोलानियों को सलोने और सैलोरियो को सरल बना दिया। प्रश्न उठता है कि क्या अनुवादक को पाठ के साथ ऐसी छूट लेनी चाहिए ? सिद्धांत रूप में इसका उत्तर नकारात्मक होगा अर्थात अनुवादक को अनुवादक ही रहना चाहिए। उसे किसी दूसरे की रचना के आधार पर मौलिक रचनाकार बनने की महत्वाकांक्षा नहीं पालनी चाहिए। लेकिन व्यवहार में हम अनेक अनुवादकों को इससे भी आगे बढ़कर

पुनः सर्जक बनते हुए देखते हैं। अज्ञेय ने'अरे ओकरुणा प्रभामय'के'एक चीड़ का खाका'खण्ड में अनेक बार ऐसी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं जो एकाधिक की कविताओं पर आधारित है। जैसे'क्वाँर का भोर'शीर्षक कविता-

क्वाँर का भोर

अनमनी कतार में खड़ी

डार सरसों की।

बड़ा करुण

अरुणोदय।

पादटिप्पणी से हमें पता चलता है कि इसका प्रथम छन्द काकेइऔर दूसरा छंद बाशो द्वारा रचित है। यहाँ फिर वही प्रश्न उठता है कि क्या अनुवादक का ऐसा करना उचित है ? इसका उत्तर भी वही होगा, जो ऊपर दिया जा चुका है अर्थात् सिद्धान्त रूप में नहीं लेकिन व्यवहार में सर्जनात्मक साहित्यकार अक्सर ऐसी छूट लेते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि अनुवाद का व्यवहारगत रूप उपयोगिता और कलात्मकता दोनों से प्रेरित और दोनों पर आधारित होता है। सूचनात्मक साहित्य का अनुवाद प्रायः अनुवाद ही रहता है जबकि रचनात्मक साहित्य का अनुवाद पुनः सृजन तक बन जाता है। अतः अनुवाद का व्यवहारगत रूप बड़ा वैविध्यपूर्ण होता है।

4.4 कला, शिल्प तथा विज्ञान का स्वरूप :

अनुवाद के व्यावहारिक रूप की विविधता ही हमारे सामने यह प्रश्न उठाती है कि अनुवाद विज्ञान है, या कला है या शिल्प है अथवा इनमें से एकाधिक की विशेषताओं से युक्त कोई और ही चीज ? इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए पहले हमें विज्ञान, कला और शिल्प का स्वरूप जानना होगा।

विज्ञान- पहले विज्ञान को लें। विज्ञान का सामान्य अर्थ होता है किसी भी चीज का विशिष्ट ज्ञान, लेकिन आधुनिक काल में विज्ञान शब्द अपने विशिष्ट अर्थ में भौतिक विज्ञानों-भौतिकी, रासायनिकी, जैविकी, गणित इत्यादि - तक सीमित हो गया है। इसलिए जो भौतिक विज्ञान नहीं हैं, वे भी भौतिक विज्ञानों के आधुनिक वर्चस्व के कारण उन्हीं की पद्धति को अपनाकर'विज्ञान'बनने की होड़ में लगे हुए हैं। जो पहले'शास्त्र'कहलाते थे, जैसे

राजनीति-शास्त्र, अर्थ-शास्त्र, भाषा-शास्त्र इत्यादिवे भी अब अर्थ-विज्ञान, भाषा-विज्ञान इत्यादि कहलाना पसन्द करते हैं।

भौतिक विज्ञान की पद्धति क्या है ? भौतिक विज्ञानों की पद्धति यह है कि वे पहले प्राप्त तथ्यों अथवा अपर्याप्त तथ्यों को खोजकर उनका विश्लेषण करते हैं, उन्हें एक तर्कसम्मत क्रम में संजोते हैं, उनका वर्गीकरण करते हैं और इस प्रक्रिया से गुजर कर ऐसे सिद्धांतों और नियमों की खोज करते हैं जो निरपवाद, सार्वभौमिक और सार्वकालिक होते हैं। भौतिक विज्ञानों के सिद्धांत और नियम निर्विकल्प, सुस्पष्ट, सुनिश्चित और सु-परिभाषित होते हैं। चूंकि भौतिक विज्ञानों का संबंध भौतिक जगत से होता है, इसलिए उनमें यांत्रिक प्रक्रिया, वैज्ञानिक की निर्वैयक्तिक तटस्थता, सार्वभौमिक और सार्वकालिक निर्विकल्प नियमों और सिद्धांतों की खोज संभव है, लेकिन सामाजिक जीवन से संबंद्ध पद्धतियों, सांख्यिकीय विधियों, साक्षात्कारों, प्रश्नावलियों, संगणना करनेवाले यंत्रों आदि की सहायता लेकर समाज-विज्ञानों, भाषा-विज्ञानों इत्यादि के क्षेत्र में अध्ययन विश्लेषण, वर्गीकरण, निष्कर्षण आदि को अपनाकर एक सीमा तक वैज्ञानिकता सिद्ध की जाती है।

कला : कला का स्वभाव विज्ञान के बिल्कुल विपरीत है। कला के अंतर्गत मनुष्य की वे क्रियाएँ और कृतियाँ आती हैंसृजन और आस्वादन दोनों में उसे मानसिक आह्लाद मिलता है और उसकी सौन्दर्यवृत्ति की तृप्ति होती है। कला के माध्यम से मनुष्य लालित्य की सृष्टि करता है और उससे स्वयं आनन्दित होता है और दूसरों को आनन्दित करता है। कला की वस्तु के रूप में मनुष्य के अनुभव, भावनाएं और इन्द्रिय बोध सामने आते हैं जो सार्वभौमिक और सार्वकालिक होते हुए वैशिष्टय के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। इसीलिए प्रत्येक कलाकृति निजी वैशिष्ट्य और व्यक्तित्व से संपन्न होती है। कला में कलाकार की वैयक्तिक विशिष्टता, वैयक्तिक प्रतिभा और सृजनशीलता का विशेष महत्व होता है। कलाकृति के रूप मनुष्य के जो अनुभव, भाव और इन्द्रियबोध विशिष्ट, निजी व्यक्तित्व संपन्न अभिव्यक्ति पाते हैं, आस्वादक भी जब उन्हें ग्रहण करता है। तबयानी जब हम कविता को सुनते या पढ़ते हैं तब- हमारे ऊपर उसका जो प्रभाव पड़ता है, हम उसे जिस रूप में ग्रहण करते हैं, वह बिल्कुल वही अनुभव, भाव या इन्द्रियबोध नहीं होता, जो कवि का था या जिसे कवि ने संप्रेषित करना चाहा था। जब प्रसाद जी'कामायनी'में मनु से कहलवाते हैं -

कब तक और अकेले कह दो,

हे मेरे जीवन बोलो ?

किसे सुनाऊं कथा कहो मत,

अपनी निधि न व्यर्थ खोलो।

तब उनके इस कथन में अकेलेपन की जिस तड़प ने अभिव्यक्ति पायी है, क्या उसे 'कामायनी' का हर पाठक ग्रहण कर पाता है ? संभवतः नहीं। जबकि सत्य यह है कि अकेलेपन की यह तड़प प्रसाद जी ने स्वयंबड़े तीखेपन के साथ अनुभव की थी। यह उनके जीवन का यथार्थ था। महादेवी वर्मा ने उनके संबंध में लिखा है"प्रसाद

का व्यक्तिगत जीवन अकेलेपन की जैसीअनुभूति देता है, वैसी हमें किसी अन्य समसामयिक साहित्यकार के जीवन के अध्ययन से नहीं प्राप्त होती है।"

शिल्प : कला का उच्च अर्थ वही होता है, जो ऊपर बताया गया है लेकिन सामान्य रूप में उस अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है जिस अर्थ में शिल्प को किया जाता है। शिल्प के पर्यायवाची के रूप में हुनर, कारीगरी, दक्षता, हस्तकर्म इत्यादि का प्रयोग किया जाता है और माना जाता है कि प्रशिक्षण, अभ्यास और शारीरिक श्रम के द्वारा किसी उपयोगी वस्तु के निर्माण में दक्षता प्राप्त कर लेना शिल्पगत है। इसमें सृजनशीलता की अभिव्यक्ति नगण्य होती है। इसलिए कला की अपेक्षा को हीनतर माना जाता है। इसका एक कारण यह भी है कि कला का संबंध लालित्य से जोड़ा जाता है और शिल्प का संबंध उपयोगिता से। ललित कलाओं की रचना में प्राप्त कुशलता कला है, उपयोगी कलाओं के निर्माण में प्राप्त दक्षता शिल्प है। कला, शिल्प अथवा विज्ञान का स्वरूप जान लेने के बाद अब अनुवाद इनमें से क्या है, इसका निर्णय करने में अधिक कठिनाई नहीं

होनी चाहिए।

4.5 क्या अनुवाद शिल्प है ?

सफल अनुवादक कलाकार होता है और सफल अनुवाद को कला की श्रेणी में रखा जा सकता है, लेकिन उसकी एक सीमा हैऔर वह सीमा यह है कि सामान्यतः कलाकार जन्मजात होते हैं। उनमें सृजन की प्रतिभा प्रकृति, प्रदान होती है, व्युत्पत्ति और अभ्यास से उसमें निखार और संयम आता है जिस तरह कवि प्रशिक्षण और अभ्यास से बनाये नहीं जा सकते उसी तरह अनुवादक भी नहीं बनाए जा सकते हैं। प्रशिक्षण और अभ्यास उनकी प्रतिभा में दक्षता ला सकते हैं। प्रशिक्षण और अभ्यास से अनुवादक जो दक्षता प्राप्त करता है, वह शिल्प का गुण है। यह दक्षता साहित्यिक अनुवाद में कम, अन्य क्षेत्रों के अनुवाद में अधिक।

शिल्प और कौशल का अंग्रेजी रूपांतर है- क्राफ्ट (Craft) और कला का आर्ट (Art)। एक प्रकार

से कला शब्द सभी प्रकार की लालित्य बोधीय अनुभूतियों, अनुभवों और अभिव्यक्तियों के लिए आता है।

कला और शिल्प को अलग नहीं किया जा सकता। अलग- अलग दिखाई देने पर वस्तुतः यह एक दूसरे से भिन्न नहीं होते।इस तरह शिल्प, कला की ही एक अवधारणा है। कला नैसर्गिक प्रतिभा का सहज विस्फोट है इसलिए तमाम ललित कलाएँ अर्जन और शिक्षण को महत्व देने पर भी यही नारा लगाती हैं कि कलाकार उत्पन्न होते हैं, वे बनाये नहीं जाते। अनुवादककलाकार की भाँति सृजनकर्त्ता नहीं है क्योंकि सृजन आत्म-साक्षात्कार के क्षणों की अनिवार्य प्रक्रिया है जिसका परिणाम है- आत्माभिव्यक्ति। परन्तु अनुवादक इस अर्थ में कलाकार है कि वह कलाकार की आत्माभिव्यक्त को अपने में उतारता है, उससे पुनः आत्म-साक्षात्कार करता है और तटस्थ भाव से उसको पुनः अभिव्यक्त कर देता है। इस अर्थ में अनुवादक का व्यक्तित्व पुनरुत्पादक कलाकार का व्यक्तित्व है। कला सृजन है और अनुवाद पुनर्सृजन। यह एक प्रकार का प्रविधि और प्रक्रियागत पार्थक्य है।

चूकि अनुवाद प्रशिक्षण और अभ्यास-साध्य उपयोगी कला (Functional art) है, अतः एक सीमा तक उसकी गणना शिल्प के अंतर्गत की जा सकती है।

4.6 क्या अनुवाद कला है?

जो लोग अनुवादक को केवल जीता-जागता यंत्र मानते हैं और उसका कार्य इतना भर मानते हैं और उसका कार्य इतना भर मानते हैं कि वह एक भाषा में व्यक्त की गयी बात को दूसरी भाषा में अंतरित कर रख-भर देता है, उनकी दृष्टि में अनुवाद कला नहीं है। लेकिन जो लोग अनुवादक के निजी व्यक्तित्व और सृजनशीलता को स्वीकार करते हैं, वे अनुवाद को कला मानते हैं। अनुवाद कला है, इसका सबसे अधिक अनुभव हमें साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में मिलता है। तथ्य और सूचना प्रस्तुत करने वाले विज्ञानों और शास्त्रों में भी शब्दानुवाद से काम नहीं चल सकता है। भावों और विचारों को भाषा के सौष्ठव के साथ प्रस्तुत करना होता है। साहित्यिक कृतियों का अनुवाद तो अक्सर भाव प्रधान ही होता है। साहित्य में रचना की जिस अंतर्वस्तु को अभिव्यक्ति देनी पड़ती है, उसमें भाषा का अधिकतम संभव अर्थ में प्रयोग करना पड़ता है, फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि अभिव्यक्ति पूर्ण हुई है। यही कारण है कि जहाँ विज्ञानों और शास्त्रों आदि में भाषा की अभिधा शक्ति से काम लिया जाता है वहीं सर्जनात्मक भाषा में अभिधा की अपेक्षा लक्षणा और व्यंजना शक्तियों से अधिक काम लिया जाता है। साहित्य में जो स्पष्टतः कथित है, उसकी अपेक्षा जो उस कथन के पीछे संकेतित है, उसका अधिक महत्व है। अनुवाद में इस संकेतित को पकड़ पाना अत्यन्त दुष्कर होता है। अनुवाद में इस संकेतित को पाने के लिए अनुवादक को सर्जक - कलाकार की भूमिका में उतरना पड़ता है। एक ही साहित्यिक रचना का बार-बार और अनेक बार अनुवाद के द्वारा अनुवाद किया जाना इस बात का प्रमाण है कि हर अनुवाद के बाद भूल में ऐसा कुछ बचा रहता है, जो नए अनुवादक को ललकारता है और अनुवादक उस ललकार के उत्तर में एक नया अनुवाद प्रस्तुत कर देता है। कबीर का एक अत्यन्त प्रसिद्ध और सरल सा दिखने वाला दोहा है-

राम नाम की लूट है, लूटि सकै तो लूट,

तू पीछे पछताएगा, साँस जाएगी छूट।

इस दोहे का अंग्रेजी में अनुवाद अनेक लोगों ने किया है, फिर भी इसकी संभावनाएँ चुकी नहीं है। इसके दो अनुवादयहाँ प्रस्तुत है-

If you can lunder, pluner,

Let the name of Ram be your booty.

Otherwise later you'll repent,

when you breath your last. (Charlotte Vaudeville)

Rejoice, O Kabir

In this gret feast

of Love!

Once death

Knocks at your door

This golden mement / will be gone forever! (Sahdev Kumar)

इनमें से पहला अनुवाद बहुत कुछ शब्दानुवाद है, जबकि दूसरा अनुवाद भावानुवाद है। पहले अनुवाद का अनुवादक अनुवादक ही रहा है, जबकि दूसरे अनुवाद का अनुवादक सर्जक बन गया है। उसने कबीर के दोहे के आधार पर एक नयी ही कविता रच दी है। निस्संदेह हम सहदेव कुमार को इस अनुवाद के लिए सर्जक-कलाकार कह सकते हैं और उनके अनुवाद को कला की श्रेणी में रख सकते हैं।

इसी प्रकार विदेशी कविताओं के एकाधिक हिन्दी अनुवाद उदाहरण के लिए प्रस्तुत किए जा सकते हैं। पुर्तगाली कवि अलबर्टो की एक कविता का अंग्रेजी अनुवाद और उसके एकाधिक हिंदी अनुवाद प्रस्तुत है।

Core

I write my name on time

And on the world.

All belong to me as flower

Belongs to its perfume asleep

That stays virbrating in the air

After the sonbre shedding.

1. अपना नाम लिखता हूँ

समय पर

और तमाम सारी दुनिया पर

और..... और सब कुछ मुझसे

वैसे ही संबंधित है,

(अरुण कमल)

जैसे फूल

अपनी सुवासित तन्द्रा से

जो हवा में ठहरती है

यों ही झर जाने तक.... ।

(परमानन्द श्रीवास्तव)

2. सत्त

मैंने लिख दिया है नाम

अपने काल पर, संसार पर

और यह सब मेरा है अब

जैसे फूल की सुगन्ध सुप्त अन्दर

जो टिकी रह जाती है, झड़ने के बाद भी

हवा में थरथराती ।

दोनों हिंदी अनुवादों की तुलना करने पर दोनों अनुवादकों की क्षमता और सर्जनशीलता हमारे सामने आ जाती है और यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अनुवादक भाषान्तर करने वाला यंत्र मात्र नहीं है। यहां यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या अनुवादक को अनुवादक की भूमिका का अतिक्रमण करके सर्जक बनने की छूट दी जा सकती है? यदि हम श्रेष्ठ अनुवाद चाहतेहैं तो हमें अनुवादक को यह छूट देनी होगी। साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में तो यह छूट आवश्यक है। इस छूट के बाद भी कुछ अनुवादक कभी-कभी बड़ा अनर्थ करते हैं ।

अनुवादक मूल कृति में निहित बिंबों, प्रतीकों, संदर्भों को तलाशता है, कृति के समग्र सांस्कृतिक संदर्भों को पहचानता है, उन्हें व्याख्यायित करता है और लक्ष्य भाषा में उन्हें पुनः सृजित करता है। इस पुनः सृजन की प्रक्रिया में वे कभी तो अपने मूल रूप में ही, भाषांतरित हो कर आ जाते हैं कभी रूपान्तरित होकर आते हैं। इस रूपांतरण

की प्रक्रिया में अनुवादक कभी-कभी भटक भी जाता है इस विवेचन के आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अनुवादक मात्र उल्थकार नहीं है वरन् सफल अनुवादक बहुत बड़ी सीमा तक कलाकार होता है और सफल अनुवाद कला।

4.7 क्या अनुवाद विज्ञान है ?

विद्वानों का एक वर्ग ऐसा है जो अनुवाद को विज्ञान की श्रेणी में रखना चाहता है। इन विद्वानों में नाइडा और ओटिंगर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये भाषा-वैज्ञानिक हैं और अनुवाद को विज्ञान सिद्ध करने में इनके दो तर्क हैं। पहला यह है कि अनुवाद की प्रक्रिया तुलनात्मक भाषा विज्ञान में प्रयुक्त होने वाली प्रक्रिया है। नाइडा के अनुसार अनुवाद में पहले स्रोत भाषा के पाठ का विकोडीकरण किया जाता है। इसके बाद विकोडीकरण के द्वारा प्राप्त अर्थ का कोडीकरण के द्वारा लक्ष्य भाषा में पुनर्गठन किया जाता है। इन दोनों प्रक्रियाओं को संपन्न कर लेने के बाद स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का वैज्ञानिक पद्धति से तुलनात्मक अध्ययन करके समानताओं और विषमताओं का पता लगाया जाता है। इसके बाद कोडीकरण के द्वारा पाठ के रूप में पुनर्गठन किया जाता है। अनुवाद की यह प्रक्रिया वैज्ञानिक प्रक्रिया है। दूसरा तर्क, जो इसी तर्क की परिणिति है, यह कि इस वैज्ञानिक प्रक्रिया को अपनाकर विकल्पनों पर नियंत्रण कर कंप्यूटर के द्वारा मशीनी अनुवाद संभव है और इस मशीनी अनुवाद में एक सीमा तक सफलता प्राप्त कर ली गयी है।

इन दोनों तर्कों को आँख बंद करके मान लें तब अनुवाद विज्ञान है, लेकिन इन तर्कों को लेकर कई आपत्तियाँ उठ खड़ी होती हैं। जैसे भौतिकी, गणित या अन्य भौतिक विज्ञानों में कंप्यूटर का उपयोग जिस असीमता तक किया जा सकता है, क्या वैसे ही अनुवाद में भी संभव है ? क्या अनुवाद की प्रक्रिया पूर्णतः यान्त्रिक है? भौतिक विज्ञानों, समाज विज्ञानों, प्रशासन या सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त तथ्यात्मक और सूचनात्मक पाठ का यांत्रिक अनुवाद संभव है, लेकिन वहाँ भी क्या विकल्पनों से पूरी तरह मुक्त हुआ जा सकता है? एक सीधा सा वाक्य लीजिए - My Father is ill. क्या कम्प्यूटर भी भिन्न-भिन्न प्रोग्रामों के आधारपर इसके भिन्न-भिन्न अनुवाद नहीं करेगा ? जैसे मेरे पिताजी बीमार हैं, मेरे पिताजी की तबीयत ठीक नहीं है, मेरे पिताजी रुग्ण हैं, इत्यादि। इनमें से एक भी अनुवाद गलत नहीं और न ही इनमें से एक अनुवाद को दूसरे अनुवाद से अधिक अच्छा सिद्ध किया जा सकता है और यदि प्रोग्रामिंग में थोड़ी-सी त्रुटि हो जाये तो हास्यापद परिणाम निकल सकते हैं। कंप्यूटर-कृत अनुवाद को लेकर अनेक चुटकले प्रचलित हैं। एक चुटकला यह है। कंप्यूटर को रूसी में अनुवाद करने के लिए अंग्रेजी का यह वाक्य दिया गया-

The spirit is willing but the flesh is weak.

कंप्यूटर ने तुरंत इसका जो रूसी अनुवाद किया, उसका अंग्रेजी में अर्थ था-

The vodka is agreable but the neat has gone bad.

साहित्य का मशीनी अनुवाद तो लगभग असंभव है। माना तो यहाँ तक जाता है कि मशीन तो मशीन, मनुष्य के द्वारा भी उसका अनुवाद असंभव है। इसलिए राबर्ट फ्रास्ट ने कहा था कि कविता का अनुवाद करते समय जो कुछ छूट जाता है, वही कविता होती है। यह काफी हद तक सच है बिहारी का बड़ा प्रसिद्ध दोहा है-

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।

सौंह करै भौंहन हँसे, देन कहै, नटि जाइ॥

अमरनाथ झा इस दोहे का अंग्रेजी में इस प्रकार अनुवाद किया है।

In order to hear him speak Radha conceals krishnas flute. She swears to him sheknows nothing about it, she laughs with her eye - brows arched, the promises to return it, But eventually she denies all knowledge of it.

जो बिहारी के दोहे के काव्य-सौन्दर्य से परिचितहैं, वे मानेंगे कि उसके अंग्रेजी अनुवाद में उसका प्रसंग भी नहीं आ पाया है। यही कारण है कि एक साहित्यिक रचना का अनेक अनुवादक बार-बार अनुवाद करते हैं, जिनमें से कोई अनुवादसफल होते हैं, कोई असफल। यह सफलता- असफलता भी सापेक्ष होती है। हिंदी में उमर खय्याम की रूबाइयों के जो दसियों अनुवाद हुए हैं, वे सब सफल अनुवाद नहीं है और उनके बावजूद रुबाइयों का एक और पूर्णत्तर अनुवाद प्रस्तुत करने के लिए कोई भी अनुवादक कमर कस सकता है।

इस स्थिति में भी क्या अनुवाद को विज्ञान माना जा सकता है ?हमें लगता है कि जिन अर्थों में भौतिकी, रासायनिकी, गणित इत्यादि विज्ञान हैं उन अर्थों में अनुवाद विज्ञान नहीं है।मशीनी अनुवाद के अस्तित्व बावजूद अनुवाद में विकल्पों की संभावना बराबर बनी रहती है और मनुष्य के द्वारा किए जानेवाले अनुवाद पर अनुवादक की व्यक्तिगत क्षमता, सूझबूझ और व्यक्तित्व की छाप अवश्य पड़ती है। इसलिए अनुवाद इस अर्थ में विज्ञान कहा सकता है कि उसमें तार्किक और एक सीमा तक निर्वैयक्तिक वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया जाता है और उसेयांत्रिक बनाया जा सकता है।

अनुवाद के अध्ययन की प्रक्रिया विज्ञान के अध्ययन की प्रक्रिया से निकटता रखती है, जिस प्रकार विज्ञान संबंधी अनुशीलन में तथ्य संकलन, तुलना, निरीक्षण, वर्गीकरण, विश्लेषण नियम निर्धारण आदि कार्य शामिल होते हैं, उसी प्रकार की स्थितियाँ अनुवाद कार्य में भी आती रहती हैं। वैज्ञानिक के समान अनुवादक को भी तटस्थ रहना पड़ता है एवं अनुवाद के माध्यम से एक भाषा के कथ्य को दूसरी भाषा में सही ढंग से लाना पड़ता है। इस प्रकार वह सांस्कृतिक भाषा का एक ऐसा संपर्क-सूत्र खड़ा करता है जिसकी उपयोगिता सामाजिक जीवन में अत्यधिक है। वैज्ञानिक अनुसंधानशाला में बैठकर मानव-कल्याण की ओर प्रवृत्त होता है और अनुवादक स्रोत भाषा की सामग्री से जूझ कर मानव-कल्याण की ओर या विचार के आदान-प्रदान की सुविधा के ओर समानार्थक शब्दों या नए शब्दोंया नए शब्दों को खोजकर आगे बढ़ता है, दो देशों के भाषा-साहित्य और संस्कृतिपरक ज्ञान की सरलता, सुबोधगम्यता और दृष्टि की वैज्ञानिकता में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार अनुवादक कुछ अपवादों को छोड़कर निश्चित नियमों का अनुसरण करता है। यह प्रक्रिया पूरी तरह से वैज्ञानिक है और यदि इसमें वैज्ञानिक

नियम न होते तो मशीनी अनुवाद संभव ही नहीं हो सकता था। दो भाषाओं के वैज्ञानिक अध्ययन विश्लेषण के आधार पर सुनिश्चित वैज्ञानिक नियमों ने ही इस प्रक्रिया को संभव बनाया है। इस प्रकार अनुवाद की संपूर्ण मानसिकता वैज्ञानिक प्रक्रिया की मानसिकता से जुड़ी है और अनुवादक की पूरी पृष्ठभूमि कार्य-कारण सम्बन्ध से रहित नहीं है। इसी अर्थ में अनुवाद विज्ञान कहा जा सकता है ।

4.8 अनुवाद में शिल्प, कला और विज्ञान तीनों के तत्त्व :

अनुवाद की प्रकृति के संबंध में जो कहा गया है, उससे स्पष्ट है कि अनुवाद को केवल विज्ञान या केवल कला या केवल शिल्प कहना ठीक नहीं है। उसमें किसी-न-किसी मात्रा में इन तीनों के तत्त्व विद्यमान रहते हैं। जब तक अनुवादक में संवेदनशीलता और तीक्ष्ण बुद्धि नहीं होगी तब तक वह स्रोत भाषा में प्रस्तुत कथ्य को ग्रहण कैसे करेगा ? अगर अनुवादक किसी साहित्यिक कृति का अनुवाद कर रहा है तो सबसे पहले तो उसे अनूद्य साहित्यिक कृति से अंतरंग का साक्षात्कार करना होगा। यह तब तक संभव नहीं होगा जब तक कि अनुवादक में एक रचनाकार की संवेदनशीलता न हो और वह उस अनुभव को स्वायत्त करने की क्षमता न रखता हो, जिसमें से गुजरकर साहित्यकार ने उस रचना को रचा है। यह अकारण नहीं है कि उमारखय्याम की रुबाइयों का अंग्रेजी से सर्वाधिक सफल हिन्दी अनुवाद डॉ. हरिवंशराय बच्चनने किया। अनुवाद करते समय फिट्जजेराल्ड और'बच्चन'दोनों अपने निजी जीवन में भी गहरी पीड़ा और घोर निराशा में से गुजर रहे थे। इसी प्रकार जो अनुवादक भौतिकी या अर्थशास्त्र में चंचु-प्रवेश तो अवश्य होना चाहिए। नहीं तो वह मूल को समझेगा कैसे ? और मूल को समझे बिना अनुवाद करना संभव नहीं होगा। अतः अनुवादक के लिए संवेदनशीलता और समझ दोनों की आवश्यकता होती है। अनूद्य सामग्री के कथ्य को अच्छी तरह ग्रहण करने के पश्चात् उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की समस्या उपस्थित होती है। इस समस्या के समाधान के लिए लक्ष्य भाषा पर अधिकार के साथ-साथ वह सर्जनशीलता भी चाहिए जो ठीक-ठीक शब्द- चयन के लिए उत्तरदायी होती है। उदाहरण के लिए, यदि मूल पाठ में flowering शब्द का प्रयोग संज्ञा के रूप में एकाधिक अर्थच्छायाओं के साथ हुआ है तो अनुवादक के सामने प्रश्न ऐसे हिंदी शब्द का चयन का है जिसमें flowering शब्द कासंगीत और मूल में संकेतित सभी अर्थच्छाएँ भी विद्यमान हों। अनुवादक 'फॉदर कामिल बुल्के' का'अंग्रेजी हिंदी कोश'देखता हैं और उसे हिंदी शब्द मिलता है'पुष्पण'। वह हरदेव बाहरी का'बृहत अंग्रेजी हिंदी कोश'देखता है और उसे दो हिंदी पर्याय मिलते हैं-'पुष्पन'और'फूल आना' । इनमें वह'पुष्पण'या'पुष्पन'को चुन सकता है, लेकिन इनमें flowering की संगीतात्मक कम है। अतः उसे नये हिंदी शब्द चुनने या रचने में अनुवादक में संवेदनशीलता और रचनाशीलता दोनों विशेषताओं का होना आवश्यक है।

संवेदनशीलता और रचनाशीलता की विशेषताएँ तो जन्मजात होती है, किन्तु जो जन्मजात विशेषताएँ हैं, उनके विकास और परिमार्जन के लिए शिक्षण और अभ्यास दोनों आवश्यक हैं। एक शिल्पी के लिए इनकी बहुत आवश्यकता होती है। भाषा के लक्ष्य भाषा में ठीक प्रभावशाली ढंग से उतार पाने के लिए अनुवादक को शिल्पी तो बनना ही पड़ेगा। इसलिए वह जरूरी है कि अनुवादक में वैज्ञानिक की तर्क-प्रवणता,बौध्दिकता और

तटस्थता हो, कलाकार की संवेदनशीलता और सर्जनशीलता हो तथा शिल्पी का प्रशिक्षण और परिश्रमशीलता हो।

इससे तो यही सिद्ध होता है कि अनुवाद अंशतः विज्ञान हैं, अंशतः कला और शिल्प। इसमें से किस अनुवाद में कितना-कितना अंश होता है, यह अनूद्य और अनुवादक दोनों पर निर्भर होता है। यदि कविता का अनुवाद कलात्मक नहीं होगातो उसमें सफलता कैसे मिलेगी? स्वाभाविक है कि कविता के अनुवाद में कला तत्त्व प्रधान होगा। इसके विपरीत यदि विज्ञान के अनुवाद में कलात्मकता लाने का प्रयास किया जाएगा तो अपने लक्ष्य से विचलित हो जाएगा। उसमें तो वैज्ञानिकता अपेक्षित है साथ ही शिल्प का मंजाव और निखार दोनों के लिए आवश्यक है।

4.9 सारांश :

अंतः यह कह जा सकता है कि अनुवाद एक कला,शिल्प और विज्ञान भी है। इसे जो साध ले गया वह मूल रचनाकार के साथ अमर हो जाता है। यह न तो भाषांतर है और न ही रूपांतर। यह उलथा भी नहीं है। सही अर्थों में यह किसी सृजन का भाषांतर के साथ - साथ पुनर्सजन भी है। 'अनुवाद'को कोई सरल, सरस प्रक्रिया मानता है तो कोई इसे बेहद जटिल और नीरस क्रिया मानता है। आज अनुवाद एक स्वतंत्र विधा के रूप में बहुत संश्लिष्ट होकर निखरा है। कभी 'अनुवाद कला'लगता है तो कभी 'शिल्प'लेकिन वस्तुतः यह 'विज्ञान'है। विकीपीडिया के अनुसार इसे अध्ययन की सुविधा के लिए शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, व्याख्यानुवाद जैसे नाम दिए जा सकते हैं। जब अनुवादक स्रोत भाषा के शब्द एवं शब्द क्रम को उसी प्रकार लक्ष्य - भाषा में रूपान्तरित कर अपने भाव व्यक्त करता है तो वहशब्दानुवाद कहलाता है। यहाँ अनुवादक का लक्ष्य मूल - भाषा के विचारों को रूपान्तरित करने से अधिक शब्दों का यथावत अनुवाद करने से होता है। शब्दानुवाद प्रायः कृत्रिम और मशीनी हो जाने के कारण मूल की आत्मा का हत्यारा भी बन जाता है। भावानुवाद साहित्य क्षेत्र में अधिक प्रभावी होता है। भावानुवाद में स्रोत भाषा के भावों, विचारों एवं सन्देशों को लक्ष्य - भाषा में रूपान्तरित किया जाता है।

अनुवाद विज्ञान है या कला है अनुवाद वस्तुतः कला के अंतर्गत नहीं आएगा क्योंकि यह एक निश्चित प्रक्रिया है विज्ञान है अर्थात जिसमें विशेष प्रकार का नियम हो और उसे नियमों के अंतर्गत ही कार्य करना पड़े वह विज्ञान ही होता है अगर उन नियमों के तहत उस व्याकरण के तहत अगर कार्य नहीं होता है तू अनुवाद ठीक नहीं हो सकता है लेकिन कला में क्या है का नाम है कोई निश्चित परवाना नहीं होता है वह उसके बुद्धि और विवेक पर निर्भर करता है कि वह किसी वस्तु को किसी भी व्यक्ति को किस दृष्टि से दर्शक प्रदर्शित करता है इसलिए कला धन्य विषय है और विज्ञान बंद विषय है हां यह निश्चित है कि कला में भी विज्ञान है अगर वह भी निश्चित किसी तरीके से उसमें भी कुछ अनिश्चितता होती हैं।

4.10 बोध प्रश्न :

1. अनुवाद किसे कहते हैं।

2. अनुवाद के कला, शिल्प अथवा विज्ञान के तत्वों के बारे में बताइए।

3. अनुवाद कला, शिल्प अथवा विज्ञान को सोदाहरण के रूप में लिखिए।

4.11 सहायक ग्रंथ :

1. अनुवाद विज्ञान- भोलानाथ तिवारी, किताब महल।

2. व्यवहारिक हिन्दी- डॉ. कैलाश चन्द्र भटिया, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।

3. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. कमल कुमार बोस, नई दिल्ली।

****

- डॉ. सूर्य कुमारी. पी.

5. साहित्यकअनुवाद की समस्याएँ
काव्यानुवाद

उद्देश्य

पिछले खण्ड में अनुवाद की व्युत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा, स्वरूप प्रक्रिया, प्रकार आदि के बारे में जानकारी प्राप्तकर चुके है। इस खण्ड में अनुवाद के व्यावहारिक ज्ञान को समझेंगे। अनुवादकरते समय खासकर साहित्यिक अनुवाद के समय अनुवादक के सामने अनेक कठिनाइयाँ औरसमस्याएँ आते हैं। उनके समाधान निकालकरउत्तम अनुवाद प्रस्तुत करने का प्रयास करनापड़ता है। इन कठिनाइयों के बारे में, काव्यानुवादके बारे में इस अध्याय में जानेंगे।

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 साहित्य के प्रकार

5.3 काव्यानुवाद की समस्याएँ

5.3.1 काव्यानुवादके प्रकार

5.4 सारांश

5.5 बोध प्रश्न

5.1. प्रस्तावना :

अनुवाद का क्षेत्र विस्तृत है । आज के युग को अनुवाद काकहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। आजकलसर्जनात्मक साहित्य से लेकर हर एक क्षेत्र में अनुवाद का उपयोग कररहे हैं। अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जो सभी क्षेत्रों में अपनीप्राधान्य रख रही है। अनुवाद को साहित्य और साहित्येतर अंशों में देखना चाहिए। साहित्य के कई प्रकार हैं जैसे कविता, पद्य,उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी आदि। साहित्येतरअंशों में बैंकिंग,वैज्ञानिक, प्रशासनिक, विधिआदि। इस अध्याय में साहित्यके प्रकार और उनमें काव्यानुवाद की समस्याओं के बारे में विस्तृत अध्ययन करेंगे।

5.2 साहित्य और अनुवाद :

भारतीय साहित्यका इतिहास विश्व भर में सर्वाधिक प्राचीन, प्रौढ़ और कलामय है। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के वैदिक काल से लेकर अब तक भारत की अनगिनत भाषाओं और बोलियों में चिन्तन और

सृजनकी सुदीर्घ परम्परा उपलब्ध है। लेकिन भारतीय साहित्य का तात्पर्य केवल विविध भाषाओंका रचनात्मक समुच्चय नहीं है, अपितु भारतीय साहित्य इस बहुभाषी और वैविध्यपूर्ण देशकी सामासिक संस्कृति का समेकित प्रयास भी है। भाषा ज्ञान के बिना भारत की विभिन्न भाषाओंमें शताब्दियों में रचित साहित्य की उपलब्धियों से परिचित होना असंभव है। इसी असंभवको संभव बनाने में अनुवाद की उपादेयता कारगर होती है। अन्य भाषा के ज्ञान की कभी अनुवादसे पूरी होती है। सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं के साहित्य की विचार सामग्री और कलात्मक गरिमाका परिबोध अपनी ही भाषा में मिल जाए, यह अनुवाद का चमत्कार है। भारतीय साहित्य की अनमोलउपलब्धियाँ अनुवाद के कारण भाषा और देश, काल की सीमा में बँधी हुई नहीं है। स्वभावतःभारतीय साहित्य के अध्ययन और आस्वादन में अनुवाद की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य का अध्ययनऔर अनुसंधान अनुवाद के बिना संभव नहीं। अनुवाद ने भारतीय साहित्य के अध्येताओं को एकदूसरे के निकट लाने का सम्यक् प्रयास किया।

सर्जनात्मक साहित्य भारतीयसाहित्य केविभिन्न प्रकारों को देखते है- यथा, काव्य,नाटक, कहानी, एकांकी, उपन्यास, आत्मकथा, रिपोतार्ज,निबंध आदि। इन सभी साहित्यक अंशोंका अध्ययन और अनुसंधान अनुवाद के बिना सम्भव नहीं । अनुवाद का अर्थ एक भाषा में कहीगयी अंश को यथातथ बिना अर्थ बदले दूसरे भाषा में बताना या पुनः कथन है। साहित्यकी जो मौलिक परिभाषा है, वह है जिसमें शब्द और अर्थ में सामंजस्य होता है। सहित काभाव साहित्य है: शब्द और अर्थ जहाँ पर एक दूसरे के साथ संयुक्त हो,दोनों में से किसी कीन्यूनता या अतिरेक न हो, अर्थात सद्भाव का नाम 'साहित्य'है। दोनों में से किसी कामहत्व कम न हो। दोनों का तादात्म्य हो । यही एक धर्म है जो साहित्य को संगीत और शास्त्रसे भिन्न करता है। शास्त्र से साहित्य भिन्न है, क्योंकि शास्त्र में शब्द की अपेक्षासिद्धांत का महत्व अधिक होता है। अतः ऐसे साहित्य का अनुवाद कैसे किया जाए? शब्द औरअर्थ का जहाँ तादात्म्य हो, वहाँ किया जाए? साहित्य की भाषा में अर्थ की सूक्ष्मताहोती है। यहाँ शब्द का सामान्य अर्थ गौण हो जाता है, काव्यार्थ प्रमुख हो जाता है । अर्थात कविता में अर्थअनेक होते हैं। कविता की भाषा में बिंब, प्रतीक और अलंकारों का जो प्रयोग किया जाताहै, उन्हें किसी दूसरी भाषा में अनूदित कर पाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। क्योंकिप्रत्येक भाषा की अपनी अभिव्यंजना शक्ति होती है - अभिव्यक्ति के अपने ढंग होते हैं।विशिष्ट अभिव्यंजना का अनुवाद कभी संभव हो ही नहीं सकता। अतः लक्ष्य भाषा में उसे पूर्णतःअनूदित कर पाना संभव ही नहीं है। साहित्य का अर्थ है अभिव्यंजनाऔर अभिव्यंजना अद्वितीय होती है। साहित्यिक कृतियों के अनुवाद हुए है और इससे कईलाभ हुए हैं। इससे भाषा तथा संस्कृति और सभ्यता का विकास भी हुआ है। साहित्य में कथ्य, रूप, कथन शैली मुख्य गुण होते हैं और अनुवाद करते समय इन तीनों का अनुवाद करनापड़ता है। साहित्य के कथ्य की रचना लेखक के विचारों भाव और विचार या बुद्धि - तत्व सेही होती है। किसी कृति में निबद्ध विचारों या भावों का दूसरी

भाषा के माध्यम से संप्रेषण करनाअनुवाद है। शैली औररूप का अनुवाद करनाअधिक कठिन होता है। शैली में बिंबया मूर्त विचारों का प्रकटीकरण होता है । अतः वह स्वयं में ही कठिन है। शैली अपने आपमें ही एक प्रकार का अनुवाद है। मूर्त अनुभूति का शब्दानुवाद, मूल विचारों को शैली बद्धकरना ही अपने आपमें अनुवाद है। किसी भी अर्थ की पूर्ण अभिव्यक्ति असंभव होती है। अतःवह अंश - रुप में ही अभिव्यक्त होती है। शैली अपने आप में एक अपूर्ण अभिव्यंजना है-भाव या विचार को अभिव्यक्त करने के लिए। अतः अपूर्ण की दूसरी भाषा में रूपांतर करनातो और भी अपूर्ण हुआ। इसी प्रकार साहित्य में बिंब, प्रतीक, शब्द के अभिधा, लक्षणा, व्यंजनार्थ, उपमान आदि का अनुवाद भी एक सीमातक ही संभव है।

अतः साहित्य की भाषा तथा काव्य तत्व अनुवादकके लिए समस्या पैदा करते है। यदि अनुवाद की परिभाषाओं पर पुन: विचार करें तो उनमेंअनुवाद के दो लक्ष्य हमें प्रमुखता के साथदिखाई देते हैं-

1. तात्पर्य को सुरक्षित रखते हुए लक्ष्य भाषामें पाठ परिवर्तन तथा

2. स्त्रोत भाषा की भाषिक इकाइयों का लक्ष्यभाषा की भाषिक इकाइयों द्वारा प्रतिस्थापना।

साहित्य के अनुवाद के संदर्भ में देखेंतो इन दोनों लक्ष्यों को अनूदित पाठ में प्राप्त कर पाना सरल नहीं होता। अनुवादकअगर तात्पर्य को सुरक्षित रखते हुए लक्ष्यभाषा में परिवर्तित कर देता है तो स्रोत भाषाकी कथन भंगिमा और रचना का सौंदर्य उससे छूटने लगता है।

साहित्यिक अनुवाद की संरचनागत समस्याओंको सुलझाने में भाषा-विज्ञान और उसकी शाखाएँ अनुवादक की मदद कर सकती है। साहित्यिक अनुवादके संदर्भ में भाषा संरचना से तात्पर्य नियमबद्ध व्याकरण से बंधी भाषा मात्र नहीं है।साहित्य का अनुवाद मेंअनुवादक को अपनी दृष्टि भाषा के कई स्तरोंपर रखनी पड़ती है। साहित्यिक अनुवाद करते समय अनुवादक समतुल्य अनुवाद का ही प्रयत्नकरता है। वास्तव में साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ समतुल्यता की खोज से संबंधित समस्याएँही हैं।

इस प्रकार हम देखते है कि सर्जनात्मकसाहित्य में विषयवस्तु और शैली दोनों पर दृष्टि रहती है। इसमें संदेश और शैली दोनोंका, विशेषकर शैली का अधिक महत्व होता है। इसमेंसंकल्पनात्मक अर्थ की अपेक्षा भावात्मकअर्थ का विशेष योगदान रहता है।इसमें भाषा और उसके सूक्ष्म अर्थों पर लेखकका अधिकार रहता है। वह विषय की प्रकृति और दृष्टिकोण के अनुसार भाषा संयोजन करता हैजिसमें भाषा अलंकार पूर्ण हो जाती है किंतु कहीं-कहीं उसमें शब्द भंडारभी दिखाई देता है। इसलिए अर्थ ग्रहण केपश्चात् कविता का अनुवादकरते हुए इसके विभिन्न प्रकार्यों (पाठ ग्रहण करने की दृष्टि) पर ध्यानदेने की आवश्यकता रहतीहै। कविता के अनुवाद में चार प्रकार्य आधार का काम करते हैं।

भाषापरक दृष्टि :इसमेंभाषा ब्यवस्था के अंतर्गतध्वनि स्तर, शब्द स्तर और वाक्य - विन्यासकी दृष्टि से

व्याख्या की जाती है। छंद - योजना, शब्द चमत्कार, अलंकारव्यवस्था आदिभाषिक विशेषताओंपर ध्यान देते हुए अनुवादक अनुवादकरते है।

विषयपरक दृष्टि- इसके अंतर्गत काव्यकृतिकी विषयवस्तु पर ध्यान केंद्रित रहता है। उसका मुख्य लक्ष्य होता है स्रोत भाषाकी काव्यकृति की विषयवस्तु को लक्ष्य भाषा की कृति में संप्रेषित करना।

संरचनापरक दृष्टि- इसमें अनुवादक कविता की इकाइयों के परस्पर संबंधों पर बल देते हुए उनका विश्लेषण और संश्लेषणकरते है संघटनात्मक बुनावट के आधार पर काव्यानुवाद प्रस्तुत करता है।

साहित्येतर दृष्टि-इसमें अनुवादक की दृष्टि कविता के भीतर साहित्येतर संदेश पर केन्द्रित होती है जिसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, मानवीय आदि विभिन्न दृष्टियों को अनूदित पाठ में संप्रेषितकरने पर बल दिया जाता है।

अगले इस अध्याय में सर्जनात्मक साहित्य के काव्यानुवादऔर उसकी समस्याओं पर चर्चा करेंगे।

5.3 काव्यानुवाद की समस्याएँ :

यों तोकाव्य में उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता आदि समाहित होते हैं।

5.3.1 कविता का अनुवाद

सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद एकऐसी कला है जिसेब्रह्मा की सृष्टि के समान माना जा सकता हैं। कविता के अनुवाद को लेकर काफी विवाद रहाहै। बहुतों की धारणा यह रही है कि कविता का अनुवाद हो ही नहीं सकता। मुख्यतः काव्यानुवादको ही दृष्टि में रखकर इस प्रकार की बातें कही गई हैं-

1. All translation seems to mesimplyan attempt to solve anunsolvable problem - Humboldt.

2. It is useless to read Greek in translations. Translations canbut offer us a vague equivalent- Virginia woolf.

3. Nothing which is harmonized by the bond of muses can be language to another without destroying its sweetness- H. de forest Smith

वस्तुतः कविता का अनुवाद करना बहुत कठिनतो है, किन्तु वह असंभव है, यह नहीं कहा जा सकता। विश्व में अब तक कई हजार कविताओंके अनुवाद हुए हैं। कविता सृजनात्मक साहित्य का नवनीत है। उसकी संवेद अनुभूति 'सांद्र'और 'बिंब- योजना'अत्यंत संश्लिष्ट होती है। काव्यानुवादपूर्णतः पुन: सृजन की प्रक्रिया

है। इसीकारण से काव्यानुवाद कभी-कभी व्याख्या, टीका, रूपान्तरण, छाया, प्रतिध्वनि, भावान्तरणआदि हो जाता है। डच विद्वान जाइम्स होलम्स के अनुसार 'अनुवाद मूलतः एक व्याख्या हैऔर किसी कविता का अनुवाद वास्तविक काव्यानुवाद से लेकर अन्य भाषा में लिखित उसी परआधारित कविता या आलोचना तक हो सकता है।'कविताओं के बहुत कम अनुवाद मूल का पूरी तरह अर्थातकथ्य और कथन शैली की दृष्टि से निर्वाह कर पाते हैं। ऐसा होना अस्वाभाविक नहीं है।जब दो भाषाओं में कथ्य और अभिव्यक्ति का भेद होता है तो कविता में तो वह और भी गहराहोगा ही। अतः लक्ष्य भाषा में कविता का अनूदित पाठ मूल की प्रतिकृति तो हो नहीं सकता।अंतर तो रहेगा ही क्योंकि एक मूल और दूसरा अनुवाद जो ठहरा। इसलिए हम यह कह सकते हैकि कविता का अनुवाद असंभव नहीं है। - बिंब, अलंकार, छंद-योजना,प्रतीक आदि दोनों भाषाओं में समान नहींहोते, मिथक आदि का भेद होता है, तथा मूल्य और संवेदनाएँ भी पृथक होती है अतः कविताका अनूदित पाठ मूलपाठ की बराबरी नहीं कर पाता। कविता के अनुवाद में मूलपाठ बहुत कुछछूट जाता है और लक्ष्यभाषा का काफी वह जुड़ जाता है।

कविता के अनुवाद या पुन: सृजन के लिए मूलके सृजन की मनोभूमि को पकड़ना आवश्यक है।इसके लिए मूल कवि की आत्मा में प्रवेश करना पड़ता है। यह काम अत्यन्त संवेदनशील अनुवादकहीकर सकता है, जो स्वयं में या तो कवि होया कमसेकमकविहृदय रखताहो। इसलिए प्रायः कहा जाता है, कि काव्य कासफल अनुवाद कवि द्वारा ही होसकता है। कविता एक ऐसी संरचना है जिसे एकही भाषा में भी अन्य शब्दों में कहने पर उसका सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। इसलिए काव्यानुवादमें शब्दानुवाद से काम नहीं चलताप्रायः भावानुवाद या नवीन सृजन आवश्यक हो जाता है।जब कविता का अनुवाद करता है तो अनुवादक के सामने यह प्रश्न उठता है कि मूल पाठ का कौन-साअंश छोडे, लक्ष्यभाषा का क्या और कितना जोडे तथा मूल कविता के मंतव्य को सुरक्षित रखतेहुए कैसे अनूदित पाठ को काव्य सौंदर्य से युक्त करे। मूल कविता का यथासंभव निकटतम समतुल्यहोता है, ठीक मूल नहीं होता। भिन्न कविताओं के अनुवाद का अवलोकन करने से यह पता चलताहै कि वह मूल के काफी निकट पहुँच जाता है, कभी दूर रह जाता है और कभी काफी दूर। वैसेतो किसी भी रचना का अनुवाद आसान नहीं होता, किन्तु कविता का इसलिए और भी कठिन होताहै कि कई बातों में कविता अन्य रचनाओं से अलग होती है। इसमें ऐसे भाषिक तत्व होते हैजो अन्य विधाओं में नहीं होते। इन तत्वों को अनूदित पाठ में ला पाना काफी कठिन होताहै कविता के अनुवाद की समस्याओं पर विचार करते समय यह जानना जरूरी है कि कविताजो कुछ प्रभाव पाठक या श्रोता पर डालती है वह न तो अकेले कथ्य (content) होता है, नअकेले कथन या अभिव्यक्ति (Expression) वह दोनों का योग होता हैं। ये दोनों एक सीमातक एक दूसरे पर आश्रित होते हैं। यही कारण है कि काव्यानुवाद में प्रायः मूल प्रभाव का यावह प्रभाव उत्पन्न करने वाले मूल काव्यतत्वों का कुछ अंश छूट जाता है और कुछ ऐसा अंशजुड भी जाता है जो मूल में नहीं होता। जो

भी हो, यह स्पष्ट होता है कि इस छूट जानेसे अनुवाद मूल से दूर पड़ जाता है, और जोड़ने या संस्कार करने से औरभी दूर पड़ जाता है। अतः यह अनुवाद से अधिक मूल पर आधारित नई रचना-सा हो जाता है। संभवतः इसीलिए साहित्यके अनुवादको पुन: सृजन कहा गया है।

वास्तव में अधिकांशतः यह माना जाता है किमौलिक कविताऔर अनूदित कविता की रचना प्रक्रिया मेंबुनियादी तौर पर कोई अंतर नहीं होता। इसीलिए अगर मौलिक कृति 'रचना'है तो अनूदित कृति'पुनर्रचना'या 'पुनसृजन'है। मौलिक कविता भी कवि के अनुभव का, उसके अपने अनुभव की भाषासे कविता की भाषा में रूपांतर ही होती है। इस आधार पर 'रचना'और 'पुनर्रचना'में अर्जितया निजी अनुभव का अंतर भी होता ही है। कविता में कवि शब्दों का प्रयोग चुन कर करताहै। वह भावाभिव्यंजना के लिए भाषिक तत्वों का चयन करता है और फिर उन्हें कविता मेंएक खास ढंग से संयोजित करता है। वह जिन शब्दों या भाषिक तत्वों का प्रयोग करता है, वे प्रायः अपने कोशीय अर्थ या सामान्य अर्थ के अतिरिक्त कुछ और अर्थ भी देते है।भाषिक तत्वों और अर्थ के विशिष्ट संबंध के कारण कविता में एक विशेष प्रकार की जीवंतताऔर रंजकता आ जाती है। कविता का अनुवादक कोशार्थ स्तर का ही अनुवाद कर पाता है, ध्वनिया शब्दार्थ संबंध आदि के स्तर का अनुवाद संभव नहीं हो पाता है। उदाहरण के लिए हिन्दीमें 'बिजली'शब्द का अर्थ 'तेजी', 'तरलता'है। उसके स्थान पर अंग्रेजी में Thunder या Thunderbolt रखें तो इनमें'कडक'है और lightning रखें तो 'चकाचौंध' है । इस तरह काव्य भाषा में ये शब्द बिजिली के लिए पर्याप्त नहीं है, यद्यपि सामान्य भाषा में है । इसका आशय यह हुआ कि इन शब्दों के द्वारा अनुवाद करने में मूल की 'तेजी' और 'तरलता'चला गया, और नये तत्व'कड़क'या 'चकाचौंध'की वृध्दि हो गई। अर्थात कुछ घट गया और कुछ बढ़ गया।

कविता का अनुवाद करते समय अनुवादक को इनचार प्रकार्यों के आधार पर करना पड़ता है।

1. नादसौंदर्य - कविता की शक्ति और प्रतिभाशीलताउसकी भाषा के संगीत से जुड़ी होती है। इस संगीतात्मकता का एक रूप है नाद-सौंदर्य, जिसमेंध्वनि-संयोजन शब्दालंकार आदि की विशेष भूमिका रहती है। कविता के जिस नाद - सौंदर्यसे रसानुभूति होती है, उसका अनुवाद प्रायः असंभव सा होता है।

उदा –"कंकन किंकन नूपुर धुनि सुनि । कहतलखन सन राम हृदय गुनि" ।

यहाँ 'न'की आवृत्ति से नाद-सौंदर्य आकर्षक बनता है। इस शब्दयोजना से ऐसा लगता है मानो नूपुरों की ध्वनि से सारा वातावरण गुंजायमान हो गया हो।इस तरह के नाद-सौंदर्य और संगीतात्मकता का दर्शन अनुवाद में नहींहो पाते। नाद-सौंदर्य में अलंकार, छंद-आदि अनुवादक के लिए सबसे बड़ी चुनौती होतेहैं। श्लेष, चमक, अनुप्रास, आदि अलंकारों से युक्त पाठ का अनुवाद ऐसी भाषा में तो संभवहै जिसमें मूल पाठ वाले शब्द समान रूप से प्रयुक्त होते हैं, किंतु ऐसी भाषा में नहींजिसमें उन शब्दों का प्रयोग न होता हो। इसी प्रकार सम

सांस्कृतिक भाषाओं के अनुवादमें छंद का निर्वाह सरलता से हो जाता है, किंतु विषम सांस्कृतिक भाषाओं में मूल रचनाके छंद और अलंकारों का अनुसरण प्रायः नहीं हो पाता।

2. संरचनात्मक विशिष्टता- कविता की संरचनाअन्य विधाओं की अपेक्षा विशिष्ट होती है। इसमें लयात्मकता होती है। छंद विधान की विशिष्टभूमिका रहती है। कविता छंदबद्ध होती है और हर छंद की अपनी गति होती है, उसका अपना प्रभावभी होता है, साथ ही उसका एक सीमा तक भाव से भी संबंध होता है। वास्तव में काव्य पंक्तिमें भाव, विचारों तथा लय में एक आत्यंतिक संबंध होता है। इस लय कोपहचानकर अनुवाद करना पड़ता है। वर्णा अनुवादरंगविहीन हो जाता है। एक रास्ता तो यह है कि लक्ष्य भाषा में प्राप्त उपयुक्त छंदमें अनुवाद करे फिर भी मूल छंद करे फिर भी मूल छंद का प्रभाव तो नष्ट ही होता है। इससेस्त्रोत भाषाभाषियों पर जो प्रभाव पड़ता वहलक्ष्य भाषा पाठकों पर नहीं पड़ता । मूलछंद का जो प्रभाव मूलपड़ता है,अनुवादक किसी भी तरह से लक्ष्यभाषा - भाषियों पर भाषा - भाषी पर नहींडाल सकता।

3. शब्द संस्कार-स्त्रोत भाषा के सामाजिक-सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ के साथ-साथ समसामयिक स्थिति और स्थानीय परिवेश केकारण शब्द अपनी अर्थ परक प्रकृति में बहुस्तरीय होते हैं और लक्ष्य भाषा में वे शब्दउसी अर्थ तक सीमित न होकर नए संस्कार के साथ आते हैं। किसी अंग्रेजी कवि की कवितामें प्रयुक्त spring शब्द का ठीक प्रतिशब्द हिन्दी में 'वसंत'इसलिए नहीं हो सकता किअंग्रेजी भाषी के मन में 'स्प्रिंग'शब्द में इंग्लैंड के स्प्रिंग का चित्र है, जोभारतीय वसंत के चित्र से सर्वथा भिन्न है। अतः उस कवि के हिन्दी के अनुवाद को पढ़नेवाले पाठक के मन में जो अर्थ बिंब उभरेगा वह भारतीय वसंत का होगा जब कि इंग्लैंडके स्प्रिंग का होना चाहिए।

4. काव्यार्थ प्रतीकन- मूल कृति में कविताएक संभावना होती है। इस संभावना को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए कवि दृष्टांतों का सहारालेता है। इसलिए कविता में प्रयुक्त प्रतीक दोहरे अर्थ के साथ जुड़े होते हैं। वह मूलकविता के भीतर के धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, समाज-वैज्ञानिक आदि तत्वों को अनूदित कवितामेंसंप्रेषित करते हुए जब संश्लिष्ट पाठ केकिसी एक पक्ष पर बल देतेहुए अनुवाद करता है तब उसकी इस प्रवृत्तिके आधार पर भी काव्यानुवाद संभव है।

अत: यह कहा जा सकता है कि कविता का पाठ अपने-आप में विशिष्ट होता है । इसलिए कविता का अनुवाद भी अन्यप्रकारकेअनुवादों से भिन्न होता है। वह एक प्रकारसे पुनर्रचना होता है। यह अनुवाद मूल कविता का एक नया संस्करण होता है। अनुवादक मूलकाव्यके मंतव्य अथवा केंद्रीय अर्थ को हृदयंगमकरके लक्ष्य भाषा में उसकी पुनर्रचना करता है। यही कारण है कि एक ही कविता के कई व्यक्तियोंद्वारा किए गए अनुवादों में हमें काफी अंतर मिलेगा। ऐसा केवल इसीलिए होता है कि काव्यानुवादपुनर्रचना है। अतः उसमें

अनुवादक का अपना व्यक्तित्व बड़ा प्रभावी होता है। इसी कारणएक व्यक्ति द्वारा किया गया काव्यानुवाद दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। दूसरे शब्दोंमें हर अनुवादक उस मूल का अपने-अपने ढंग से संस्करण प्रस्तुत करता है। काव्यानुवादमें यह बहुत बड़ी बाधा है कि अन्य अनुवादों की तुलना में इसमें अनुवादक का व्यक्तित्व मूलऔर अनुवादक के बीच हमेशा खड़ा रहता है। यह बात भी सच है कि कविता के अनुवाद की समस्याहर तरह की कविता के साथ समान नहीं होती। अगर स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच सांस्कृतिक, भाषा- पारिवारिक और कालिक अंतर कम हो तो अनुवाद में काफी समस्या नहीं आता। अगर यहअंतर ज्यादा है तो समस्या भी बड़ी होती। उदाहरण के लिए संस्कृत से प्राकृत या प्राकृतसे संस्कृत में या बंगाल से हिन्दी या हिन्दी से बंगाल में अनुवाद करने में उपर्युक्त कठिनाइयाँबहुत कम होती है।

कविता के अनुवाद की इन सारी समस्याओं कोदेखते हुए भी इस संबंध में अनेक विद्वानों ने विचार विमर्श करके यह बताया कि इन समस्याओंके बावजूद भी कविता का अनुवाद कविता के रूप में ही होना चाहिए न कि गद्य में। क्योंकिकविता छंद, लय और गति से युक्त होती है, चाहे वह मुक्त छंद में ही क्यों न हो उसका अनुवाद कविता के रूप में ही होना चाहिए।क्योंकि मूल रचना की काव्यात्मकता गद्यानुवाद में सुरक्षित नहीं रखी जा सकती। वैसे भीकाव्य आनंद के लिए पढ़ी जाती है, केवल भाव या विचार के लिए नहीं। काव्य का सौंदर्य, संगीतात्मक तत्व, लय, ध्वनिआदि में होता है। अगर काव्य का गद्यानुवाद प्रस्तुत करते है तो पाठक को वह काव्यानंदनहीं दे सकता जो पद्यानुवाद में मिल सकता है। काव्य का काव्यत्व काव्योचित भाषा-संरचना तथाशब्दक्रम में ही होता है जो गद्यानुवाद में नहीं आ सकता, अतः गद्यानुवाद पद्यानुवाद के लिए उपयुक्तनहीं है। इसलिए कविता का अनुवाद के कविता के रूप में ही करना चाहिए। अगर इसमें कुछ छूटता है तो कुछजुड भी जाता है। इस संबंध में आदर्श स्थिति यह है कि कविता का अनुवादपहले तो पद्य रूप में ही करना चाहिए, यदिठीक अनुवाद न हो पा रहा हो तो मुक्त छंद में अनुवाद किया जा सकता है और यदि फिर भी कठिनाई होरही हो, तब गद्यमें अनुवाद किया जा सकता है।

काव्यानुवाद में कविता की मूल संवेदना कीसंप्रेषणीयता और व्यंग्यार्थ पर ध्यान देना आवश्यक है। संप्रेषणीयता के आधार पर एकविद्वान लेफेवर ने काव्यानुवाद को एक संश्लिष्ट प्रक्रिया मानते हुए कहा है कि अनुवादककविता के प्रत्येक पक्ष पर बल नहीं दे पाता और वह प्रायः किसी एक पक्ष पर बल देकर अनुवादकरता है। इसकी प्रकृति के आधार पर उन्होंने काव्यानुवाद के निम्नलिखित प्रकार बताएहैं।

1. स्वनिमिक अनुवाद (Phonemic Translation)-इसमें अनुवादक स्त्रोत भाषा की ध्वनि को लक्ष्य भाषा की रचना में संप्रेषितकरता है। वह मूल कविता में निहित काव्यार्थ का मात्र अन्वयांतर करता चलता है,किंतुअनुवाद में ध्वनि- व्यवस्था की प्रधानता रहती है।

2. शाब्दिक अनुवाद (Literal Translation)-इसमें स्त्रोत भाषा की कविता का शब्दानुवाद होता है जिससे मूल कविताके भाव-सौंदर्य, अर्थ-व्यंजना और वाक्य - विन्यास के लक्ष्य भाषा में खंडित होने कीसंभावना बनी रहती है। कवि कविता में शब्दों का चयन विशिष्ट रूप में करता है। उन शब्दोंमें अपने कोशीय या सामान्य अर्थ के अतिरिक्त कुछ और अर्थ भी होते हैं जिससे कविता मेंजीवंतता आ जाती है।

3. छांदिक अनुवाद (Metrical Translation)-इसमें अनुवादक स्त्रोत भाषा की कविता में प्रयुक्त छंद - योजना को अनूदितरचना में रूपांतरित करने के लिए आवश्यकता से अधिक सजग रहता है। इससे कभी-कभी अनूदितरचना एक तमाशा - सा बनकर रह जाती है।

4. कविता का गद्यानुवाद (Poetry into prose)-इसमें अनुवादक की दृष्टि मुख्य रूप से कविता के अर्थ पक्ष पर रहती है।दूसरे शब्दों में कहें तो इस विधि में स्रोत भाषा की कविता का रूपांतरण लक्ष्य भाषाके गद्य में किया जाता है। इसे भी संपूर्ण रूप से उचित अनुवाद कहा जा सकता लेकिन शाब्दिक औरछांदिक अनुवाद से निश्चित रूप से इसका स्तर ऊँचा है।

5. तुकबंदीपरक अनुवाद (Rhymed translation)-इसमें छंद योजना के साथ-साथ तुकबंदी या लय को भी स्थान मिलता है ताकिअनुवाद की काव्य -परकता बनी रहे ।

6. मुक्त छंद परक अनुवाद (Blank Verse Translation)- इस अनुवादमें मूल कविता की संरचना, मूल कविता की संरचना,लय, यति आदि का ध्यानतो रखा जाता है, किंतु उसके छंद-विधान का पूर्ण अनुकरण नहीं होता। यह स्थिति तभी उत्पन्नहोती है, जब छंद-विधान के आधार पर पद्यानुवाद करते हुए कठिनाई हो रही हो तो मुक्त छंदका आधार लेकर काव्यानुवाद किया जाता है।

पुनर्व्याख्यात्मक अनुवाद (Onerpe tation) इस अनुवादमें मूलकविता का कथ्य सुरक्षित रखा जाता है औरअनुवादक मूल कविता के रूप में परिवर्तन कर अपने ढंग से उसका सृजन करता है, क्योंकियह मूल कविता की बाह्य रूप-रचना से अलग एक सह-रचना बन जाती है जब कि कथ्य प्रायः एकसमान होता है।

काव्यानुवाद से संबंधित अनेक विद्वानों ने अपने मंतव्य को प्रकट किए थे। टी. एस. इलियट ने समीक्षा के सीमंत में लिखते हैं-"कविता का पाठक कविता को केवल समझना नहीं चाहता, बल्कि उसकाआस्वादन भी करना चाहता है।"यह बातआलोचना के लिए जितनीमहत्वपूर्ण है, काव्यानुवादके लिए उससे कमतर नहीं। बल्कि एकओर से देखें तो काव्यानुवाद के लिए आस्वाद प्रक्रिया का संरक्षणजितना श्रमसाध्य है, उतना ही जटिल । एक ओर काव्यानुवादको

मूलकी अनुवाद प्रक्रिया को सुरक्षित रखना पड़ता है तो दूसरी ओर लक्ष्य भाषा के पाठकों के सामने ऐसी अनूदित कृति रखने की कोशिश करनी पड़ती है जो उन्हें उन्हीं की भाषा और संस्कृति की उपज लगे, ताकि वे अनूदित कृति के साथ आत्मीय संबंध सहज रूप से स्थापित कर सकें। किसी अनूदित कृति की इस विशेषता को अनुवादक की सफलता से जोड़कर देखा जाता है। हरिवंशराय बच्चन ने अनुवाद की सहजता को उसका प्राथमिक गुण माना"अगर कृति पढ़कर अनुवाद की प्रतीति होती है तो वह निम्न श्रेणी का अनुवाद माना जाएगा। अनूदित कृति से कृत्रिमता का अहसास नहीं होना चाहिए।"सचमुच अनुवाद दुधारी तलवार पर चलने के समान है। सामान्य अनुवाद के संबंध में यदि अनुवादक दोनों भाषाओं (लक्ष्य एवं स्त्रोत भाषा) का ज्ञाता है और उसे विषय से संबंधित पारिभाषिक समतुल्यों का ज्ञान है, तो वह एक सफल अनुवादक हो सकता है, किंतु साहित्यिक अनुवाद और विशेषतःकाव्यानुवाद के परिप्रेक्ष्य में सिर्फ इतना ही योग्यता पर्याप्त नहीं है।

जान ड्राइडन ने अपने लेख 'काव्यानुवादकी कला'में लिखा है-"रूपरेखा यथावत बना लेना, नाक, नक्श यही उतार लेना, बिल्कुल ठीक अनुपात कर लेना और संभवतः काम चलाऊ रंग भी भर लेना- यह सब एक बात है; लेकिन इन सब में लालित्य, मुद्रा, भाव-भंगिमा और रंगों का उतार-चढ़ाव डाल पाना, ऐसी सचलता भर पाना जो इन सब में जान डाल दे - यह एक बिल्कुल अलग बात है।"

इस बात से यह प्रश्न उठता है कि आखिर काव्यानुवाद का सर्वस्व, उसका प्राण क्या है ? अन्य भाषिक संरचनाओं की भाँति कविता भी आखिरकार एक भाषिक संरचना है। कविता की अभिव्यक्ति का प्राथमिक स्त्रोत उसकी भाषिक संरचना है, और पाठक कविता के जिस तत्व से प्रथमतः स्वब-रु होता है, वह उसकी भाषिक संरचना ही है। किंतु, अन्य भाषिक संरचनाओं से इसका एक मौलिक अंतर यह है कि कविता में भाषा अपने सर्वाधिक संश्लिष्ट रूप में रहती है।

वस्तुतः एकसाहित्यिककृति पारस्परिक भिन्न भाषिक प्रणालियों की जटिल व्यवस्था एवं मानव संस्कृति की विस्तृत व्यवस्था के द्वंद्वात्मक संबंधों पर आश्रित रहती है और इसकी इस संपूर्ण संरचना की परख किए बिना अनुवादक जब केवल काव्यगत अन्वयांतर पर अपना ध्यान केंद्रित करता है या किसी निर्दिष्ट उद्देश्य से साकल्य के स्थान पर किसी एक पक्ष को उभारता है तब अनुवाद में परेशानी उत्पन्न होती है। आधुनिक आलोचना में जब यह कहा जाता है कि शब्द और अर्थ अविभाज्य हैं और शब्द एक विशेष संदर्भ में एक अनुपम तथा अतुलनीय अर्थ को प्रकट करता है तो उसके अन्वयांत र का प्रश्न ही नहीं उठता। अन्वयांतर समानार्थकता पर निर्भर करता है औरअनुवाद स्त्रोत भाषा के अर्थ में प्रतिस्थापित करता है। दूसरी ओर साहित्यिक अनुवाद को शाब्दिक अनुवाद के रूप में देखने पर अनुवादक बुरी तरह असफल होगा। प्रत्येक कृति में कृतिकार द्वारा संप्रेषित अर्थ भी छिपा होता है। अनुवादक का कार्य न केवल प्रदत्त पाठ का रूपांतरण है, बल्कि उस संप्रेषित अर्थ का भी लक्ष्य भाषा में पाठ के माध्यम से पुन: प्रस्तुतीकरण है जो कृतिकार का मूल अभिप्रेत होता है।

अनुवादक की कठिनाई का एक सिरा मूल पाठ के अर्थ से और उसके संप्रेषण से जुड़ा हुआ है तो दूसरा सिरा स्त्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा के ऐतिहासिक- सांस्कृतिक विकास में अंतर से । साथ ही

काव्यानुवाद, को कविता के आंतरिक संगति और उसकी सौंदर्याभिरुचि का भी परिचालन करना पड़ता है। कविता के अनुवाद में हम शब्दों को उनके समतुल्यों के द्वारा प्रतिस्थापित कर सकते हैं। कुछ शब्द जो स्रोत भाषा की अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं से उपजे होते हैं उन्हें छोड़ दिया जाए तो अनुवाद में पूर्ण अर्थ का संभावना नहीं हो पाता है। कविता के तमाम अर्थवलयों के भीतर कविता का सूक्ष्मतम या मूल प्रयोजन छिपा रहता है, जिसे हम कविता के भीतर मौजूद जीवन के संगीत के माध्यम से पकड़ते हैं। इसलिए काव्यानुवाद का प्राथमिक गुण काव्य-ध्वनि का प्रभावी विश्लेषण एवं आत्मसातीकरण है। कृति की सर्जना करते समय प्रत्येक संवेदनशील साहित्यकार एक विशिष्ट संवेदनशीलता, आत्मानुभूति एवं लोकोत्तर भावभूमि में पहुँचता है। यदि अनुवादक साहित्यकार की उस भावभूमि तक पहुँचने में अक्षम हो तो उसका अनुवाद एकदम सतही और निष्प्रभावी बनकर रह जाएगा।

वस्तुतः कविता में कल्पना, रस-योजना, छंद-योजना, अलंकार, बिंब-विधान, माधुर्य और लय का परिपाक होता है। वस्तुतः कविता का बाह्य संगीत ही उसका सर्वस्व नहीं है। उसका आंतरिक संगीत ही अंततः उसे सार्थक काव्यमयता प्रदान करता है। एक श्रेष्ठ काव्यानुवादुक बनने के लिए आवश्यक है कि अनुवादक अनूदित कृति में मूल कृति के आंतरिक संगीत के समरूप आंतरिक संगीत को प्रवाहित करें। इस प्रक्रिया में अनुवादक को एक मायने में पुनर्सर्जना ही करनी पड़ती है।

5.4 सारांश :

इस प्रकार काव्यानुवाद एक प्रकार की असाध्यसाधना है। इसमें अनुवादक मूल कृति की विषयवस्तु और अंतर्भूत संवेदनाओं को तो पकड़ लेताहै, किंतु उसकी काव्यवस्तु अथवा कलात्मक अनुभूति तक नहीं पहुँच पाता। इसमें स्रोत भाषाऔर लक्ष्य भाषा पर अधिकार होना और विषय वस्तु का सम्यक् ज्ञान होना ही पर्याप्त नहींहै क्योंकि काव्यानुभूति के संप्रेषण अथवा व्यंजना के लिए अनूदित कृति में अनुवादककी कृतित्व शक्ति और सर्जनात्मक प्रतिभा की भी आवश्यकता होती है। वास्तव में काव्यानुवाद'परमानस प्रवेश'की एक ऐसी साधना है जिस प्रकार भारतीय योग दर्शन में 'परकाया प्रवेशकी प्रक्रिया'है। इससे योगी अन्य व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर उसके आंतरिक अनुभवों, अनुभूतियों और भावों को प्राप्त करता है और फिर उसे अपने भीतर ले आता है। यही मूल रचनाका पुन: सृजन है। इसीलिए कविता के अनुवाद कोअनुवादकहने कीअपेक्षा 'अनुसृजन'अथवा 'पुनःसृजन'अथवा'समानांतर रचना'की संज्ञा देना उपयुक्त होगा।

5.5. बोध प्रश्न

1. अनुवाद के समस्याओं में काव्यानुवाद की समस्याएँ अत्यन्त जटिल होते है विवेचन कीजिए।

2. सृजनात्मक साहित्य में काव्यानुवाद की समस्याओं पर चर्चा कीजिए।

3. कविता की अनुवाद करते समय अनुवादक को किन-किन प्रकार्यों को आधार बनाना पड़ता है।

5.6 सहायक ग्रंथ :

1. अनुवाद विज्ञान- भोलानाथ तिवारी, किताब महल।

2. व्यवहारिक हिन्दी- डॉ. कैलाश चन्द्र भटिया, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।

3. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. कमल कुमार बोस, नई दिल्ली।

****

- डॉ. एम .मंजुला

6. साहित्यिक अनुवाद - नाटक, कथा साहित्य और मुहावरे - लोकोक्तियों का अनुवाद

उद्देश्य

पिछले अध्याय में सर्जनात्मक साहित्य के काव्यानुवाद केबारे में जान चुके हैं। इस अध्याय में सर्जनात्मक साहित्य के अन्य विधाएँ नाटक, उपन्यास, कहानी, मुहावरे लोकोक्तियों का अनुवाद और उनसे संबंधित समस्याएँ, समाधान के बारे में पढ़ेंगे।

इकाई की रूपरेखा

6.1. प्रस्तावना

6.2. नाटक का अनुवाद

6.3. कथा साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ

6.4. मुहावरे और लोकोक्तियों का अनुवाद

6.4.1. मुहावरों के अनुवाद की समस्याएँ

6.4.2.लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ

6.5.सारांश

6.6. बोध प्रश्न

6.7. सहायक ग्रंथ

6.1 प्रस्तावना:

सर्जनात्मक साहित्य में काव्यानुवाद एक प्रकार उत्कृष्टकार्य कहलाती है। इसी प्रकार सर्जनात्मक साहित्य के अन्य रूप नाटक, उपन्यास, कहानी आदि गद्य साहित्य को भीअनुवाद भी उत्कृष्ट कार्य ही है। सर्जनात्मक साहित्य में शब्द, वाक्य, अलंकार, छंद, नाद-सौंदर्य आदि का अनुवाद करना बहुत कष्ट साध्य कार्य है। फिर भी अनेक अच्छे-अच्छे अनुवाद काव्य हमारे सामने सदियों से आ रहे हैं। उसी प्रकार गद्य साहित्य के विभिन्न नाटक, उपन्यास, कथा साहित्य, लोकोक्ति-मुहावरे आदि का भी अनुवाद हुए है और हो रहे हैं। इस पाठ में नाटकानुवाद, कथा साहित्य के अनुवाद, मुहावरे लोकोक्तियों के अनुवाद के बारे में जानेंगे।

6.2 नाटकानुवाद :

साहित्य की अनेक विधाओं के समान नाटक का भी अनुवाद होता है। यों तो सभी प्रकार के सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद कठिन होता है, किंतु सभी की कठिनाइयाँ समान नहीं होती। नाटक के अनुवाद की कठिनाइयाँ काव्य आदि के अनुवाद से कई बातों में भिन्न हैं। नाटक का अनुवाद काव्यानुवाद से किसी प्रकार सहज और सरल न होकर दुष्कर उलझनपूर्ण होता है।

नाटक के अनुवाद के लिए यह आवश्यक है कि रचना की कालगत भाषा के उस परिवेष का सम्यक ज्ञान होना चाहिए, जिसके अंतर्गत वह लिखी गई हैया जिससे वह सम्बन्धित है। भाषा की यह सत्ता-स्वरूप तत्कालीन सामाजिक परिवेश, उसकी संस्कृति सभ्यता, रीति-रिवाज आदि से सम्बन्धित होती है। इस प्रकार की जानकारी के अभाव में नाटक के अनुवाद सही और ठीक रूप से नहीं हो पाते हैं।

नाटक दो प्रकार के होते हैं। मात्र पठनीय और अभिनेय । ठीक इसी प्रकार नाटक के अनुवाद भी दो प्रकार के हो सकते हैं- मात्र पठनीय, अभिनेय। मूल नाटक 'मात्र पठनीय'हो या 'अभिनय'यदि अनुवादक अपने अनुवाद को मात्र पठनीयबताना चाहता है तो कोई खास ऐसी परेशानी नहीं होती, जैसीकेवल नाटक के अनुवाद तक सीमित हो। उसकी भाषा आवश्यकतानुसार मूल नाटक की भाषा के अनुरूप या विशिष्ट पाठक- वर्ग की दृष्टि से जो उपयुक्त हो, रखी जा सकती है। वास्तविक, समस्या वहाँ आती है, जहाँ अनुवादक अपने अनुवाद को अभिनेय भी बनाना चाहता है।

नाटक के अनुवाद के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात है कि उसे रंगमंच का ज्ञान होना चाहिए। उस काल की रंगमंच परंपरा का ज्ञान, उस काल की भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। मूल की परंपरा को जाने बिना अनुवादक नाटक के उन प्रतीकात्मक संकेतों को नहीं पकड़ पाएगातथा लक्ष्य भाषा की रंगमंच को उचित दृष्टि से नहीं उतार पाएगा। उसे मूल की मंचीय साज-सज्जा, प्रकाश-प्रभाव, ध्वनि-संयोजन आदि के प्रति संवेदनशील होकर मूल को समझाना होगा तथा लक्ष्य भाषा की मंचीय साज-सज्जा, प्रकाश-प्रभाव, ध्वनि-संयोजन आदि के अनुकूल नाटक को रूपायित करना होगा - मात्र भाषांतरित नहीं ।

भाषा-शैली की दृष्टि से नाटक के अनुवादक के सामने कई प्रकार की समस्याएँ आती हैं। मात्र पठनीय साहित्य की भाषा को पाठक अपनी सुविधानुसार, व्यक्ति, शब्दकोश या किसी ज्ञात भाषा में अनुवाद की सहायता से तेजी से पढ़ कर समझ सकता है। नाटक का भी पाठक अपने-अपने ढंग से पढ़ तो सकते हैं किंतु अभिनेय नाटक में ऐसा नहीं हो सकता, इसलिए उसके अनुवादक को एक साथ कई समस्याओं से जूझना पड़ता है। पहली बात तो यह है कि नाटक संवादात्मक होता है, अतः भाषा संवादोचित होनी चाहिए; छोटे-छोटे वाक्य, सरल और सहज शब्दावलीताकि सुशिक्षित, अल्पशिक्षित, अशिक्षित सभी सुनते ही समझ जाएँ। इसमें मात्र शब्दार्थ और भावार्थ ही नहीं, ध्वनि या व्यंजना भी। नाटक पढ़ने वाला तो अपनी योग्यतानुसार धीरे-धीरे समझते हुए पढ़ सकता है, शब्द कोश की सहायता ले सकता है, किसी से पूछ सकता है, किंतु नाटक देखने वाले के लिए यह सब संभव नहीं। एक वाक्य के अर्थ पर सोचने के लिए वह रुकता तो दो-चार वाक्य पात्र के मुह से निकल जाता है। नाटक में संवाद की भाषा सरल और सहज होना चाहिए। नाटक की भाषा के सम्बन्ध में यह भी कहना आवश्यक हैं कि

नाटक में मुहावरों और लोकोक्तियों के समुचित प्रयोग होने चाहिए। एसा होने से नाटक की भाषा-शैली दोनों ही में अच्छे और अपेक्षित प्रवाह आ सकते हैं।

नाटकों के अनुवाद का महत्वपूर्ण पहलू अभिनेयता है। अभिनेयतानाटक का सर्वोच्च तत्व होता है जिसकी ओर प्रत्येक अनुवादक को ध्यान अवश्य जाना चाहिए। नाटक के पात्र अनेकानेक स्तरों के होते हैं, मोची, मजदूर, किसान, वकील, डॉक्टर, विद्यार्थीया सुशिक्षित, अर्थ शिक्षित, अल्पशिक्षित, अशिक्षितया विशिष्ट क्षेत्रीय या प्रांतीय या विशिष्ट वित्तीय स्थिति के, विशिष्ट आयु के, विशिष्ट परिवार के या विशिष्ट परंपरा आदि के। इन सभी की भाषा-शैली एक सी नहीं हो सकती। अभिनेता पात्र के अनुकूल भाषा का प्रयोग करता है। डॉक्टर, विश्वविद्यालय विद्यार्थी की भाषा में अंग्रेजी शब्द आते हैं तो अशिक्षित पात्रों की भाषा ग्रामीन जनता की भाषा होती है। ध्वनि, शब्द, रूप-रचना तथा वाक्य रचना सभी दृष्टियों से पात्रों में कुछ-न-कुछ अंतर पड़ेगा। अनुवादक को लक्ष्य भाषा से ऐसे प्रयोगों के चुन चुनकर पात्र के अनुकूल भाषा-शैली का प्रयोग अभिनेयता के अनुकूल करना पड़ता है।

नाटक के संवाद अभिनय से संबद्ध होते हैं। अतः अनुवादक को केवल मूल संवाद ही नहीं देखना चाहिए; बल्कि मूल में संवाद और अभिनय में जिस तालमेल की संभावना है, अनुवाद में भी वह लाने का यत्न करना चाहिए। यह तालमेल अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार का हो सकता है। इसीलिए अनुवादक को मूल नाटक और स्रोत भाषा की ऐसी परंपराओं तथा रूढ़ियों आदि से परिचित होना चाहिए।

नाटकों के अनुवाद की एक यह भी समस्या होती है कि उनके व्यंग्य (Comedy) और प्रहसनों में आए हुए व्यंग्य और हँसी के अनुवाद ठीक वैसे ही कैसे भाषान्तरण किए जाएं। इस प्रकार की कठिनाई सभी प्रकार की भाषाओं में दिखाई देती है। कुछ श्रेष्ठ और सफल अनुवादकों ने इस सम्बन्ध ऐसे कुछ कठिन और दुष्कर अंशों के स्थान पर कुछ नए तादृश्य- मूलक भावगत शब्दों को जोड़ने का विचार प्रकट किया है। किसी भी भाषा के संवाददूसरी भाषा में अनुवादेय नहीं होते, क्योंकि किन्हीं दो अर्थों वाले शब्दों का किसी भी अन्य भाषा में मिलना संभव नहीं होता। इसीलिए ऐसे संवादों का केवल कामचलाऊ अनुवाद ही हो सकता है।

अंततः नाटक के अनुवाद के विषय में यह कहना आवश्यक ऐसे भी नाटक होते हैं, जिनकी भाषा अत्यन्त उच्चस्तरीय और कठिन होती है। इस प्रकार के अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में करने में यह कठिनाई होती है कि उनमें ठीक वैसे ही शब्द और अभिप्राय नहीं मिलते हैं। हिन्दी नाटकों में संस्कृत में प्रयुक्त होने वाले सम्बोधनों जैसे वत्स, भगवन, नाथ, आर्यपुत्र, तथागत, पृथ्वीनाथ आदि का भाषान्तर भी अन्य भाषाओं में प्रायः पूरी अर्थवत्ता के साथ नहीं मिलता है। इसी तरह से नमस्ते, नमस्कार, प्रणाम, दंडवत्, राम-राम आदि प्रणामसूचक शब्दों की भी स्थिति है। इसी प्रकार अंग्रेजी के Goodmorning, Good noon, Good evening, Good night को भी उदाहरणार्थ लिया जा सकता है, जिनके अनुवाद दूसरी भाषा में मुख्य रूप से हिन्दी में बहुत कठिन हैं। इस प्रकार प्रत्येक भाषा की प्रयुक्तियों और शैलियों की अपनी-अपनी विशेषताएँ और विभिन्नताएँ होती है, जिन्हें हर एक दूसरी भाषा में ढालना अधिक कठिन क्या असंभव होता है।

उपर्युक्त संकेतों और सुझावों सहित विवरणों को यदि ध्यान में लाए जाए, तो अनुवाद के मार्ग में पाने वाले उलझनों पर काबू पाया जा सकता है और अधिक सुंदर, अच्छा अनुवाद होने की संभावना और आशा को नकारा, नहीं जा सकता है।

6.3 कथा साहित्य का अनुवाद की समस्याएँ :

कथा साहित्य के अंतर्गत मुख्य रूप से उपन्यास और कहानी ये दो ही आते हैं। कथा साहित्य का अनुवाद कविता अथवा नाटक के अनुवाद से किसी भी तरह से सरल नहीं है। वास्तव में कथा साहित्य भी एक सर्जनात्मक विधा है जिसका अनुवाद भी एक सर्जनात्मक प्रक्रिया है। कथा साहित्य अर्थात कहानी और उपन्यास में कविता और नाटक की भाँति सर्जनात्मक शक्ति की आवश्यकता रहती है। कथा साहित्य गद्य में तो होता है, किंतु इसकी प्रकृति कार्यालयी, जन संचार, विज्ञान आदि प्रयोजन परक गद्य से भिन्न होती है। कविता की भाँति कहानी या उपन्यास में मिथक और प्रतीक होते हैं, आलंकारिक शैली होती है, गद्यात्मक लय होता है, जो पद्यात्मक लय से कम नहीं होता। नाटक के पात्रों के समान कहानी या उपन्यास के पात्र भी अपनी-अपनी पृष्ठभूमि में और अपनी भाषा के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त करते हैं। वास्तव में कथाकार अचेतन गहराइयों से अपनी भावभूमि को चेतन की भाषा में ढालने का प्रयास करता है। इसमें लक्षणा, व्यंजना और अनेकार्यकता भी होती है, किंतु ध्यान में रखने की यह है कि कथा साहित्य में मात्र सपाट बयानी नहीं होती वरन कविता और नाटक की भाँति इसमें काव्यात्मकता और सर्जनात्मकता भी होती है।

कथा साहित्य के अनुवाद को भी उन सभी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो कविता एवं नाटक के अनुवाद में मिलती हैं। उपन्यास और कहानी में भी विभिन्न अंश एक दूसरे के साथ संबद्ध होते हैं और एक को जाने बिना दूसरे का अर्थ स्पष्ट नहीं होता। किसी कहानी याउपन्यास का पहला अनुच्छेद उसके अंतिम अनुच्छेद से जुड़ा हो सकता है । इस दृष्टि से पूरी कहानी या प्रोक्ति एक इकाई के रूप में होती है। अतः पूरी रचना का अनुवाद सहपाठ की भाँति स्वतंत्र अनुवाद होता है।

कथा-साहित्य के अनुवाद में भाषा की सर्जनात्मकता की अपेक्षा व आवश्यकता पर बल देते हुए डॉ. भोलानाथ तिवारी अपनी अनुवाद-कला मेंलिखा है- "अनुवादमुख्यतः कथा-साहित्य के अनुवाद की सर्जनात्मकता, अनुवाद की भाषा के अच्छे प्रवाह पर बहुत निर्भर करती है। इस प्रवाह के लिए यह तो आवश्यक होता ही हैं कि अनुवाद मुहावरेदार और लोकोक्तियुक्त भाषा में करें, किन्तु साथ ही यह भी आवश्यक होता है कि मूल में मुहावरे और लोकोक्तियाँ न भी हों तो भी अनुवाद की भाषा का लक्ष्य भाषा में सहज रूप में आ सकने वाले मुहावरों - लोकोक्तियों से युक्त हो।"

कथा साहित्य के अनुवादमें अनुवादक को कृति की मूलनिष्ठता के प्रति जहाँ बफ़ादारी निभानी होती है, वहाँ उसे भाषा की सहजता, खानी, स्पष्टता और बोध गम्यता का भी ध्यान रखना पड़ता है । इस दृष्टि से अनुवाद में कई बार यह मालूम नहीं पड़ता कि इसमें मूल कृति की कल्पनाशक्ति अथवा सर्जनात्मक शक्ति आ पाई है या नहीं। गद्यानुवाद पर विचार करते है तो मुख्य रूप से इन सामान्य सिद्धांतों की ओर ध्यान देना पड़ता है।

(क) पाठ का एक इकाई के रूप में प्रस्तुत करना :-

कथा साहित्य में पूरी कृति को एक इकाई के रूप में ग्रहण करने से कृति का अर्थ स्पष्ट होता है, क्योंकि उपन्यास था कहानी के विभिन्न अंश परस्पर जुड़े हुए होते हैं और उनके तारतम्य को देखे बिना अर्थ स्पष्ट नहीं होता। किसी उपन्यास या कहानी का पहला अनुच्छेद कृति के अंतिम अनुच्छेद से जुड़ा होता है। पहला अनुच्छेद समूची कृति की कुंजी होता है और अंतिम अनुच्छेद उसकी भावभूमि को पूरी तरह खोल देता है। पाठ को समग्र इकाई के रूप में ग्रहण करने और अंश- अंशी के रूप में विभक्त करने से अनुवाद की सर्जनात्मकता

कीजानकारीकुछ हद तक मिल जाती है। वाक्य-प्रति- वाक्य अथवा अध्याय-प्रति-अध्याय के अनुवाद से सर्जनात्मकता का पता नहीं चल पाएगा। इसके लिए भावों और विचारों की समन्वित इकाई के रूप में पाठ का होना आवश्यक है।

ख) सर्जनात्मक प्रयोग:

अनुवादक को कई बार मूल रचनाकार की भाँति किसी विषय पर चिंतन-मनन करते हुए कथ्य के विभाजन और उसके शिल्पगत प्रयोग पर ध्यान देना पड़ता है। कई बार अनुवादक को कुछ जोड़ना की पड़ता है, कई बार कुछ छोड़ना पड़ता है और कई बार मूल पाठ की अभिव्यक्ति के लिए लक्ष्य भाषा की स्थानापन्न अभिव्यक्ति देनी पड़ती है। किंतु लेखक के संदेश अथवा मंतव्य को बनाए रखना पड़ता है। कई बार विभिन्न विकल्पों में से सटीक विकल्प ढूँढना पड़ता है और कई बार सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक संदर्भों के अनुसार शब्दों का चयन करना पड़ता हैं। कई बार उसकी व्याख्या करनी पड़ती है और कई बार लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार समुचित उपमान, प्रतीक, रूपक आदि का सर्जनात्मक प्रयोग करना पड़ता है। तभी वह अनूदित पाठ मूल पाठ का सहपाठ बन पाता है।

(ग) समतुल्य भाषिक अभिव्यक्ति:

स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के भाषिक प्रतीकों के प्रकार्य और प्रयोजन के समान होने पर ही समतुल्य उपलब्ध हो पाते हैं। इसमें भाषा और संस्कृति का सामंजस्य देखना होता है और यही कारण हैं कि इसमें संस्कृतिपरक अभिव्यक्ति अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इसलिए भाषा और संस्कृति की परस्पर टहराहट से कई बार अनुवाद में कठिनाई पैदा हो जाती है। एक भाषा की संस्कृति में 'चूड़ियों का टूटना'और 'सिंदूर का पुँछ जाना' वैधव्य के प्रतीक होते हैं तो दूसरी संस्कृति में इनका कोई महत्व नहीं होता। इसी प्रकार समतुल्य भाषिक अभिव्यक्ति के प्रति अनुवादक को सजग और सतर्क रहना पड़ता है। हिन्दी समाज में 'उल्लू' का लक्षणार्थ'मूर्ख'है, किंतु जापानी और यूरोपीय समाज में 'उल्लू'के समतुल्य क्रमशःFukroऔरOwl'बुद्धिमता'के प्रतीक हैं। अतः इस उपमान के समतुल्य कोई अन्य उपमान खोजना पड़ेगा जिसमें 'मूर्खता'का अर्थ निहित हो।

प्रत्येक समाज की भाषा में आंचलिक शब्द, गाली-गलौज, ताने और चुभते व्यंग्य अलग- अलग होते हैं। कभी-कभी भाषा का लच्छेदार रूप भी मिलता है। इनके अनुवाद में इन की समतुल्यता के लिए

पर्यायवाची अभिव्यक्ति प्राप्त करना न तो सरल है और न ही इनके तीखापन, बेबाकीपन और उज्जड़पन को प्राप्त करना संभव होगा।

(घ) मुहावरे और लोकोक्तियों का पुनर्विन्यास :

कई बार लेखक उपन्यास था कहानी में मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग करता है। कथा साहित्य में मुहावरे और लोकोक्तियों से संप्रेषण में पैनापन आता है और संदेश की अभिव्यक्ति सहज तथा यथार्थ रूप में होती है, किंतु इसमें यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि येसमतुल्यअपने प्रकार्य में कितनी विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। कई बार भाषा की सामाजिक, सांस्कृतिक, पौराणिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण मुहावरेदार प्रयोग अलग-अलग अर्थ लिए होते हैं। इनके समतुल्यों का निर्धारण करने में सतर्कता बरतनी पड़ती है। कई बार स्रोत के पाठ के मुहावरे का पुनर्विन्यास लक्ष्य भाषा में व्याख्या के रूप में सामान्य भाषा में करना पड़ता है ।

(ङ) अलंकारों का सटीक प्रयोग

अनुवाद में शैलीगत समतुल्यता बनाए रखने के लिए अनुवादक अनूदित पाठ को अलंकारपूर्ण या अतिरंजित बनाए रखने का प्रयास करता है। इससे स्त्रोत भाषा का संदेश या मंतव्य प्रभावकारी शैली में संप्रेषित होता है।

कथानुवादमें अनुवादक से पैनी संवेदनशीलता की अपेक्षा की जाती है। इसमें मूल पाठ केसामाजिक- सांस्कृतिक संदर्भों के अतिरिक्त कृतिकार की मानसिकता, उसके विचार और अनुवाद से तादात्म्य स्थापित कर मूलभाव का पुन: सृजन करना होता है। स्रोत भाषा के समाज, इतिहास, संस्कृति, भूगोल तथा चिंतन पद्धति से उसका परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। विदेशी अथवा अपरिचित समाज और उसकी संस्कृति से पाठक का तादात्म्य स्थापित करना और उसके पौराणिक संदर्भों तथा मिथकों से परिचित कराना कई बार असंभव-सा हो जाता है। मूल रचना को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए उसे मूल रचना से आत्मसात करना पड़ता है। भाषा-शैली की सहजता, स्वाभाविकता, और गद्यात्मक लय भी कहानी और उपन्यास के अनुवाद को मूल पाठ का सहपाठ बनाने में सहायक होते हैं। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि एक ही मूल रचना के अनुवाद विभिन्न युगों और विभिन्न अनुवादकों द्वारा भी होते हैं। इन विभिन्न अनुवादों में कई बार किसी रचना का एक अर्थ होने की भी संभावना नहीं होती क्योंकि प्रत्येक महान और कालजयी रचना का अनुवाद अलग-अलग युगों में अथवा अलग-अलग अनुवादक के अलग-अलग व्यक्तित्व के कारण अलग-अलग हो सकता है। इस दृष्टि से ही मूल साहित्यिक रचना के कई अनुवाद हो सकते हैं। भाषायी संरचना की भिन्नता के कारण अपनी ही रचना का अनुवाद अन्य भाषा में करने पर लेखक को स्वयं लक्ष्य भाषा के शब्द-संस्कार और रचना- विन्यास के साथ जूझना पड़ता है।

6.4 मुहावरे और लोकोक्तियों का अनुवाद :

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ अपने भाषा-भाषियोंकी मनोभावनाओं का सच्चा स्वरूप प्रकट करते हैं। मुहावरे और लोकोक्तियों के पीछे मनुष्यसमाज का अनुभव झाँकता है। वे जन- मानस को बड़ी खूबी के साथ

हमारे सामने ला देते हैं।मुहावरे और लोकोक्ति की भाषा चुटीली होती है और अभिव्यक्ति बेलाग और तीखी। मुहावरा एकवाक्यांश होता है जिसका प्रयोग विधेय अथवा क्रियापद के रूप में होता है। इसके विपरीतलोकोक्ति एक स्वतंत्र वाक्य की तरह होती है जिसमें एक पूरा आशय निहित होता है इसको अपनेकथन के साथ घटाया जाता है। मुहावरे या लोकोक्ति का वाक्य में प्रयोग करते समय सदा एकबात का ध्यान रखना चाहिए। वह यह है कि मुहावरा या लोकोक्ति जिन शब्दों में प्रचलितहै, वही शब्द ज्यों के त्यों प्रयोग करने चाहिए, उनमें जरा भी हेरफेर नहीं करना चाहिए।मुहावरे अपना शाब्दिक या कोशगत अर्थ छोड़कर नया अर्थ देते हैं, किन्तु लोकोक्ति मेंकहीं कोशगत अर्थ लगता है और कहीं विशेष अर्थ। मुहावरे का वाक्यांश की भाँति प्रयोगकिया जाता है और लोकोक्ति वाक्य की भाँति।

6.4.1 मुहावरों के अनुवाद की समस्याएँ

जहाँ तक अनुवाद की बात है, अनुवाद मेंजिन विभिन्न प्रकार की समस्याओं से 'अनुवादक को जूझना पड़ता है, उनमें एक महत्वपूर्णसमस्या मुहावरों के अनुवाद की है। सामान्य शब्दावली के माध्यम से की गई अभिव्यक्तिकी तुलना में मुहावरों के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति जितनी अधिक प्रभावशाली तथा व्यंजकहोती है, उसका अनुवाद भी उतना ही कठिन होता है।

अनुवाद करते समय स्त्रोत भाषा में किसी मुहावरे के मिलने पर अनुवादक का प्रयास सबसे पहले लक्ष्य भाषा में उस मुहावरे के शब्द तथा अर्थ दोनों ही दृष्टियों से समान मुहावरे की खोज की दिशा में होना चाहिए। स्त्रोत और लक्ष्य भाषा में कुछ थोड़े मुहावरे ऐसे मिल सकते हैं, जिनमें शब्द और अर्थ दोनों की समानता हो। यह समानता कई कारणों से हो सकती हैं। इनमें सबसे प्रमुख कारण एक भाषा का दूसरे पर प्रभाव है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में अनेक अंशों के भाँति मुहावरों पर भी एक दूसरे का प्रभाव ज्यादा रहता है। अतः यह स्वाभाविक है कि दोनों में अनेक मुहावरे ऐसे हैं जो शब्द और अर्थ दोनों ही दृष्टियों से समान हैं।

उदा : To be caught red-handed - रंगे हाथ पकड़ा जाना।

ups and down of life - जीवन के उतार चढ़ाव।

Black market - काला बाजार।

इसी प्रकार फारसी और हिन्दी भाषा के कुछ मुहावरे शब्द तथा अर्थ दोनोंही दृष्टियों से समान होते हैं-

उदा :फारसी- दन्दाँ तुर्श करदन

हिन्दी- दाँत खट्टे करना

फारसी - आब शुदन

हिन्दी- पानी-पानी होना।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि प्रभाव के समान स्रोत के कारण स्रोत तथा लक्ष्य भाषा में अर्थ तथा शब्द दोनों ही दृष्टि से समान मिल जाते हैं। उदाहरण के लिएसमान स्रोत के कारण कुछ मुहावरे हिन्दी- मराठी, हिन्दी - बांगला, तथा हिन्दी- गुजराती आदि में समान होते हैं।

फारसी - अंगूर तुर्राशुदन (मूल स्रोत)

हिन्दी - अंगूर खट्टे होना

मराठी - द्राक्षेंआंबटहोणें

अंग्रेजी - Grapes are sour.

फारसी - जमीन-ओ आसमान यककर्दन (मूल स्रोत)

हिन्दी - जमीन - आसमान एक करना, आकाश - पाताल एक करना

मराठी - आकाश पताल एक करण

अंग्रेजी - To thoro dust into one's eyes.

स्रोत तथा लक्ष्य भाषा के मुहावरों में कभी-कभी शब्द और अर्थ की दृष्टि से ऐसी समानता भी मिलती है जिसके कारण के बारे में कुछ कहना कठिन है। संभव है यह आपसी प्रभाव या लेन-देन, समान स्रोत, समान अनुभव या संयोगवशात् हो।

फारसी - कमर बस्तन
अंग्रेजी - To gird upone's lioms, Togird one self
हिन्दी - कमर कसना
हिन्दी - गुस्सा पी जाना
गुजराती - गुस्सा पी जवो
मराठी - बाराघाटांचेपाणीपिणें
हिन्दी - बारह घाट का पानी पीना।

स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा में समान मुहावरों की खोज करने में जल्दी नहीं करनी चाहिए। कभी- कभी ऐसा भी होता है कि लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के उक्त मुहावरे के लिए एक से अधिक मुहावरे होते हैं, जिनमें एक भाव की दृष्टि से लगभग समान होता है, दूसरा भाव की दृष्टि से पूर्णतः समान होता है तथा तीसरा भाव तथा शब्द दोनों ही दृष्टियों से पूर्णतः समान होता है। स्पष्ट ही तीसरा मुहावरा ही

अनुवाद के लिए सर्वोत्तम है ।

ध्यान देने योग्य है कि कभी-कभी समान शब्दावली तथा भाव में कुछ समानता होने पर भी दो भाषाओं के मुहावरे अर्थ में पूर्णतः एक नहीं होते।

उदा : चारपाई पकड़ना (हिन्दी)

अंथरुणासखिलणें (मराठी)

(बिस्तर से चिपकना)

दोनों काफी समीप हैं, किंतु हिन्दी मुहावरे का प्रयोग थोड़ा बीमार होने पर भी हो सकता है, जबकि मराठी का बहुत अधिक बीमार होने पर ।अनुवादक को इन ऊपरी समानता वाले मुहावरों से बचना चाहिए। इसी तरह अंग्रेजी To build castle in the air का हिन्दी में 'मन के लड्डू खाना' अनुवाद भी हो सकता है किंतु'हवाई किले बनाना'अधिक अच्छा होगा।

अनुवादक को स्त्रोत और लक्ष्य भाषा में यदि आर्थिक और शाब्दिक दोनों ही दृष्टियों से समान मुहावरे न मिलें तो अर्थ की दृष्टि से समान तथा शब्द की दृष्टि से लगभग समान मुहावरों की खोज की जानी चाहिए। अनेक भाषाओं में ऐसे मुहावरे मिल जाते हैं।

उदा: आग में घी डालना (हिन्दी)

To add fuel flame

ईद का चाँद (हिन्दी)

अमस्यार चाँद (बंगला)

नाक तोंडमुरडणें (नाक मुँहमोडना) (मराठी)

नाक-भौं सिकोड़ना (हिन्दी)

अगर स्त्रोत और लक्ष्य भाषा के शाब्दिक एवं आर्थिक समानता वालेमुहावरेन मिले तो अनुवादक शाब्दिक समानता की छोड़, केवलआर्थिक समानता पर ध्यान देने देना पड़ता है।

उदा :ऊल-जलूल बातें करना (हिन्दी)

अधल - पधलबोलणे (मराठी)

जीभ की लगाम ढीली करना (हिन्दी)

Cock and bull story

आँखें चार होना, आँखें पथराना (हिन्दी)

आखिरु पाणि मरिबा (उड़िया)

यदि स्रोत भाषा के किसी मुहावरे का शाब्दिक और आर्थिक दोनों दृष्टियों से कोई समान मुहावरा लक्ष्य भाषा में न मिले, आर्थिक या भाव की समान मुहावरा भी न मिले तो अनुवादक स्रोत भाषा के मुहावरे का लक्ष्य भाषा में शाब्दिक अनुवाद कर सकते हैं, लेकिन ध्यान देते है की बात है कि उस अनूदित मुहावरे का लक्ष्य भाषा में वही भाव या अर्थ व्यक्त करना चाहिए, जो मूल मुहावरा स्रोत भाषा में कर रहा हो। यदि ऐसा नहीं है तो अनुवाद नहीं किया जा सकता।

उदा :To put the cart before the horse.

छोडे के आगे गाडी रखना (हिन्दी)

जिथेचा पट्टा चालू करणें (मराठी)

जीभ का पट्टा चालू करना (हिन्दी)

कर सकता है किन्तु 'To beat about the bush'का

हिन्दी अनुवाद 'झाड़ी के आसपास पीटना' नहीं किया जा सकता कहने का मतलब है किसी मुहावरे का शाब्दिक अनुवाद करने के पूर्व इस बात पर अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए कि लक्ष्य भाषा में वह हास्यास्पद तो नहीं होगा और वही भाव दे सकेगा था नहीं जो मूल स्रोत भाषा में दे रहा है।

स्रोत भाषा में शब्द - अर्थ या केवल अर्थ की समानता वाले मुहावरे न मिले या मुहावरे का शाब्दिकअनुवाद भी न करसक पाते तो उसे मुहावरे में अनुवाद न कर, सीधी-सादी भाषा मेंउसका भावार्थ व्यक्त कर दे या फिर उक्त मुहावरे का भाव वालाकोई नया मुहावरा लक्ष्य भाषा में स्वयं गढ़ ले। इन दोनों में पहला रास्ता ही अधिक सरल और रिशपद होता है।

उदा :To go to dogsकाबर्बाद हो जाना

To beat black and blueकाबड़ी बुरी तरह मारना

आँख का पानी उतर जानाका To become shameless

दाँत खट्टे करनाकाTo give atough fight कर सकते हैं। अनुवाद में सबसे अधिक मुहावरों के साथ प्रायः यहीकरना पड़ता है।

कई बार स्रोत भाषा के पाठ के मुहावरे का पुनर्विन्यास लक्ष्य भाषा में व्याख्या के रूप में सामान्य भाषा में करना पड़ता है; जैसे- 'गधे का बाप बनाना' तथा 'लक्ष्मण रेखा पार करना'मुहावरों के अंग्रेजी

समतुल्यक्रमशः To flatter someone for the expediency of work और Exceeding one's limit to invite troubles एक प्रकार की व्याख्या ही है। अनुवाद कार्य सृजनात्मक कार्य है और किसी मुहावरे का अनुवाद मुहावरे में न करके सीधे-सीधे शब्दों में उसे व्यक्त करना उस सृजनात्मकता को क्षति पहुंचाना है। मुहावरे युक्त अभिव्यक्ति में अर्थ की गहराई, ध्वन्यात्मकता के कारण सामान्य शब्दों की अभिव्यक्ति में अर्थ की शहराई, 8 से अधिक होती है। इसीलिए जब हम अनुवाद में किसी मुहावरे के स्थान पर सीधे- सीधे शब्दों का प्रयोग करते हैं तो यह अनुवाद प्रायः मात्र कामचलाऊ होता है। इसीलिए कुशल अनुवादक को पूरा अधिकार है कि कोई और रास्ता न होने पर स्रोत भाषा के मुहावरे के लिए लक्ष्य भाषा में यदि संभव हो तो व्यंजक, सटीक तथा लक्ष्य भाषा की प्रवृत्ति के अनुकूल कोई मुहावरा गढ़ लें। एक बात और, पूरे मुहावरे को एक भाषिक इकाई मानकर अनुवाद ; करना चाहिए। उदाहरण के लिए He fell in love with का वह प्रेम में गिरा उसके साथ'या 'वह उसके साथ-प्रेममें गिरा'अनुवाद नहीं हो सकता। Fell in love with एक भाषिक इकाई है, अतः पूरे को एक साथ लेना पड़ेगा, शब्द - शब्द नहीं, वरना वह शाब्दिक अनुवाद हो जाएगा, जो निरर्थक और हास्यास्पद होगा। इसी प्रकार 'मेरा सिर चक्कर खा रहा है'में 'सिर चक्कर खाना'को एक भाषिक इकाई मानकर अनुवाद करना चाहिए। यदि इस वाक्य में 'सिर', चक्कर', 'खाना'तीनों को तीन स्वतंत्र भाषिक इकाइयाँ मानने की गलती कोई अनुवादक कर बैठ तो my head is cating circle जैसा हास्यास्पद और निरर्थक अनुवादहो जाएगा।

6.4.2 लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ :

लोकोक्ति शब्द 'लोक'और 'उक्ति'से मिलकर बना है। लोक मेंप्रचलित उक्ति को ही लोकोक्ति था कहावत कहते हैं। सामाजिक जीवन के अनुभव के आधार पर लोकोक्तियाँ बनती है। कथन की पुष्टि अथवा उपदेश आदि के लिए लोकोक्तियों का प्रयोग प्रभावकारी सिद्ध होता है। लोकोक्तियाँ मुहावरों की भाँति वाक्य का अंग नहीं होती, वे प्रायः पूर्ण वाक्य होती है। लोकोक्तियों के शब्दों का कभी सामान्य तो कभी विशेष या लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है। लोकोक्तियाँ प्रायः सभी भाषाओं में अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती हैं। किंतु वे अभिव्यंजना की दृष्टि से जितनी ही सशक्त होती हैं, कुछ थोड़े अपवादों को छोड़कर, अनुवाद करने की दृष्टि से उतनी ही अधिक कठिन होती है। अच्छे-से-अच्छा अनुवादक भी जहाँ सामान्य शब्दों द्वारा की गई अभिव्यक्तियों का किसी भाषा में बड़ी सरलता से अनुवाद कर लेता है, वहीं लोकोक्तियों अभिव्यक्ति उसके लिए प्रायःटेढ़ी खीर बन जाती हैं। इसके कई कारण हैं। इससे बड़ा कारण तो यह है कि एक से अधिक भाषाओं की सामान्य शब्द - आधारित अभिव्यक्ति पर अधिकार पाना अपेक्षाकृत सरल होता है। वह अधिकार चाहे अभिव्यक्ति को समझने काहो या अपने भावों को अभिव्यक्त करने का । किन्तु लोकोक्ति - आधारित अभिव्यक्ति पर अधिकार काफी कठिन होता है। वस्तुतः लोकोक्तियों की जड़ें भाषा-विशेष के जीवन और संस्कृति में बहुत गहरी होती हैं। यह करना अत्युक्ति न होगी कि कुछ विशेष शब्दों को छोड़ दें तो भाषा के सामान्य शब्दों की जड़ें लोकोक्तियों की तुलना में कम गहरी होती हैं। यही कारण है कि अपनी मातृभाषा को छोड़कर किसी अन्य भाषा के सामान्य शब्दों

पर अधिकार पाना जितना सरल है, उसकी लोकोक्तियों पर अधिकार पाना प्रायः उतना ही कठिन है। किसी भी भाषा के मातृभाषियों के जीवन को पूरी तरह जिए बिना, उनकी परंपराओं से परिचित हुए बिना उनकी अनेक लोकोक्तियों को ठीक से समझा नहीं जा सकता। लोकोक्तियों का शब्दकोश भी मिलना प्रायः कठिन ही है। इन्हीं कारणों से लोकोक्तियों का अनुवाद कर पाना काफी कठिन है। यदि कोई स्त्रोत भाषा से पूरी तरह परिचित हो तो भी स्रोत भाषा की केवल कुछ प्रतिशत लोकोक्तियों की ही समान लोकोक्तियाँ लक्ष्य भाषा में खोज पाएगा, क्योंकि कुछ प्रतिशत लोकोक्तियाँ ही समान हो सकती हैं। लोकोक्तियों के 'वास्तविक अनुवाद'का अर्थ यदि उनके द्वारा व्यक्त सामान्य भाव या विचार को लक्ष्य भाषा में रखवा लिया जाए, तो काफी लोकोक्तियों को अनूदित किया जा सकता है, किंतु लोकोक्तियों की प्रसंग- विशेष में अर्थवत्ता मात्र सामान्य शब्दों द्वारा व्यक्त भाव या विचार से कहीं अधिक गहरी होती हैऔर वह गहराई लोकोक्ति में ही निहित होती है। यदि हम अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कर रहे हों और'Grapes are sour'को 'अंगूर खट्टे हैं' रूप में अनूदित करें तो स्रोत भाषा की लोकोक्ति का अर्थ-बिंब बिना बिखरे था खंडित हुए लक्ष्य भाषा में उतर को आता है। 'Rome was not built in aday 'उकताए गूलरनहीं पकती'द्वारा पूरी तरह व्यक्तनहीं किया जा सकता।

अनुवादक के सामने जब लोकोक्ति के अनुवाद की समस्या आए तो उसका प्रयास सबसे पहले स्त्रोत भाषा की लोकोक्ति के समान लोकोक्ति लक्ष्य भाषा में खोजना चाहिए। यदि लोकोक्ति अपने भाषा - भाषियों को किसी विशिष्ट सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, भौगोलिक या सामाजिक बात या तथ्य आदि से संबद्ध नहीं है, तथासमान अनुभव था प्रभाव आदि किसी भी कारण से एक से अधिक भाषाओंकी संपत्ति बन चुकी है, तो बहुत संभव है कि स्त्रोत भाषा में उसी था कुछअन्य रूप में मिल जाए। जल्दी में कामचलाऊँ अनुवादक को आगे नहीं बढ़ जाना चाहिए। इस प्रकार की समान लोकोक्तियाँ पूरे लोकोक्ति - भंडार की तो कुछ ही प्रतिशत होती हैं, किंतु बहु-प्रयुक्त लोकोक्तियों में ऐसी काफी हो सकती हैं।

लोकोक्तियों में कई कारणों से समानता होती है। स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में आपसी प्रभाव या समान स्त्रोत के कारण समान लोकोक्तियाँ मिलते हैं। विभिन्न भाषा भाषियों के आपसी संपर्क के कारण जब हमारा परिचय भाषा और साहित्य तक बढ़ता है, तो अनेक शब्द, मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ एक भाषा से दूसरी में चली जाती है। मध्य -युग में फ़ारसी से भारतीय भाषाओं में अनेक लोकोक्तियाँ आ गई।

उदा :फारसी - कोहकंदन व मूशबराबुर्दन ।

हिन्दी - खोदा पहाड़, निकली चुहिया।

फारसी- ब अंदाज़े गलीमहा दराज़ कुन।

हिन्दी -तेतो पाँव पसारिए जेतीलांबी सौर।

अनेक फ़ारसी लोकोक्तियाँ ऐसी हैं जो प्रायः अपने मूल रूप मेंही भारतीय भाषाओं में ग्रहण कर ली गई -

माले मुफ्त दिले बेरहम।

देर आयद दुरुस्त आयद।

तंदुरुस्ती हजार नेमत।

इस फ़ारसी - प्रभाव से भारतीय भाषाओं में आपस में भी कई समान लोकोक्तियाँप्रयुक्तहोने लगी हैं।

फारसी - नीम हकीम खतर - ए - जान।

उर्दू - नीम हमीमखतर- ए- जान।

कश्मीरी - नीम हकीम गव खतरे - ए- जान।

हिन्दी- नीम हकीम खतरे जान।

आधुनिक काल में अंग्रेजी के प्रभाव से अनेक अंग्रेजी लोकोक्तियाँ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त होने लगा। अतः अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं में समान लोकोक्तियाँ प्रयुक्त होने लगी।

उदा: अंग्रेजी - An empty mind is devil's workshop.

हिन्दी-खाली दिमाग शैतान का घर

अंग्रेजी - Necessity is the mother of invention

हिन्दी- आवश्यकता आविष्कार की जननी हैं।

अंग्रेजी -It requires two hands to clap.

हिन्दी-एक हाथ से ताली, नहीं बजती।

कश्मीरी - अकिअथमछनअवजानचअर।

इसी तरह संस्कृत से भी अनेक लोकोक्तियाँ भारतीय भाषाओं में आए है।

संस्कृत-अर्धो घटो घोषमुपैतिनूनम्।

हिन्दी - अधजल गगरी छलकत जाय।

बँगला -आध गगरी जल करै छल-छल।

तेलुगु - निंडु कुंड तोणकदु।

अंग्रेजी- Empty Vessel makes much noise.

संस्कृत की कुछ लोकोक्तियाँ तो प्रायः अपने मूल रूप में ही भारतीय भाषाओंमें मिलती हैं-

संस्कृत - अल्पविद्याभयंकरी

असमी -अल्पविद्याभयंकरी

हिन्दी - अल्पविद्याभयंकरी

संस्कृत -यथा राजा तथा प्रजा।

हिन्दी - यथा राजा तथा प्रजा।

मलयालम-यथा राजा तथा प्रजा।

आधुनिक भारतीय भाषाओं में भी एक दूसरे के प्रभाव से प्रायः समान लोकोक्तियाँ मिलती है। हिन्दी की अनेक लोकोक्तियाँ प्रायः अपने मूल रूप में या थोड़े - बहुत परिवर्तन के साथ बंगला, गुजराती, उड़िया, मराठी, पंजाबी आदि अनेक भारतीय भाषाओं में मिलती है।

हिन्दी: ऊंट के मुँह में जीरा

उड़िया -उट के मुँह रे जीरा

हिन्दी- घर की मुर्गी दाल बराबर

बँगला - घरेर मुर्गी दाल बराबर

इस प्रकार प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव के कारण लोकोक्ति के क्षेत्र में समानता की बात हुई तो देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं में, समान चिंतन थासंयोग आदि के कारण समान लोकोक्तियाँ मिलने की संभावना है। उदा: संस्कृत- अति परिचयादवज्ञा

अंग्रेजी-Familiarity breeds Contempt.

हिन्दी- आप भला तो जग भला

अंग्रेजी - Good mind good find.

एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय स्त्रोत और लक्ष्य भाषा में इस प्रकार की समान लोकोक्तियों की खोज की जानी चाहिए।

अनुवाद करते समय अनुवादक शाब्दिक समानता को देखते है तोकभी-कभी अर्थ में अंतर होता है। कभी-कभी जल्दी में समान लोकोक्ति न मिलने पर अनुवादक उसी भाव की घोतक दूसरी लोकोक्ति से काम चला लेता है। ऐसा तभी होना चाहिए जब यह पूर्ण निश्चय हो जाए कि समान लोकोक्ति लक्ष्य भाषा में नहीं है। 'भाव और शब्द'दोनों की समानता वाली लोकोक्ति की अनुवादकके लिए अधिकउपयुक्त होती है। शब्द और भाव दोनों की समानता वाली लोकोक्ति न मिलने पर अनुवादक को अपना ध्यान समान भाव वाली लोकोक्ति पर

केंद्रित करना पड़ेगा, यद्यपि इस प्रकार की लोकोक्तियों का अर्थ-बिंब स्त्रोत तथा लक्ष्य भाषा में सर्वदा एक-सा नहीं होता। किन्तु इनके प्रयोग के अतिरिक्त अनुवादक के लिए कोई और चारा नहीं होता।

उदा : अंग्रेजी- A bad carpenter quarrels' with his tools

हिन्दी: नाच न जाने आँगन टेढ़ा

Killing two birds with one Stone

एक पंथ दो काज

Every dog has his day

घूरे के दिन भी फेरते है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि: स्त्रोत भाषा की किसी एक लोकोक्ति के भाव की लक्ष्य भाषा में एक से अधिक अभिव्यक्तियाँ होती हैं। ऐसी स्थिति में अनुवादक को सावधानी से चयन करना चाहिए।

उदा :Bringing coal to new castle के लिए हिन्दी में 'उलटी गंगा बहाना'की तुलना,में'उलटे बाँस बरेली को लोकोक्ति उपयुक्त होगी।

अनुवादक के सामने सबसे कठिन समस्या तब आती है जब उसे स्त्रोत भाषा की किसी लोकोक्ति के लिए लक्ष्य भाषा में न तो शब्द और भाव की समानता वाली लोकोक्ति मिलती है, और न केवल भाव की समानता वाली । ऐसी स्थिति में उसके सामने तीन ही रास्ते रह जाते हैं -

- **लोकोक्तिकाशब्दानुवाद :-**

स्त्रोत भाषा की लोकोक्ति का शब्दानुवाद केवल नहीं किया जा सकता है, जहाँ उस अनुवाद से लक्ष्य भाषा-भाषी वही अर्थ ग्रहण करें जो स्त्रोत भाषा-भाषी की लोकोक्ति से ग्रहण करते हैं।उदाहरण के लिए असामी में एक कहावत है- 'अजात गछरबिजात फल'इसका अर्थ है - 'जो पेड़ अच्छी जाति का न होगा, उसका फल भी बुरा होगा।हिन्दी में इसकी समानार्थी लोकोक्ति नहीं है। इसका सरलता से

लोकोक्ति - अनुवाद किया जा सकता है-'जैसा पेड़ वैसा फल'

अंग्रेजी- All that glitters is not gold.

हर चमकती चीन सोना नहीं होता।

Do evil and look for like.

कर बुरा, पा बुरा ।

- **भावानुवाद**

शब्दानुवादठीक न रहने पर अनुवादककोभावानुवादको यही करनाकरना पड़ता है। प्रायः अनुवाद

करते समय अनुवादक को यही करना पड़ता है। क्योंकि बहुत कम लोकोक्तियों का भाषांतर उपयुक्त पद्धतियों में किसी एक द्वारा किया जा सकता है। अनुवादक यदि भाव को गद्यात्मक शब्दावली में न रखकर लोकोक्ति-रूप में रख सके तो अधिक उपयुक्तहोता है।

उदा :संस्कृत - लोभःपापस्यकारणम्

हिन्दी - शब्दानुवाद : लोभ पाप का कारण है।

भावानुवाद–लोभपाप का बाप ।

अंग्रेजी: Diet cures more than the doctors.

हिन्दी: पथ्य सबसे बड़ा डॉक्टर है।

- **लोकोक्तिकेभावकोव्यक्तकरनेवालीनईलोकोक्ति:**

अनुवादक को इस पद्धति का अनुसरण बहुत ही कम, कोई अन्य रास्ता बिलकुल ही नहीं मिलने पर करना चाहिए। अंग्रेजी आदि यूरोपीय भाषाओं में अनुवादक को भी कदाचित् इसी पद्धति का सहारा लेना पड़ सकता है।

प्रत्येक भाषा में कुछ लोकोक्तियाँ ऐसी भी होती हैं, जिनमें सामान्य लोकोक्तियों की व्यंजना था उनका चुचीलापन नहीं होता। वे सामान्य कथन होती है। हिन्दी में खेतों, मौसम, शकुन तथा जाति संबंधी ऐसी अनेक लोकोक्तियाँ हैं। इनमें कुछ का किसी भी रूप में सीधे अनुवाद असंभव है। इनको केवल विस्तार से अनूद्य सामग्री के मूल पाठ में पादटिप्पणी में था परिशिष्ट में समझाया जा सकता है।

6.5 सारांश :

अनुवाद एक विशिष्ट कला है। इस के द्वारा आज तक संसार में अनेक अनुवाद भी किए गए है। साहित्यक अनुवाद बहुस्तरीय और बहु आयामी होता है। कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि रचनाओं के अनुवादक के भीतर हों भाषाओं की टकराहट अनुवाद विशेष का व्यक्तित्व, उसकी संवेदना और भाषायी, समझ,मूल रचना का सौंदर्यपरक वैशिष्ट्य तथा उनका सर्जनात्मक रूपांतरण अपनी विशिष्टअलग-अलग भूमिका निभाते है। साहित्यिक अनुवाद बड़ा ही दुष्कर और जटिल कार्य है जिसके लिए असाधारण प्रतिभा, क्षमता और अभ्यास तीनों की अपेक्षा रहती है।

अनुवादइस अध्याय में हम सर्जनात्मक साहित्य के अंतर्गत नाटकानुवाद, कथा साहित्य का अनुवाद

मुहावरे लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ और कुछ समाधानों के बारे में पढ़ चुके है। नाटकानुवाद में भाषा- शैलीभाषा-शैली, सभ्यता-संस्कृतिके साथ-साथ रंगमंचीय अभिनय का भी ध्यान में रखकर अनुवाद करना पड़ता है। कथा साहित्य के अनुवाद में पाठ को एक इकाई के रूप में लेकर अनुवाद करना पड़ता है। कथा साहित्य में भाषा-संरचना के साथ-साथ मुहावरों-लोकोक्तियों का अनुवाद की समस्याएँ भी जटिल होते है । उन सब को ध्यान में रखकर अनुवादक को अनुवाद करना पड़ता है ।

6.6 बोध प्रश्न :

1. अनुवाद एक जटिल कार्य हैतो इसके अनुसार नाटकानुवाद के बारे में चर्चा कीजिए।

2. कथा साहित्य के अनुवाद करते समय अनुवादक को किन-किन विषयों को ध्यान में रखना पड़ता है ।

3. मुहावरे लोकोक्तियाँ भाषा संरचना के विशिष्ट पहलुएँ है। इनकी समस्याएँ क्या है और उन समस्याओं से अनुवादक अनुवाद कैसे जूझते है ।

6.7 सहायक ग्रंथ :

1. अनुवाद विज्ञान- भोलानाथ तिवारी, किताब महल ।

2. व्यवहारिक हिन्दी- डॉ. कैलाश चन्द्र भटिया, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली ।

3. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. कमल कुमार बोस, नई दिल्ली ।

****

- डॉ. एम .मंजुला

7. अनुवादकी व्यावहारिक कठिनाइयाँ

उद्देश्य

पिछले अध्याय में हम अनुवाद - साहित्यक अनुवाद औरकाव्यानुवाद के बारे में जान चुके हैं । इस अध्याय में अनुवाद की व्यावहारिक कठिनाइयाँ और उनके समाधानों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 अनुवाद की सामान्य समस्याएँ

7.3 सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद

7.4 सारांश

7.5 बोध प्रश्न

7.1. प्रस्तावना :

अनुवाद एक भाषा में कही हुई बात को दूसरी भाषा मेंउतनी ही जीवंतता और प्रभावोत्पादकता के साथ अभिव्यंजित करने की कला का नाम है। कहीं भी जब दो भाषा-भाषी मिलते हैं, तो उनके सामने सबसे बड़ी समस्या आपस में बातचीत करने वाली भाषा की होती है। दोनों व्यक्ति एक-दूसरे की भाषा नहीं जानते ऐसी दशा में एक व्यक्ति द्वारा कही गयी बात को दूसरा व्यक्ति कैसे समझे, यह बहुत जटिल प्रश्न है। इसका समाधान यही है कि दोनों व्यक्तियों को एक दूसरे की बात को समझाने के लिए कोई द्विभाषीय हो, अर्थात ऐसा व्यक्ति, जो वक्ता और श्रोता दोनों की भाषाओं पर अधिकार रखता हो तथा वक्ता के कथ्य को श्रोता की भाषा में अनूदित करके उसे उसका आशय समझा दे। एक भाषा से दूसरी भाषा में कथ्य को बदलना ही अनुवाद प्रक्रिया है। वर्तमान संसार की जीवन शैली में अनुवाद की आवश्यकता और महत्ता बहुतअधिक बढ़ गयी है। मनुष्य के कार्यक्षेत्र का इतना विस्तार हो गया है और ज्ञान तथा तत्सम्बन्धी सूचनाओं के इतने आयाम विकसित हो गये हैं कि उनके सम्प्रेषण के लिएअनुवाद अपरिहार्य बन गया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी व्यापारिक प्रयोजनों का परस्पर विनिमय - कार्य, विविध एवं विभिन्न सूचनाओं का प्रसारण, राजनीतिक और कार्यालयी क्षेत्र के क्रिया-कलापों की अभिव्यंजना और उनकी सम्प्रेषणात्मकप्रयोजनाओं की सिद्धि के लिए आज अनुवाद अपरिहार्य हो गया है। साहित्य, कला तथा शिल्प के अन्यान्य क्षेत्रों ने वस्तु एवं उनकी शिल्पगत प्रयोजनीय व्यंजनाओं के हस्तान्तरण की समस्या तो अनुवादक की सहायता के बिना सम्पूर्तित ही नहीं हो सकती।आज जीवन और जगत् के सभी क्षेत्रों और क्रिया - व्यापारों में अनुवाद की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गयी है। सभी क्षेत्रों की

उपलब्धियाँ अनुवाद के माध्यम से ही समस्त विश्व के लोगों को उपलब्ध करायी जा सकती है। यही एकमात्र ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा समस्त विश्व की गतिविधियाँ जन-जन तक पहुंचाने के लिए अनुवाद अपरिहार्य बन गया है। इतने महत्वपूर्ण अनुवाद के क्षेत्र में अनेक जटिल समस्याएँ भी होते हैं। यहाँ इस अध्याय में अनुवाद से संबंधित कुछ सामान्य समस्याओं के बारे में चर्चा करेंगे।

7.2 अनुवाद की सामान्य समस्याएँ :

अनुवाद कार्य जितना दिखता है उतना सामान्य कार्य नहीं है। अनुवाद यदि कला है, विज्ञान है एवं शिल्प है तो अनुवादक भी कलाकार है, वैज्ञानिक है और शिल्पकार है अच्छे अनुवादक में प्रमुख रूप से तीन अपेक्षाएँ की जाती है -

1.स्त्रोत एवं लक्ष्य भाषाओं पर पर्याप्त अधिकार।

2. मूल लेखक से तादात्य।

3.विषय का सम्यक ज्ञान।

प्रत्येक भाषा की शैली तथा सांस्कृतिक परिवेश की सटीक धारणा भीअनुवादक के लिए अपेक्षित है। वैज्ञानिक अनुवाद में अनुवादक का वैज्ञानिकहोना आवश्यक है। साहित्यक अनुवाद में अनुवादक को मूल कृति के शिल्प -विधान, संरचना तथा तकनीकी विषय में भी अनुवादक का गहन अध्ययन करना आवश्यक है। अनुवादक उस भाषा को जानता ही न हो, बल्कि रहता- सहता भी हो।

अनुवादक की सफलता इसी में है कि वह मूल लेखक के प्रति श्रद्धा का भाव रखे। अनुवादक को मूल व्यक्तित्व में पहले अपने को खो देना होता है, फिर उसी के प्रति अपने को भावार्पित करना पड़ता है। अनुवादक को सबसे पहले अपनी रचना का प्रभाव अपने ऊपर उत्पन्न करना चाहिए। इस प्रकार से उसमें सशक्तता और नवीनता आयेगी, जो मूल रचना पढ़ने पर हुई होगी। इसके साथ- साथ अनुवादक स्त्रोत सामग्री को विषयगत एवं भाषागत दृष्टि से समझने का प्रयास करता है। उसे लक्ष्य भाषा के अनुरूप शैली एवं प्रयोगों की बखूबी जानकारी होना भी बहुत जरूरी है। प्रत्येक देश और काल की विशेष सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियाँ होती है जो काल- विशेष के सृजन - कर्म में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। अनुवाद किये जाने पर स्त्रोत- भाषा की ये परिस्थितियाँ लक्ष्य भाषा के लिए कभी-कभी एकदम नयी, अजनबी और चुनौती- भरी होती है। ऐसी स्थिति में समानार्थक शब्दों को सही सन्दर्भों में खोजना और उनमें वही अर्थवत्ता निश्चित करना, जो स्त्रोत-भाषा में विद्यमान रही हैं, अपने आप में बड़ी समस्या बन जाती है।

स्त्रोत-भाषा के शब्दों, वाक्य - विन्यास के विशेष लहजे की विशिष्टता परक अभिव्यंजकता के समकक्ष लक्ष्य-भाषा में प्रायः उपलब्ध न हो पाने की स्थिति में अनुवादक को बड़ी छटपटाहट महसूस होती है। उदाहरण

के लिए अनुवाद में एक वाक्य आता है- 'हाल ही में खुले सेवाश्रम में अभिनव ने लगभग पन्द्रह दिन पहले ही काम शुरू किया था। यहाँ 'सेवाश्रम'ऐसा शब्द है जिसके लिए अंग्रेजी में समकक्ष अनुवाद खोजना कठिन है। यह मूलतः संस्कृत शब्द है, आधुनिक सन्दर्भ में इसका अर्थ होगा -'समाज सेवा केन्द्र'आश्रम शब्द प्राचीन भारतीय सभ्यता-संस्कृति से जुड़ा है। यदि इस शब्द के लिए 'A center for Social Service'लिखते हैं, तो 'सेवाश्रम'शब्द में निहित सम्पूर्ण अर्थगर्भव्यंजना और शब्द में भराहुआ गाँधीवादी अर्थ दूर पड़ जायेगा जिससे इस शब्द का सन्दर्भ जुड़ा है।'आत्मानुशासन', 'संयम', 'अहिंसा'आदि सभी इसी से जुड़े अर्थ सन्दर्भ है।अर्थ-सन्दर्भ से हटाते ही यह शब्द भटक जायेगा। अतः अनुवाद करते समय 'सेवाश्रम'का 'लिप्यंतरण'ही बेहतर होगा। इससे अनुवाद में एक स्थानीय रंग का प्रवेश होगा, किन्तु प्रश्न यह उठेगा कि भारतीय पाठक या गाँधीवाद से परिचित पाठक तो 'सेवाश्रम'का अर्थ समझ लेगा, किन्तु विदेशी भाषा और संस्कृति के ऐसे पाठक, जो इस शब्द - सन्दर्भ से परिचित नहीं है, तो इसे समझने में कठिनाई होगी। ऐसी स्थिति में या तो 'सेवाश्रम'को समझाने के लिए अलग से विशिष्टार्थक टिप्पणी दी जाये या शब्दगत सन्दर्भ को कोष्ठक में खोलकर रखा जाय।

अनुवादक को स्त्रोत भाषा तथा लक्ष्यभाषा की गम्भीर जानकारी के लिए दोनों भाषाओं के सांस्कृतिक सन्दर्भों को सही परिप्रेक्ष्य में पकड़ना होगा। साथ ही, सही सन्दर्भ में दोनों भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से ठीक शब्द को ग्रहण करना होगा। कभी-कभी ऐसा होता है कि अनुवादक के समक्ष जो समस्या खड़ी होती है, वह सांस्कृतिक अनुवादों की होती है। स्त्रोत भाषा पाठ में मौजूद परिस्थितिगत तत्व लक्ष्य-भाषा से सम्पृक्त संस्कृति में बिल्कुल अनुपस्थित होता है। जैसे- परम्परागत भारतीय घरों का 'चौका'शब्द इसे अंग्रेजी शब्द'kitchan'के समकक्ष नहीं रखा जा सकता, क्योंकि दोनों में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के भिन्न-भिन्न अर्थ विद्यमान हैं। भारतीय शब्द 'चौका'या रसोई में भोजन पकाने की शुद्धता और पारिवारिकता का अर्थ विद्यमान है तथा यह शब्द भारतीय गृहिणी के समस्त त्याग-सौजन्य की अन्तर्मानसिकतासे जुड़ा है। यदि हम किसी कहानी या कविता में 'कन्नौजी चौका'खोज पाना प्रयोग करते हैं, तो विदेशी के लिए इसकी अर्थ- व्यंजना खोज पाना बड़ा कठिन पड़ेगा, क्योंकि वहाँ 'चौका'उनके सम्पूर्ण छुआछूत पाखण्ड का प्रतीक है? यदि इसके लिए'kitchen'अनुवाद किया जायेगा तो वांछित अर्थ ही नहीं आ पायेगा। क्योंकि, वहाँ 'किचिन'घर से अलग केवल भोजन पकाने की जगह और यहाँ 'चौका'घर के भीतर सम्पूर्ण रसायन से भरा शब्द है।

अनुवादकरते समय अनुवादक के समक्ष स्त्रोत भाषा की अनुवाद दो प्रकार की संरचनाएँ होती है- सांस्कृतिक संरचना और भाषिक संरचना। दोनों ही संरचनाएँ एक-दूसरे को प्रभावित करती है। यदि भाषा को लिखित या मौलिक घटनाओं की एक श्रृंखला कहा जाय, जो अर्थ वहन करती है, तो अनुवाद की समस्या स्त्रोत भाषा की घटनाओं और लक्ष्य-भाषा की घटनाओं के बीच अर्थ समकक्षों पर पहुँचने की होगी। इस प्रक्रिया में अनुवादक को दो आधारभूत संरचनाओं - भाषिक और सांस्कृतिक, पर कार्य करना पड़ता है।

भाषागत अनुवाद की समस्या विशेष रूप से उन स्थानों पर आती है, जब स्त्रोत भाषा में रूपात्मक, मिथिकल और आलंकारिक प्रयोगों की भरमार हो जाती है। ऐसी स्थिति में लक्ष्य भाषा में उनके समकक्षों का खोजना टेढ़ी खीर हो जाता है, लेकिन यह समस्या मूलतः साहित्यिक अनुवाद की समस्या है। स्त्रोत भाषा में श्लिष्ट, रूपात्मक - आलंकारिक प्रयोगों की भरमार के कारण प्रायः लक्ष्यभाषा में अनुवाद अस्पष्ट होकर अर्थ की अमूर्तता की ओर बढ़ जाता है। इसी प्रकार की और एक समस्या अनेकार्थी वाक्यों या शब्दों के आने पर उत्पन्न होती है। स्त्रोत भाषा के इन अनेकार्थियों को लक्ष्यभाषा के मूल संदर्भ में लाकर ढालना कठिन होता है। जैसे- 'रस'शब्द की घोर पारिभाषिकता अनुवादक के लिए चुनौतीपूर्ण हैं। भारतीय काव्यशास्त्र के अतिरिक्त भी इस शब्द का प्रयोग आयुर्वेदका रस, पदार्थ का रस आदि अनेक रसों में होता है। सामान्य भाषा में भी रस शब्द पाक - रस आदि के लिए खूब चलता है। ऐसा ही शब्द है 'धर्म'जिसका पर्याय केवल 'Religion'नहीं होता है। यह शब्द 'कर्तव्य'तथा 'मानवीयता'के अर्थ में ज्यादातर प्रयुक्त होता है।

मिथक प्रत्येक देश मेंएक खास ढंग से उत्पन्न होते रहते हैं, किसी भी जाति का जातीय अवचेतन इन्हीं में युगों-युगों तक यात्रारत रहता है। देशबध्द इन मिथकों का अनुवाद बहुत कठिन काम है। इसका प्रधान कारण यही है कि मिथक का एक विशिष्ट वाची लोक - संदर्भ होता है। जैसे - मीराबाई के काव्य में 'गिरधर'का प्रयोग। उनकी पंक्ति है - 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई'। मीरा की इस पंक्ति का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करते समय 'गिरधर'को लिप्यंतरित भी कर लिया जाये तो पूरे अर्थ का वहन नहीं हो सकता, क्योंकि शब्दों के पर्याय एक से नहीं होते हैं, हर पर्याय का अलग अर्थ संदर्भ होता है। 'गिरिधर'के 'पर्याय 'नन्दनन्दन', 'वासुदेव', 'मुरारी'राधावल्लभ''मुरली मनोहर', 'गोविन्द'आदि नहीं है, न वे अनुवाद में सहायता ही दे सकते हैं। 'गिरिधर'में इन्द्र- कृष्ण संघर्ष का सम्पूर्ण मिथ निहित है। इन्द्र को हराकर कृष्ण ने ब्रजवासियों की रक्षा की और अपना लोक - रक्षक - रूप जनता में स्थापित किया। हर दुर्बल असहाय व्यक्ति के लिए विपत्ति के समय में यह भगवान का 'रक्षक'रूप है। विपत्तिग्रस्त मीरा की रक्षा 'गिरिधर'ही कर सकता है- 'मुरली मनोहर'या 'कुंज विहारी'नहीं। ऐसी स्थिति में 'गिरधर'जैसे मिथिकल-संदर्भों के अनुवाद में अनुवादक के गहन ज्ञान और पकड़ की परीक्षा हो जाती है।

अनुवाद की कुछ अन्य सामान्य समस्याएँ इस प्रकार होते है –

1. व्याकरण सम्बन्धी समस्याएँ

प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है व प्रत्येक भाषा व्याकरण के नियमों से नियंत्रित होती है। अतः लक्ष्य भाषा और स्त्रोत भाषा दोनों में ही व्याकरण कोटियाँ भिन्न होती हैं।वाक्य-रचना व वचन-प्रक्रिया, लिंग विधान भिन्न होते हैं, उदाहरण के लिए- He goat एवं she goat का 'वह बकरा', 'वह बकरी'अनुवाद

करना त्रुटिपूर्ण होगा क्योंकि अंग्रेजी का लिंग-विधान सीमित है। इसलिए He और she काप्रयोग किया गया है। इसी प्रकार - He is my father का अनुवाद 'वह मेरे पिता है', करना तर्कसंगत नहीं है, हमें कहना होगा - वे मेरे पिता जी हैं। हिन्दी में 'जी'अतिरिक्त प्रयोग है और है 'का' प्रयोग सम्मान देने के लिए किया है। अंग्रेजी का वाक्य एकवचन में होते हुए भी इसका अनुवाद बहुवचन में हुआ है। इसलिए यह नितान्त जरूरी है कि व्याकरण, रचना प्रक्रिया और भाषागत विशेषताओं भिन्नताओं को समझकर अनुवाद किया जाये ।

2. भाषागत प्रयुक्तियाँ

प्रत्येक भाषा में प्रयोग के अपने होते हैं, अतः एक भाषा में जो अनिवार्य होता है दूसरी भाषा में वह अर्थहीन हो जाता है। यदि हम अंग्रेजी में करें –'There are five birds on the tree'इसका हिन्दी में शाब्दिक अनुवाद होगा - वहाँ पेड़ के ऊपर पाँच चिड़िया हैं, परन्तु सही अनुवाद होगा, पेड़ पर पाँच चिड़ियाँ है।

3. संकल्पनाओं सम्बन्धी समस्याएँ

भाषा निरंतर प्रवाहमान एवं गतिशील रहती है। नयी-नयी खोजों, नये-नये प्रयोगों और संकल्पनाओं का भाषा में निरंतर प्रयोग होता ही रहता है। ऐसी संकल्पनाएँ अनुवादकों के लिए बहुत समस्याएँ पैदा करती हैं । यदि बैंकिंग में Factoring शब्द का अनुवाद 'फैक्ट्री'के अर्थ में कर दिया तो अर्थ का अनर्थ हो जायेगा। इसलिए जिस विषय का अनुवाद कर रहे हों उस विषय के पारिभाषिक कोश का अवश्य सहारा लें या फिर संकल्पनाओं का लिप्यंतरण कर देना चाहिए।

4. शब्द चयन सम्बन्धी समस्याएँ

अनुवाद में शब्द चयन की समस्यासबसे महत्वपूर्ण है। बैंकिंग क्षेत्र में deliver to the order का अनुवादकरना है तो अगर शब्द का अर्थ के अनुसार करे तो 'आदेश पर प्रसव करें। यहाँ प्रसव यानी बच्चे को जन्म देना। यहाँ तो deliver का अर्थ सुपुर्द करना है। अनुवादक को शब्द का चयन करते समय सतर्कता से करना चाहिए।

5. मुहावरे व लोकोक्ति सम्बन्धी समस्याएँ

अनुवाद में भाषा-विशेष के शैलीगत था उसमें प्रयुक्त विशिष्ट मुहवरेदार प्रयोग के कारण समस्या होती है। मुहावरे और लोकोक्ति देश, स्थान विशेष की विविधता से युक्त होते हैं, इसलिए हमेशा इसके लिए दूसरी भाषा में समानार्थी मुहावरे या वाक्यांश पाना संभव नहीं है। कहीं-कहीं समानार्थी मुहावरे मिल भी सकते हैं, पर इनके अनुवाद से भी अर्थान्तर दोष से बचने के लिए व्याख्यात्मक वाक्य- रचना का सहारा लेकर मुहावरे का अर्थ स्पष्ट करना पड़ता है।

6. सांस्कृतिक परिवेश या रीति रिवाज

अनुवाद में सांस्कृतिक परिवेश व संस्कृति एवं सभ्यता जन्य शब्दों व सामाजिक मान्यताओं का अनुवाद जटिल समस्या होती है। प्रत्येक भाषा किसी न किसी सभ्यता और संस्कृति से जुडी होती है। अत: स्त्रोत भाषा के सांस्कृतिक या पारम्परिक शब्द लक्ष्यभाषा में हों, यह जरूरी नहीं होता। क्यों कि एक विशिष्ट देश में कोई ऐसी रीति हो सकती है, जो दूसरे देश के लिए बिल्कुल अपरिचित - सी हो और जिसकी व्याख्या भी की जाये, तो उसका मतलब दूसरे देशवालों की समझ में न आए। ऐसे, रीतिपरक शब्दों, पदों और वाक्यांशों के अनुवाद प्रायः असंभव होते हैं। इसमें जो अन्तर्कथा जुड़ी होती है उसे समझने में बहुत समस्या होती है, इसलिए इनके अनुवाद के मूल में अनुवाद करते समय प्रसंगानुकूल व्याख्या जोड़नी पड़ती है या कभी-कभी मूलतः शब्द को छोड़कर उसके कामचलाऊ भाव को ग्रहण करके ही आगे बढ़ जाना पड़ता है। भारतीय दर्शन और योग में ऐसेशब्दों कीभरमार है, जिनका दूसरी भाषा के अनुवाद करना या उन्हें व्याख्या द्वारा भी समझ व समझा पाना बहुत बड़ी समस्या हो जाती है।

7. शब्द शक्तियाँ व लक्षणामूलक प्रयोग

अनुवादकी एक समस्या यह भी होती है कि कभी-कभी शब्दों का सीधा अर्थ नहीं निकलता है बल्कि उनके लक्षणा या व्यंजनामूलक अर्थ होते हैं, कहीं-कहीं पर व्यंग्य होते हैं। मूल पाठ में ऐसे लक्षणा याव्यंजनामूलक शब्दों या व्यंग्य अथवा व्यंग्यात्मक शैली की पहचानकर लेनीचाहिए उसके उपरान्त शब्द को दृष्टि में न रखकर अभिव्यक्ति का अनुवाद किया जाता है।

8. साहित्यिक - विधाओं के अनुवाद की समस्याएँ

साहित्य भावना की सुव्यवस्थित अभिव्यक्ति होती है। इस अभिव्यक्ति हेतु साहित्यकार जिन माध्यमों का उपयोग करते हैं, वे साहित्य की विधाएँ कहानी, कहलाती हैं,निबन्ध, उपन्यास, नाटक, रिपोर्ताज, चंपू आदि। साहित्य के अनुवाद में सबसे बड़ी कठिनाई यह होती है कि यह भावना - प्रधान होता है, अतः कथ्य में वर्णित कोमलता को उसी रूप और उसी कोमलता से दूसरी भाषा में ले जाना वस्तुतः एक जटिल कार्य है। काव्य की कल्पना शक्ति व उसकी अनेकार्थता को उसी रूप में अनुवाद करना दुष्कर कार्य है। बिहारी के दोहे जो कई-कई अर्थ देते हैं, उनकी श्लेषपरकउक्तियों को उसी गहराई से दूसरी भाषा में पहुँचा सकता है। हिन्दी काव्य की अनुप्रासिकता को कैसे सहेजा जाएगा-भावना की सूक्ष्मतम गहराइयों को कैसे व्यक्त किया जाए। भारतीय जनमानस उल्लू को मूर्ख और अशुभ समझता है जबकि विदेशी संस्कृति में इसे शुभ मानते हैं, इस

प्रकार के अंतर्विरोधों के बावजूद यही अभिव्यक्तियाँ कैसे व्यक्त की जाएँ, यह समस्या सदैव अनुवादकों को परेशान करती आई हैं।

9. पौराणिक प्रतीक

अनुवादक की एक समस्या यह भी होती है कि पौराणिक प्रतीकों, दंत-कथाओं आदि के सन्दर्भ आने पर उन शब्दों को कैसे व्यक्त किया जाये। जैसे - भीष्म प्रतिज्ञा, विभीषण आदि के पीछे जो तथ्य और प्रतीकात्मकता छिपी होती हैं, उसे अनुवाद के द्वारा व्यक्त करना कठिन कार्य है, परन्तु इसी प्रकृति के पात्रों के गुण के समान आदि लक्ष्य-भाषा में कोई पात्र हो तो उनका उल्लेख करना चाहिए अथवा जिस प्रतीक के लिए इनका उपयोग हुआ है उसकी व्याख्या करके अनुवाद सम्पन्न करना चाहिए।

10. तकनीकी एवं वैज्ञानिक अनुवाद की समस्या

तकनीकी एवं वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद स्वयं में एक चुनौती है, क्योंकि तकनीकी और वैज्ञानिक अनुवाद करने के लिए अनुवादक को विषय का गूढ़तम ज्ञान होना चाहिए ताकि संकल्पनात्मक 'Emceptual'शब्दों को सही रूप में समझकर उनका समुचित अर्थ अनुवाद में दिया जा सके। तकनीकी अनुवाद में विज्ञान एवं साहित्य से भी अधिक जटिलता व कठिनताहोती है, क्योंकि इनमें लिप्यंतरण अनुवाद के प्रवाह को रोकता है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी अनुवाद सूचना प्रधान होता है। अतः शैलीकी कलात्मकता यहाँ वांछित नहीं होती, लेकिन स्वच्छता जरूर अपेक्षित होती है। यही कारण है किअभिव्यक्ति - प्रधान साहित्य की तुलना में वैज्ञानिक तथा तकनीकी अनुवाद कोई समस्या उत्पन्न नहीं करता।

11) प्रशासनिक एवं विधिक अनुवाद की समस्या

प्रशासनिक अनुवाद अर्द्ध- विधिक प्रकृति का होता है। इसलिए इसमें विधि व्याप्त होती है, विधि अर्थात् समस्याएँ होती है- कानून अतः प्रशासनिक और विधिक अनुवाद की दो पहली समस्यएँ होती है पहली समस्या यह होती है कि केवल उतना ही सन्देश अनुवाद में जाये जितना स्त्रोत भाषा में है अर्थात अभिव्यक्ति की छोटी शिथिलता या अर्थ की द्विअर्थता अथवा अस्पष्टता जहाँ एक ओर अनुवाद को व्यर्थ बना देती है, वहीं दूसरी और अनुवादक को इस चूक के लिए कटघरे में लाकर खड़ा कर देती है। थोडी-सी पर्याय- चयन की भूल भी भारी पड़ जाती है। विधि अनुवाद में छोटे से छोटा शब्द भी कभी सम्पूर्ण पैराग्राफ का अर्थ बदल देता है तथा सकारात्मक वाक्य को नकारात्मक वाक्य बना सकता है। अनुवादक को सतर्कता से काम लेना पड़ता है। विधिक अनुवाद में एक ही प्रकृति के शब्दों में भी इतना बारीक कानूनी अन्तर होता है कि उनकी व्याख्या ही बदल जाती है। जैसे- Cance, abrogate, repeal, rescind, supersede, annual, quash जैसे शब्दों का अर्थ लगभग एक जैसा प्रतीत होताहै । परन्तु इनके विधिक अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं। विधि सम्बन्धी अनुवाद अनुमान या शब्द युग्मों के आधार पर अनुवाद नहीं किया जा सकता है। कभी-कभी एक शब्द का सन्दर्भ

बदलने पर भिन्न अर्थ हो जाता है। विधि साहित्य के अनुवाद में विधि और भाषा के विशेषज्ञों को तन-मन से प्रवृत्त होना चाहिए। वे समीक्षा, टिप्पणी, मार्गदर्शन आदिसे विधि- भाषा को सुधार सकते हैं। सामान्य लोग एवं साहित्यकार विधि-ग्रन्थों के अनुवाद की जटिलता की शिकायत करते है, तो उनके सुझाव पर विधि-भाषा गढ़ी नहीं जा सकती। ऐसा करने पर अधिक अव्यवस्था हो सकती है। विधिक अनुवाद करते समय अनुवादक को अन्य विधाओं के अनुवाद से भी ज्यादा सतर्कता से काम लेना पड़ता है।

पारिभाषिक शब्दों के अनुवाद की समस्या

पारिभाषिक शब्द से अभिप्राय उन सुनिश्चित किए गए शब्दों से है जो विभिन्न प्रकार के शास्त्रों, साहित्यों,वैज्ञानिकों और तकनीकी विषयों से सम्बद्ध होते हैं। पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद करते समय यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि इनके सम्यक ज्ञान के अभाव में अनुवाद ठीक-ठीक और उपयुक्त नहीं हो सकेगा। दूसरी बात यह है कि पारिभाषिक शब्दावली की अपेक्षित विशेषताओं से भी हमें सावधान रहना चाहिए। पारिभाषिक शब्दों के अनुवाद करते समय अनुवादक को रचनागत अशुद्धियों से, प्रयोग गत, अर्थगत, विषयगत आदि अशुद्धियों से सतर्क रहना चाहिए।

7.3 सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद :

साहित्य के अनुवाद के कई रूप होते हैं। इस सम्बन्ध में प्रख्यात भाषा-शास्त्री डॉ. भोलानाथ तिवारी ने लिखा है कि साहित्य के कई चरण होते हैं। उन चरणों के उल्लेख के अन्तर्गत उन्होंने पाँच प्रकार के चरणों का उल्लेख किया है। वे है - पाठ-पठन, पाठ-विश्लेषण,भाषान्तरण, समयोजन और मूल से तुलना ।

साहित्य के अनुवाद के सम्बन्ध में यह विचार सबसे पहले करना होगा कि कोई कवि या लेखक किस प्रकार और कैसे साहित्य का सर्जन करता है। कोई भी साहित्यकार अपने मन के अनुसार ही रचना नहीं करता है, अपितु वह ऐसी चीजों को केंद्र बनाकर प्रस्तुत करता है जो सार्वभौमिक रूप में प्रकट हो सकें। उसका इस प्रकार का चिन्तन-मनन सार रूप से अति-विशिष्ट, सार्थक और महत्वपूर्ण होता है। इसे ही वह अपनी सर्जना शक्ति के द्वारा प्रकट कर देता है। साहित्यकार द्वारा गृहित यह अनुभूति व तथ्यपरक सामग्री का अनुमान लगाकर ही उसकी रचनात्मक मानसिकता सहित उसके लिए हुए समूचे परिवेश की सच्चाई का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा कर लेने पर ही कोई सिद्ध और स्थापित अनुवादक तदनुकूल अनुवाद की सामग्री जुटाते हुए वैसी स्वयं की मनः स्थिति बना सकता है अन्यथा नहीं। मूल लेखक के अनुभूति आदि का पता कर लेने के उपरान्त ही किसी सफल और श्रेष्ठ अनुवादक के समक्ष रचनाकार का समग्र रचनात्मक व्यक्तित्व एक-एक करके स्पष्ट होने लगता है। उसकी सारे साहित्यिक रचनात्मक स्वरूप अर्थात् शब्दार्थ, व्यंग्यार्थ, सौंदर्य, प्रभविष्णुता, आकर्षण आदि के पूरे-पूरे रहस्य अनुवाद में इस तरह से खुलकर सामने आने लगते हैं, जिससे अनुवाद की सभी आवश्यकताएँ पूरी

होती हुई दिखाई देने लगती हैं। इस तरह से अनूदित रचनाएँ एक विशिष्ट सर्जनात्मक अनुवाद के रूप में प्रभावशाली बन जाती हैं। ऐसा इसलिए कि उसमें मूल रचना का सारा सौन्दर्य खिल उठता है।

इस प्रकार के विशिष्ट अनुवाद के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि जिस रचना का अनुवाद किया जाना है, उसके देशकाल की पूरी औरसम्यक् जानकारी होनी चाहिए। अन्यथा अनुवाद कीसत्यता, वास्तविकता, सम्पूर्णता कोसों दूर रह जाएगी। दूसरे शब्दों मेंयह कहना कि मूल रचना की स्थिति, उसका काल, उसमें चित्रित हुई संस्कृति, सभ्यता, रीति- रिवाज, परम्परा, प्रवृत्ति आदि की विस्तृत, गहरी और अपेक्षित जानकारीएक श्रेष्ठ और सफल अनुवादक के लिए अत्यन्त आवश्यक है। अनुवादक को मूल पाठ के भाषिक अर्थ, भाव और उसमें प्रच्छन विचारों को गंभीरतापूर्वक देखना चाहिए। इसके बाद मूल पाठ की आंतरिकता में उसे उतरना चाहिए। इसप्रकार से उसकी तह में जब वह उतर जाएगा, तब वह यह अवश्य अनुभव कर लेगा कि प्रस्तुत कृति किस प्रकार की अनुभूति से उत्पन्न हुई हैं। इस प्रकार अनुभूति और अन्य प्रक्रियाओं से गुजरकर ही अनुवादक सही अनुवाद कर सकता है।

पाठ-पठोपरांतअनुवादककोपाठ विश्लेषण करना चाहिए। इसकेअन्तर्गत उसे समझना होगा कि इस मूल पाठ का वह कहाँ से और किस तरह वाक्यानुवाद करे तथा कहाँ उस मूल पाठ के उपवाक्यों, पदबन्धों, शब्दों आदि के भी अनुवाद किस तरह करे। इसके बाद मूल पाठ के अलंकारों, प्रतीकों, छन्दों आदि के भी अनुवाद कहाँ और किस तरह से करें। अनुवादक को यह भी समझना आवश्यक होगा कि मूल पाठ की सभी सामग्री में कहाँ और किस तरह से परिवर्तन करने हैं और कहाँ और कैसे मूल के ही अनुसार लक्ष्य-भाषा में रखने में काम चल जाएगा। पाठ विश्लेषण के बाद अनुवादक को भाषांतरण की ओर ध्यान देना चाहिए। इसमें पाठ-विश्लेषण में विश्लेषित इकाइयों का भाषांतरण किया जाता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि वह स्वयं यह समझे कि मूल इकाइयों को ज्यों का त्यों भाषांतरित कर दिया जाए या उन्हें छोटी-बड़ी इकाइयों में परिवर्तित किया जाए। यह सब-कुछ अनुवादक की निजी योग्यता, क्षमता और कुशलता पर निर्भर करता है।

भाषांतर के पश्चात् अनुवादक को भाषान्तरित सामग्री के समायोजन के प्रति प्रयास करना चाहिए। इसके अन्तर्गत वाक्य, पदबंद, शब्द आदि को या तो कुछ बदलना पड़ता है या कहीं-कुछ जोड़ना पड़ता है अथवा कहीं कुछ छोड़ना भी पड़ता हैं। समायोजना केउपरांत अनुवादक मूल पाठ से अपनी अनूदित पाठ सामग्री की तुलना करनी चाहिए। इसके अन्तर्गत मूल अर्थ, विचार, भाव, छन्द आदि के अनुवाद हुए हैं या नहीं ? - यह अनुवादक गंभीरतापूर्वक देखना चाहिए कि ये सभी जो मूल पाठ में हैं, अनुवाद में उतर आए हैं या नहीं। इस प्रकार तुलनात्मक प्रक्रिया अपना कर अनुवाद को मूल पाठ के सन्निकट लाया जाता हैं।

जहाँ तक साहित्यिक सामग्री के अच्छे अनुवादकीबात है, उसके विषय में यह कहना कि वही अनुवाद अव्वल और सर्वश्रेष्ठ अनुवाद कहा जाएगा, जिसमें 'अनुवाद'की झलक न दिखे, अपितु मूल पाठ की ही झलक दिखाई पड़े। अगर ऐसा नहीं हो पाता तो अनुवाद की वह अपेक्षित प्रभविष्णुता नहीं दिखाई पड़ेगी। इस प्रकार के हुए अनुवाद अत्यन्त मौलिक और आकर्षक दिखाई पड़ते हैं।

7.4 सारांश :

इस अध्याय में हम अनुवाद की सामान्य समस्याएँ और साहित्यक अनुवाद के बारे में पढ़ चुके है। इस सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए, सभी समस्याओं को पार करते हुए एक सफल अनुवादक अनुवाद करते है। इस सभी समस्याओं को पार करने के बाद एक सफल अनुवाद कृति हमारे सामने आती है। सफल अनुवाद की सबसे पहली और अनिवार्य शर्त यह है कि उसमें मूल पाठ का यथार्थ बोध कराने की अर्थात उसका सही-सही अर्थ व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए। अर्थ की शुद्धता के साथ-साथ भाषा की शुद्धता भी अनिवार्य है। इस प्रकार शब्द-शुद्धि और अर्थ- शुद्धि सफल अनुवाद की पहली आवश्यकता है।

दूसरा गुण है स्पष्टता। स्पष्टता से अभिप्राय यह है कि अनुवाद की भाषा पारदर्शी होनी चाहिए जिससे पाठक को अर्थ-ग्रहण करने भाषिक में कठिनाई न हो। सफल अनुवाद का तीसरा स्वच्छता। इसका अर्थ यह है कि वाक्य-रचना में उलझाव, निबिड़ता तथा दूरान्वय दोष नहीं होना चाहिए। प्रत्येक वाक्य अपने आप में पूर्ण तथा दूसरे वाक्य के साथ सहज रूप से संबद्ध होना चाहिए और अंतिम मुख्य बात यह है कि अनुवाद को पढ़कर पाठक को ऐसा प्रतीत नहीं होता कि वह किसी अन्य पाठ का अनुवाद पढ़ रहा है।

7.5 बोध प्रश्न :

1. अनुवाद के प्रक्रिया के बारे में बताते हुए अनुवाद की सामान्य समस्याओं पर चर्चा कीजिए।
2. साहित्यिक अनुवाद के बारे में सोदाहरण समझाइए।
3. एक सफल अनुवाद के गुण क्या-क्या होना चाहिए।

7.6. सहायक ग्रंथ :

1. अनुवाद विज्ञान की भूमिका
2. अनुवाद विज्ञान

****

- **डॉ. एम .मंजुला**

8. वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ

उद्देश्य

मानव-विकास के इतिहास में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनुवाद के क्षेत्र में वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद प्रमुख है। वैज्ञानिक साहित्य के प्रचार-प्रसार और अनुवाद में गहरा संबंध है। क्योंकि विज्ञान के क्षेत्र में किसी भी भाषिक समुदाय के द्वारा किसी भी समय कोई भी आविष्कार संभव है और ऐसे आविष्कारों का फल सभी तक पहुँचाने में अनुवाद प्रमुख भूमिका निभाता है। किंतु विज्ञानपरक साहित्य का स्वरूप मामूली साहित्य से भिन्न है और उसका अनुवाद का स्वरूप भी भिन्न है। अतः साधारण अनुवाद के समय जो समस्याएँ उत्पन्न होंगी, उनसे इस अनुवाद की समस्याएँ भी नितांत भिन्न होंगी। इन समस्याओं पर प्रकाश डालना तथा उनका यथासंभव निदान के उपायों पर ध्यान देना प्रस्तुत इकाई का लक्ष्य है।

इस पाठ के पठन के पश्चात् आप

- अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति, उसका अर्थ और अनुवाद की प्रक्रिया जान सकेंगे;
- अनुवाद की परिभाषा एवं स्वरूप की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- अनुवाद के प्रकारों पर तथा साहित्यिक और साहित्येतर अनुवाद की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- वैज्ञानिक साहित्य के स्वरूप तथा उसके अनुवाद के महत्व को पहचान सकेंगे;
- वैज्ञानिक साहित्य के संबंध में पारिभाषिक शब्दावली का महत्व पहचान सकेंगे;
- वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में उभरती समस्याओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याओं के समाधान के संबंध में आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई की रूप रेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 अनुवाद का अर्थ, व्युत्पत्ति और स्वरूप

- **8**.2.1 अनुवाद की परिभाषा
- **8**.2.2 अनुवाद की प्रक्रिया

8.3 अनुवाद के प्रकार

- **8**.3.1 साहित्यिक और साहित्येतर अनुवाद का स्वरूप
- **8**.3.2 साहित्यिक अनुवाद के प्रकार
- **8**.3.3 अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार
- **8**.3.4 साहित्येतर अनुवाद का स्वरूप

8.4 विज्ञान विषयक साहित्य का स्वरूप

8.4.1 विज्ञान विषयक शब्दों की मौलिकता

8.4.2 विज्ञान क्षेत्रों के शब्दों का वर्गीकरण

8.4.3 हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण तथा अनुवाद

8.5 वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ

8.5.1 वैज्ञानिक शब्दों के लिप्यंतरण की समस्या

8.5.2 वैज्ञानिक शब्दों के आंशिक-लिप्यंतरण की समस्या

8.5.3 वैज्ञानिक शब्दों की अंग्रेजी वर्तनी की समस्या

8.5.4 पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद की समस्या

8.5.5 अनेकार्थी शब्दों की समस्या

8.6 सारांश

8.7 बोध प्रश्न

8.8 सहायक ग्रंथ

8.1 प्रस्तावना :

भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती है। इन भाषाओं को बोलनेवाले समाजों के बीच में सामंजस्य स्थापित करने एवं भावात्मक एकता बनाये रखने में अनुवाद का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। हिंदी तो भारत की सामासिक संस्कृति का प्रतीक है और अधिकांश जनता की मातृभाषा भी है। शिक्षा, कानून, प्रशासन, चिकित्सा, वाणिज्य, व्यवसाय, पर्यटन, दूरसंचार आदि अनेक क्षेत्रों में भारतीयों को जोडे रखने में अनुवाद प्रक्रिया का अत्यंत महत्व है। किंतु वास्तविकता की दृष्टि से देखा जाये तो भारतीय जन-भाषाओं में वैज्ञानिक साहित्य का प्रचार-प्रसार कम है। आंकडों के आधार पर कह सकते हैं कि वैज्ञानिक साहित्य में निहित विविध विषयों का प्रचार सामन्य जनों तक इसलिए नहीं पहुंच रहा है क्योंकि उसकी भाषा उनके लिए बोधगम्य नहीं है। अधिकतर वैज्ञानिक साहित्य अंग्रेजी में उपलब्ध है। भारतीय भाषाओं में, विशेषकर हिंदी- जो कि अधिकांश भारतीय जनों की मातृभाषा है- में वैज्ञानिक साहित्य की मात्रा अपेक्षाकृत कम है। वैज्ञानिक साहित्य के प्रचार प्रसार में यह एक बडी अड़चन है और अनुवाद के माध्यम से इसका समाधान हो सकता है। किंतु अंग्रेजी अथवा किसी अन्य विदेशी भाषा से वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद हिंदी में करना कदाचित्त् कठिन है और समस्यापूर्ण भी है। साहित्यिक अनुवाद के विविध पहलुओं पर विमर्श तथा अध्ययन प्रचुर मात्रा में हुआ है किंतु वैज्ञानिक साहित्य से संबंधित अनुवाद पर अध्ययन कम ही हुआ है। इस

इकाई में वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद से संबंधित समस्याओं पर विभिन्न चरणों के अंतर्गत प्रकाश डाला गया है।

8.2 अनुवाद का अर्थ, व्युत्पत्ति और स्वरूप :

अनुवाद का शब्द संस्कृत में 'प्राप्तस्य पुनः कथनम्' के रूप में पाया जाता है। अर्थ यह है कि पहले कहे गये अर्थ को फिर से कहना ही अनुवाद है। प्राचीन भारत में गुरु के द्वारा कहे गये कथन का शिष्य पुनःकथन करके विषय का स्मरण करता था, यही अनुवाद का प्रारंभिक रूप है। अनुवाद शब्द का संबंध 'वद' धातु से है जिसका अर्थ है 'बोलना' अथवा 'कहना' है। अनुवाद के 'अनु' और 'वद' का प्रयोग वेद में भी मिलता है। ऋग्वेद में 'अन्वेका वदतियद्दाति' नामक पद है। यहाँ भी अनुवाद का अर्थ दुहराना अथवा 'बाद में कहना' ही है। बृहदारण्यकोपनिषद में भी 'अनुवादित' का प्रयोग 'दुहराने' के अर्थ में किया गया है। निरुक्त में अनुवादक का प्रयोग 'कहना' और 'ज्ञान को कहने' के अर्थ में मिलता है। पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' ग्रंथ में अनुवाद शब्द का प्रयोग 'ज्ञात बात को कहना' या 'ज्ञात को कहने' के अर्थ में किया गया है। अंग्रेजी में अनुवाद के लिए जो 'ट्रांसलेशन' शब्द का उपयोग किया जा रहा है, उसका भी लगभग यही अर्थ निकलता है जैसे, 'एक भाषा के पाठ में व्यक्त अर्थ को दूसरी भाषा में ले जाना' ही ट्रांसलेशन है।

8.2.1 अनुवाद की परिभाषा

अनुवाद की परिभाषाओं पर दृष्टिपात करें तो पता चलता है कि अनुवाद को कई विद्वानों को प्रतीकांतर माना है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में कहें तो "एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथासंभव समान और सहजरूप से अभिव्यक्त करने का प्रयास अनुवाद माना जाता है।" (अनुवाद विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी)

भारत सरकार की 'विधि शब्दावली' में अनुवाद का अर्थ 'भाषांतर करना' बताया गया है। (To turn into another Language- विधि शब्दावली- भारत सरकार) इसका तात्पर्य यह है कि किसी एक भाषा की रचना को दूसरी भाषा में मूल लेखक के भावों और विचारों को परिवर्तित किये बिना प्रस्तुत करना ही अनुवाद है।

हिंदी की प्रसिद्ध कवइत्री महादेवी वर्मा ने अनुवाद के संबंध में कहा : "भाषा विचारों और मनोभावों का परिधान है और इस दृष्टि से एक विचारक या कवि की उपल्ब्धियाँ जिस भाषा में व्यक्त हुई हैं, उनसे उन्हें दूसरी वेशभूषा में लाना असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य रहता है।" (सप्तपर्णा में'अपनी बात' से: महादेवी वर्मा)

शाम्यूल जॉनसन ने अनुवाद को परिभाषित करते हुए कहा- 'एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना, अर्थ को बदले बिना दूसरी भाषा में परिवर्तित करना अनुवाद है।' (To Interpret in another Language: to change into another language. Relating the sense – A Dictionary of English Language, Samuel Johnson- Times Borks, London) प्रमुख पाश्चात्य विद्वान मैथ्यू आर्नाल्ड के विचार में अनुवाद का "जिस प्रकार मूल रचना का प्रभाव उसके पाठकों पर पडता है, ठीक उसी प्रकार का प्रभाव अनुवाद के पाठक पर भी पडना अत्यंत आवश्यक है।" (A translation should affect us in the sameway as the original may supposed to have affected it's first reader- Mathew Arnold)

उसी प्रकार वेबस्टर शब्दकोश में अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार दी गयी : 'एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रस्तुतीकरण की प्रणाली ही अनुवाद है। यह ऐसी कला है, जिसमें भिन्न पृष्ठभूमिवाले पाठकों के लिए किसी रचना को किसी ओर भाषा में पुनः लिखा जाता है।' (Translation is a rendering from one language or representational system into another. Translation is an art that involves the recreation of a qork in another language for reader with a different background- Webster's third new International Dictionary, Ed. P.B.Gove pp 24)

8.2.2 अनुवाद की प्रक्रिया

अनुवाद भाषिक व्यवस्थाओं से संबंध रखनेवाली एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें स्रोत भाषा के पाठ से संबंधित भाषिक व्यवस्थाओं का अंतरण लक्ष्यभाषा की व्यवस्थाओं में संपन्न किया जाता है। भाषा अपने आप में अनेक व्यवस्थाओं का समाहार है।

क) ध्वनि व्यव्स्था

ख) रूप व्यवस्था

ग) अर्थ व्यवस्था

घ) वाक्य व्यवस्था

ङ) लेखिम व्यवस्था

किसी भाषा में अभिव्यक्ति इन पाँचों से प्रभावित होती है और उनका सही रूप में ज्ञान प्राप्त करके ही अनुवाद की प्रक्रिया संपन्न होती है। भाषा से संबंध न रखनेवाले सांस्कृतिक, सामाजिक, भौगोलिक भौतिक

एवं धार्मिक व्यवस्थाओं को भी अनुवाद की प्रक्रिया में ध्यान में लेना पड़ता है और इनके सम्यक अवबोध से ही अनुवाद की प्रक्रिया सफल मानी जाती है।

8.3 अनुवाद के प्रकार :

यद्यपि अनुवाद के कई प्रकार बनते हैं, तथापि मुख्य तौर पर अनुवाद के दो प्रकार बताये जा सकते हैं यथा – शैलीपरक अनुवाद और तथ्यपरक अनुवाद। यहाँ शैली का अर्थ है- अभिव्यंजना अथवा अभिव्यक्ति की शैली। यहाँ विषय प्रस्तुतीकरण पर अत्यधिक जोर दिया जाता है। इसके अलावा विषय अथवा तथ्यात्मक सूचना से संबंधित साहित्य का अनुवाद दूसरा प्रकार है जिसमें बल विषय के प्रस्तुतीकरण पर न होकर विषय पर दिया जाता है। विषय को आधार बनाकर जो अनुवाद किया जाता है, उसकी चर्चा आगे इसप्रकार की जा सकती है:

8.3.1 साहित्यिक और साहित्येतर अनुवाद का स्वरूप

किसी एक भाषा में अभिव्यक्त भावों और विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करने की प्रक्रिया का नाम ही अनुवाद है। इस प्रक्रिया में पहली अथवा मूल भाषा को 'स्रोतभाषा' कहते हैं तो दूसरी को 'लक्ष्यभाषा' की संज्ञा दी जाती है। विषय को स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में 'यथासंभव समानरूप में और सहज अभिव्यक्ति' के साथ ले जाना उत्तम अनुवाद कहलाता है। किसी भी ज्ञान का प्रचार-प्रसार सारे जनों तक पहुँचाने में अनुवाद अहम भूमिका निभाता है। विश्व की प्रगति मानवीय ज्ञानराशि के आदान प्रदान के माध्यम से ही संभव हो पा रही है और इसी बिंदु पर अनुवाद का विशेष महत्व उभरकर सामने आता है। क्योंकि किसी देश अथवा समाज में प्रतिफलित उच्चकोटि के भावों अथवा विचारों को विश्वव्याप्त बनाने में अनुवाद ही प्रचारक तथा प्रसारक का काम करता है। उच्चकोटि की हृदयगत भावनाओं का प्रतिफलन यदि 'साहित्य' है तो उच्चकोटि के तर्कपूर्ण विचारों का प्रतिफलन 'विज्ञान' कहला सकता है। अतः अनुवाद को भी विषय के आधार पर 'साहित्यिक अनुवाद' तथा 'साहित्येतर अनुवाद' के रूप में विभाजित किया जा सकता है। इस विभाजन में विज्ञान से संबंधित अनुवाद (या वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद) साहित्येतर अनुवाद की कोटि में आता है। इस प्रकार वैज्ञानिक अनुवाद और साहित्यिक अनुवाद एक स्पष्ट रेखा खींची जा सकती है। इसी अंतर को 'सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद' अथवा 'सूचनात्मक साहित्य का अनुवाद' भी कहा जा सकता है।

8.3.2 साहित्यिक अनुवाद के प्रकार

साहित्यिक अनुवाद का वर्गीकरण मुख्यतः गद्य और पद्य के आधार पर और गौणतः साहित्यिक विधाओं के आधार पर किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अनुवाद के स्वरूप के आधार पर यह वर्गीकरण

हो सकता है। विधाओं के आधार पर किया गया अनुवाद काव्यानुवाद, नाटकानुवाद, कथानुवाद- (जिसमें कहानी और उपन्यास दोनों सम्मिलित हैं), एकांकी, निबंध, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, रेखासाहित्य, डायरी, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, पत्र-साहित्य इत्यादि विविध गद्यविधाओं का अनुवाद साहित्यिक अनुवाद के अंतर्गत माना जाता है। विश्वसाहित्य में आज तक जितने महान साहित्यकार हुए हैं, उनकी रचनाओं की विश्वव्याप्तता का कारण उतने ही समर्थ अनुवादक हैं। उनकी प्रतिभा ही कारण है कि मूल कृतियों के अनुवाद विविध भाषाओं में प्रवेश कर, अपना महत्व स्थापित करने में समर्थ हुए। उदाहरणार्थ विश्व का प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद से लेकर, प्रेमचंद, तोलस्तोय, रबीन्द्रनाथ टैगोर, विलियम शेक्सपियर इत्यादि आधुनिक महान साहित्यकारों की सभी रचनाएँ विश्व की कई भाषाओं में अनुवादों के माध्यम से ही प्रसिद्ध हैं। अतः कहा जा सकता है कि विश्व में साहित्य को परिव्याप्त करने में अनुवाद की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आधुनिक नवजागरण के संदर्भ में फ्रांसीसी, जर्मन, रूसी इत्यादि भाषाओं में रचित यूरोपीय लेखकों की रचनाओं को भारत की जनता ने अपनी भारतीय भाषाओं में पढा तो इसका कारण अनुवाद ही है।

8.3.3 अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर मूलनिष्ठ अनुवाद, मूलमुक्त अनुवाद, शब्दानुवाद, छायानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद, टीकानुवाद, वार्तानुवाद इत्यादि कतिपय भेद हो सकते हैं। अनुवाद को यथासाध्य कथ्य और कथन पद्धति दोनों दृष्टियों से मूल के निकट रखने का अनुवाद मूलनिष्ठ अनुवाद है। लक्ष्यभाषा की सुविधा के अनुरूप उद्देश्य के अनुसार कतिपय परिवर्तन करते हुए किया गया अनुवाद मूलमुक्त अनुवाद है। इसमें विषय को बोधगम्य बनाने की दृष्टि से देश-काल-वातावरण तथा पात्रों के नाम इत्यादि का भी किंचित् परिवर्तन किया जा सकता है। स्त्रोत अथवा लक्ष्यभाषा प्रकृति को ध्यान में न रखते हुए कथ्य के हर एक शब्द का उसी तर्ज पर अनुवाद करना 'शब्दानुवाद' है। यह अनुवाद कोशनिर्माण में, वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद के समय पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण करने में अधिक उचित होगा। विधिसाहित्य के अनुवाद को तो शब्दानुवाद ही माना जा सकता है। स्त्रोतसामग्री के मूलभाव को ग्रहण करके स्वतंत्र रचना करना ही 'छायानुवाद' है। हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार जैनेंद्र ने रूसी कथाकार तोलस्तोय की कहानियों का इसी शैली में अनुवाद किया है। इनके अलावा 'भावानुवाद' एक प्रकार है जिसमें मूल भाषा की अपेक्षा मूलकृति का भाव ही ज्यादा महत्व रखता है। अनुवाद के प्रकारों में 'सारानुवाद' भी एक है जो मूलमुक्त अनुवाद है। राजनैतिक व्याख्यान, लंबे भाषण, प्रवचन, किसी कंपनी अथवा उद्योग आदि के वार्षिक प्रतिवेदन इत्यादि के अनुवाद के संबंध में सारानुवाद ही उपयुक्त माना जाता है। पत्रिकाओं के समाचार प्रकाशन हेतु यही अनुवाद अपनाया जाता है। समय तथा प्रकाशन-स्थल इत्यादि को ध्यान में रखते हुए अनुवाद के किसी भी प्रकार को अपनाया जा सकता है।

8.3.4 साहित्येतर अनुवाद का स्वरूप

साहित्येतर अनुवाद में भावानुप्रवेश की भूमिका गौण और विषयानुप्रवेश की भूमिका मुख्य होती है। क्योंकि साहित्येतर विषयों में भावना की जगह विषय का महत्व होता है। अतः इसे सूचनात्मक साहित्य कहना उचित है। जैसा कि हमने पहले ही सूचित किया, सूचनात्मक साहित्य और सृजनात्मक साहित्य में उतना ही अंतर है जितना अंतर मस्तिष्क और हृदय में होता है। सूचनात्मक साहित्य मेंकई प्रकार के विषय आते हैं जैसे कि, मीडिया का साहित्य, पत्रकारिता का साहित्य, सूचना और समाचार साहित्य, संचार और जनसंचार माध्यमों का साहित्य, इलैक्ट्रानिक जनमाध्यमों का साहित्य, रिपोर्ताज, वैज्ञानिक साहित्य इत्यादि। आज हम इस स्थिति को प्राप्त हो गये हैं कि अनुवाद के बिना सूचना का अर्थ ही नहीं रह गया है, और समाचार की क्रांति पंगु बन जायेगी। क्योंकि देश-विदेशों में भिन्न-भिन्न भाषाई समाजों में घटित विविध प्रकार के समाचार सूत्रों का अनुवाद करके ही हम अपनी सुविधा के अनुसार अपनी भाषाओं में उक्त समाचार को प्राप्त कर रहे हैं। भारत का उदाहरण ही लें तो भारत में प्रचलित अनेक भाषाओं के मातृभाषी जन अनुवाद के माध्यम से समाचार का पारस्परिक आदान-प्रदान कर रहे हैं। वाणिज्य, व्यापार, शेयर बाजार, विपणन, विज्ञापन, वस्तु-विनिमय, अचल संपत्ति (रियल एस्टेट्), विपणन, क्रय-विक्रय, बैंकिंग, चिकित्सा, आध्यात्मिकता, यात्रा इत्यादि कई ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें अनुवाद के बिना कार्य चलना संभव ही नहीं है। इनके अतिरिक्त विधि साहित्य, इतिहास और पुरातत्त्वशास्त्र से संबंधित साहित्य, सांस्कृतिक साहित्य इत्यादि भी साहित्येतर विषयों में आते हैं।

8.4 विज्ञान विषयक साहित्य का स्वरूप :

विज्ञान विषयक साहित्य को वैज्ञानिक साहित्य की संज्ञा दी जा सकती है। जैसा कि पहले ही सूचित किया जा चुका है, इसे हम सूचनात्मक साहित्य के अंतर्गत ही मान सकते हैं। वैज्ञानिक साहित्य में विषय की प्रधानता होती है, न कि विषय प्रस्तुतीकरण की। वैज्ञानिक साहित्य में पाठ के लेखन पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता, जितना सूचना पर दिया जाता है। अतः इसप्रकार के साहित्य का अनुवाद दूसरी भाषा में हू-ब-हू करना पडता है। वैज्ञानिक साहित्य की भाषा में रस, छंद, अलंकार और वातावरण चित्रण आदि नहीं होते। विज्ञान के हर क्षेत्र में उस अमुक क्षेत्र की भाषा अपनी होती है और एक क्षेत्र में प्रयुक्त शब्द का दूसरे क्षेत्र में वही अर्थ नहीं मिलता।

8.4.1 विज्ञान विषयक शब्दों की मौलिकता

सार्थक ध्वनियों के समूह को शब्द कहा जा सकता है। व्याकरण और अर्थ की दृष्टि से शब्दों के दो भेद हैं सार्थक और निरर्थक। प्रयोग तथा रूपंतर की दृष्टि से सभी शब्दों के दो भेद हैं- अविकारी और विकारी। ध्वनि भेद की दृष्टि से भी शब्द के दो प्रकार हैं- ध्वन्यात्मक शब्द और वर्णनात्मक शब्द। शब्दों के वर्गीकरण के ये आधार समुचित होने पर भी वैज्ञानिक शब्दों के अध्ययन के संदर्भ में ये स्थूल आधार मात्र प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त व्युत्पत्ति विज्ञा के अंतर्गत शब्दों के तीन भेदों की चर्चा की गयी। 1. रूढ शब्द 2. यौगिक शब्द 3. योगरूढ शब्द। हिंदी भाषा के शब्दभंडार की दृष्टि से देखा जाये तो हिंदी शब्दसंपत्ति मुख्यतः चार स्रोतों से संपन्न होती है- यथा: 1. तत्सम 2. तद्भव 3. देशज तथा 4. विदेशी। हिंदी में प्रयोग के लिए उपलब्ध विज्ञानपरक शब्दों के अध्ययन हेतु व्युत्पत्ति विज्ञान और भाषा के विकास की दृष्टियाँ व्यवस्थित आधार प्रदान करती हैं। कुछ विद्वानों के मतानुसार शब्दों के मुख्यतः तीन प्रकार होते हैं 1. सामान्य शब्द 2. अर्थ पारिभाषिक शब्द 3. पारिभाषिक शब्द। वैज्ञानिक शब्दावली के अंतर्गत शब्दों के इन सभी रूपों का प्रयोग विभिन्न संदर्भों तथा विविध स्तरों पर होता है। विज्ञान के क्षेत्रों में प्रयुक्त शब्द मामूली शब्दों की तुलना में विशेष प्रयोजन से युक्त होते हैं। विज्ञान तथ्यों का अन्वेषण करता है अतः विज्ञान के क्षेत्र की भाषा भी तदनुरूप अभिव्यंजना करते हैं। विज्ञान का संबंध शब्द के अर्थ-पक्ष से है तो शब्द की संरचना भाषा और व्याकरण की सीमाओं के अधीन है। वैज्ञानिक धारणाओं के संदर्भ में बहुधा अर्थ की अनिश्चितता अपेक्षित नहीं है इसलिए विज्ञान के संदर्भ में शब्द के स्तर पर भी अनिश्चितता वर्जित है।

8.4.2 विज्ञान क्षेत्रों के शब्दों का वर्गीकरण

विज्ञान शास्त्र के विविध विषयों की दृष्टि से उन क्षेत्रों में प्रयुक्त शब्दों के भी विविध प्रकार बनते हैं। यथा: भौतिकी शब्द, रसायन विज्ञान शब्द, भूभौतिकी शब्द, भूगर्भशास्त्र शब्द, जैवविज्ञान शब्द, सूक्ष्मजैविकी शब्द, प्राणिविज्ञान शब्द, वनस्पति विज्ञान शब्द इत्यादि। हिंदी भाषा में इन विज्ञान शास्त्रों के शब्दों को प्रयोग की दृष्टि से तीन वर्गों में बाँटा गया है। 1. अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली 2. अखिल भारतीय शब्दावली और 3. क्षेत्रीय शब्दावली। वास्तव में देखा जाये तो विज्ञान और प्रौद्योगिकी दो ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें नितांत परिवर्तन होते रहते हैं और कोई शब्द स्थाई नहीं है। क्योंकि विज्ञान के क्षेत्र में कोई स्थाई सत्य नहीं होता और वह निरंतर परिवर्तनशील है। हर दिन नये शब्द बनते हैं अथवा पुराने शब्दों को ही नये अर्थों में प्रयोग करते हैं। अतः इस क्षेत्र में भी नित नये शब्द जोडे जाते हैं और विभिन्न शब्दों को ईजाद करने की नितांत आवश्यकता बनी रहती है। कहने का आशय है कि ज्ञान क्षेत्र के विकास के समकक्ष में भाषिक अभिव्यक्ति का विकास भी अपेक्षित है। नये आविष्कारों के कारण प्रयुक्त नये शब्दों में भी परिवर्तन अपेक्षित है और नये निष्कर्षों के अनुसार संशोधित

अर्थ को स्वीकृत किया जाता है और यह अर्थ तब तक मान्य रहता है जब तक उसी अनुक्रम में पुनः नये अनुसांधान के आधार पर संशोधन नहीं हो जाते। उदाहरणार्थ 'एटम' शब्द का अर्थ डाल्टन के समय पर पदार्थ के लघुतम, अविघटनशील कण का द्योतक था, किंतु अब एटम का एक नया अर्थ है, जिसके अनुसार यह पदार्थ का लघुतम कण नहीं है और उसको विघटित किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में वैज्ञानिक शब्दों के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए 1. शब्दों को व्याकरणिक संरचना और 2. शब्दों के अर्थ और उनके प्रयोग विविध धरातलों को भी वर्गीकरण के संदर्भ में आधारों के रूप में ग्रहण करना पडेगा।

8.4.3 हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण तथा अनुवाद

भारत में नयी शिक्षा प्रणाली विकास के पश्चात भारतीयेतर वैज्ञानिक विचारों, सिद्धांतों तथा शब्दावलियों को भारतीय भाषाओं में रूपयित करने की आवश्यकता महसूस की गयी थी। हिंदी को शिक्षा माध्यम के रूप में स्वीकृति मिलने के बाद विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में शब्दावली के निर्माण की आवश्यकता की माँग होने लगी। 1950 के दशक में कई विद्वानों ने विज्ञान क्षेत्र की हिंदी शब्दावली बनाने का प्रयास व्यक्तिगत तौर पर किया था। भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त होने के नेपथ्य में यह प्रयास सरकारी तौर पर भी करने की स्थिति आयी तो सन् 1952 में शिक्षा मंत्रालय के हिंदी अनुभाग ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली बोर्ड के निर्देशन में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का कार्य प्रारंभ किया था। सन् 1953 के आसपास वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, भौतिकी और समाज विज्ञान से संबंधित अनंतिम शब्दावलियाँ प्रकाशित की गयी। शिक्षा मंत्रालय के हिंदी अनुभाग का विस्तार स्न् 1960 में हिंदी निदेशालय के रूप में हुआ और इस संस्था की ओर से पहले विज्ञान शास्त्र के सभी अंगों की शब्दावली को समेकित रूप में वैज्ञानिक शब्दावली के रूप में प्रकाशित किया गया। 1961 में शिक्षा मंत्रालय की ओर से वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की गयी थी और आयोग के द्वारा इसी समय हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के विकास और समन्वय से संबंधित कतिपय सूत्रों तथा सिद्धांतों की संकल्पना भी की गयी थी। इस आयोग के द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण के लिए 14 सूत्रों का प्रतिपादन किया गया। इन सूत्रों के आधार पर हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों के नौ प्रकारों का उल्लेख किया जा सकता है यथा:

1. अंतर्राष्ट्रीय शब्द जिनको उनके प्रचलित अंग्रेजी रूप में ही अपनाना होगा। अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को हिंदी में अपनाते समय उनका लिप्यंतरण किया जाना चाहिए। लिप्यंतरित अंतर्राष्ट्रीय शब्दों में 7 संदर्भों का उल्लेख वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग के द्वारा किया गया यथा:

अ. तत्वों और यौगिकों के नाम जैसे हाइड्रोजन, आक्सीजन, कार्बन-डाई-आक्साइड इत्यादि।

आ. तौल और माप की इकाइयाँ और भौतिक परिमाण जैसे कैलरी, एंपियर आदि।

इ. व्यक्तियों के नाम पर बनाये गये वैज्ञानिक शब्द यथा: फारेनहीट, वाल्टमीटर इत्यादि।

ई. वनस्पति विज्ञान, प्राणिविज्ञान, भूविज्ञान आदि की द्विपदी नामावली

उ. स्थिरांक (जैसे कि पाई π)

ऊ. ऐसे ही अन्य शब्द जो सामान्य रूप से सर्वत्र विद्यमान हैं जैसे इंटरनेट, पैट्रोल, डीजल आदि।

ऋ. गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यक, चिह्न, प्रतीक सूत्र इत्यादि को उसी रूप में प्रयुक्त करना चाहिए। यथा: साइन, क्रॉस, टैन्जेंट, लॉग इत्यादि। गणितीय संक्रियाओं में प्रयुक्त होनेवाले अक्षर रोमन अथवा यूनानी वर्णमाला में होने चाहिए।

2. प्रतीक रोमन लिपि में हो सकते हैं किंतु संक्षिप्त हिंदी के होंगे। जैसे कि सेंटीमीटर को आप ऐसे ही लिख सकते हैं और उसका संक्षिप्तरूप तो से.मी. होगा।

3. ज्यामितीय आकृतियों में भारतीय लिपियों के अक्षरों को लिख सकते हैं जैसे कि क, ख, ग लेकिन त्रिकोणमितीय संबंधों में केवल रोमन और ग्रीक अक्षर ही होंगे जैसे कि पाई, साइन थीटा, कॉस थीटा इत्यादि।

4. संकल्पना पर आधारित अनूदित शब्द जैसे: इम्यूनिटी केलिए रोगप्रतिरोधक क्षमता इत्यादि।

5. संस्कृत धातुओं पर आधारित शब्द, जो अधिकाधिक भारतीय भाषाओं में भी उसी अर्थ में प्रयुक्त हैं- उनको उसी प्रकार लिखना चाहिए। उदाहरणार्थ कण, युग, संख्या, अंक इत्यादि।

6. ऐसे देशज शब्द जो सामान्य प्रयोग के वैज्ञानिक शब्दों के स्थान पर हिंदी प्रचलित हैं जैसे कि Bio धातु से संबंधित शब्दों के अनुवाद में 'जीव' धातु से संबंधित शब्दों से करना। जैसे कि Bio Technology के लिए जैव प्रौद्योगिकी, Micro Biology के लिए सूक्ष्म जैविकी तथा Molecular Biology के लिए आण्विक जीवविज्ञान Molecule के लिए 'अणु' इत्यादि।

7. अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं से विज्ञान के क्षेत्रों में आगत शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण करके प्रयोग किया जाये। जैसे कि प्रिज्म, टार्च, इंजन, मशीन, मोटर इत्यादि। किंतु ध्यान रहे कि हिंदी की प्रकृति के अनुसार ही इन शब्दों का लेखन हो। क्योंकि विविध भारतीय भाषाओं में इन शब्दों का उच्चारन अलग-अलग तरीके से होता है। अनुवाद में हिंदी के शब्द-प्रचलन के अनुसार ही अनुवाद होना उचित है।

8. वैज्ञानिक शब्दों का अनुवाद हिंदी में करते समय संदर्भ के अनुसार मानकीकृत अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का रोमन लिपि से देवनागरी में लिप्यंतरण होना आवश्यक है यथा: इलैक्ट्रान, प्रोटान, नाइट्रोजन इत्यादि।

9. संकर शब्दों का निर्माण करते समय हिंदी की प्रकृति पर ध्यान दिया जाये और हिंदी की समास-शक्ति और उर्वरता (नये शब्द बनाने की शक्ति) के आधार पर ही शब्दों का मिश्रण हो। उदाहरणार्थ Pasteurisation- पाश्चरीकरण Obsolute drift- निरपेक्ष ड्रिफ्ट, Obsolute code- निरपेक्ष कोड इत्यादि।

8.5 वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ :

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट होगा कि हिंदी में विज्ञान से संबंधित साहित्य का अनुवाद करना आसान नहीं है। इस प्रक्रिया के दौरान अनुवाद में अनेक समस्याएँ सामने आ सकती हैं जो निम्नवत हैं –

8.5.1 वैज्ञानिक शब्दों के लिप्यंतरण की समस्या

अंतर्राष्ट्रीय मानकों तथा प्रतिमानों के आधार पर कुछ शब्दों को यथावत् रूप में रखने का निर्णय लिया जा चुका है। क्योंकि आधुनिक विज्ञान ने उन शब्दों को लैटिन, ग्रीक तथा अन्य पुरानी यूरोपीय भाषाओं से ग्रहण किया है और इन शब्दों के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद न करते हुए लिप्यंतरण करना ही उचित माना गया है। किंतु इधन कुछ विद्वानों ने अपने मतानुसार इन शब्दों का हिंदी में अनुवाद कर रहे हैं और इसलिए एकरूपता की समस्या उत्पन्न हो रही है जो कि वैज्ञानिक शब्दावली के हिंदी अनुवाद की सबसे बडी समस्या है। लिप्यंतरण करते समय एक और समस्या यह भी है कि इन वैज्ञानिक शब्दों के मूलरूप- जो कि लैटिन तथा ग्रीक हैं- उनके उच्चारण के आधार पर लेना चाहिए अथवा हिंदी भाषियों की सुविधा के अनुसार हिंदी की प्रकृति के आधार पर करना चाहिए। उदाहरणार्थ Gynaecology और Girus शब्दों को लैटिन के तर्ज पर जाइनेकोलोजी तथा जाइरस लिखा जाना चाहिए। किंतु हमारे पास इन शब्दों का हिंदी अनुवाद 'गाइनोकोलोजी' तथा 'गाइरस' ही होता आ रहा है।

8.5.2 वैज्ञानिक शब्दों के आंशिक-लिप्यंतरण की समस्या

वैज्ञानिक शब्दों का अनुवाद करते समय आंशिक लिप्यंतरण की समस्या भी पायी जाती है। अर्थात् अंग्रेजी से ग्रीक अथवा लैटिन शब्दों के साथ हिंदी शब्दों को मिलाकर संकर शब्द बनाते समय उन शब्दों में केवल एक अंश का ही अनुवाद किया जाता है और शेष अंश का लिप्यंतरण किया जाता है। इस संदर्भ में लिप्यंतरण की समस्या और बढ जाती है। उदाहरणार्थ Chitinoclastic bactiria के लिए 'काइटिनलनी जीवाणु'; Dehydrogenation के लिए 'डिहाइड्रोजनीकरण' इत्यादि। स्पष्ट है कि देवनागरी में लिप्यंतण

करते समय शब्दों की वर्तनी पर अधिक ध्यान नहीं दिया जा रहा है जिससे अनूदित शब्दों की एकरूपता में बाधा उत्पन्न हो रही है।

अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक शब्दों को हिंदी में लिखते समय वर्तनी की भिन्नता एक और समस्या है। Vitamin के लिए 'विटामिन', 'वैटामिन', 'वाइटमिन', 'वाइटमेन' इत्यादि कई अनुवाद मिलते हैं जो कि एकरूप नहीं है। Pneumonia शब्द के लिए 'न्यूमोनिया', 'निमोनिया'; Quinine के लिए 'कुनेन', 'क्विनाइन' 'क्विनेन' इत्यादि शब्दों को विज्ञानिक शब्दावली के अनुवाद में हिंदी वर्तनी से संबंधित समस्याओं के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है।

8.5.3 वैज्ञानिक शब्दों की अंग्रेजी वर्तनी की समस्या

वैज्ञानिक शब्दों के अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार अंग्रेजी वर्तनी भी कुछ संदर्भों में महत्वपूर्ण है। अंतर्राष्ट्रीय प्राणि व पादप का नामकरण आयोग के द्वारा निर्मित मानकों के अनुरूप होना चाहिए। उदाहरणार्थ वनस्पति विज्ञान में पादप फैमिली को ही लें तो मूलशब्दों में फैमिली का नाम अंत में Idae जोडकर बनाया जाता है और उप फैमिली का नाम प्रतिरूपी जीन्स के नाम के मूल inae जोडक्र बनाया जाता है। जीन्स का नाम हमेशा एक ही शब्द का होता है और वर्तनी में रोमन का पहला अक्षर बडा लिखा जाता है। यह सदा एकवचन – कर्ताकारक में ही प्रयुक्त होता है। उसी प्रकार प्रजाति (स्पीशीज़) का नाम रोमनलिपि में छोटे अक्षरों में प्रारंभ होता है। लेकिन वे जब किसी व्यक्ति के नाम पर रखे जाते हैं तो आरंभ का अक्षर बडा भी हो सकता है। जैसे कि Equus Burchalli या Equus burchelli जो कि बुर्शेल के जेबरा का नाम है। जब अनुवाद करते समय कोई गलती न हो तो उसका मूलवर्तनी ही अपनायी जानी चाहिए। किंतु हिंदी अनुवाद में इन अंतर्राष्ट्रीय नियमों का अभाव हो तो अवश्य गलत अनुवाद ही होगा।

इन समस्याओं के समाधान के रूप में हिंदी में वैज्ञानिक शब्दों के अनुवाद के समय कुछ नियमों को महत्वपूर्ण बताया गया है। पहले, पौधों तथा प्राणियों के वैज्ञानिक नामों को सदैव अंग्रेजी में तिरछे अक्षरों *(Italics)* में छापा जाना चाहिए। अगर इनको हस्तलिखित पांडुलिपि में लिखा जाता है तो नीचे रेखा खींची जानी चाहिए। दूसरा नियम यह है कि वैज्ञानिक वर्णन में यदि एक ही स्पीशीज का नाम लगातार कई बार आता हो तो पहली बार को छोडकर अन्य सभी जगहों पर उसके जीन्स के प्रथम अक्षर का शब्द-संक्षेप बनाकर लिखा जा सकता है। हिंदी में अनुवाद करते समय इनका देवनागरी में लिंप्यतरण करके उसके मूल उच्चारण के निकटतम रूप में लिखा जा सकता है। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की ओर से प्रकाशित कोश वैज्ञानिक नामों का मानक उच्चारण और वर्तनी को प्रस्तुत करता है।

8.5.4. पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद की समस्या

डॉ. आलोक कुमारी रस्तोगी के मतानुसार हिंदी में विज्ञान संबंधित विभिन्न पारिभाषिक कोशों, शब्द संग्रहों तथा पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद-संकलनों में निम्नलिखित असंगतियाँ पायी जाती हैं। पहला : व्यवहार संबंधी असंगतियाँ, दूसरा : रचना संबंधी असंगतियाँ, तीसरा: अंतर व्यवहार संबंधी असंगतियाँ तथा चौथा : अर्थ संबंधी असंगतियाँ। कभी कभी एक वस्तु अथवा अवधारणा के लिए एकाधिक शब्दों का प्रचलन हो रहा है। उदाहरण के लिए एक ही शब्द Septicidel के लिए हाईस्कूली वनस्पति विज्ञान की पुस्तक में 'पटी स्फोटक' शब्द के रूप में अनुवाद मिलता है तो केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से प्रकाशित बृहद पारिभाषिक शब्दसंग्रह (विज्ञान) में 'पद विदारक' शब्द का अनुवाद मिलता है। इससे प्रयोग और अर्थ के स्तर पर अनिश्चितिता स्पष्टतः दिखाई देती है जिससे बचकर अनुवाद करना चाहिए।

अब धीरी-धीरे विज्ञान संबंधी अनुवादों की संख्या बढ रही है और पारिभाषिक शब्दावली में भी एकरूपता लायी जा रही है। हिंदी शब्दों का मानकीकरण भी द्रुतगति से संपन्न हो रहा है।

वैज्ञानिक शब्दों में नये आविष्कारों के कारण कभी कभी शब्दों का अर्थ परिवर्तन हो जाता है। यह परिवर्तन विज्ञान की प्रगति के आधार पर हो रहा है। उदाहरणार्थ पहले कोशिका को मानव शरीर में सबसे छोटी इकाई के रूप में समझा जाता था किंतु हाल ही के शोधकार्यों के कारण मालूम पडा कि कोशिका तो मानव शरीर की अत्यधिक जटिल संरचना है तथा वह शरीर की छोटी इकाई कतई नहीं हो सकती! उसी प्रकार 'एनीमिया' शब्द का अनुवाद हिंदी में 'अरक्तता' के रूप में किया गया है किंतु नवीन अनुसंधान कार्यों के परिणामों के मुताबिक यह बीमारी वास्तव में रक्त के ऑक्सीजन धारण करने की क्षमता से संबंधित स्थिति है। ऐसे संदर्भों में इस प्रकार के परिवर्तित शब्दों के अनुवाद पर ध्यान देना महत्वपूर्ण होता है।

8.5.5 अनेकार्थी शब्दों की समस्या

विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त शब्द कभी कभी अनेकार्थी भी होते हैं। उदाहरणार्थ हिंदी में 'गुण' शब्द विज्ञान के क्षेत्र में देखा जाये तो Property (रसायन विज्ञान में) Character (जीवविज्ञान में) के रूप में भिन्न भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हो सकता है। अनुवादक को मूलपाठ पर ध्यान देते हुए संदर्भ के अनुसार अनुवाद के लिए सही शब्द चुनना पडता है। पारिभाषिक शब्दकोश तथा विज्ञान शब्द-कोश निर्माण के समय शब्दावली के निर्धारण में अर्थक्रम की दृष्टि से भी यहाँ समस्या उत्पन्न हो सकती है। तब सर्वाधिक प्रचलित शब्द का उल्लेख सबसे पहले करते हुए नवागत अर्थ को बाद में इंगित करना होगा।

इनके अलावा पारिभाषिक शब्दों के अनुवाद के समय यह भी देखा जाता है कि अंतर्राष्ट्रीय मानकों की सूची पर ध्यान न देते हुए इन वैज्ञानिक शब्दों का हिंदी में स्वतंत्र अनुवाद किया जा रहा है। इससे अनुवाद में भ्रामक स्थिति उत्पन्न हो सकती है और एकरूपता लाना भी संभव नहीं है। अतः इससे अनुवादक को बचना होगा। जैसे कि नाइट्रोजन के लिए 'नत्रजन', हाइड्रोजन के लिए 'उदजन' और ऑक्सीजन के लिए 'प्राणवायु' इत्यादि शब्दों का प्रयोग करना अनुवाद के धरातल पर विविध शब्दों के लिए रास्ता खोल देता है। किंतु पारिभाषिक शब्दावली का यह पहला नियम है कि उस शब्द का अनुवाद एक ही हो।

8.6 सारांश :

सारांश के रूप यह कहा जा सकता है कि विज्ञान से संबंधित साहित्य का आकार अत्यंत बृहद और विशाल है और इसकी पारिभाषिक शब्दावली नितांत परिवर्तनशील है। जब जब नये आविष्कार होंगे, तब तब नये शब्द भी आकर जुडते है और हिंदी में अनुवाद के लिए इन शब्दों के समकक्ष शब्दावली के विकास हेतु निरंतर कार्य करते रहना चाहिए। भाषा की दृष्टि से हिंदी की उर्वरता (नये शब्दों को बनाने की क्षमता) को कायम रखनी चाहिए और अर्थ से संबंधित बाधाओं तथा वर्तनीगत दोषों से बचते हुए अनुवाद संपन्न होना चाहिए। विज्ञान की शब्दावली के अनुवाद तथा नयी शब्दावली के निर्माण के लिए अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर कई सूत्र और नियम बनाये गये हैं। हिंदी में अनुवाद करते समय इन नियमों का सही पालन करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय मानकों का ध्यान रखना, यथासंभव प्रचलित शब्द को ही अनुवाद में ग्रहण करना महत्वपूर्ण है।

8.7 बोध प्रश्न :

1. अनुवाद की परिभाषा और स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
2. हिंदी में अनुवाद के प्रकारों पर चर्चा करते हुए साहित्येतर अनुवाद पर प्रकाश डालिए।
3. हिंदी में अनुवाद के संदर्भ में साहित्य और साहित्येतर अनुवाद के भेद क्या हैं- चर्चा करें।
4. पारिभाषिक शब्दावली का परिचय अपने शब्दों में दीजिए।
5. साहित्येतर अनुवाद के विविध आयामों पर प्रकाश डालिए।
6. साहित्येतर अनुवाद में विज्ञान विषयक अनुवाद पर चर्चा कीजिए।
7. पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद में किन विषयों पर ध्यान देना होगा- समझाएँ।
8. पारिभाषिक शब्दावली के हिंदी के अनुवाद में अंतर्राष्ट्रीय नियमावली क्या कहती है ?

9. वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में बाधा डालनेवाली समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

10. वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद के समय हिंदी वर्तनी के संबंध में कैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं? सोदाहरण समझाइए।

8.8 सहायक ग्रंथ :

1. सामान्य हिंदी- व्यावहारिक हिंदी : 1992, डॉ. भोलानाथ तिवारी और ओमप्रकाश गाबा लिपि प्रकाशन, नयी दिल्ली

2. भाषाई अस्मिता और हिंदी : 1992 डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

3. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ : 1985 डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, कृष्ण कुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, नयी दिल्ली

4. वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ : 1986, डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली

5. राजभाषा हिंदी में वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की दिशाएँ : 1994 डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली।

****

- **डॉ. नागेश्वरराव दण्डिभोट्ला,**

9. कार्यालय साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ

उद्देश्य

राजभाषा के उपयोग में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। भाषा वैज्ञानिकों ने एकमत होकर इस विषय को स्वीकार किया था कि सबसे पहले भाषा का मौखिक रूप प्रचलित रहा होगा और फिर उसका साहित्य-निर्माण हुआ और प्रशासनिक भाषा का निर्माण बहुत बाद में आया । कार्यालय साहित्य का आशय उस साहित्य से है जो प्रशासन के लिए प्रयुक्त हो। अपने कर्मचारियों से लेकर विभिन्न राज्यों के विविध शाखाओं तथा विभागों के कर्मचारियों तक और देश के सामान्य लोगों तक किसी सरकार का भाषिक संबंध कार्यालयी साहित्य से ही बनता है। अतः प्रशासन में लोकतांत्रिक दृष्टि से भी कार्यालय साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भारत की अधिकांश जनता के द्वारा बोली और समझी जानेवाली हिंदी में निर्मित कार्यालय साहित्य देश की एकता को कायम रखने में भी सहायक होगा।

भारत में संवैधानिक रूप से हिंदी को प्राशासनिक राजभाषा होने का दर्जा सन् 1949 ई. में प्राप्त हुआ। तब से हिंदी संघ की राजभाषा बनी और संघ के जितने भी राजकाज के प्राशासनिक कार्य हैं, उनको राजभाषा हिंदी में संपन्न करने की आवश्यकता महसूस की गयी। चूंकि केंद्र सरकार का दायरा बडा ही विस्तृत होता है और केंद्र सरकार के प्रशासन की भाषा होने के नाते हिंदी को भी उन सारी शब्दावलियों को गढना पडा जो कि अंग्रेजी में चलती हैं। किंतु कुछ राजनैतिक कारणों के चलते हिंदी पूर्णरूप से भारत की प्रमुख राजभाषा नहीं बन पायी, और सह-राजभाषा के रूप में- विशेषकर दक्षिण भारत में अंग्रेजी ही सरकार के कामकाज की भाषा है। चूंकि दक्षिण भारत हिंदी क्षेत्र से बाहर का कार्यक्षेत्र है, इसलिए अंग्रेजी के माध्यम से कार्य करने की छूट कई संवैधानिक संशोधनों के तहत उस प्रदेश को दी गयी। अतः अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी सीखने की प्रणाली भारत सरकार ने अपनायी। और इस संदर्भ में अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेजी का अनुवाद होना अपरिहार्य हो गया है। इसीको कार्यालय हिंदी के प्रसंग में 'द्विभाषिक स्थिति' कहते हैं। इस प्रकार प्रशासन की प्रक्रिया में अनुवाद की प्रमुख भूमिका भी सहज ही महत्वपूर्ण बन जाती है। प्रशासन की भाषा का अर्थ होता है 'कार्यालयों में प्रयुक्त भाषा यानी भारत सरकार के द्वारा संप्रेषित समाचार अथवा सूचना को कर्मचारियों तथा जनता तक पहुँचाने की भाषा।' अतः यह कार्यालयीन साहित्य का स्वरूप मामूली साहित्य से भिन्न है और उसके अनुवाद का स्वरूप भी भिन्न है। अतः साधारण अनुवाद के समय जो समस्याएँ उत्पन्न होंगी, उनसे कार्यालय साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ भी पूरीतरह से भिन्न होंगी। इन समस्याओं पर प्रकाश डालना तथा उनका यथासंभव निदान के उपायों पर ध्यान देना प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य है।

इस पाठ के पठन के पश्चात् आप

- कार्यालय साहित्य का अर्थ और स्वरूप जान सकेंगे;
- कार्यालय साहित्य की पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- प्रयोजनमूलक भाषा के विविध आयामों के परिप्रेक्ष्य में कार्यालय हिंदी की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- कार्यालय साहित्य की वर्तमान द्विभाषिक स्थिति के कारणों को सटीकरूप से पहचान सकेंगे;
- कार्यालय साहित्य की द्विभाषिक स्थिति से संबंधित राजभाषा अधिनियम का ज्ञान पा सकेंगे;
- प्रशासन परक पारिभाषिक शब्दावली की निर्माण परंपरा और विविध संप्रदायों की जानकारी पा सकेंगे;
- कार्यालय साहित्य के अनुवाद में उभरती समस्याओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- कार्यालय साहित्य के अनुवाद की समस्याओं के समाधान के संबंध में आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

रूप रेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 कार्यालय हिंदी की पृष्ठभूमि

9.3 कार्यालय साहित्य के अनुवाद की आवश्यकता और द्विभाषिकता की पृष्ठभूमि

9.4 पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषा, परंपरा और स्वरूप

9.5 कार्यालय साहित्य में पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद की समस्याएँ

9.6 कार्यालय साहित्य : विविध क्षेत्रों के तहत अनुवाद की समस्याएँ

9.7 बोध प्रश्न

9.8 सहायक ग्रंथ

9.1 प्रस्तावना :

भारत विश्व की सबसे प्रचीन सभ्यताओं में से एक है। अखंडता के साथ विविधता इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। इसकी विशिष्ट भौगोलिक पहचान है। विशाल भारत में बहु प्रचलित तथा प्राचीन भाषाएँ कई हैं। हिंदी का प्रचालन भारत में 500वीं शताब्दी के आसपास से ही होता आ रहा था। किंतु उसका स्वरूप भिन्न था और प्राकृत और अपभ्रंशजनित भाषा के रूप में ही वह उपस्थित थी। विविध राजाओं, महाराजाओं के शासनकाल में हिंदी तत्कालीन परिवेशों के अनुरूप अपने आप को रूपांतरित करते हुए अपने स्वरूप को व्यापक बनाते हुए आगे बढ़ी। आधुनिक काल तक पहुँचते हुए अपनी सरलता और सजगता के साथ राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में जनसंपर्क भाषा के रूप में एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गयी। इसलिए भारत की

स्वाधीनता-प्राप्ति के पूर्व ही हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव मिला था। एक समय ऐसा था कि पूरे भारत में स्वाधीनता आंदोलन की प्रतिनिधि भारतीय भाषा यदि कुछ थी, तो वह हिंदी थी। क्योंकि देश की जनता के मन में आजादी की अकुंठित दीक्षा हिंदी के ही माध्यम से प्रकट हो रही थी, और देश की अधिकांश जनता इसे बोल अथवा समझ लेती थी। अंग्रेजी के खिलाफ यदि कोई भारतीय भाषा जनता को एकत्र करने में सफल रही, तो वह हिंदी थी। सन् 1918 में मद्रास में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना के उपरांत हिंदी पूरे देश को मिलानेवाली सेतु -सी भाषा बन गयी। अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ आज़ादी का संघर्ष करनेवाले स्वाधीनता आंदोलन के सेनानियों के हाथ में अब राष्ट्रभाषा रूपी नया हथियार हिंदी के रूप में चमकने लगा था।

भारत की स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात देश के सामने यह बडा प्रश्न खडा हुआ कि भारत – संघ की राजभाषा क्या हो? क्योंकि यही भारत सरकार की कार्यालय भाषा होगी और प्रशासनिक भाषा होगी। इतने बडे देश में इतनी भिन्न भिन्न भाषाओं के बीच में संघ की राजभाषा होने का गौरव मात्र हिंदी को मिला और संविधान सभा में बहुत ही गंभीर रूप से काफी विचार-विमर्श के पश्चात दि.14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकृति दी गई। इसी दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। भारत के संविधान में राजभाषा के रूप में स्वीकृत हिंदी के प्रयोग के लिए विविध उपबंध बनाए गए और उनके लिए विशेष प्रावधान रखे गए। भारत के संविधान के भाग - 5 के अध्याय 2 के अनुच्छेद 120, भाग 6 के अनुच्छेद 210 और भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी विविध प्रावधान बनाए गए।

9.2 कार्यालय हिंदी की पृष्ठभूमि :

जब हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया, तब स्थिति यह थी कि कार्यालयों में प्रयुक्त हिंदी के लिए एक अलग स्वरूप निश्चित नहीं था और कार्यालय की भाषा का निर्धारण भी अभी तक नहीं हो पाया था। हिंदी तो जनसामान्य में प्रचलित रही लेकिन कार्यालय का साहित्य अलग है। यह साधारण हृदयजनित तथा भावनाप्रधान साहित्य न होकर सूचना प्रधान तथा सटीक साहित्य है। इसलिए कार्यालय साहित्य के लिए हिंदी में अलग शब्दावली निश्चित करनी पडी। अतः सामान्य जनभाषा हिंदी से भिन्न किसी दूसरे रूप में प्रवृत्त कामकाजी हिंदी को एक अलग अवधारणा की आवश्यकता महसूस की गयी। यह श्रेय मद्रास के तेलुगुभाषी हिंदी विद्वान डॉ. मोटूरि सत्यनारायाण जी को मिलना चाहिए कि उन्होंने इस कामकाजी हिंदी को 'प्रयोजनमूलक हिंदी' की संज्ञा दी थी। यही 'प्रयोजनमूलक हिंदी' शब्द हिंदी जगत में स्थाई रह गया।

डॉ. मोटूरि सत्यनारायण जी के द्वारा प्रस्तावित प्रयोजनमूलक हिंदी के छः प्रकार हैं और उनमें एक कार्यालय हिंदी है।

9.2.1 प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रकार

विभिन्न उद्देश्यों को लेकर प्रयुक्त हिंदी को प्रयोजनमूलक हिंदी, जिसका सबसे पहला प्रस्ताव डॉ. मोटूरि सत्यनारायण ने किया था, वे इस प्रकार हैं :

क. कार्यालयी भाषा: यह सरकारी कामकार अथवा प्रशासन में प्रयुक्त हिंदी है। इसका मुख्य कार्यक्षेत्र कार्यालय है और इसका उपयोग कर्मचारियों तथा जनता के बीच में भाषिक संपर्क बनाये रखने के लिए होता है।

ख. तकनीकी भाषा : विज्ञान अथवा किसी व्यावसायिक क्षेत्र से संबंधित भाषारूप को तकनीकी हिंदी कहा गया।

ग. वाणिज्यिक भाषा : यह वाणिज्य, बैंक, व्यापार, मंडी अथवा शेयरबाजार के क्षेत्रों में प्रयुक्त हिंदी है।

घ. जनसंचार की भाषा :यह पत्रकारिता, मीडिया, दूरदर्शन तथा विज्ञापन आदि से संबंधित हिंदी है।

ङ. सामाजिक भाषा : यह समाज के क्रियाकलापों तथा राजनीतिज्ञों के द्वारा प्रयुक्त हिंदी है।

च. साहित्यिक भाषा : यह साहित्य एवं सृजनात्मक संरचना की भाषा है। ज्यादातर साहित्य में प्रयुक्त भाषा को ही भाषा का शुद्धरूप मानने की परंपरा है। किंतु यह वास्तविकता नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होगा कि प्रयोजनमूलक साहित्य के विविध भेदों के अंतर्गत कार्यालय हिंदी भी है और यह हिंदी साधारण साहित्य में प्रयुक्त सृजनात्मक भाषा से ही नहीं सामान्यजन की व्यावहारिक भाषा से भी भिन्नता रखती है। अतः प्रयोजनमूलक हिंदी की संकल्पना के आधारस्तंभ दो माने गये – एक पारिभाषिक शब्दावली है तो दूसरा अनुवाद।

9.2.2 कार्यालय साहित्य का स्वरूप

उपर्युक्त खंड में किये गये विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजभाषा अधिनियम (यथासंशोधित) 1967 के तहत हिंदी और अंग्रेजी का साथ-साथ प्रयोग अनिवार्य हो गया। कार्यालय साहित्य का स्वरूप जानने से पहले साहित्य शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में जानना आवश्यक है। 'सहितस्य भावः साहित्यम्'- के आधार पर यह माना जा सकता है कि जिसमें 'सहित' का भाव निहित हो वही साहि्त्य है। यानी शब्द और अर्थ जहाँ साथ-साथ चलते हों, वही साहित्य कहलायेगा। किंतु इसी वाक्य के साथ-साथ 'हितेन सह साहित्यम्' इसे भी साहित्य की परिभाषा में उद्धरित किया जाता है। अर्थात् जो हित का भाव साथ लिये हुए हो,

वही साहित्य है। सामान्य अर्थ में देखा जाये तो 'हित' का अर्थ होगा 'मंगलकारी भाव'। जो लोककल्याणकारी भाव को साथ में लेकर लिखा गया हो, वही साहित्य है। साहित्य के स्वरूप को लेकर हमारे प्राचीनों की स्थूल धारणा यही रही। आधुनिक युग में 'लिटरेचर' के अर्थ में साहित्य का रूढार्थ लिया जा रहा है। अपने हृदय में निहित भावनाओं को शब्दबद्ध करने का विधान ही साहित्य का मूलाधार है। अर्थात् हृदयगत संवेदनाओं की अभिव्यक्ति ही साहित्य है। किंतु जैसा कि हमने पहले देखा- कार्यालय साहित्य हृदयगत संवेदनाओं की भाषा से नहीं बल्कि तर्कपूर्ण एवं विचारप्रधान सूचनाओं की भाषा से संपृक्त होता है। अतः सूचनात्मक एवं सृजनात्मक साहित्य में जो अंतर है वही, सामान्य साहित्य और कार्यालय साहित्य में वही अंतर है।इसी राजभाषा अधिनियम की उपधारा (3) में 13 ऐसे क्षेत्रों का उल्लेख किया गया था जिनमें हिंदी और अंग्रेजी का साथ-साथ प्रयोग अनिवार्य होगा। वे क्षेत्र हैं :

1. संकल्प (Resolution)
2. सामान्य आदेश (General orders/Circulars)
3. नियम (Rules)
4. अधिसूचनाएँ (Notifications)
5. प्रशासनिक और अन्य रिपोर्ट (Administrative and other Reports)
6. विज्ञापन (Advertisements)
7. प्रेस विज्ञप्तियाँ (Press releases)
8. संविदा (Contracts)
9. करार (Agreements)
10. सूचनाएँ (Notices)
11. निविदा (Tenders)
12. लाइसेंस (Licences)
13. परमिट (Permits)

कार्यालय साहित्य का मुख्य कार्यक्षेत्र प्रशासन है। ऊपर सूचित सभी क्षेत्र किसी न किसी रूप में प्रशासन से जुड़ते हैं और इन क्षेत्रों में प्रयुक्त होनेवाली हिंदी निश्चित ही प्रशासनिक होगी। अंग्रेजी के साथ साथ प्रयुक्त होने की स्थिति में अनुवाद की समस्या भी सामने आयी। अनुवाद में सबसे प्रमुख समस्या पारिभाषिक शब्दावली की है।

9.2.3 साहित्यानुवाद और कार्यालय साहित्यानुवाद का अंतर

विषय को स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में 'यथासंभव समानरूप में और सहज अभिव्यक्ति' के साथ ले जाना उत्तम अनुवाद कहलाता है। अब प्रश्न उठता है कि स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा क्या है। किसी एक भाषा में अभिव्यक्त भावों और विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करने की प्रक्रिया का नाम ही अनुवाद है। इस प्रक्रिया में पहली अथवा मूल भाषा को 'स्रोतभाषा' कहते हैं तो दूसरी को 'लक्ष्यभाषा' की संज्ञा दी जाती है। किसी भी

ज्ञान का प्रचार-प्रसार सारे लोगों तक पहुँचाने में अनुवाद अहम भूमिका निभाता है। प्रशासन का साहित्य ही कार्यालय साहित्य है। उच्चकोटि की हृदयगत भावनाओं का प्रतिफलन यदि 'साहित्य' है तो अपने कार्यालय के कर्मचारियों तथा दूसरे कार्यालयों के कर्मचारियों के मध्य सूचना तथा समाचार संप्रेषण हेतु रचित साहित्य ही 'कार्यालय साहित्य' कहला सकता है। अनुवाद को भी विषय के आधार पर 'साहित्यिक अनुवाद' तथा 'साहित्येतर अनुवाद' के रूप में विभाजित किया जा सकता है। इस विभाजन में कार्यालय से संबंधित अनुवाद साहित्येतर अनुवाद की कोटि में आता है। इन दोनों के अंतर को 'सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद' और 'सूचनात्मक साहित्य का अनुवाद' भी कहा जा सकता है।

9.3 कार्यालय साहित्य के अनुवाद की आवश्यकता और द्विभाषिकता की पृष्ठभूमि :

कार्यालय साहित्य का कार्यक्षेत्र कार्यालय ही है। अतः कार्यालय में प्रयुक्त भाषा में ही उसका लेखन होना चाहिए। और हम देखकर आये कि हिंदी ही भारत के संघ की राजभाषा होगी और उसीमें सरकारी कामकाज चलने होंगे। लेकिन हिंदी के साथ साथ अंग्रेजी को भी अस्थाईरूप से सह राजभाषा होने के कारण कार्यालय साहित्य का निर्माण दो भाषाओं में करना पड रहा है। यह स्थिति क्यों उत्पन्न हुई, यह जानने के लिए हमें निम्नलिखित विवरण से भी अवगत होना पडेगा।

अनुच्छेद 344 (1) के अनुसार सरकार द्वारा दि.7 जून, 1955 को बी जी खेर की अध्यक्षता में प्रथम राजभाषा आयोग का गठन किया गया। आयोग ने दि.31 जुलाई, 1956 को अंग्रेजी की जगह हिंदी को प्रतिस्थापित करने हेतु कई सिफारिश करते हुए अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। आयोग के दो हिंदीतर क्षेत्र के सदस्यों ने अर्थात मद्रास के पी सुब्बरायन और पश्चिम बंगाल के सुनीति कुमार चटर्जी ने इस प्रतिवेदन का विरोध किया। खेर आयोग द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन की समीक्षा हेतु सितंबर, 1957 में गोविंद बल्लभ पंत की अध्यक्षता में संसदीय राजभाषा समिति गठित की गई। दो वर्षों के विचार-विमर्श के पश्चात, पंत समिति ने अंग्रेजी को एक सहायक भाषा के रूप में जारी रखते हुए हिंदी को प्रमुख राजभाषा बनाने हेतु दि.8 फरवरी, 1959 को राष्ट्रपति के समक्ष अपनी सिफारिशें प्रस्तुत कीं। तेलुगु अकादमी ने 1956 में आयोजित सम्मेलन में अंग्रेजी की जगह हिंदी के प्रयोग का विरोध किया। राजाजी, जो पहले हिंदी के कट्टर समर्थक थे, उन्होंने दि.8 मार्च 1958 को आयोजित अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन, जिसमें तमिल, मलयालम, तेलुगु, असमिया, उड़िया, मराठी, कन्नड़ और बांग्ला भाषाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे- में हिंदी के प्रयोग का विरोध किया। हिंदी के प्रति बढ़ते विरोध की स्थिति में आठवीं अनुसूची में अंग्रेजी को शामिल करने हेतु संसद में एंथोनी द्वारा प्रस्तुत विधेयक पर विचार-विमर्श के पश्चात तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने दि.7 अगस्त, 1959 में प्रमुख भाषा के रूप में हिंदी के साथ-साथ सहायक भाषा के रूप में अंग्रेजी को जारी रखने

की अवधि का निर्णय हिंदीतर भाषी लोगों पर ही छोड़ते हुए हिंदीतर भाषी लोगों के प्रयोजनों के संरक्षण का आश्वासन दिया। नेहरू जी के इस आश्वासन को वैधता प्रदान करते हुए संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 (3) में किये गये प्रावधान के अनुसार संसद में दि.21 जनवरी, 1963 को राजभाषा अधिनियम, 1963 से संबंधित विधेयक प्रस्तुत किया गया, जिसे दि.27 अप्रैल,1963 को पारित कर दिया गया। इसमें कुल 9 धाराएँ व 11 उपधाराएँ हैं। 1964 में नेहरू जी की मृत्यु के पश्चात हिंदी के विरोध में जब मद्रास में 1967 के चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की हार हुई, तब कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति द्वारा हिंदी के समर्थकों एवं हिंदी के विरोधियों के बीच समझौता कराने के उद्देश्य से एक संकल्प पारित किया गया, जिसमें यह प्रावधान किया गया कि जब तक सभी राज्यों की सम्मति प्राप्त न हो, तब तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहेगा। साथ ही इस संकल्प में हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में त्रिभाषा सूत्र, अर्थात प्रादेशिक भाषा, हिंदी व अंग्रेजी भाषा के प्रयोग को प्रतिपादित किया गया। तत्पश्चात राजभाषा अधिनियम संबंधी विधेयक का संशोधन करके संसद में दि.27 नवंबर, 1967 को प्रस्तुत किया गया, जिसे दि.16 दिसंबर,1967 को पारित किया गया। इसप्रकार हम देखते हैं कि सरकारी कामकाज तथा प्रशासन संबंधी सभी प्रकार के कार्यालयों की भाषा के रूप में हिंदी के साथ साथ अंग्रेजी को मान्यता देते हुए राजभाषा (संशोधन) अधिनियम, 1967 को मूर्तरूप दिया गया जो कि सरकारी प्रयोजनों में 'द्विभाषिता (अंग्रेजी व हिंदी) की अनिश्चित कालीन नीति' का आश्वासन देता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होगा कि कार्यालय साहित्य की अवधारणा में दो विषय अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। एक- उस कार्यालय में प्रयुक्त विषयगत पारिभाषिक शब्दावली और दूसरा- उसका अनुवाद।

9.4 पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषा, परंपरा और स्वरूप :

पारिभाषिक शब्दावली कार्यालय साहित्य का आधार है। पारिभाषिक शब्द की परिभाषा देते हुए डॉ. भोलानाथ तिवारी जी ने लिखा, "पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो विषय-प्रवेश में प्रयुक्त होता हो, जिसकी किसी विषय या सिद्धांत के प्रसंग में सुनिश्चित परिभाषा हो, जिसकी अर्थ परिधि सुनिश्चित हो, तथा जो अन्य पारिभाषिक शब्द या शब्दों से अपने अर्थ तथा प्रयोग में स्पष्टतः अलग हो।" उनके मतानुसार पारिभाषिक शब्द अतिव्याप्ति, अव्यापि तथा असंभव दोष से रहित होने चाहिए। एकवाक्यीय, सार्वकालिकता बोधक, क्रियायुक्त, निर्वैयक्त, सुनिश्चित और स्पष्ट शब्द ही पारिभाषिक शब्द है। प्रशासन के क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन अपने क्षेत्र मे अनुसार उपयोग में आनेवाली इस पारिभाषिक शब्दावली का इतिहास भारत में अत्यंत प्राचीन माना जाता है। भाषा-शास्त्रियों के कथनानुसार लगभग एक हजार वर्षों से आधुनिक आर्य भाषाओं का आरंभ हुआ। उसके पहले संस्कृत ही राजा-महाराजाओं के शासनकाल में प्रशासन की भाषा थी। ध्यातव्य है कि पुरातत्त्वविदों के अनुसार संस्कृत के साथ-साथ स्थानीय भाषाओं में भी राजकीय शासन अथवा घोषणाएँ

हुआ करती थीं। यदि राजा ने किसी व्यक्ति को भूमि दान में दी हो, तो उस विषय की घोषणा केलिए निर्मित शिलालेख अथवा ताम्रपट्ट में संस्कृत तथा उस अमुक क्षेत्र की प्रादेशिक भाषा- दोनों में राजा के आदेश पाये जाते हैं। शिलालेखों के साहित्य का स्वरूप प्रायः संस्कृत का पद्यरूप हुआ करता था और प्रादेशिक भाषा में उसका अनुवाद भी प्राप्त मिलता था। दक्षिण भारत में ऐसे कई शिलालेख प्राप्त हैं जहाँ प्रशासनिक भाषा अथवा संचार की भाषा के रूप में संस्कृत के साथ-साथ तेलुगु, तमिल, कन्नड इत्यादि प्रादेशिक भाषाओं के रूप भी मिलते हैं। लेकिन हमारे पास प्रशासनिक क्षेत्र में उपयुक्त भाषा एवं उसकी शब्दावली को लेकर कोई ठोस 'रिकार्ड' नही मिलता और उसका कोश भी प्राप्त नहीं होता। फिर भारत पर विदेशी आतताइयों के आक्रमण के पश्चात सत्ता मुगलों के हाथ में गया तो राजकाज की भाषा फारसी ही रही। अंग्रेजों ने सत्तारूढ होने के बावजूद भी 1837 ई. तक फारसी को ही राजभाषा रहने दिया। फिर वह स्थान धीरे-धीरे अंग्रेजी ने हस्तगत कर लिया। 1935ई. से तो प्रशासन के हर क्षेत्र की भाषा के रूप में अंग्रेजी को ही घोषित किया गया।

प्रशासनिक शब्दावली और कोश के प्रसंग में प्राचीन भारत से किसी आधार को हम प्राप्त नहीं कर पाये और स्थिति निराशाजनक ही रही। किंतु मध्ययुग से कुछ कोश प्राप्त होने लगे हैं। पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के संबंध में पहली सोच करनेवालों में छत्रपति शिवाजी महाराज का नाम प्रथम है। इस कार्य के लिए उन्होंने रघुनाथ पंत नामक एक सुयोग्य अधिकारी को नियुक्त किया। और उन्होंने लगभग डेढ हजार शब्दों से एक कोश बनवाया। यह कोश 'राजकोश' नाम से प्रसिद्ध है और इसमें मात्र प्रशासन ही नहीं शिल्प और अन्य कलाओं से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली भी प्राप्त होती है। ध्यातव्य है कि ये शब्द भी किसी न किसी रूप में प्रशासन कार्य से ही जुडे हैं। बाद में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने 1898ई. में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में पहल की और एक समिति का गठन किया गया। अन्य विषयों के साथ में राजनीतिक अर्थव्यवस्था को भी एक विषय के रूप में रखा गया था। बाद में यानी, 1940 ई. में मध्यप्रदेश के ग्वालियर से श्री हरिहरनिवास द्विवेदी जी ने 'शासन शब्द संग्रह' को प्रकाशित किया। फिर बिहार से और उत्तरप्रदेश से भी पारिभाषिक शब्दावली और कोशों का निर्माण हुआ। भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त होने के नेपथ्य में यह प्रयास सरकारी तौर पर भी करने की स्थिति आयी तो सन् 1952 में शिक्षा मंत्रालय के हिंदी अनुभाग ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली बोर्ड के निर्देशन में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण का कार्य प्रारंभ किया था। तब से लेकर पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में आयोग से निर्मित कोश अथवा प्रशासनिक भाषा को ही प्रामाणिक माना जाने लगा।

9.5 कार्यालय साहित्य में पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद की समस्याएँ :

कार्यालय हिंदी के क्रियान्वयन में दो बातें अत्यंत प्रमुख मानी जाती हैं। एक- उस क्षेत्र की पारिभाषिक

शब्दावली और दूसरा- उस शब्दावली का अनुवाद। यह स्पष्ट है कि भारतीय भाषाओं में और विशेषकर हिंदी में पारिभाषिक शब्दों का निर्माण तथा अनुवाद आदि से विवाद का विषय रहा है। इस विवाद के परिणामस्वरूप अनुवाद-चिंतकों के पाँच संप्रदाय हैं जिनका विवरण निम्नवत् दिया जा सकता है:

9.5.1 पुनरुद्धारवादी/ राष्ट्रीयतावादी/संस्कृतवादी संप्रदाय :

इस संप्रदाय के विद्वान भारतीय भाषाओं की शब्द संपत्ति को अधिकाधिक संस्कृतनिष्ठ बनाना चाहते हैं। जिन आधुनिक पारिभाषिक शब्दों के लिए संस्कृत में शब्द नहीं हैं, उन केलिए संस्कृत शब्दों या धातुओं में उपसर्ग, प्रत्यय जोड़कर अथवा नयी धातुओं का निर्माण कराकर प्रत्येक उपसर्ग जोड़कर नये तत्सम शब्द बना लेते हैं। डॉ. रघुवीर जी को इस धारा के प्रतिनिधि-समर्थक माना जा सकता है। इस धारा ने पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में तथा अंग्रेजी शब्दों के अनुवाद में बहु प्रचलित शब्दों के स्थान पर संस्कृत निष्ठ शब्दों का प्रयोग खुलकर किया है। यथा:

अंग्रेजी शब्द	**संस्कृत शब्द**	**बहु प्रचलित शब्द**
Sulfer	शुल्बारि	गंधक
Auction	कोश विक्रय	नीलाम
Tehsil	भुक्ति	तहसील
Octroi	द्वार-देय	चुंगी

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि उपर्युक्त अंग्रेजी शब्दों के लिए हिंदी में बहु प्रचलित शब्द मिलने के बावजूद संस्कृतवादियों ने संस्कृत से ही शब्द चुने। इस धारा के विद्वानों का मत यह था कि दूसरी भाषा के द्वारा आगत शब्द उर्वरा नहीं होते और विदेशी शब्द अर्धमृत होते हैं।

9.5.2 अंतर्राष्ट्रीयवादी/ आदानवादी/ स्वीकारवादी संप्रदाय :

इस संप्रदाय के अधिकांश भाषाशास्त्रियों ने हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को यथारूप में लेने की बात की थी। उनके अनुसार भारतीय भाषाओं तथा संस्कृत से पारिभाषिक शब्द बनाने की आवश्यकता नहीं है। क्यों कि उनका तर्क यह था कि प्राचीन साहित्य से भारतीय शब्द खोजकर शब्द-निर्माण करने की झंझट से बच सकते हैं और सारे संसार में अंग्रेजी व अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली का प्रचार सर्वाधिक है इससे विभिन्न भाषाओं के साहित्य जानने का अवसर प्राप्त होगा, अतः अनुवाद की समस्या उत्पन्न नहीं होगी। इस संप्रदाय में कुछ विद्वान अंग्रेजी से पारिभाषिक शब्दों को ज्यों-के-त्यों लेने के पक्ष में हैं यथा:

अंग्रेजी शब्द	अनूदित हिंदी शब्द
Technique	तकनीकी
Hospital	अस्पताल
Academy	अकादमी
Trazedy	त्रास्दी
Comedy	कामदी

9.5.3 हिंदोस्तानी/ पयोगवादी संप्रदाय :

इसके समर्थकों में पं. सुंदरलाल, डॉ. जाफर हसन, 'हिंदोस्तानी कल्चर सोसाइटी' तथा उस्मानिया विश्वविद्यालय आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस संप्रदाय के विद्वानों ने हिंदी-उर्दू की समन्वित शब्दावली को अपनाया है। इस संबंध में हिंदोस्तानी संप्रदाय की मान्यता रही कि हमारी वर्तमान संस्कृति एक मिश्रित संस्कृति है, अतः संस्कृति के अनुरूप ही शब्दावली होनी चाहिए। कार्यालय साहित्य से संबंधित प्रशासनिक पारिभाषिक शब्दावली में उस्मानिया विश्वविद्यालय ने निम्नप्रकार के शब्दों को ईजाद किया था :

अंग्रेजी शब्द	हिंदोस्तानी में अनूदित शब्द
Accileration	चाल-बढाव
Re action	पलटकारी
Legalise	कानूनियाना
Standardise	स्टेंडर्डियाना
Retraspect	पिछ दर्शन

पं. सुंदरलाल ने वैयक्तिक तौर पर कार्यालय साहित्य का अनुवाद इसी संप्रदाय के अनुरूप प्रकार प्रस्तुत किया। उनके द्वारा प्रयुक्त कुछ पारिभाषिक प्रशासनिक शब्द इस प्रकार है :

अंग्रेजी शब्द	हिंदोस्तानी में अनूदित शब्द
Emergency	अचानकी
President	राजपति
Disfigure	रूप बिगाड़
Communication	आवा-जाई
Chairman	मसनदी

Governmental	शासनिया

9.5.4 हिंदोस्तानी/ पयोगवादी संप्रदाय :

इस संप्रदाय के समर्थकों ने लोक प्रचलित शब्दों के आधार पर पारिभाषिक शब्द बनाने का पक्ष लिया। अंतर्राष्ट्रीयवादियों की तरह न सोचकर इन्होंने Maternity home के लिए 'जच्चा घर' और Defector के लिए 'दलबदलू' जैसे शब्दों का प्रचलन किया। किंतु इस संप्रदाय के साथ समस्या यह थी कि सारे पारिभाषिक शब्दों को लोकप्रचलित शब्दों के आधार पर बनाना असंभव है क्यों कि लोक प्रचलित शब्द पारिभाषिक शब्दों के रूप में कम गढे जा सकते हैं।

9.5.5. समन्वयवादी/मध्यममार्गी संप्रदाय :

इस संप्रदाय के विद्वानों ने पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में उपर्युक्त सभी चार संप्रदायों का समन्वय करने के पक्ष में हैं। यह समन्वय केवल हिंदी के लिए ही नहीं अपितु सभी भारतीय भाषाओं के लिए सुलभ माना गया। डॉ. भोलानाथ तिवारी कथन है कि पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में हमें सभी भेद भुलाकर अपना दृष्टिकोण उदार बना लेना चाहिए। "समस्तोपलब्ध साधनों को चाहे वे स्वदेशी हो अथवा विदेशी, प्राचीन हो अथवा आधुनिक, ईमानदारी से एक संपन्न तथा सुलझी हुई अभिव्यक्ति की ओर केंद्रित होना है ताकि सीमित व्यक्ति और असीमित विश्व के बीच अभिव्यंजना का एक विषद मार्ग तैयार हो सके। तभी हमारी भाषा जिसे हमारे शास्त्रों में 'वाणि' कहा गया है- तेजोमयी वाक् कहला सकेगी।" (पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ पुस्तक से उद्धृत- पृ.सं. 52)

9.6 कार्यालय साहित्य : विविध क्षेत्रों के तहत अनुवाद की समस्याएँ :

कार्यालय साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ, यथा ऊपर निर्देशित है- साधारण साहित्य के अनुवाद की समस्याओं से भिन्न होती हैं। आगे कार्यालय साहित्य के विविध खंडों के अंतर्गत अनुवाद के संबंध में सामने आनेवाली समस्याओं का विवरण प्राप्त किया जा सकता है। ध्यान रहे, कार्यालय साहित्य के अंतर्गत रेलवे, विधि, बैंकिंग इत्यादि अनगिनत प्रशासनिक क्षेत्र आते हैं जिनमें हिंदी सहित अंग्रेजी का प्रयोग होता है और अनुवाद की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। कार्यालय साहित्य की कोटि में प्रशासन की वे सारी शाखाएँ आती हैं जो कि सरकारी कामकाज के लिए सीधे तौर पर अथवा अप्रत्यक्ष तौर पर संबंध रखती हैं। सभी पब्लिक लिमिटेड कंपनियाँ, इस्पात संयंत्र, डाक-तार (अब प्रचलित नहीं), सूचना-प्रसारण, टेलिफोन, रेलवे, बैंकिंग, रक्षा, शिक्षा, शेयर बाजार, व्यापार, वाणिज्य, बिजली, कोयला, लेखा, इस्पात, लौह उद्योग इत्यादि अनगिनत शाखाएँ केंद्र सरकार के अंतर्गत आती हैं और इन सभीकी शब्दावली और प्रयोग भिन्न होते

हैं। उदाहरण के लिए Account शब्द का अर्थ बैंकिंग के क्षेत्र में एक अर्थ देता है और लेखा के क्षेत्र में एक और अर्थ देता है। उन सभी शाखाओं से संबंधित विविध पारिभाषिक शब्दावलियों का निर्माण एवं अनुवाद लगभग तैयार हो चुकी हैं और राजभाषा विभाग के वेबसाइट पर मुफ्तरूप से प्राप्त की जा सकती है। ई महाशब्दकोश, बैंकिंग शब्दावली, ग्रामीण शब्दावली, सामान्य प्रशासन शब्दावली इत्यादि कई शब्दकोश गृहमंत्रालय के अधीन राजभाषा शिक्षण एवं प्रशिक्षण सामग्री के साथ साथ वेबसाइट पर उपलब्ध है। फिर भी कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनके अनुवाद के संदर्भ में अनुवादक को सतर्क रहना होगा। उन सारी शब्दावलियों तथा सभी शाखाओं को इस पाठ में सम्मिलित करना संभव नहीं है, अतः कतिपय उदाहरणों के साथ कार्यालय-अनुवाद की समस्याओं को समझाने का प्रयास आगे किया जायेगा। उनका वर्गीकरण निम्नप्रकार से किया जा सकता है :

- अनेक पर्यायवाची शब्दों/ प्रतिशब्दों में उपयुक्त पर्याय/ प्रतिशब्द का चयन करना
- नये पर्याय/ प्रतिशब्द का निर्माण करना
- यथावत स्रोत भाषा के शब्दों का लिप्यंतरीकरण करना
- संक्षिप्तियों का प्रयोग और उनका रूपांतरण
- विषय के अनुरूप लक्ष्य भाषा के लिए उपयुक्त सहज अभिव्यक्ति का प्रयोग करना
- लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप सुगठित और सहज वाक्य निर्माण करना

कार्यालय साहित्य के अनुवाद में सबसे पहली समस्या पर्यायवाची शब्दों को चुनना होता है। हिंदी भारत में कई राज्यों की मातृभाषा है और कई राज्यों में द्वितीयभाषा के रूप में प्रयोग में है। जैसे गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, उडीशा, और दक्षिण भारत में हिंदी द्वितीय भाषा है। इसके साथ साथ हिंदी का क्षेत्र अपने आप में बहुत बडा है। इसलिए जहाँ हिंदी द्वितीय भाषा के रूप में है, वहाँ कार्यालय साहित्य में प्रयुक्त भाषा अलग है और हिंदी प्रदेशों में प्रयुक्त भाषा अलग है। इससे कार्यालय हिंदी के स्वरूप में एकरूपता नहीं है। होना यह चाहिए था कि मानकीकरण और आधुनिकीकरण में एकरूपता हो। किंतु ऐसा नहीं हो पा रहा है। उदाहरण के लिए यहाँ दी गयी सूची द्रष्टव्य है:

अंग्रेजी शब्द	**केंद्र सरकार**	**मध्य प्रदेश**	**बिहार**	**राजस्थान**	**उत्तर प्रदेश**
Abstract	सार	संक्षेप	सारांश	--	सारपत्र
Additional	अपर	--	--	--	अतिरिक्त

Adhoc	तदर्थ	--	--	एतदर्थ	--
Admissible	ग्राह्य, स्वीकार्य	प्रतिग्राह्य	अनुमान्य	--	--
Agreement	सहमति	सम्मति	रजामंदी	--	मेल
Confifdential	गोपनीय	गुप्त	प्रात्ययिक	--	गोपन
Division	विभाग	--	प्रमण्डल	--	प्रभाग
Category	श्रेणी, कोटि	प्रकार	प्रवर्ग	--	--
Endorsement	पृष्ठांकन	पृष्ठभूमि	बेचान	मद, निकाय	अनुमोदन
Collector	जिलाधीश	समाहर्ता	जिलाध्यक्ष	जिलाधीश	जिलाधीश

उपर्युक्त सूची से स्पष्ट होता है कि पारिभाषिक शब्दावली के तहत एकरूपता नहीं है। अब अनुवाद करनेवाला अधिकारी यदि इन क्षेत्रों से बाहर काम कर रहा हो तो उसके सामने समस्या यह होगी कि इनमें से किस शब्द को सही अनुवाद के रूप में स्वीकार करें।

अनुवादक के लिए विषय का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। उदाहरण के लिए बैंकिंग के कार्यालयों में फार्मों के अनुवाद की समस्या। इनमें छोटे-छोटे शब्दों के भीतर जो लक्ष्यार्थ निझित रहता , उसे जाने बिना अनुवाद करना व्यर्थ हो जाता है। फार्मों में अंग्रेजी शब्द प्रायः सामान्य अर्थ को लिए हुए नहीं होते। वे अपने विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। इसलिए बैंकिंग शब्दावली की प्रयोग-सीमा को जाने बिना ठीक अनुवाद नहीं हो पायेगा। संदर्भानुसार शब्द का अर्थ बदल जाना भी एक समस्या है। उदाहरण के लिए, जैसा कि ऊपर अंकित किया जा चुका है, Account शब्द के लिए बैंकिंग क्षेत्र में खाता एवं लेखा होता है । अब अनुवादक की समस्या यह है कि 'लेखा' कहाँ रखे और 'खाता' शब्द का अनुवाद कहाँ आयेगा। इसके अतिरिक्त Account के अन्यार्थ भी होते हैं जिनको अनुवाद के समय में ध्यान में रखना पडता है। 'Vote on Account' के 'लेखानुवाद' ग्रहीत है। उसी प्रकार Rent शब्द के लिए भी जमा, साख, प्रत्यय इत्यादि कई अर्थ आते हैं। अतः अनुवादक का कर्तव्य बनता है कि सही संदर्भ के अनुसार वह सही वाक्य चुने। जब अंग्रेजी में किसी शब्द का एक ही समानार्थक हिंदी शब्द हो जिसके प्रयोग की सभी लोगों के द्वारा अपेक्षा की जाये, और जिसमें भ्रम की गुंजाइश न हो, वही मानकीकृत शब्द कहलाता है। जैसे कि Organization के लिए हिंदी में 'संगठन'; Engineer के लिए 'अभियन्ता', File के लिए 'मिसिल', Director हेतु 'निदेशक' और Management के लिए 'प्रबंधन' इत्यादि शब्दों का प्रयोग मानकीकृत है। किंतु अनुवादक के सामने उपर्युक्त शब्दों के लिए

क्रमशः 'संचालन', 'यन्त्री', 'संचिका', 'निर्देशक' आदि शब्द भी उपलब्ध होते हैं और अर्थ तथा प्रयोग की दृष्टि से इन शब्दों की बराबरी को दृष्टि में रखते हुए पशासनिक भाषा का सही अनुवाद करना होता है। क्योंकि किसी संगठन के अध्यक्ष को 'निदेशक' तथा फिल्मी दुनिया से संबंधित Director को 'निर्देशक' कहा जाता है।

संक्षिप्तियों का प्रयोग करना प्रशासन में अनिवार्य हो जाता है। उदाहरणार्थ शिक्षा मंत्रालय की ओर से प्रचलित कार्यालय साहित्य-अनुवाद में University Grants Commission का शाब्दिक अनुवाद 'विश्वविद्यालय अनुदान' के रूप में मिलता है। किंतु पत्राचार में हर वक्त पूरे शब्द को लिखने के बजाय अंग्रेजी में UGC का संक्षिप्त नाम ही अधिक प्रचलित है। इसका हिंदी अनुवाद करते समय ध्यान देना होगा कि 'यूजीसी' के बजाय इस संक्षिप्ति का अनुवाद 'वि.अ.आ.' करना ही उचित होगा। किंतु संप्रेषणीयता और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए कई अनुवादक 'यूजीसी' संक्षिप्ति का यथारूप में लिप्यंतरण करके दे रहे हैं।

नये पर्याय बनाते समय पाठ में चर्चित समन्वयवादी दृष्टिकोण को अपनाना ही उचित होगा। जहाँ लोगों के द्वारा अत्यधिक प्रचलित रूप का शब्द यदि हो तो उसका टकसाली अनुवाद न करते हुए प्रचलित शब्द को रखना ही उचित होगा। उदाहरणार्थ Sanctioned amount के लिए 'स्वीकृत राशि' के बजाय 'मंजूर की गयी राशि' ही अधिक प्रचलित है। किंतु 'स्वीकार' शब्द की ओर ही अनुवादकों का अधिक झुकाव दिखाई देता है। कार्यालय साहित्य की एक और समस्या अंग्रेजी का उसी रूप में प्रयोग करना है जो सदियों पुराने हुआ करता था। उदाहरणार्थ किसी पत्र के अंतिम वाक्य के रूप Your kind perusal and approval- इस वाक्यांश का अनुवाद टकसाली तौर पर करें तो 'आपके कृपापूर्वक अवलोकन एवं अनुमोदनार्थ' होगा। इनके साथ-साथ विधि शब्दावली में प्रयुक्त My Lord / Mi Lord जैसे संबोधन भी चर्चनीय हैं। उन शब्दों को कुछ अधिकारियों ने अपने कार्यालय साहित्य से हटा दिया और कुछ अधिकारी परिवर्तन किये बिना ही काम चला रहे हैं। ध्यान दें कि अधिकारी की कृपादृष्टि के लिए लालायित मातहत की प्रवृत्तियों से कार्यालय साहित्य भरा पडा है। अनुवादक को यह समझना होगा कि अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त ऐसे शब्द ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ही चिह्न है और उनको हिंदी में अनुवाद करते समय इस मानसिकता से हिंदी भी संपृक्त हो जायेगी। हिंदी में इस प्रकार के बनावटी भाषानुवाद से बचना चाहिए जो भारतीय आत्मा और स्वाधीन चित्तवृत्ति के विरुद्ध हो। कार्यालय साहित्य के अनुवाद में सबसे बडी समस्या हिंदी भाषा की सामासिक प्रकृति को समझने की होती है। सही वर्तनी और सही अर्थद्योतन करनेवाले शब्दों को ही अनुवाद में चुनना होगा।

इन समस्याओं से बचकर अनुवाद करने से कार्यालय साहित्य का अनुवाद अपनी सार्थकता सिद्ध कर सकता है और जनभाषा में प्रशासन करने के संबंध में सरकार की आकांक्षा भी सफल होगी।

9.7 बोध प्रश्न :

1. कार्यालय साहित्य की परिभाषा और स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

2. प्रयोजनमूलक हिंदी का परिचय अपने शब्दों में दीजिए।

3. प्रयोजनपरक भाषा के संदर्भ में कार्यालय हिंदी की चर्चा करें।

4. कार्यालय साहित्य की द्विभाषिक स्थिति की पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

5. कार्यालय हिंदी के अनुवाद के विविध आयामों पर प्रकाश डालिए।

6. कार्यालय साहित्य के प्रकारों पर चर्चा कीजिए।

7. प्रशासनपरक पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषा और स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

8. भारत में पारिभाषिक शब्दावली के इतिहास और परंपरा के बारे में लिखिए।

9. कार्यालय साहित्य के अनुवाद में बाधा डालनेवाली समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

10. कार्यालय साहित्य के अनुवाद के समय लिप्यंतरण के संबंध में कैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं? सोदाहरण समझाइए।

9.8 सहायक ग्रंथ :

1. अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग : 1962, डॉ. नगेंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय

2. भाषाई अस्मिता और हिंदी : 1992 डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

3. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ : 1985 डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, कृष्ण कुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, नयी दिल्ली

4. कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ : 1981, डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली

5. हिंदी विविध व्यवहारों की भाषा : 1994, डॉ. सुवास कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

****

- डॉ. नागेश्वरराव दण्डिभोट्ला

10. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का निर्माण-सिध्दांत

उद्देश्य :

- इस इकाई को पढ़ने के बाद आप वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का स्वरूप समझ सकेंगे।
- वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों के विशिष्ट लक्षणों को भी समझ सकेंगे।
- तकनीकी शब्दों के प्रकार बता सकेंगे।
- भारत में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण के लिए किए गए विभिन्न प्रयासों के बारे में बता सकेंगे।
- तकनीकी शब्दावली संबंधी विभिन्न विचारधारा की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- तकनीकी शब्दावली के निर्माण के सिद्धांत तथा उनकी युक्तियों के बारे में बता सकेंगे।

इकाई की रूप रेखा

10.1 प्रस्तावना

10.2 वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का स्वरूप

- **10.2.1** सामान्य और तकनीकी शब्द में अंतर
- **10.2.2** वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों के लक्षण

10.3 वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के प्रकार

- **10.3.1** पारदर्श और अपारदर्शी शब्द
- **10.3.2** पूर्ण तकनीकी और अर्ध-तकनीकी शब्द

10.4 वैज्ञानिक शब्दावली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- **10.4.1** पश्चिम में वैज्ञानिक शब्दावली की विकास प्रक्रिया
- **10.4.2** भारत में वैज्ञानिक शब्दावली की निर्माण प्रक्रिया

10.5 वैज्ञानिक शब्दावली संबंधी विचारधाराएँ

- **10.5.1** शुद्धता विचारधारा
- **10.5.2** हिंदुस्तानी विचारधारा
- **10.5.3** अंग्रेजीवादी विचारधारा
- **10.5.4** समन्वयवादी विचारधारा

10.6 शब्दावली निर्माण के सिद्धांत तथा भाषिक युक्तियाँ

- **10.6.1** शब्दावली निर्माण के सिद्धांत
- **10.6.2** शब्दावली निर्माण की भाषिक युक्तियाँ

10.7 वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली निर्माण- सिध्दांत

10.8 सारांश

10.9 बोध प्रश्न

10.10 सहायक ग्रंथ

10.1 प्रस्तावना :

आपने वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा का रूप कैसा होता है, कैसे वह सामान्य या साहित्यिक भाषा शैली के स्वरूप से अलग होता है और कैसे वैज्ञानिक और तकनीकी भाषा-रूप का विकास होता है। इस पाठ में आप वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के संबंध में विशेष जानकारी प्राप्त करेंगे। तकनीकी भाषा-रूप कई घटकों से मिलकर अपना आकार प्राप्त करता है, जैसे शब्द, विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ, वाक्य-रूप और वाक्य विन्यास पद्धति। इस पाठ में तकनीकी शब्दावली के विभिन्न आयामों के बारे में आप पढ़ेंगे साठ-साठ ही तकनीकी शब्दावली का भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में जिक्र आया है।

10.2 वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का स्वरूप :

विज्ञान की भाषा किस प्रकार सामान्य तथा साहित्यिक भाषा से अपने स्वरूप में अलग है। जो तत्व वैज्ञानिक भाषा-रूप को साहित्यिक या सामान्य भाषा-रूप से अलग करते हैं उनमें प्रमुख है - शब्दों का चयन, विशिष्ट प्रकार की अभिव्यक्तियों का प्रयोग, वाक्य-रचना की शैली तथा कथ्य प्रस्तुत करने की विधा। इस इकाई में हम वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली की विशिष्टताओं पर विचार करेंगे। हम सबसे पहले सामान्य शब्द और तकनीकी शब्द में अंतर देखेंगे और फिर तकनीकी शब्दों के विशिष्ट लक्षणों पर विचार करेंगे। तकनीकी शब्दावली के अंतर्गत हम मुख्यतः वैज्ञानिक शब्दावली की चर्चा करेंगे तथा जहाँ जरूरी होगा सामाजिक विज्ञान विषयों के तकनीकी शब्दों की भी चर्चा करेंगे।

10.2.1 सामान्य और तकनीकी शब्द में अंतर :

सामान्य और तकनीकी शब्दों के बीच अंतर हम दो स्तरों पर कर सकते हैं - संरचना के स्तर पर और अर्थ के स्तर पर। शब्द की संरचना से तात्पर्य है शब्द के निर्माण की विधि से, यानी शब्द-रचना से। इस स्तर पर वस्तुतः सामान्य तथा तकनीकी शब्दों में कोई अंतर नहीं। शब्द-निर्माण की जो विधि सामान्य शब्दों के लिए हम अपनाते हैं वही विधि हम तकनीकी शब्दों के लिए भी अपनाते हैं। सामान्य शब्दों की रचना हम धातु के आगे-पीछे उपसर्ग और प्रत्ययों को जोड़कर करते हैं जैसे -विश्वास, अविश्वास, विश्वसनीय, विश्वसनीयता, अविश्वसनीय आदि। तकनीकी शब्दों की रचना भी हम इसी स्थापित पद्धति के आधार पर धातु के आगे-पीछे उपसर्ग और प्रत्ययों का योग करके करते हैं, जैसे - आदेश, निदेश, निदेशक, निदेशालय, उपनिदेशक, सहनिदेशक आदि।

(ध्यान रहे, उपसर्ग धातु या शब्द के पहले जुड़ते हैं और प्रत्यय धातु या शब्द के बाद) दूसरे शब्दों में, तकनीकी शब्दों का अपना कोई अलग शब्द-व्याकरण नहीं होता। भाषा के सामान्य व्याकरण और संरचनात्मक नियमों के दायरे के भीतर ही तकनीकी या वैज्ञानिक शब्दों का निर्माण या विकास होता है।

यह बात अवश्य है कि विज्ञान तथा टेक्नालॉजी की तेजी से विकसित नई संकल्पनाओं और आविष्कारों। को व्यक्त करने के लिए नए शब्दों की मांग बढ़ रही है जिसके फलस्वरूप शब्दों की रचना-पद्धति में कुछ नए प्रयोग भी करने पड़ रहे हैं। इसके अलावा धातुओं, उपसर्गों तथा प्रत्ययों को कुछ नए मूल्य और अर्थ प्रदान करने की आवश्यकता पड़ रही है, लेकिन ये सभी प्रयोग भाषा के मान्य व्याकरणिक विधानों के अंतर्गत ही किए जा रहे हैं, जैसे संकर शब्दों की रचना - अपीलकर्ता, वोल्टता, शेयरधारक रजिस्ट्रीकृत आदि।

तकनीकी और सामान्य शब्दों के बीच वास्तविक अंतर अर्थ के स्तर पर मिलता है। सामान्य तथा साहित्यिक शब्दों का प्रयोग हम अपने प्रयोजन और दृष्टिकोण के अनुसार अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना तीनों ही अर्थों में कर सकते हैं। साहित्य में शब्दों का प्रयोग जितना ही अधिक लाक्षणिक होगा उतना ही अधिक प्रभावशाली भाषा और भाव का संप्रेषण माना जाएगा। सामान्य भाषा में भी हम बीच-बीच में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग करते हैं। मन में भावनाओं की लहरें हिलोरें मारने लगीं। उनकी बातों में मुझे आशा की एक क्षीण किरण दिखाई दी। तभी शीला के परिवार पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा। उसे वहीं खड़ा देख पिताजी गरजे - तुम अभी तक नहीं गए? उदाहरण के लिए इन वाक्यों में 'लहरें', 'किरण', 'पहाड़', और 'गरजना'का प्रयोग अभिधा या शाब्दिक अर्थ में नहीं हुआ है। यहाँ इनका प्रयोग लाक्षणिक है। विज्ञान की भाषा में ये शब्द तकनीकी हैं और इनके अर्थ शाब्दिकहैं।

पाठक भी इन्हें अभिधार्थ में ही ग्रहण करता है। अतः जहाँ सामान्य तथा साहित्यिक भाषा में शब्दों के अर्थों को विस्तारित कर उनके मूल अर्थों से उन्हें विचलित कर देते हैं, वहाँ तकनीकी तथा वैज्ञानिक संदर्भों में शब्दों को उनके मूल अर्थ में स्थिर किया जाता है और उनके अर्थों में किसी भी तरह का विचलन नहीं आने दिया जाता। इस प्रकार तकनीकी शब्दों के अर्थों में एक प्रकार की वस्तुनिष्ठता होती है जिसमें लेखक या वक्ता के व्यक्तिगत भावों या दृष्टिाकोणों के लिए कोई स्थान नहीं होता। आगे के अनुच्छेद में तकनीकी शब्दों की इन विशिष्टताओं पर हम विस्तार से चर्चा करेंगे।

10.2.2 वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों के लक्षण :

अर्थ और प्रयोग के स्तर पर तकनीकी शब्दों के कुछ खास गुण-धर्म होते हैं जो इन्हें गैरतकनीकी शब्दों से अलग करते हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी संदर्भों में सामान्य शब्द भी विशिष्ट अर्थ व्यक्त करने की क्षमता विकसित कर लेता है। वैज्ञानिक संदर्भों में अर्थों और संकल्पनाओं में सूक्ष्मता की आवश्यकता

पड़ती है, इसलिए इन सूक्ष्म अर्थों को व्यक्त करने के लिए अनेक शब्दों की ज़रूरत पड़ती है जो किसी भी भाषा के शब्द भंडार में संभव नहीं। इसलिए जहाँ नए शब्द बनाने या सृजित करने की संभावना नहीं होती वहाँ प्रचलित शब्दों को ही एक नया अर्थ या अर्थ छटा प्रदान कर दिया जाता है। इस प्रकार तकनीकी शब्दों में नए अर्थों का आरोपण एक सतत प्रक्रिया है। अर्थों का सूक्ष्म और सूक्ष्मतर होते जाना तकनीकी शब्दों की विशेषता है। यहाँ हम तकनीकी शब्दों के कुछ विशिष्ट लक्षणों की चर्चा करेंगे:

(क) अभिधार्थ प्रयोग:

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द हमेशा अभिधार्थ में ही समझे जाते हैं। यह संभव है कि सामान्य प्रयोग में या अलग-अलग संदर्भों में किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ प्रचलित हों, लेकिन यदि वह तकनीकी शब्द के रूप में विकसित हो जाता है तो तकनीकी शब्द का एक विषय-क्षेत्र में एक तकनीकी अर्थ होगा। इसीलिए कहा जाता है कि तकनीकी शब्द 'एक शब्द एक अर्थ'के सिद्धांत का अनुसरण करता है। उदाहरण के लिए, भौतिकी में 'ऊर्जा' (energy) शब्द का एक ही विशिष्ट अर्थ होगा जो 'शक्ति', 'ताकत'और'स्फूर्ति'आदि शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। यदि एक ही विषय या व्यवहार-क्षेत्र में एक ही तकनीकी शब्द के दो या अधिक अर्थ हों तो वह तकनीकी अर्थ व्यक्त करने के दायित्व का निर्वाह नहीं कर पाएगा।

(ख) अर्थ की सूक्ष्मता:

सामान्य शब्द की अर्थ-व्याप्ति अधिक व्यापक होती है, क्योंकि इसमें मुख्य अर्थ के अलावा कई गौण अर्थ भी निहित होते हैं। इस प्रकार सामान्य या साहित्यिक शब्दों में अर्थ की संभावनाएँ बहुत अधिक व्यापक होती हैं। तकनीकी शब्द न केवल एक अर्थ को व्यक्त करता है, बल्कि वह उस अर्थ के भी एक सूक्ष्म अंश का अर्थबोध प्रकट करता है। यह विज्ञान की विशेषता है जो भाषा में भी लक्षित होती है। जैसे-जैसे वैज्ञानिक और तकनीकी सोच और संकल्पना में परिमार्जन होता जाता है और नई मौलिक उद्भावनाएँ सामने आती जाती हैं, वैसे-वैसे तकनीकी शब्द का अर्थ भी सूक्ष्म से सूक्ष्म तर होता जाता है। अंग्रेजी शब्द 'प्रोग्राम'और 'मेमरी'के जो अर्थ लोक-व्यवहार में प्रचलित हैं वे कंप्यूटर विज्ञान के संदर्भ में अत्यंत सीमित हो गए हैं। 'संसद'का अर्थ संस्कृत में 'सभा'हुआ करता था लेकिन तकनीकी शब्द बनने के बाद इसकी अर्थ व्याप्ति केवल 'पार्लमेंट'तक सीमित हो गई है।

(ग) अर्थ भेदकता:

तकनीकी शब्दों के अर्थ न केवल सूक्ष्म होते हैं बल्कि निरंतर अनुसंधान के साथ-साथ उनके अर्थों के भेद-उपभेद विकसित होते चले जाते हैं। अर्थों के इन भेदोपभेदों में सूक्ष्म अर्थ भेद होता है। इन अर्थभेदों को सुरक्षित रखने के लिए सबके लिए अलग-अलग तकनीकी शब्दों का विधान करना जरूरी हो जाता है। सामान्य व्यक्ति के लिए यह भेद महत्वपूर्ण न हो, लेकिन वैज्ञानिक या विशेषज्ञ के लिए यह भेद अत्यंत महत्वपूर्ण है। नीच दिए शब्द देखिए -

वेग -velocity

किरण- ray

चाल -speed

विकिरण - radiation movement

किरण पुंज - beam energy

महामारी - epidemic

शक्ति - power

जिस समय 'महामारी' (epidemic) शब्द बना उस समय 'pandemic'और 'endemic'शब्दों का अस्तित्व नहीं था। किसी समुदाय में रोग-विशेष के असामान्य रूप से फैलने को 'महामारी'कहते हैं। जब महामारी संसार के कई भागों या देशों में एक साथ फैली हो तो उसे तकनीकी अर्थ में 'pandemic'कहा गया जिसके लिए हिंदी में 'विश्वमारी'शब्द बनाया गया। जब कोई बीमारी किसी छोटे क्षेत्र या समुदाय में छुटपुट रूप से लगातार मौजूद रहती है तो उसे 'endemic'कहा गया जिसके लिए हिंदी शब्द बना 'लघुमारी'। इस प्रकार आप पाते हैं कि तकनीकी शब्दों के अर्थों में धीरे-धीरे नए मूल्य विकसित होते रहते हैं और उनमें परस्पर अर्थबोधकता का गुण मुखर होता जाता है।

(घ) विषय सापेक्षता:

हर तकनीकी शब्द किसी न किसी विषय-क्षेत्र या शास्त्र से संबद्ध होता है। वह शब्द अपने विषय-क्षेत्र से ही अपना तकनीकी अर्थ और अपनी परिभाषा प्राप्त करता है। इसलिए किसी भी विषय के तकनीकी शब्द के पूर्ण अर्थ को समझने के लिए उस विषय की जानकारी ज़रूरी है। यही कारण है कि तकनीकी शब्दों को विशेषज्ञों की शब्दावली कहा जाता है जिन्हें अक्सर उस विषय से अनभिज्ञ सामान्य व्यक्ति नहीं समझ सकता। कोई भी तकनीकी शब्द अपने विषय-क्षेत्र से जो भी अर्थ प्राप्त करता है वह सब उसकी परिभाषा में निहित रहता है। इसलिए परिभाषा के माध्यम से ही तकनीकी शब्द की अर्थ-व्याप्ति को समझा जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो, हर तकनीकी शब्द परिभाषा की अपेक्षा करता है। इसीलिए इसे 'पारिभाषिक शब्द'कहा गया है - अर्थात् ऐसा शब्द जो परिभाषा के माध्यम से ही पूर्ण रूप से समझा जा सकता है। 'कंप्यूटर वाइरस','प्रोग्रामिंग',

'हार्डडिस्क'तथा 'फ्लापी'जैसे तकनीकी शब्द कंप्यूटर विज्ञान के संदर्भ में ही समझे जा सकते हैं। 'ओवर ड्राफ्ट','रेखित चैक','धारक चैक'आदि तकनीकी शब्द बैंकिंग व्यवहार-क्षेत्र के संदर्भ में ही समझे जा सकते हैं। यह संभव है कि एक ही तकनीकी शब्द एक विषय-क्षेत्र में एक विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त हो और दूसरे विषय-क्षेत्र में किसी और अर्थ में, लेकिन यह संभव नहीं कि एक ही विषय-क्षेत्र में एक ही तकनीकी शब्द दो भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हो। 'सॉफ्टवेयर'का अर्थ समस्त कंप्यूटर विज्ञान क्षेत्र में एक ही होगा, 'ऊर्जा'शब्द का अर्थ समस्त भौतिकी में एक ही होगा। अंग्रेजी शब्द 'charge'का अर्थ भौतिकी या रसायन में 'आवेश'या 'चार्ज' करना होगा (जैसे बैटरी चार्ज करना), वाणिज्य में 'व्यय', राजनीतिविज्ञान में 'धावा', विधि में 'आरोप'और प्रशासन में 'कार्यभार'या 'प्रभार'लेकिन एक ही विषय या प्रसंग में इसका एक ही रूढ़ अर्थ होगा।

(ङ) अर्थ-रूढ़िता:

नए विचारों, आविष्कारों या संकल्पनाओं को व्यक्त करने के लिए जब हमें नए शब्दों की आवश्यकता होती है तो इसके दो प्रमुख उपाय हैं – नए शब्दों का निर्माण या फिर पहले से ही भाषा के शब्द-भंडार में मौजूद निकटतम अर्थ देने वाले शब्द का चयन कर उसे नया अर्थ प्रदान करना। दोनों ही स्थितियों में शब्दों में नए अर्थों का आरोपण किया जाता है। जो भी नया तकनीकी अर्थ शब्द में आरोपित किया जाता है वह सतत प्रयोग के कारण उस शब्द के साथ रूढ़ हो जाता है और लोग उसी अर्थ में उस शब्द को ग्रहण करने लग जाते हैं। कभी-कभी यह भी होता है कि उस तकनीकी शब्द से जो सामान्य अर्थ प्रकट होता है वह उसके तकनीकी अर्थ से पूरी तरह मेल नहीं खाता। उदाहरण के दिए, कंप्यूटर के पर्दे पर रेखाएँ खींचने के लिए एक चूहे की तरह के एक छोटे से उपकरण का इस्तेमाल किया जाता है जिसे 'mouse'नाम दिया गया है। इसे मेज पर रखे एक प्लेट पर इधर-उधर घुमाया जाता है और पर्दे पर इच्छित रेखाएं खिंचती चली जाती हैं। अंग्रेजी में mouse का यह मूल अर्थ नहीं। इस शब्द पर आविष्कारकर्ता ने एक नया अर्थ आरोपित कर दिया और एक नया तकनीकी शब्द बन गया। अतः तकनीकी शब्द और अर्थ के बीच का संबंध किसी तर्क या विधान के अंतर्गत स्थिर हो यह जरूरी नहीं। इस संबंध को स्थापित करने में मूल संकल्पना के आविष्कारकर्ता का सबसे बड़ा हाथ होता है। धीरे-धीरे सतत प्रयोग और व्यवहार से तकनीकी शब्द और अर्थ के बीच का संबंध रूढ़ हो जाता है।

10.3 वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के प्रकार :

वैज्ञानिक या तकनीकी शब्दावली का वर्गीकरण हम दो स्तरों पर कर सकते हैं - अर्थ की स्वतः स्पष्टता और तकनीकीपन की मात्रा। अर्थ की स्वतः स्पष्टता के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली को दो स्थूल वर्गों में बाँटा जा सकता है - पारदर्शी तथा अपारदर्शी शब्दावली। तकनीकीपन की मात्रा की दृष्टि से भी इन्हें दो स्थूल वर्गों में बाँटा जा सकता है - पूर्ण तकनीकी और अर्धतकनीकी शब्द।

10.3.1 पारदर्शी और अपारदर्शी शब्द

आपने ऊपर पढ़ा कि तकनीकी शब्द और उसके अर्थ के बीच कोई पूर्णतः सहज या तर्कसंगत कार्य-कारण संबंध हो यह ज़रूरी नहीं। किसी भी वस्तु की पहचान के कई गुण-धर्म हो सकते हैं। इसी प्रकार किसी संकल्पना के कई लक्षण हो सकते हैं। जब हम ऐसी किसी वस्तु या संकल्पना की परिभाषा करते हैं तो उस परिभाषा में उन सब लक्षणों या गुण-धर्मों का समाहार करने की कोशिश करते हैं। इसलिए हम जब किसी वस्तु या संकल्पना का नामकरण करने की कोशिश करते हैं तो इन्हीं लक्षणों में से किसी एक या अधिक लक्षणों को आधार मानकर उपयुक्त नाम या शब्द ढूंढते हैं। यदि किसी शब्द से उनकी संकल्पना के अधिक से अधिक लक्षण या गुण-धर्म स्पष्ट होते हैं तो शब्द स्वतः व्याख्यान या पारदर्शी होता है। इसके विपरीत यदि कोई शब्द अपनी संपूर्ण संकल्पना का एक-आधा लक्षण ही व्यक्त कर पाता है तो वह शब्द अपारदर्शी हो जाता है। ऐसा कई बार होता है कि किसी वस्तु या संकल्पना के एक छोटे से लक्षण को लेकर उसका नामकरण कर दिया जाता है जिससे सामान्यतः तब तक उस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं होता जब तक उसका तकनीकी अर्थ परिभाषा के माध्यम से न समझा जाए। कभी-कभी दूसरी भाषा से आए तकनीकी शब्दों के अर्थ का बोध दुरूह हो जाता है क्योंकि हम उस भाषा के शब्दों की व्युत्पत्ति नहीं जानते और न ही उनकी मूल भाषा की शब्द-निर्माण प्रक्रिया को जानते हैं, जैसे लेटिन तथा ग्रीक धातु या प्रत्ययों से बने अंग्रेजी शब्द अन्य भाषा-भाषी के लिए सहज बोधगम्य नहीं होते।

हिंदी के कुछ पारदर्शी वैज्ञानिक शब्दों के उदाहरण देखिए जिनमें अंग्रेजी की तुलना में हिंदी के तकनीकी पर्याय अधिक बोधगम्य हैं।

Mammal- स्तनधारी

Chilling- द्रुतशीतन

Chianophile- हिमसह

Chianophobe- हिमभीरू

Gyanaecology-स्त्री रोग विज्ञान

Anatomy- शरीर-रचना

Haemorrhage-रक्तस्राव

इसी प्रकार कुछ वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द अपारदर्शी होते हैं, जैसे व्यक्ति के नाम पर बने शब्द, मिथ्यानाम शब्द या ऐसे शब्द जो विचित्र गुणों के आधार पर बने होते हैं। 'एम्पियर', 'फोरनहाइट', 'वोल्टमीटर'शब्द व्यक्तियों के नामों पर आधारित हैं। ऊपर हमने कंप्यूटर के संदर्भ में 'माउस' (mouse) शब्द का उदाहरण दिया था। जिस वैज्ञानिक ने इसका नामकरण किया उसने आकार की साम्यता या फुदकने के गुण के

कारण ही इसे mouse कहा यद्यपि कंप्यूटर में इसका प्रकार्य बिल्कुल अलग है। यह शब्द अपारदर्शी है। इस प्रकार के तकनीकी शब्द केवल परिभाषा के माध्यम से या वास्तविक संदर्भ की स्थिति में ही अपना अर्थ व्यक्त करते हैं।

10.3.2 पूर्ण तकनीकी और अर्ध-तकनीकी शब्द

हर वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द में तकनीकीपन की मात्रा एक समान नहीं होती। कुछ तकनीकी शब्दों में तकनीकी अर्थ अधिक गहन और जटिल होते हैं। उनके प्रयोग का दायरा सीमित होता है। उनका अर्थ अधिक सूक्ष्म होता है। उनका प्रयोग ज्ञान-विज्ञान के उच्चस्तर पर होता है। उनका अर्थ सामान्यतः विषय का विशेषज्ञ ही जानता है। ऐसे तकनीकी शब्दों को पूर्ण तकनीकी शब्द कहा जाता है। विकिरण (radiation), रेडियोएक्टिव (radioactive), प्रक्षेपास्त्र (missiles) आदि शब्द विशिष्ट वैज्ञानिक और तकनीकी संदर्भों में ही प्रयुक्त होते हैं। इसके विपरीत, कुछ तकनीकी शब्द तकनीकी और गैर तकनीकी दोनों संदर्भों में प्रयुक्त होते हैं, या उनमें तकनीकीपन की मात्रा अपेक्षाकृत कम होती है। साम्यवाद, वामपंथी, एरियल, स्टीरियो आदि शब्द मूलतः तकनीकी हैं लेकिन इनका आमफहम प्रयोग होता है और इसलिए ये शब्द लोक व्यवहार में सामान्य शब्द के रूप में प्रयोग में आते हैं। विशिष्ट ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में जब इनका प्रयोग होता है तो वहाँ इनके तकनीकी अर्थों को सुरक्षित रखा जाता है। इसलिए जब भी जनसाधारण या सामान्य प्रबुद्ध पाठकके बीच वैज्ञानिक संवाद होता है तो वहाँ यथासंभव शुद्ध तकनीकी शब्दों की जगह अर्ध-तकनीकी या अधिक बोधगम्य शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। हम वैज्ञानिक लेखन में कहाँ शुद्ध तकनीकी शब्दों का प्रयोग करें और कहाँ अर्ध-तकनीकी या सुपरिचित शब्दों का, यह इस बात पर निर्भर करता है कि पाठक या श्रोता कौन और किस स्तर का है।

10.4 वैज्ञानिक शब्दावली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

20वीं शताब्दी को विज्ञान का युग कहा गया है। आधुनिक विज्ञान और टेक्नालॉजी का विकास मुख्यतः पश्चिम में हुआ। जिन देशों में वैज्ञानिक आविष्कार हुए उन्हीं देशों में उनके लिए उनकी भाषाओं में तकनीकी शब्दों का विकास हुआ। जैसे-जैसे नए वैज्ञानिक विचारों और आविष्कारों का प्रसार हुआ, वैसे-वैसे उनकी शब्दावली का भी प्रसार हुआ। यह शब्दावली-विकास की प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसके विपरीत जिन देशों ने इस नए ज्ञान-विज्ञान को उधार में ग्रहण किया उन्होंने इन बने-बनाए तकनीकी शब्दों के लिए अपनी भाषा में पर्यायों का निर्माण किया। भारत सहित सभी विकासमान देश इसी कोटि में आते हैं। यहाँ वैज्ञानिक शब्दावली का विकास या निर्माण प्रयास किया गया। शब्दावली विकास की यह प्रक्रिया सहज या प्राकृतिक नहीं कही जा सकती। यह नियोजित प्रक्रिया है। इस प्रकार वैज्ञानिक शब्दावली के विकास को हम दो स्तर पर देखेंगे - पश्चिम के विकसित देशों में शब्दावली विकास तथा भारत में शब्दावली निर्माण प्रक्रिया।

10.4.1 पश्चिम में वैज्ञानिक शब्दावली की विकास-प्रक्रिया

लग-भग पाँच-छ: दशकों के दौरान जिस तेजी से पश्चिम में विज्ञान और 'टेक्नोलॉजी' का विकास हुआ, उसी तेजी से वहाँ तकनीकी शब्दावली का भी विकास हुआ। प्रतिदिन अनेक वैज्ञानिक विषयों पर नई पुस्तकें लिखी जाने लगीं। कंप्यूटर तथा 'इलेक्ट्रानिकी' के अद्भुत विकास के साथ ही ज्ञान और उससे जुड़ी शब्दावली का भंडार तुरंत विश्व में फैलने लगा। संचार-प्रणाली के इस चमत्कार ने ज्ञान का तो स्वयं प्रसार किया ही, साथ ही तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली की भी एक बाढ़-सी आ गई। वैज्ञानिकों को अपने विषयों की नित नई विकसित शब्दावली से अपने को परिचित रखने के लिए असंख्य पुस्तकों, अनुसंधान पत्रिकाओं और लेखों का अध्ययन करना पड़ रहा है। इस असाध्य कार्य को सहजऔर सरल बनाने के लिए अब कंप्यूटर के माध्यम से 'इलेक्ट्रानिकन्यूज'का भी आविष्कार हो चुका है। 'इलेक्ट्रानिकन्यूज'के जरिए वैज्ञानिक तथा 'टेक्नोलॉजी' के क्षेत्र में हुए नए से नए आविष्कारों को एक केन्द्रीय स्थल से समस्त विश्व में प्रसारित किया जाता है जिसे उपग्रह सेवा के माध्यम से इच्छुक वैज्ञानिक अपने कंप्यूटर में तुरंत ग्रहण कर सकते हैं। नए ज्ञान के साथ ही नई शब्दावली का भी प्रसार उसी गति से होता है।

इस समस्त प्रक्रिया में एक बात ध्यान देने लायक है। नए तकनीकी शब्दों का निर्माण या निर्धारण करने वाले वो ही थे जिन्होंने इन शब्दों के पीछे निहित संकल्पना या विचार का आविष्कार किया। दूसरे शब्दों में, मौलिक चिंतकों तथा विचारकों ने ही अपने विचारों तथा संकल्पनाओं के लिए शब्द ढूंढे या निर्धारित किए। ये नए तकनीकी शब्द प्रयोग की प्रक्रिया से गुजरे। इस प्रक्रिया में सभी नए शब्द प्रयोग सिद्ध हो गए हों यह जरूरी नहीं। कई शब्द थोड़े समय चलकर स्वतः लुप्त हो गए और कई प्रचलन में बने रहे। जो नए तकनीकी शब्द प्रचलन में बने रहे उन्हें धीरे-धीरे सामाजिक स्वीकृत मिली और वे मानक तकनीकी शब्द के रूप में सिद्ध हो गए और वे उस विषय के शब्दकोश में स्थायी रूप से स्थिर हो गए। वैज्ञानिक शब्दावली के विकास की यह प्राकृतिक प्रक्रिया है जो उन देशों में मिलती है जो विज्ञान के क्षेत्र में विकसित या अग्रणी है। अविकसित या विकासमान देशों में वैज्ञानिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया का चित्र इससे अलग है।

10.4.2 भारत में वैज्ञानिक शब्दावली की निर्माण-प्रक्रिया

भारत में आधुनिक विज्ञान और 'टेक्नोलॉजी' का ज्ञान मुख्यतः पश्चिम से आया। यह ज्ञान हमें मुख्यतः अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त हुआ। हर नई तकनीकी संकल्पना के साथ जुड़कर उसकी नामावली भी हमें मिली। जब देश स्वतंत्र हुआ तो निर्धारकों ने यह निर्णय लिया कि पश्चिम के इस समस्त ज्ञान को ग्रहणकर लें । यह भा निर्णय लिया गया कि इस नए ज्ञान को हम अपना भारतीय भाषाओं के माध्यम से लोगों तक पहुंचाएं क्योंकि अंग्रेजी का ज्ञान रखने वालों की संख्या केवल 4-5 प्रतिशत ही है। इसके लिए ज़रूरी था की हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक पुस्तकें लिखी जाएं या मानक वैज्ञानिक पुस्तकों का अनुवाद किया जाए। वैज्ञानिक लेखन या अनुवाद

में सबसे पहले उपयुक्त तकनीकी शब्दों या पर्यायों की समस्या सामने आई। इन तकनीकी शब्दों का मानक होना ज़रूरी होता है क्योंकि मानक होने का तात्पर्य है कि उन शब्दों को हर व्यक्ति उन्हीं अर्थों में समझे जिन लेखकों ने उनका इस्तेमाल किया है। साथ ही यह भी कि हर लेखक उन अर्थों के लिए उन्हीं शब्दों का प्रयोग करे। निश्चित है कि प्रारंभिक अवस्था में अंग्रेजी शब्दावली के लिए हिंदी पर्यायों को स्थिर करने में लेखकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा, क्योंकि इन नई वैज्ञानिक संकल्पनाओं के लिए हिंदी में शब्दावली की अपनी कोई परंपरा नहीं थी। अतः हर लेखक को अपनी तकनीकी शब्दावली अपने आप गढ़ने की जरूरत पड़ी। इससे धीरे-धीरे शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता-सी उत्पन्न होने लगी।

शब्दावली के क्षेत्र में इस अराजकता को दूर करने के लिए हिंदी में व्यक्तिगत तथा संस्थागत दोनों प्रकार के प्रयास शुरू हुए और अंत में सरकार ने हस्तक्षेप कर 1961 में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना कर मानक शब्दावली के निर्माण तथा विकास का दायित्व उसे सौंपा। इस पर हम अगले अनुच्छेद में विस्तार से चर्चा करेंगे। यहाँ हम केवल यह देखने का प्रयास करेंगे कि हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण का प्रारंभिक कार्य किस प्रकार शुरू हुआ।

भारत में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण का पहला प्रयास 1888 के आसपास प्रोफेसर टी.के. गज्जर की कृतियों में मिलता है। उन्होंने गुजराती की पाँच वैज्ञानिक पुस्तकें प्रकाशित की जिनमें शब्दावली निर्माण से संबंधित समस्याओं पर गहराई से विचार किया। हिंदी में 1898-1906 के बीच काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने श्याम सुंदर दास आदि के संपादकत्व में विभिन्न विषयों की शब्दावली प्रकाशित की। 1909 में महेशचरण सिंह पुस्तक 'रसायन शास्त्र' सामने आई। इसमें उन्होंने रसायन के पारिभाषिक शब्द की सूची भी प्रस्तुत की। सन् 1931 में नागरी प्रचारिणी सभा ने हिंदी वैज्ञानिक शब्दावली प्रकाशित की।

व्यक्तिगत प्रयासों से 1955 में प्रकाशित डॉ. रघुवीर की Comprehensive English Hindi Dictionary अब तक प्रकाशित कोशों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण और सबसे अधिक विवादास्पद तकनीकी शब्दकोश है। उन्होंने तकनीकी शब्दों के लिए शुद्ध संस्कृत के पर्यायों का निर्माण किया और किसी भी अंग्रेजी शब्द को नहीं स्वीकारा। हैदराबाद के निज़ाम ने इसके विपरीत उर्दू के आधार पर तकनीकी शब्दावली का निर्माण करने के लिए एक ब्यूरो की स्थापना की। इस प्रकार 1960-61 तकआते-आते हिंदी तकनीकी शब्दावली के निर्माण को लेकर दो-तीन तरह की विचारधाराएं विकसित हो - गई थीं। आगे के अनुच्छेद में हम इन पर संक्षेप में विचार करेंगे।

10.5 वैज्ञानिक शब्दावली संबंधी विचारधाराएं :

जिस समय भारत में वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण का कार्य शुरू हुआ, उस समय हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्र में भाषा संबंधी परिदृश्य कुछ असाधारण-सा था। शिक्षित-वर्ग अंग्रेजी भाषा तथा वैज्ञानिक शब्दों से परिचित था क्योंकि अंग्रेजी के माध्यम से उसने विज्ञान की शिक्षा हासिल की थी। इस वर्ग के लोगों की संख्या बहुत कम थी लेकिन इनका प्रभाव-क्षेत्र बहुत व्यापक था। दूसरी ओर देश की 95 प्रतिशत आबादी अंग्रेजी नहीं जानती थी। उनमें भी साक्षरों की संख्या बहुत कम थी। हिंदी-भाषी प्रदेशों की जनता हिंदी-उर्दू-हिंदुस्तानी से परिचित थी। इनमें से अधिकांश अपने निजी या पारिवारिक परिवेश में किसी अन्य बोली का प्रयोग करते थे और बाह्य कार्यों में यथासंभव हिंदी-उर्दू-हिंदुस्तानी का प्रयोग करते थे। हिंदी का एक रूप वह था जिसमें संस्कृत के शब्दों का अधिकतम प्रयोग होता था। इसका दूसरा रूपवह था जिसमें उर्दू शब्दों का अधिकतम प्रयोग होता था। इन दोनों के बीच के भाषा-रूप को सामान्यत: हिंदुस्तानी कहा जाता था। बोलचाल या आम भाषा-व्यवहार के लिए हिंदुस्तानी का ही प्रयोग अधिक होता था।

भारत के इस विविध-रूपी परिदृश्य में शब्दावली के निर्माण के प्रश्न को लेकर विद्वानों में मतभेद होना स्वाभाविक था। अतः उस अवधि के दौरान चार विचारधाराएँ स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आईं - शुद्धतावादी, हिंदुस्तानीवादी औरअंग्रेजीवादी।

10.5.1 शुद्धतावादी विचारधारा

डॉ. रघुवीर इस विचारधारा के प्रवर्तक थे। उनका यह आग्रह था कि हमें अपनी भाषा को विदेशी शब्दों के प्रभाव से मुक्त रखना चाहिए। अतः उन्होंने यह संकल्प किया कि वे हिंदी के लिए ऐसे वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों का निर्माण करेंगे जिनमें अंग्रेजी या उर्दू का एक शब्द नहीं होगा। उन्होंने संस्कृत को आधार मानकर संस्कृत की धातुओं और प्रत्ययों-उपसर्गों की सहायता से हर अंग्रेजी शब्द के लिए हिंदी के पर्याय निर्धारित किए, जैसे engine के लिए 'गंत्र', motor car के लिए 'वहित्रयान', bicycle के लिए 'द्विवक्रिको, train के लिए 'संयान'आदि। उनके इन संस्कृतनिष्ट शब्दों को हिंदी-भाषी समाज ने पूर्णतः स्वीकार नहीं किया। इनके कुछ शब्द अवश्य प्रचलित और स्वीकार्य हो गए जैसे engineer के लिए 'अभियंता', registration के लिए 'पंजीकरण'आदि, लेकिन अधिकांश शब्द प्रयोक्ताओं के लिए पूर्णतः अपरिचित और इसलिए दुरूह सिद्ध हुए।

10.5.2 हिंदुस्तानी विचारधारा

हिंदुस्तानी विचारधारा के प्रवर्तक थे पंडित सुंदरलाल, जो हिंदुस्तानी कल्चर सोसाइटी के अध्यक्ष थे। ये डॉ, रघुवीर के शुद्धतावादी विचारधारा के खिलाफ थे। इनका कहना था कि हमें हिंदी में नए वैज्ञानिक शब्दों का निर्माण बोलचाल की हिंदी-उर्दू मिश्रित शब्दावली के आधार पर करना चाहिए, संस्कृत के शब्दों के आधार पर नहीं। शब्द-निर्माण की पद्धति भी हमें बोलचाल की हिंदुस्तानी से ग्रहण करनी चाहिए। 1956 में इसी

पद्धति के आधार पर उस्मानिया विश्वविद्यालय से एक शब्दकोश प्रकाशित हुआ जिसमें इस प्रकार के शब्द बनाए गए –**Particularize-** खासियाना (खास + याना)

Individualize- एकजनियाना (एक जना + याना)

Standardize- स्टैन्डर्डियाना (सटैन्डर्ड + याना)

Integration-जोड़मेलन (जोड़ + मेलन)

हिंदीभाषी समाज ने इस प्रकार के शब्दों को भी स्वीकार नहीं किया। जिस प्रकार डॉ. रघुवीर शब्दावली को संस्कृत की दुरूहता के एक छोर पर ले गए, उसी प्रकार हिंदुस्तानी विचारधारा के पक्षधर शब्दावली को हल्की ग्राम्यभाषा के दूसरे दौर पर ले गए। प्रयोक्ताओं ने दोनों में से किसी भी विचारधारा को पूर्णतः स्वीकार नहीं किया।

10.5.3 अंग्रेजीवादी विचारधारा

इस विचारधारा के समर्थकों का प्रयास का यह आग्रह था कि हमें अधिक से अधिक वैज्ञानिक शब्द अंग्रेजी के ही ग्रहण कर लेने चाहिए, इन्हें अनूदित करने या इनके हिंदी पर्याय निर्मित करने की आवश्यकता नहीं। जिस प्रकार बोलते समय हम अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं उसी तरह लेखन में भी हमें इन अंग्रेजी शब्दों को उन्हीं रूपों में ग्रहण कर लेना चाहिए। इस पद्धति पर Gray's Anatomy नामक पुस्तक का हिंदी अनुवाद किया गया जिसमें blood के लिए 'ब्लड'और mind के लिए 'माइन्ड'शब्दों का इस्तेमाल है। जो लोग इस विचारधारा के समर्थक थे उनमें अधिकांश अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त वैज्ञानिक, उच्च सरकारी अधिकारी, वकील आदि थे जो अंग्रेजी के शब्दों के अभ्यस्त होने के कारण हिंदी के नए शब्द सीखना नहीं चाहते थे। यद्यपि हिंदी में रचपच गए अंग्रेजी के वैज्ञानिक शब्दों को ग्रहण कर लेने के पक्ष में अधिकांश लोग सहमत थे लेकिन किस सीमा तक अंग्रेजी के शब्दों को सीधे ग्रहण किया जाए, इस पर मतभेद था। पुलिस, स्टेशन, रेडियो, प्लेटफॉर्म जैसे शब्दों को तो लिया ही जा सकता है, लेकिन क्या 'ब्लड', 'ट्रीटमेन्ट', 'कूलिंग'-, 'पैरेलल'जैसे शब्दों को भी अंग्रेजी रूप में ही लेखन में ग्रहण किया जाए इसमें संदेह है। आज मौखिक स्तर पर हम भले ही बहुत से अंग्रेजी शब्दों का इस्तेमाल करते हों, लेखन में बहुत कम अंग्रेजी शब्दों को उन्हीं रूपों में हम लिखते हैं। हिंदी भाषा समाज ने इस विचारधारा को भी पूर्णतः स्वीकार नहीं किया।

10.5.4 समन्वयवादी विचारधारा

उपर्युक्त तीनों ही विचारधाराएँ अपने विचारों में अतिवादी थीं। भाषा-समाज ने इनको उसी सीमा तक स्वीकार किया जिस सीमा तक वे उस भाषा की प्रकृति में सहज रूप से समा सकती थीं। कोई भी भाषा-

समाज न तो अति-शुद्धतावादी नियमों के आधार पर अपनी भाषा के शब्दों को परिवर्तित करता और न ही वह अपनी भाषा के सहज नियमों को तोड़मरोड़कर बनाए गए शब्दों को स्वीकार करता है। साथ ही वह अपनी भाषा को विदेशी शब्दों से अभिभूत भी नहीं करना चाहता। इसलिए विद्वान चाहे जो भी दिशा दें, भाषा-समाज की अपनी एक अव्यक्त आंतरिक नियमावली या प्रणाली होती है जो सहज और सम्यक दिशा की ओर अग्रसर होती है।

अतः केन्द्रीय सरकार ने सन् 1961 में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की। इसका उद्देश्य यह था कि सभी भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक शब्दावली में यथासंभव समरूपता हो और उनमें अखिल भारतीयता की छाप हो।वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने उक्त तीनों विचारधाराओं से मूल तत्व ग्रहण किए औरराष्ट्रीय लक्ष्य तथा भाषा-समाज की वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए मध्यम मार्ग अपनाया। इससे अंग्रेजी शब्दों को एक सीमा तक अपनाने का भी आग्रह है, हिंदुस्तानी तथा हिंदी-उर्दू के शब्दों को ग्रहणकरने का भी और संस्कृत के शब्दों और शब्द निर्माण प्रणाली को एक सीमा तक स्वीकार करने का आग्रह है।

10.6 शब्दावली निर्माण के सिद्धांत :

आप ऊपर पढ़ चुके हैं कि भारतीय भाषाओं की वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली में समरूपता लाने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 1961 में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की। इसे यह दायित्व भी सौंपा कि यह अखिल भारतीय स्तर पर वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण के ऐसे मार्गदर्शक सिद्धांत प्रतिपादित करे जिनके आधार पर हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का निर्माण तथा विकास हो। आयोग ने राष्ट्र की सभी भाषाओं के प्रतिनिधियों, वैज्ञानिकों तथा भाषाविदों का सम्मेलन बुलाया और विविध विचारधाराओं के बीच संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हुए कुछ सिद्धांत प्रतिपादित किए। इनमें से चार प्रमुख सिद्धांत नीचे दिए जा रहे हैं -

(1) अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथावत देवनागरी लिपि या भारतीय भाषाओं की अपनी लिपियों में ग्रहण कर लिया जाए, उनका अनुवाद न किया जाए। अंतर्राष्ट्रीय शब्दों के अंतर्गत से प्रमुख कोटियां शामिल

(क) तत्वों और यौगिकों के नाम, जैसे हाइड्रोजन, कार्बन-डाइआक्साइड आदि।

(ख) तौल और माप की इकाइयाँ जैसे मीटर, कैलोरी, एम्पियर आदि।

(ग) व्यक्तियों के नाम पर बने शब्द, जैसे मार्क्सवाद, ब्रेल, बायँकाट, फारेनहाइट आदि।

(घ) वनस्पतिविज्ञान की द्विपदी नामावली।

(ङ) ऐसे शब्द जो भारतीय भाषाओं में रचपच गए हैं और आम प्रयोग में हैं, जैसे रेडियो, रडार, पेट्रोल, एलेक्ट्रान आदि।

(च) विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रतीक जो रोमन लिपि में अंतर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे गए, जैसे**cml**

(छ) अंकों के रोमन रूपों (1, 2, 3, 4) का प्रयोग, विशेषज्ञः वैज्ञानिक लेखन में।

(2) अपनी भाषा के शब्द भंडार में उपलब्ध ऐसे शब्दों को जो अंग्रेजी के तकनीकी शब्दों के लिएपहले से ही प्रचलित हैं, पर्याय के रूप में स्वीकार कर लिया जाए, जैसे identification के लिए 'शिनाख्त'शब्द।

(3) आवश्यकतानुसार भारतीय भाषाओं से तकनीकी शब्द ग्रहण किए जाएं जिससे वैज्ञानिक शब्दावलीको अखिल भारतीय रूप प्रदान किया जा सके।

(4) नए शब्दों के निर्माण के लिए संस्कृत शब्दों तथा धातुओं को आधार माना जाए।

(5) शब्दावली के चयन में उर्वर शब्दों को प्राथमिकता दी जाए। उर्वर शब्दों से प्रत्ययों तथा उपसर्गोंके संयोग से अनेक शब्द व्युत्पन्न किए जा सकते हैं, जैसे 'विधि'से विधिवत, वैध, अवैध, विधान, विधायक, विधानसभा आदि। इसके विपरीत'कानून'शब्द के केवल तीन-चार शब्द ही व्युत्पन्न हो सकते हैं, जैसे कानूनी, कानूनन, गैरकानूनी आदि।

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने इस सिद्धांतों के आधार पर अब तक 5 लाख तकनीकी शब्द विकसित किए हैं जिनमें विज्ञान और टेक्नोलॉजी के शब्दों के अलावा सामाजिक विज्ञानों के सभी विषय शामिल हैं। इन शब्दों के प्रसार तथा अद्यतनीकरण के लिए एक कंप्यूटर-आधारित राष्ट्रीय शब्दावली बैंक की स्थापना की गई है जिसमें हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के पर्यायों कोसमाहित करने की भी क्षमता है। यह शब्दावली डाटा बैंक 'निकनेट' (NICNET) उपग्रह के साथ जोड़ा जाएगा जिससे देश भर में कंप्यूटर स्क्रीन पर तुरन्त किसी भी तकनीकी शब्द के भारतीय पर्याय उपलब्ध हो सकेंगे। इससे नए बने भारतीय तकनीकी शब्दों की जानकारी लोगों तक पहुँचेगी और इनका प्रयोग बढ़ेगा जिससे इन वैज्ञानिक शब्दों को सामाजिक स्वीकृत प्राप्त करने में मदद मिलेगी। शब्दावली आयोग द्वारा विकसित समस्त शब्दावली विभिन्न विषयों के पारिभाषिक शब्द संग्रहों के रूप में उपलब्ध

10.6.1 शब्दावली निर्माण की भाषिक युक्तियाँ

ऊपर बताए गए सिद्धांतों से शब्दावली निर्माण के कार्य को दिशा प्राप्त हुई, इसमें संदेह नहीं, लेकिन शब्दावली के निर्माण का वास्तविक कार्य भाषिक युक्तियों से ही संपन्न होता है। इसके लिए परंपरागत व्याकरणिक

व्यवस्था को तो अपनाया ही जाता है, लेकिन कुछ नए प्रयोग भी करने की आवश्यकता पड़ती है। भारत में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द-भंडार को विकसित करने के लिए 4 प्रमुख युक्तियों का सहारा लिया गया -

1) परंपरा से प्राप्त शब्दावली

हर भाषा में परपरा से प्राप्त शब्द होते हैं जिनसे उस भाषा का शब्द-भंडार बनता है। यह शब्द-भंडार उस भाषा में सृजित ज्ञान-राशि से जुड़ा होता है। जिस देश में जिस ज्ञान का सबसे अधिक विकास होताहै उस देश में उस ज्ञान से संबद्ध तकनीकी शब्दों का भंडार सबसे अधिक समृद्ध होता है। हमारे देश में धर्म, दर्शन, काव्यशास्त्र, सौंदर्य-शास्त्र, भाषा-विज्ञान आदि सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विषयों की एक समृद्ध परंपरा रही और इसलिए इन ज्ञान-क्षेत्रों से जुड़ी शब्दावली की भी एक दीर्घ परंपरा हमारे यहां मिलती है। विज्ञान के क्षेत्र में ऐसा नहीं है। चूंकि आधुनिक विज्ञान का जन्म पश्चिम में हुआ, इसलिए वैज्ञानिक शब्दावली का भंडार हमें परंपरा से प्राप्त न हो सका और हमें अंग्रेजी के आधार पर उनका नव-निर्माण करने को विवश होना पड़ा।

परंपरा से प्राप्त शब्दों के हमें मुख्यतः दो स्रोत मिलते हैं - संस्कृत तथा अरबी-फारसी। संस्कृत के आधार पर विकसित शब्दों के उदाहरण हैं :

भूमध्य रेखा- Equator

शीतोष्ण –Temperate

विषुवत् रेखा- Terrestrial equator

त्रिकोण- Triangle

वर्ग - square

अरबी-फारसी के शब्द भंडार से प्राप्त शब्दावली का एक बहुत बड़ा भाग विधि तथा प्रशासन से संबंधित है, जैसे -

शिनाख्त- Identification

मुल्तवी- Postponement

तसदीक - Attestation

दस्तावेज़ - Document

आबकारी - Excise

2)आगत शब्द

अंग्रेजी से आए अनेक वैज्ञानिक शब्द बिना अनुवाद के मूल रूप में ही ग्रहण कर लिए गए - केवल देवनागरी में उनका लिप्यंतरण कर दिया गया। यह लिप्यंतरण कहीं अंग्रेजी की प्रकृति के अनुसार किया गया और कहीं हिंदी की प्रकृति के अनुसार, यानी अंग्रेजी शब्दों को हिंदी के अनुसार अनुकूलित किया गया। यह व्यवस्था अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथावत अपनी भाषा में ग्रहण कर लेने के पूर्व उल्लिखित सिद्धांत के अनुकूल है। कहीं-कहीं आगत शब्दों को संकर रूप में भी ग्रहण किया गया है यानी आधा अंश अंग्रेजी का और आधा हिंदी का। इन तीनों प्रकारों के उदाहरण देखिए --

क) मूल रूप में अंग्रेजी शब्द : पेट्रोल, ऑक्सीजन, एसिड, फोटो, कार्बन, फ़िल्टर, सिगनल।

ख) अंग्रेजी से अनुकूलित शब्द : अकादमी, तकनीक, अंतरिम, त्रासदी।

ग) संकर शब्द : मार्बल पत्र, आयनीकरण, वोल्टता (voltage) कोडीकरण, अपीलकर्ता।

3) नए शब्दों का सृजन

जहाँ अंग्रेजी तकनीकी शब्दों के लिए कोई प्रचलित शब्द अपनी भाषा में उपलब्ध न हो वहाँ नए शब्दों का सृजन करने की आवश्यकता पड़ती है। नए शब्दों के सृजन के दो प्रमुख उपाय हैं -

क) पहले से ही भाषा के शब्द भंडार में उपलब्ध किसी अल्प प्रयुक्त शब्द को नए अर्थ मेंप्रतिष्ठित कर दिया जाए, जैसे संसद, जनगणना, ऊर्जा, वेग, बिजली आदि।

ख) किसी शब्द या धातु में उपयुक्त प्रत्यय और उपसर्ग का योग कर पूर्णतः नए शब्द कासृजन कर उसे अर्थ प्रदान किया जाए, जैसे अभियंता, प्रायोजित, परियोजना, संकाय आदि।

4) अनुवाद पर्याय

कुछ तकनीकी शब्दों की संकल्पना अपने में इतनी विशिष्ट होती है और शब्द के अर्थ के साथ इतने अभिन्न रूप से जुड़ी होती है कि उसे शब्द के अभिधार्थ से अलग करना मुश्किल होता है। दूसरी भाषा में उसके लिए जब पर्याय निर्धारित किया जाता है तो अनुवाद पद्धति का सहारा लेना पड़ता है। यह प्रायः शाब्दिक अनुवाद होता है लेकिन शाब्दिक अर्थ ही स्वयं इतना स्पष्ट होता है कि वह मूल भाषा के शब्द के तकनीकी अर्थ को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है, जैसे :

हरित क्रांति - Green revolution

वाम पंथी- Leftist

लाल फीताशाही–Redtapism

कालाधन- Black money

इस प्रकार आपने देखा कि अपनी शब्दावली का विकास करने के लिए किसी भी भाषा को अपने भाषिक परिवेश, सामाजिक यथार्थ तथा लक्षित उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए भाषा के भीतर से ही ऐसी युक्तियों का विकास करना पड़ता है जिनसे आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की भाषिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके और भाषा में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के निर्बाध विकास के लिए आवश्यक उपकरण प्राप्त हो सके।

10.7 वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली निर्माण- सिध्दांत :

भारत के राष्ट्रपति के अप्रैल, 1960 के आदेश के अनुसार अन्यान्य कार्यों के अलावा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण से सम्बन्धित सिद्धान्तों के प्रतिपादन आदि हेतु "वैज्ञानिक तथा शब्दावली आयोग" की स्थापना अक्तूबर, 1961 में की गई। इस आयोग द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण के लिए कुछ महत्वपूर्ण मार्गदर्शीसिद्धान्त अपनाये गये हैं जो इस प्रकार है-

(1) अन्तर्राष्ट्रीय य शब्दों को यथासम्भव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली के अन्तर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते है-

(क) तत्वों और यौगिकों के नाम जैसे-हाइड्रोजन, कार्बन, कार्बन-डाईऑक्साइड आदि हो।

(ख) तौल और माप की इकाइयाँ और भौतिकी परिणाम की इकाइयाँ, जैसे- डाइन, कैलोरी, ऐम्पियर आदि।

(ग) ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए है, जैसे- फारेनहाइट के नाम पर फारेनहाइट तापक्रम, ऐम्पियर के नाम पर ऐम्पियर आदि।

(घ) ऐसे अन्य शब्द जिनका आम तौर पर संसार में व्यवहार हो रहा है, जैसे-रेडियो, पेट्रोल, रेडार, न्यूट्रान आदि।

(ङ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक, चिन्ह जैसे- साइनटीटा, कासटीटा आदि।

(2) प्रतीक रोमन लिपि में अंतर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएंगे परन्तु संक्षिप्त रूप नागरी और मानक रूपों में भी, विशेषतः साधारण तौल और माप में लिखे जा सकते हैं, जैसे सेंटीमीटर का प्रतीक cm हिन्दी में भी ऐसे ही प्रयुक्त होगा परन्तु इसका नागरी संक्षिप्त रूप से. मी. होगा।

(3) ज्यामितीय आकृतियों में भारतीय लिपियों में अक्षर प्रयुक्त किए जा सकते हैं,परन्तु त्रिकोणिमितीय सम्बन्धों में केवल रोमन अथवा ग्रीक अक्षर ही प्रयुक्त करने चाहिए जैसे- साइन A क्रास B आदि।

(4) ऐसे देशी शब्द जो सामान्य प्रयोग के वैज्ञानिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे-telegraph, telegram के लिए तार, continent के लिए महाद्वीप, atom के लिए परमाणु आदि।

(5) अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्राँसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गये हैं जैसे- इंजन, मशीन, लावा, मीटर, लीटर।

(6) लिंग: हिन्दी में अपनाए गए अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को, अन्यथा कारण न होने पर पुल्लिंग रूप में ही प्रयुक्त करना चाहिए।

(7) संकर शब्द: वैज्ञानिक शब्दावली में संकर शब्द जैसे- ionization के लिए आयनीकरण, voltage के लिए वोल्टता, saponifies, के लिए साबुनीकारक आदि।

(8) हलंत: नए अपनाए हुए शब्दों में आवश्यकतानुसार हलंत का प्रयोग करके उन्हें सही रूप में लिखना चाहिए।

इस प्रकार उपयुक्त सिद्धान्तों के आधार पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का निर्माण किया जाना चाहिए।

10.8 सारांश :

(1)आपने इस पाठ में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के बारे में पढ़ा।

(2) आपने पढ़ा कि संरचना के स्तर पर सामान्य और वैज्ञानिक शब्द में कोई अंतर नहीं है, लेकिन अर्थ के स्तर पर दोनों में मिलता है। सामान्य तथा साहित्यिक शब्दों में अर्थ का विस्तार होता है जबकि वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों में अर्थ का संकोच होता है।

(3) तकनीकी शब्द हमेशा अभिधार्थ में ही समझे जाते हैं, लक्ष्यार्थ या व्यंग्यार्थ में नहीं। साहित्यिक शब्दों में लक्षण तथा व्यंजना का अधिकतम प्रयोग होता है।

(4) तकनीकी तथा वैज्ञानिक शब्दों के लक्षण हैं - अभिधार्थ प्रयोग, अर्थ की सूक्ष्मता, अर्थ भेदकता, विषय-सापेक्षता और अर्थरूढ़िता।

(5) अर्थ की स्पष्टता के आधार पर वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दों को दो स्थूल वर्गों में बांटा जा सकता है - पारदर्शी तथा अपारदर्शी।

(6) तकनीकीपन की मात्रा की दृष्टि से तकनीकी शब्दों को दो स्थूल वर्गों में बांटा जा सकता है पूर्ण तकनीकी और अर्ध तकनीकी।

10.9 बोध प्रश्न :

1. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के प्रकार को लिखिए।

2. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के सिद्धांतों को विस्तार रूप से लिखिए।

3. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के निर्माण की समस्याओं को सोदाहरण रूप से लिखिए।

10.10 सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी भाषा संदर्भ और संरचना-1991- साहित्य सहकार- नई दिल्ली
2. हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का निर्माण, डॉ.पोरुमल्ल रवीन्द्र
3. संघीय राजभाषा के संदर्भमें पारिभाषिक वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण की समस्याएँ – डॉ. बलराज सिंह सिरोही।

****

- डॉ. सूर्य कुमारी. पी.

11. अनुवाद - साहित्यिक अनुवाद

(तकनीकी शब्दावली व विभिन्न विषयक गद्यांश)

उद्देश्य :

अनुवाद का इतिहास जितना प्राचीन है उतना ही अधिक उसकी महत्ता भी है। वर्तमान समय में अनुवाद का महत्व प्रौद्योगिकी, विज्ञान और तकनीकी की भाँति अत्यधिक मूल्यवान हो गया है। अनुवाद जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सर्वव्यापी हो गया है।

अनुवाद के मुख्य रूप से निम्न तीन उद्देश्य माने जाते हैं -

(1) दूसरी भाषा (स्रोत भाषा) के साहित्य से अपनी भाषा (लक्ष्य भाषा) के साहित्य को समृद्ध करना।

(2) दूसरी भाषाओं की शैलियों, मुहावरों, दार्शनिक तथ्यों वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान को प्राप्त करना।

(3) विचारों का विनिमय करना।

किसी भाषा में प्राप्त सामाग्री का दूसरी भाषा में भाषांतरण ही अनुवाद है। दूसरे शब्दों में – 'एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समतुल्य और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है। एक भाषा में प्रयुक्त शब्दों को दुसरे भाषा में रूपांतरित करके प्रयोग करना कठिन करी है। ऐसी कठिन कार्य में सहायता करने वाले कुछ तकनीकी शब्दों का विभिन्न विषयक गद्यांशों का अनुवाद इस अध्याय में प्रस्तुत करेंगे ।

रूपरेखा :

11.1 प्रस्तावना

11.2 तकनीकी शब्द

11.3 विभिन्न गद्यामशों का अनुवाद

1. हिन्दी से अंग्रेजी
2. अंग्रेजी से हिन्दी

11.1 प्रस्तावना :

भारत में अनुवाद का बहुरंगी इतिहास रहा है। प्रारंभिक अनुवाद को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि संस्कृत, प्राकृत, पाली तथा उभरते हुए क्षेत्रीय भाषाओं के बीच और उन्हीं भाषाओं का अनुवाद अरबी और फारसी में हुआ है। आठवीं से नौवीं शताब्दी के बीच भारतीय कथ्य और ज्ञान-मूलक पाठ जैसे पंचतंत्र, अष्टांगहृदय, अर्थशास्त्र, हितोपदेश, योगसूत्र, रामायण, महाभारत और भगवद्गीता का अनुवाद अरबी में हुआ। उन दिनों भारतीय और फारसी साहित्य मूल-पाठों के बीच व्यापक स्तर पर आदान

प्रदान हुआ। भक्तिकाल के दौरान संस्कृत मूल-पाठ खासकर भगवद्गीता और उपनिषद् दूसरे भारतीय भाषाओं के संपर्क में आया जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण भाषा मूल-पाठ जैसे मराठी संत कवि ज्ञानेश्वर द्वारा गीता का अनुवाद ज्ञानेश्वरी, तथा विभिन्न महाकाव्यों का अनुवाद खासकर विभिन्न भाषाओं के संत कवि द्वारा रामायण और महाभारत का अनुवाद प्रकाश में आया। उदाहरण स्वरूप पम्पा, कंबर, मौला, इजूथाचन, तुलसीदास, प्रेमानन्द, एकनाथ, बलरामदास, माधव कंदली, और कृत्तिवास आदि के रामायण को देखा जा सकता है।

औपनिवेशिक काल के दौरान यूरोपीय तथा भारतीय भाषाओं (खासकर संस्कृत) के बीच अनुवाद के क्षेत्र में नव स्फुरण हुआ। तब यह आदान-प्रदान जर्मन, फ्रेंच, इटैलियन, स्पैनिश तथा भारतीय भाषाओं के बीच था। अंग्रेजी को प्राधान्य अस्तित्व के कारण एक विशेषाधिकार भाषा समझी जाती थी क्योंकि औपनिवेशिक अधिकारी इसी भाषा का प्रयोग करते थे। अंग्रेजी शासनकाल का अनुवाद अंग्रेजी में चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया जब विलियम जोन्स द्वारा कालिदास के अभिज्ञान शाकुंतलम का अनुवाद किया गया। एक पाठ के रूप में शाकुंतलम अब भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा का प्रतीक और भारतीय जागरण में एक उत्कृष्ट पाठ का हिस्सा बन चुका है। यह इस तथ्य का प्रमाण है कि किस तरह इसका अनुवाद दस से अधिक भारतीय भाषाओं में किया गया। अनुवाद के क्षेत्र में अंग्रजों (औपनिवेशवादी) का प्रयास प्राच्य विचारधारा पर आधारित और नये शासकों के लिए समझ पैदा करने, परिचय कराने, श्रेणीबद्ध करने और भारत पर नियंत्रण करने हेतु किया गया था। वे लोग अपने तरीके का भारत का संस्करण देखना चाहते थे जबकि अंग्रेजी में मूल पाठों के भारतीय अनुवादक उसका विस्तार, शुद्धिकरण और संशोधन करना चाहते थे। कभी-कभी वे लोग वैचारिक मतभेद के सहारे अंग्रेजी विचारधाराओं का विरोध करते थे। जिनकी लड़ाई समकालीन पाठों के अतिरिक्त प्राचीन पाठों को लेकर थी। राजा राममोहन राय द्वारा अनूदित शंकर का वेदान्त, केन और ईश्वास्य उपनिषद् भारतीय विद्वानों के माध्यम से भारतीय मूल-पाठों का अंग्रेजी अनुवाद के क्षेत्र में पहला भारतीय हस्तक्षेप था। इसका अनुशरण करते हुए आर.सी.दत्त के द्वारा ऋग्वेद, रामायण, महाभारत और कुछ शास्त्रीय संस्कृत नाटकों के अनुवाद किया गया। इन अनुवादों का तात्पर्य सुसुप्त मनोदशा वाले भारतीयों के स्वच्छन्दतावादी और उपयोगितावादी विचारों का विरोध करना था। उसके बाद अनुवाद के क्षेत्र में जैसे बाढ़ सी आ गयी, जिनमे प्रमुख अनुवादक थे दीनबंधु मित्र, अरबिंदो और रवीन्द्र नाथ टैगोर। लगभग इसी काल में भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद का सीमित स्तर पर श्रीगणेश हुआ।

इसलिए, समाज में प्रस्तुत किए गए विभिन्न भाषाओं के लिए हमारे समाज और विद्यालय दोनो में हमे वातावरण तैयार करने की जरूरत है। यह तभी संभव होगा जब शिक्षकों के साथ-साथ विद्यार्थियों को भी साहित्यिक और ज्ञान-आधारित मूल-पाठों के अनुवाद की अधिकाधिक मात्रा

उपलब्ध हों। और उर्ध्व रूप में पश्चिम के नाम के दत्त भाषाओं से ज्ञान आधारित मूल-पाठों को लाने को बजाय समानान्तर रूप में ऐसे मूल पाठों का अनुवाद एक भारतीय भाषा से दूसरी भारतीय भाषाओं मे भी महत्वपूर्ण हैं (सिंह 1990)।

11.2 तकनीकी शब्द :

किसी भी विषय से सम्बन्धित ऐसे शब्द जिनका प्रयोग मुख्य रूप से उस विषय की चर्चा के लिए ही होता है तकनीकी शब्द कहलाते हैं। इन्हें पारिभाषिक शब्द भी कहते हैं। जैसे भौतिक विज्ञान में "गुरुत्वाकर्षण", "वेग", "त्वरण", "आवृत्ति" आदि शब्द। धार्मिक कृत्यों तथा कर्मकाण्ड के लिए भी तकनीकी शब्द प्रयोग किए जाते हैं जैसे "होतृ", "यज्ञ", "जप", "आसन", "भावना", "कर्म", "संकल्प" आदि इस प्रकार के तकनीकी शब्द हैं।

तकनीकी शब्दावली बहुधा उस भाषा की होती है जिस भाषा में उस विषय पर मूलतः शोध हुआ हो; अथवा मूल भाषा के शब्दों के काल्क (calque) के रूप में होती है। यथा भारतीय ज्योतिष की शब्दावली में राशिचक्र की राशियों (मेष, वृष आदि) के नाम ग्रीक शब्दों (एरीज़, टॉरस आदि) के काल्क रूप में मिलते हैं तथा कुछ तकनीकी शब्दावली ग्रीक अथवा रोमन मूल की है। यही हमें सप्ताह के दिनों के नामों में भी दृष्टिगत होता है।

तकनीकी का अर्थ है- कुशलता, कुछ करने या बनाने की प्रणाली। सामान्य अर्थ में **तकनीकी** से आशय है- वैज्ञानिक सिद्धांतों, ज्ञान, विस्थाओं तथा प्रविधियों का व्यवहारिकता में अनुप्रयोग से हैं। इसका **तात्पर्य** किसी भी प्रयोगात्मक कार्य करने के तरीके से है, जिसमें वैज्ञानिक ज्ञान या सिद्धांतों का अनुप्रयोग किया गया हो। तकनीक - किसी कार्य को दक्षता पूर्ण ढंग से सम्पूर्ण करने की प्रक्रिया तकनीक कही जाती है। तकनीकी शब्द - किसी ज्ञान / विज्ञान के विशेष क्षेत्र में विशिष्टता अथवा निश्चितता के सन्दर्भ में प्रयुक्त अर्थ को तकनीकी शब्द कहते हैं। ये शब्द उस क्षेत्र में रूढ़ रूप में व्यवहृत होते हैं।

Absence - अनुपस्थिति /गैरहाजिरी
Acceptance - स्वीकृति
Accommodation - आवास
Accountant - लेखाकार
Accountant General - महालेखाकार
Acknowledgement - पावती
Act - अधिनियम
Administration - प्रशासन
Adoption - दत्तक स्वीकरण
Advance - अग्रिम धन (पेशगी)
Advocate - अधिवक्ता
Additional Secretary - अपर सचिव
Advisor - सलाहकार
Advocate General - महाधिवक्ता
Administrative Officer-प्रशासनिक अधिकारी
Agency - अभिकरण
Agent - अभिकर्ता
Agreement - करार
Air Force - वायुसेना
Allowances - भत्ता
Allotment - आबंटन

All India Radio - आकाशवाणी
Ambassador - राजदूत
Annexure - परिशिष्ट
Assistant Audit Officer - सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी
Assistant Commissioner - सहायक आयुक्त , सहायक कमिश्नर
Atomic Energy Commission – परमाणु ऊर्जा आयोग
Attorney General - महान्यायवादी
Authorized - प्राधिकृत
Audit Officer - लेखापरीक्षाधिकारी
Auditor General - महालेखा परीक्षक
Authority - प्राधिकरण
Auditor - लेखा परीक्षक
Autonomous - स्वायत्त
Ballot Officer - मतपत्र अधिकारी
Bilateral - द्विपक्षीय
Board of Arbitration - मध्यस्थ बोर्ड
Bipartite - उभयलक्षी
Bonafide - वास्तविक / यथार्थ
Cabinet Minister - मंत्रिमंडल सदस्य
Certificate - प्रमाण- पत्र
Cashier - रोकड़िया
Census Officer - जनगणना अधिकारी
Cabinet Secretary - लेखा परीक्षक
Chairman - सभापति
Charge sheet - आरोप पत्र
Camp Office - शिविर अधिकारी
Chancellor - कुलाधिपति
Casual leave - आकस्मिक छुट्टी
Circular - परिपत्र
Clarification - स्पष्टीकरण
Chief Adviser - मुख्य सलाहकार
Chief Editor - मुख्य संपादक
Chief Minister - मुख्य मंत्री
Convener - संयोजक
Collector - जिलाधीश
Confidential - गोपनीय
Consolidated - समेकित
Chief Justice - मुख्य न्यायाधीश
Commissioner - आयुक्त
Communication Officer – समचर - अधिकारी
Counselor - परामर्शदाता
Counter Signature - प्रति हस्ताक्षर
Costumes Officer - सीमा शुल्क अधिकारी
Corporation - निगम
Debt - ऋण
Dearness Allowance – महंगाई भत्ता
Declaration Form - घोषणा पत्र
Deduction - कटौती
Demy Official - अर्ध सरकारी
Deputation - प्रतिनियुक्ति
Documentary Proof - लिखित प्रमाण
Documents - दस्तावेज़
Director - निर्देशक
Directorate of Education – शिक्षा निर्देशालय
Due date - नियम तिथि
Duly - विधिवत
District Manager - जिला प्रबंधक
Drawing Officer - आहरण अधिकारी
Deputy Director - उप निर्देशक
Education - शिक्षा

Editor - संपादक
Earned leave - अजिंत छुट्टी
Earnest money - बयाना
Election Commission - निर्वाचन आयोग
Eligibility - पात्रता
Enclosure - अनुलग्नक
Emergency - आपात
Education Officer - शिक्षा अधिकारी
Election Commissioner – निर्वाचन आयुक्त
Election Commission - निर्वाचन आयोग
Employment Exchange – रोजगार कार्यालय
Engineer-in-Chief – प्रमुख इंजीनियर
Enquiry Officer - जाँच अधिकारी
Establishment - स्थापना
Execution Committee – कार्यकारिणी समिति
Ex-Officer - पदेन
Executive Engineer – कार्यपालक इंजीनियर
Executive Officer - कार्यपालक अधिकारी
Fair Copy - स्वच्छ प्रति
Fake Document – जाली दस्तावेज़
Financial Concurrence – वित्तीय सहमति
Financial Adviser - वित्त सलाहकार
Fitness Certificate - स्वस्थता प्रमाण पत्र
Forest Officer - वन अधिकारी
Forward - अग्रेषण
Further Action - आगे की कार्रवायी
Governor - राज्यपाल
Gazetted Officer – राजपत्रित अधिकारी
General Secretary – महा सचिव
General Manager - महा प्रबंधक
Grant - अनुदान
Grievance Committee – परिवाद समिति
Handicrafts - हस्त , शिल्प , दस्तकारी
Head Quarters - मुख्यालय
Health Officer - स्वास्थ्य अधिकारी
High Commissioner – उच्चायुक्त
Here with - एतद्सह
Honorary - अवैतनिक
Honorarium - मानदेय
Home Secretary - गृह सचिव
High Court - उच्च न्यायालय
Identification Card – पहचान पत्र
Implementation - कार्यान्वयन
Investigator - अन्वेषक
In charge - प्रभारी
Income -Tax Officer - आयकर अधिकारी
Joining Report - कार्यभार ग्रहण रिपोर्ट
Joint Secretary - संयुक्त सचिव
Jurisdiction - अधिकार क्षेत्र
Liaison - संपर्क
Livelihood - आवास जीविका
Lump Sum - एकमुश्त
Man hour - श्रम घंटा
Marine Engineer - नौ – इंजीनियर
Marketing Officer - ज्ञापन
Marketing Officer - पणन अधिकारी
Maintenance - पोषण
Minutes - कार्यवृत्त
Mortgage - बंधक
Municipal Corporation – नगर निगम
National Highways - राष्ट्रीय राजपथ
Negotiation - बातचित / सौदा
Notification - अधि सूचना
Office Order - कार्यालय

Office Supervisor - कार्यालय पर्यवेक्षक
Order - आदेश
Outstanding - बाकी
Overtime - समयोपरि
Particulars - ब्यौरा / विवरण
Part Time - अंश कालिक
Pass Port - पारपत्र
Pending - लंबित
Personal Assistant – निजी सहायक
Post Office - डाकघर
Postal Department - डाक विभाग
President - अध्यक्ष
Principal - प्रधानाचार्य
Producer - निर्माता
Psychiatrist - मनश्चिकित्सक
Revenue - राजस्व
Secretary - सचिव
Translator - अनुवादक
Treasurer - कोषाध्यक्ष
Vice-Chancellor - कुलपति
Zonal Officer - आंचलिक परिषद
Documents - दस्तावेज़
Emergency - आपात
Handicrafts - हस्तशिल्प , दस्तकारी
High Court - उच्च न्यायालय
Maintenance - पोषण
Municipal Corporation - नगर निगम
National Highways - राष्ट्रीय राजपथ
Notification - अधिसूचना
Occupation - उपजीविका धंधा
Parliament - संसद
Pension - नियुक्ति वेतन
Permission - अनुज्ञा
Public Service - लोक –सेवा
Receipt - पावती
Recommendation – सिफारिश
Recruitment - भर्ती
Registration - निबन्ध , पंजीयन
Representation - प्रतिनिधित्व
Savings - बचत
Staff - कर्मचारी - बृन्द
Voter - मतदाता
Training - प्रशिक्षण
Trade Union - कार्मिक-संघ
Traffic - यातायात
Governor - राज्यपाल
Minister - मंत्री
Secretary - सचिव
Vice-President - अध्यक्ष
Principal - प्राचार्य
Ministry of Low - विधि मंत्रालय
President - राष्ट्रपति
Chief Minister - मुख्य मंत्री
Examiner - परीक्षक
General Manager - महाप्रबंधक
Ministry of Health - स्वास्थ्य मंत्रालय
Planner - योजनाकार
Prime Minister - प्रधानमंत्री
Registrar - कुल सचिव
Ministry - मंत्रालय
Cabinet - मंत्रिमण्डल
Editional - संपादकीय
Incorporate - संकलन करना , सम्मिलित
Emergency - आपात / अचानकी

Governmental - शासनीय
Pedagogy - तालीम विद्या
Interim - अंतरिम
Secretariat - सचिवालय
University Grants Commission - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
Social Welfare Officer - समाज कल्याण अधिकारी
Unit Trust of India - भारतीय यूनिट ट्रस्ट

धातुकीय - Metallurgical
प्रोद्योगिकी - Technology
अभियांत्रिकी -Engineering
विकिरण - Radiation
अभियंता - Engineer आदि।

11.3 विभिन्न गद्यामशों का अनुवाद

1. हिन्दी से अंग्रेजी :

अनुवाद (Translation)

1.	मैं पढ़ता हूँ।	I read .
2.	वह दूध पिता है।	He drinks milk.
3.	राम एक गीत गाता है।	Ram sings a song.
4.	राम स्कूल जाता है।	Rama goes to school.
5.	मैं पाठ पढ़ता हूँ।	I read the lesson.
6.	गोपाल फल खाता है।	Gopal eats the fruit.
7.	वे स्कूल जाते हैं।	They go to school.
8.	वे पाठ पढ़ते हैं।	They read the lesson .
9.	मैं स्कूल जाता हूँ।	I go to the school.
10.	वे लड़कियाँ गाना गाती हैं।	Those girls are singing a song.
11.	मैं नहीं खाता।	I do not eat.
12.	तुम कहाँ जाते हो ?	Where do you go.
13.	क्या वह संगीत सीखती है ?	Does she learn music.
14.	तुम कालेज अब जाते हो ?	When do you go to college ?
15.	अभी आप कहाँ जाते हैं ?	Where do you go just now ?
16.	कितने बजे तुम जागते हो ?	At what O' clock do you get up?
17.	मोहन छोटा लड़का है।	Mohan is a little boy.

18.	कलकत्ता कहाँ है ?	Where is Calcutta.
19.	किताब अलमारी में है।	The book is in the almariah
20.	घडी दीवार पर है।	The clock is on the wall.
21.	यहाँ कौन रहते हैं ?	Who lives here?
22.	बिल्ली दूध पिता है।	The cat drinks milk
23.	वे तेज दौड़ते हैं।	They run fast.
24.	क्या तुम हिन्दी सीखते हो ?	Do you learn Hindi ?
25.	हम शाम को खेलते हैं।	We play in the evening.
26.	राम रोटी खाता है।	Ram eats bread.
27.	लड़के पाठ पढ़ते हैं ?	Boys read lessons.
28.	करीम दूध खरीदता है।	Karim buys milk.
29.	हफीज़ा कपड़े सीती है।	Hafeeza sews clothes.
30.	तुम कहाँ रहते हो ?	Where do you live ?
31.	क्या सीता गाती है ?	Does Sita sing ?
32.	सरला खूब गाती है।	Sarala sings very well.
33.	वे गाँव में रहते हैं।	They live in a village.
34.	मैं पढ़ रहा हूँ।	I am reading .
35.	वे खा रहे हैं।	They are eating.
36.	लड़के हिन्दी सीख रहे हैं।	The boys are learning Hind.
37.	ललिता स्कूल से आ रही है।	Lalita is coming from the school.
38.	राजू नहीं जा रहा है।	Raju is not going.
39.	क्या तुम बाजार जा रहे ?	Are you going to bazaar ?
40.	सीता और गीता एक गीत गा रही है।	Sita and Gita are singing a song.
41.	वह औरत तरकारियाँ बेच रही है।	The woman is selling vegetables.
42.	विद्यार्थी पाठ लिख रहे है।	The students are writing the lesson.
43.	गाय घास चर रही है।	The are grazing the grass.
44.	कृष्ण काफी पी रहा है।	Krishna is drinking coffee.
45.	हम स्कूल जा रहे हैं।	We are going to school.

46.	वे कम कराते हैं।	They are doing work.
47.	कृष्ण मैदान में दौड़ रहा है।	Krishna is running in the play ground
48.	तुम क्या देख रहे हो ?	What are you seeing ?
49.	वे आज नहीं खेल रहे हैं।	They are not playing today.
50.	वह नहीं रो रही है, वह हँस रही है।	She is not crying, she is laughing.

अंग्रेजी से हिन्दी में (**Five Sentences**)

51.	Radha came yesterday.	राधा कल आयी।
52.	They stayed in a hotel.	वे एक होटल में ठहरे।
53.	The sun has not risen yet.	सूरज अभी तक नहीं निकला।
54.	Yesterday I got up at 5 o' clock.	कल मैं पाँच बजे उठा।
55.	Why did she cry ?	वह क्यों रोयी ?
56.	Sita heard.	सीता ने सुना।
57.	They eat four fruits.	उन्होंने चार फल खाये।
58.	Ram has come here.	राम यहाँ आया।
59.	I have seen this picture.	मैं ने यह सिनेमा देखा।
60.	Yesterday was a holiday.	कल छुट्टी थी।
61.	Your children were not in the playground.	आपके बच्चे मैदान में नहीं थे।
62.	The teacher was not in the class.	अध्यापक कक्षा में नहीं थे।
63.	I was bathing in hot water.	मैं गरम पानी से नहाता था।
64.	Father was writing a letter.	पिताजी पत्र लिख रहे थे।
65.	I was bathing in hot water.	मैं गरम पानी से नहाता था।
66.	Father was writing a letter.	पिताजी पत्र लिख रहे थे।
67.	Aeroplanes were flying in the sky.	हवाई जहाज आकाश में उद रही थी।
68.	Boys were eating fruits.	बच्चे फल ला रहे थे।
69.	Have you seen Delhi.	क्या तुमने दिल्ली को देखा है।
70.	I have not read this book.	मैं ने यह किताब नहीं पढ़ी।
71.	My friend has gone to Calcutta.	मेरा मित्र कलकत्ता गया है।

72.	Akbar had ruled over India.	अक्बर ने भारत पर हुकूमत की थी।
73.	Ravi had come here yesterday.	रवि कल यहाँ आया था।
74.	Gandhiji had sent a letter to Rajaji.	गाँधी जी ने एक खत राजाजी को भेजा था।
75.	आई was at Ooty .	मैं ऊटी में था।
76.	Rahim was in the school .	रहीम स्कूल में था।
77.	They were always speaking in Hindi.	वे हमेशा हिन्दी में बोलते थे।
78.	I shall learn Hindi.	मैं हिन्दी सीखूंगी।
79.	We will see a picture.	हम सिनेमा देखेंगे।
80.	I will go Madras tomorrow	कल मद्रास जाऊँगा।
81.	They will sell fresh fruits.	वे ताजे फल बेचेंगे।
82.	They will drink milk.	बच्चा दूध पियेगा।
83.	Kamala will sing a song in the meeting.	कमला सभा में एक गीत गायेगी।
84.	My brother will come tomorrow.	मेरा भाई कल आयेगा।
85.	We will go to the village.	हम गाँव जाएँगे।
86.	We will always speak the truth.	हम हमेशा सच बोलेगे।
87.	I will read the novel.	मैं उपन्यास पढ़ूँगा।
88.	The cow will give more milk.	यह गाय ज्यादा दूध देगी।
89.	We shall go.	हम जाएँगे।
90.	Your friend will return from Delhi.	तुम्हारा मित्र दिल्ली से वापस आयेगा।
91.	When will you do this work ?	तुम यह काम कब करोगे ?
92.	When will she return from office?	वह दफ्तर से कब वापस आएगी ?
93.	Rajani will come with her friend.	रजनी अपने मित्र के साथ आयेगी।
94.	Will you sing today on Radio.	क्या तुम आज रेडियो पर गाओगे ?
95.	I will send your book tomorrow.	मैं तुम्हारी किताब कल भेजूँगा।
96.	I must read a lesson.	मुझे अब पाठ पढ़ना चाहिए।
97.	Children should play in the evening.	लड़कें शाम को खेलना चाहिये।
98.	I must learn Hindi.	मुझे हिन्दी सिखनी चाहिए।
99.	You have to do this work.	तुमको यह काम करना पड़ता है।

100. We have to give this book. हम को यह किताब देनी पड़ी।
101. All must love their country. सब को अपनी देश को प्यार करना चाहिए।
102. We must respect elders. हमें बड़ों का आदर करना चाहिए।
103. They have to bath in cold water. उनको ठंडे पानी से स्नान करना पड़ता है।
104. We must always speak the truth. हमें हमेशा सच बोलना चाहिए ।
105. He has gone to Vijayawada with his mother. वह अपनी मटा के साथ विजयवाड़ा गया है।
106. I read my lessons. मैं अपने पाठ पढ़ता हूँ।
107. They go to school with their friends. वे अपने मित्रों के साथ स्कूल जाते हैं।
108. They live in their village . वे अपने गाँव में रहते हैं।
109. Sita heard this news with her ears. सीता ने अपने कानों से यह समाचार सुना।
110. Ram has come here with his wife. राम अपनी पत्नी के साथ यहाँ आया।
111. I have seen this picture with my friends. मैं ने अपने मित्रों के साथ यह सिनेमा देखा।
112. My friend has gone to Ooty with his wife. मेरा दोस्त अपनी पत्नी के साथ ऊटी गया है
113. I Will go to Calcutta with my luggage. मैं अपने समान के साथ कलकत्ता जाऊँगा।
114. We come from Madras. हम मद्रास से आए।
115. Lalita is learning Hindi. ललिता हिन्दी सीख रही है।
116. Students have to learn Hindi . विद्यार्थियों को हिन्दी सीखनी पड़ती है।
117. We must respect elders. हमें बड़ों का आदर करना चाहिए।
118. She has gone to Delhi with her father. वह अपने पिता के साथ दिल्ली गई है।
119. The sun rises in the east. सूरज पूरब में उगती है। /सूरज पूरब से निकलता है।
120. Boys are singing. लड़के ग रहे हैं।
121. Sita, where are you going ? सीता , तुम कहाँ जा रही हो ?
122. Premchand has written Godaan. प्रेमचंद ने गिदन लिखा।
123. Her teeth are beautiful. उसके दाँत सुंदर हैं।
124. He came from the town. वह शहर से आया ?
125. Why do you write with red ink. तुम लाल स्याही से क्यों लिखते हो ?
126. The water of this tank is very dirty. इस तालाब का पानी बहुत गंदा है।
127. The boy runs very fast. यह लड़का बहुत तेज दौड़ता है।

128. This is quite correct. यह बिलकुल ठीक है।
129. I want to learn Hindi. मैं हिन्दी सीखना चाहता हूँ।
130. I can do this week. मैं यह काम कर सकता हूँ।
131. Sarala wants fruit. सरला फल चाहते हैं।
132. What do you want ? तुम क्या चाहते हो ?
133. Padmini wants a good watch . पद्मिनी एक अच्छी घड़ी चाहती है।
134. The milk is white in colour. दूध सफेद रंग का है।
135. They eat without salt. वे नमक के बिना खाते हैं।
136. What did Vimala tell you ? विमला ने तुम से क्या कहा ?
137. I have seen this film last month . मैं ने पिछले महीने यह सिनेमा देखा ?
138. Radha got up from her bed. राधा बिस्तर पर से जाग उठी।
139. Let everybody leave this place. हरेक को यह स्थान छोड़ना चाहिए।
140. Krishna can da any work which you say. तुम जो कहते , उसे कृष्णा कर सकता है।
141. Lion was killed by Raju. राजू से सिंह मारा गया।
142. I had gone to Hyderabad. मैं हैदराबाद गया था।
143. Narayan's school is near railway station. नारायण की पाठशाला रेलवे-स्टेशन के पास है।
144. Never utter lie./ Don't tell lies. कभी झूठ मत बोलो।
145. Her brother's name is Ramayya. उसके भाई का नाम रामय्या है।
146. After coming here, I will meet you again. यहाँ आने के बाद मैं तुम से फिर मिलूँगा।
147. Though he is young he can speak well. वह छोटा है, फिर भी अच्छी तरह बोल सकता है।
148. The boys are learning Hindi . वे लड़के हिन्दी सीख रहे हैं।
149. Sita is coming from this school. सीता इस स्कूल से आ रही है।
150. How is this fruit ? यह फल कैसा है ?

PARAGRAPH TYPE

ENGLISH TO HINDI

Translation into Hindi: (हिन्दी में अनुवाद कीजिए)

1. Kalidas is known as the Shakespeare of India. His name has been immortalized in the History of Sanskrit Literature. He was at the head of the celebrated nine gems which adorned the court of Vikramaditya. The poems and dramas of Kalidas have elicited unreserved praise not only from Indian scholars but even from European critics like Maxmollar. The age in which kalidas flourished and the place where was born are matters of dispute. But true genius is independent of time and place and although the century of Kalidasa is far remote, his fame is shining with undiminished grandeur even in our own days.

   ज) कालिदास भारत वर्ष के शेक्सपियर कहे जाते हैं। संस्कृत के इतिहास में उनका नाम अमर हो गया है। विक्रमादित्य के दरबार को जो प्रसिध्द नवरत्न शोभायमान कर रहे थे। उन में कालिदास अग्रगण्य थे। भारतीय विद्वानों ने ही नहीं प्रस्तुत यूरोप के मैक्समूलर प्रभृति कसमालोचकों ने भी मुक्तकंठ से कालिदास के काव्यों और नाटकों की प्रशंसा की। कालिदास किस युग में विद्यमान थे , उनका जन्म स्थान कहाँ था , ये विवादास्पदविषय हैं। किन्तु वास्तविक प्रतिभा को देश-काल की अपेक्षा नहीं रहती। यद्यपि कालिदास की सताब्दी को बीते बहुत दिन हो गये तथापि उनकी धवल किर्ति आज भी देदीप्यमान है।

2. Pratap sinha become the the Rana of Me wad after his father 's death, but he had no capital and without any means. His kindred and clans were dispirited by defeats after defeats, but they yet possessed their noble spirit. So he thought to recover chit toe. Then hostilities began between the Rana and Moghuls. Pratap was single handed, he had to oppose the combined efforts of the empire. Therefore he had to flee rock to rock and his family with the fruits of his native hills and bring up his son Amar Sinha, in the face of these difficulties he was undaunted and did not swerve from his fem resolution.

   ज) पिता की मौत के बाद प्रतापसिंह मेवाड़ के राणा बने। मगर न उनको राजधानी थी। न विभवा हर पर हर खाकर उनके सगे संबंधी उत्साह रहित हो गये थे। फिर भी उनका आत्मतेज नहीं गया। उन्होंने चितौर का पुनरुद्धार करने की ठानी। राणा और मुगलों में युद्ध शुरू हुआ। राणा अकेले थे और उन्हें सम्पूर्ण मुगल साम्राज्य की सम्मिलित शक्तियों का सामना करना था। इसलिए उन्हें एक पहाड़ से दूसरे पर भागना पड़ता था। अपने परिवार को पहाड़ी फल खिलाकर रखना पड़ता था और अपने पुत्र अमरसिंह को जंगली पशुओं के बीच में रखकर पालना पड़ता था। इन कठिनाइयों के होते हुए भी अटल रहे और अपने दृढ़ संकल्प से जरा भी विचलित न हुए।

3. Vidyasagar was a very generous and charitable man . From his earliest year he helped the poor and needy to the almost of his power . As a boy at school he often gave the little food to another boy who had none. If one of his fellows fell ill . Eswer would go to his house, sit by his bed and nurse him. His name became a household word in Bengal. Rich and poor, high and low, all loved him alike. No beggar ever asked him for relief in vain. He would never have a porter at his gate lest some poor man who wished to see him might be turned away.

   ज) विद्यासागर अत्यंत ही उदार और दानी थी। अपने बचपन से ही दिन-दुखियों की सहायता करने में कुछ उठा न रखा। जब अप पाठशाला के छात्र थे , तब आपके जलपान के लिए जो कुछ थोड़ी सामाग्री रहती थी उसमें से बहुधा कुछ लिकाल कर ऐसे विद्यार्थी को दे देते थे। जिसके पास कुछ नहीं रहता था। जब सहपाठियों में से कोई बीमार पड जाता , तब बालक ईश्वर उसके घर पर में फैल गया। क्या अमीर , क्या गरीब , क्या छोटे , क्या बड़े सब उनके साथ एक-सा प्रेम रखते थे ।कोई भिक्षुक उनके पास याचना कर विफल नहीं हुआ। उन्होंने अपने फाटक पर कभी दरबान नहीं रखा ।यह इसलिए कि कोई गरीब आदमी मिलना चाहे तो कभी निकाल न दिया जाय।

4. Ali Baba was a poor man. One day when he was cutting wood in the jungle he found a cave in the rocks. It was closed by a strong door. He tried too pen it. While he was doing this, a band of robbers come up. Ali Baba hid himself behind some bushes and watched. When the robbers chief came to the door, he said “open sea some”! The door opened. The robbers went inside. Presently, they came out again and the leader said “Shut sea some”! and the door closed. When the robbers gone. Ali Baba came out of the hiding place and went to the door and uttered the some magic words which the robber – chief has used. The door opened. Ali Baba went in and found the cave full of gold silver and jewels. Ali Baba filled the sack with the money, loaded it on his donkey and went home. He was now a rich man.

   शब्दार्थ : Band = सैन्य या गायों का समुदाय; Robber = लुटेरा , तस्कार; Jewel = मणि, रत्न ; Sack = बोरा, थैला।

   ज) अलीबाबा एक गरीब आदमी था। दिन वह जंगल में लकड़ियाँ काट रहा था। तब उसने पत्थरों के बीच एक गुफा देखी । गुफा पर मजबूत दरवाजा लगा था वह बन्द था। वह दरवाजा खोलने का प्रयत्न करने लगा।

तभी डाकुओं का गिरोह वहाँ आ पहुँचा। अलीबाबा झड़ियों के पीछे छिप गाया और वहाँ से उन्हें देखने लगा। तब लुटेरों का सरदार दरवाजे के पास आया तब उसने कहा "खुल जा ससेम" और दरवाजा खुल गया। लुटेरे गुफा के भीतर चले गये । शीघ्र ही वे फिर बाहर आए। तब सरदार ने कहा कि "बन्द हो जा ससेम" दरवाजा बन्द हो गया। जब लुटेरे वहाँ से चले गए तब अलीबाबा छिपे हुए स्थान से बाहर आया। वह गुफा के दरवाजे के पास गया। उसने उनहों जादुई शब्दों का उच्चारण किया जिनका प्रयोग लुटेरों का सरदार किया था। दरवाजा खुल गया। अलीबाबा गुफा के भीतर गया। उसने देखा कि सोने , चाँदी रत्नों से गुफा भरी थी। अलीबाबा ने धन से अपना बोरा भरा। उसे गदहे पर लाद कर घर ले गया। अब अमीर हो चुका था।

5. I (Mahatma Gandhi) am a servant of India and I am trying to serve India. I serve the whole of mankind. I had thought in my early life that the service of India was not against the service of mankind. As I advanced in year and it is hoped my intellect also developed. I have realized that my thinking was right. After about fifty years of public service of the world. This thinking of mine has become more stronger. This principle is very good. By acceptance of this principle the condition of world can improve and the mutual jealousy among the different nations of the world can be ended.

शब्दार्थ : Whole of mankind = समस्त मानव जाती ; Intellect = बुद्धि ; Public service = जन सेवा ; Principals =सिद्धान्त ; Mutual = पारस्परिक; Jealousy = ईर्ष्या।

ज) मैं (महात्मा गाँधी) हिंदुस्तान का सेवक हूँ। मैं हिंदुस्तान की सेवा करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। मैं सम्पूर्ण मानव जाति की सेवा करने के विरुद्ध नहीं हैं। जैसे-जैसे मेरी आयु में वृद्धि होती गई वैसे-वैसे मेरी बुद्धि भी विकसित होती गई मैं ने अनुभव किया कि मेरी विचार धारा ठीक थी। लगभग पचास वर्षों की जन-सेवा के बाद आज मैं कह सकता हूँ कि देश सेवा संसार की सेवा से किसी तरह कम नहीं है। मेरी यह धारणा और भी मजबूत हो गई है। मेरा यह सिद्धान्त अच्छा है। इस सिद्धान्त को स्वीकार कर लेने से विश्व की स्थिति सुधार सकती है। विश्व के विभिन्न देशों के बीच व्याप्त पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष का अंत हो सकता है।

6. Every one is agreed that poorer people should get more money and more help than they do get and that they should get this help as soon as it can possibly be given. Some of the poor say, "well share out the wealth now there is plenty of it about" , but of we share out the wealth now, no one will be able to run a business and soon most people will have to jobs and no wages. "well, let the state run the business. The state can run the post office and build worship ; why cannot it run every thing else? It could of

course. The only problem is , could the state run business better any pay higher wages than the people who are now running the business ? Some people say it could not.

शब्दार्थ : Everyone – प्रत्येक, सभ; People – निर्धन लोग; Share – अंग ,भाग,हिस्सा ; Wealth – ऐश्वर्य ,धन ; Wage – कम की मजदूरी,वेतन ; State राज्य; Run – चलना,संभालना ; Problem – समस्या , सवाल।

ज) प्रत्येक व्यक्ति यह मानता है कि गरीब लोगों को जितना धन और सहायता वस्तुतः मिलती है कि उससे कहीं ज्यादा उन्हें मिलनी चाहिए। यह सहायता जितनी जल्दी मिल सके वह उतना ही अच्छा है। कुछ गरीब लोगों का विचार है कि समाज के पास जो बहुत सी संपत्ति है उसका बँटवारा सब लोगों में हो। किन्तु ऐसा करने से कोई भी व्यसाय नहीं चल पायेगा। शीध्र ही इससे अधिकांश लोग बेरोजगार हो जाएंगे। कुछ लोगों का कहना है कि सरकार द्वारा ही सभी व्यवसाय चलाये जायें। वे कहते हैं कि जब सरकार डाकघर चला सकती है तथा जंगी दहाज बना सकती है तो अन्य कार्यों को क्यों नहीं संभाल सकती ? उत्तर में कहा जा सकता है कि सरकार निस्संदेह यह सब कुछ कर सकती। प्रश्न है क्या सरकार सभी व्यवसायों को बेहतर ढंग से चला सकती है और कर्मचारियों को पहले से अधिक वेतन न दे सकती है ? कुछ लोगों का कहना है कि वह ऐसा कर सकती है तथा अन्य लोगों का कहना है कि वह ऐसा नहीं कर सकती।

7. The period to twenty years of political freedom is not very long in the life of a country but today we are in that age of atomic progress when distances of time and space are coming to an end . Crossing the limit of the earth man is going to take and adventurous jump to reach the moon. Nations like Russia and America putting aside their traditional political opposition are ready to co-operate in the fields of science and outer space. At such a time the indulgence in violent activities leading to the tarnishing of national glory by our country man who regard the whole earth as one family is an indication of the fact that our country is not fit for political governance.

शब्दार्थ : Political freedom = राजनीतिक स्वाधीनता ; Atomic progress = आणविक प्रगति ; अद्वेन्तुरौस = साहसिक ; Traditional = परंपरागत ; Space = अन्तरिक्ष ; Violent activities = हिंसात्मक कार्य ; तरनीश = मलिन करना , धुंधला होना ; National glory = राष्ट्रीय गौरव ; Indication = लक्षण चिन्ह ; Governance = अधिकार , शासन।

ज) बीस वर्ष की राजनीतिक स्वाधीनता का काल किसी देश के जीवन में बहुत अधिक नहीं होता। किन्तु आज हम आणविक प्रगति के उस युग में हैं स्थान और समय की दूरियाँ धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही हैं। भूमि की

परिधि को पार कर आज का मनुष्य चंद्रमा तक पहुँचने के लिए एक साहसिक छलांग लगाने जा रहा है। अपने परंपरागत राजनैतिक विरोधों को छोड़कर रूस एवं अमेरिका जैसे देश विज्ञान एवं अन्तरिक्ष के क्षेत्र में सहयोग करने के लिए तत्पर हो रहे हैं। ऐसे समय में वसुधैव कुटुंबकम में विश्वास रखानेवाले हमारे देशवासियों का हिंसात्मक उपद्रवों में भाग लेकर राष्ट्रीय गौरव को क्षति पहुँचाना यह सूचित करता है कि हमारा राष्ट्र राजनैतिक स्वशासन के अयोग्य है।

8. Discipline is very essential in every walk of life. Discipline is the soul of military life. Without discipline an army is no better than a Grow. It is the first thing needed for maintaining the harmony and concord in a family. It is equally necessary in maintaining peace and harmonious relation in society or in a nation. Without discipline we are no better than brutal. If there is no discipline in gods creation, chaotic conditions will penile and this universe would come to topsy-turvy down in no tome. "Learn to obey if you wish to command: There is much truth in this proverb . Childhood is the part of a man's life when it can easily be molded. If a student forms disciplined habits in his school career, it will have a good effect upon future life.

शब्दार्थ : Discipline = अनुशासन ; Essential = आवश्यक ; Soul = शरीरात्मा , प्राण ; Crowd = भीड़ ; Harmony = शांति, एकता ; Concord = मेल , सौहाई ; Brute = मूर्ख , पशु ; Chaotic conditions = अस्त व्यस्त परिस्थितियाँ ; Universe = विश्व,ब्रह्माण्ड ; Obey = आज्ञा पालन करना ,कहना मानना ; Command = आज्ञा देना ; Proverb = कहावत ; Mould = ढालना ; Career = जीवन वृत्ति ; Future life = भावी जीवन ; topsy-turvy = विपर्यस्त ,उल्टा-पुल्टा, अव्यवस्थित।

ज) जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन की महत्ता आवश्यक है। अनुशासन वस्तुतः सैनिक जीवन का प्राण-तत्व है। अनुशासन के अभाव में सेना मात्र भीड़ बनकर रह जाएगी। परिवार में एकता, मेल शांति और सौहाद्र बनाये रखने के लिए अनुशासन सबसे पहले आवश्यकता है। समाज या देश में शांति और एकता बनाए रखने के लिए अनुशासन उतना ही आवश्यक है। अनुशासन के अभाव में हम और पशुओं में कोई अंतर नहीं रह जाएगा। अनुशासन के अभाव ईश्वर की सृष्टि भी छिन्न-भिन्न ही जाएगी। शिघ्र ही यह ब्रह्माण्ड भी रसातल को चला जाएगा। यदि आज्ञा देना हो तो पहले आज्ञा का पालन करना सीखो। इस कहावत में काफी सत्यांश है। बचपन मानव जीवन की वह अवस्था है। जिसमें हम मनुष्य को जैसे चाहे वैसा बना सकते है अर्थात उसके जीवन को मनचाहा मोड दे सकते हैं। यदि छात्र अपने जीवन में अनुशासन को लाने का प्रयास करेगा तो इससे उसके भावी जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

9. Our character is very much affected by the company are keep. The mind of youth is very susceptible, is capable of quickly receiving impressions. Hence a youth quickly imbibes the disposition of his companions. Boys are spoiled in youth if they keep company with bad boys and improve if their companions are of good disposition and character. In choice of friends and ploy motes boys cannot be depended upon for their judge meant is not ripe and they cannot resist the temptation which bad companions put in their way . The paths of vice are full of charms for the youthful minds and boys like such companions as lead then to these paths.

ज) हम लोग जो संगति रखते हैं उसका प्रभाव हमारे चरित्र पर बहुत कुछ पड़ता है। युवक का चित्त बहुत कोमल होता है , उसकी अनुकरण प्रवृत्ति बहुत प्रबल होती है। इसी से युवा पुरुष बहुत शीघ्र अपने सगियों के स्वभाव को ग्रहण कर लेता है। दुष्ट लड़कों की संगति में पड जाने के कारण बालक बचपन में ही खराब हो जाते है। और सभी अच्छे होते तो उन्नति प्राप्त कराते। मित्रों और खेल के साथियों को चुनने में लड़कों पर नहीं रहा जा सकता क्यों कि उनका विचार पक्का नहीं होता और और बुरे साथी जो प्रलोभन उनके मार्ग में रखते हैं। उनका वे संवरण नहीं कर सकते। पाप के मार्ग तरुण बलकों को बड़े ही मनोहर प्रतीत होते हैं और बालक ऐसी ही साथियों को पसंद करते हैं जो उन्हें इन मार्गों पर ले जाते हैं।

10. It is true that a sense of duty may at times render it necessary for you to do that which is displeasing to your companions. But if it seem that you have a kind spirit, that you are above selfishness that you are willing to make sacrifices of for our convenience to promote the happiness if your associates, you will never be in want of friend. You must not regard it as your misfortune, but as your fault, when others do not love you . It is not wealth, that will give your friends. Your friends. Your heart must glow with kindness if you would attract to yourself the esteem and affection of those by whom you are surrounded.

ज) यह बात सती है कि कभी-कभी कर्तव्य-ज्ञान के अनुरोध से तुम को ऐसा करना आवश्यक हो जाता है। जो तुम्हारे साथियों को अप्रिय जान पड़े ; मगर यदि यह देखा जाय कि तुम्हारा मन दयालु है तुम स्वार्थ से परे हो और तुम्हें अपने सहचरों के सुख साधन के लिए अपने व्यक्तिगत सुविधा को देने कि इच्छा रहती है तब तुम्हें मित्रों का कभी अभाव नहीं होगा। यदि दूसरे लोग तुम्हारे साथ प्रेम नहीं रखते तो तुमको इसे अपना दुर्भाग्य नहीं वरन अपना अपराध समझना चाहिए। मित्रों का मिलना ने सौंदर्य से होता है न धन से। यदि तुम अपने चारों

ओर के प्रतिनिवेशों का स्नेह भाजन और श्रद्धापात्र बनना चाहते हो तो तुम्हारा अंतः करण दया के भाव से ओतप्रोत रहना चाहिए।

11.6 अनुवादक एवं अनुवाद के गुण या विशेषताएँ :

(1) स्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में सावधानीपूर्वक प्रस्तुत करने की क्षमता होनी चाहिए।

(2) अच्छे अनुवाद के लिए अभिव्यक्ति सुबोध, प्रांजल और प्रवाहमयी होती है।

(3) अनुवाद मूलत: भावानुवाद होना चाहिए, शाब्दिक रूपान्तरण भर नहीं।

(4) अच्छे अनुवाद में मूल रचना की भाषा-शैली सुरक्षित रहना चाहिए।

(5) अनुवाद की भाषा स्रोत भाषा की प्रकृति के अनुसार होनी चाहिए। अत: अनुवादक को स्रोत भाषा की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित होना चाहिए।

(6) अच्छे अनुवाद की भाषा सुबोध होनी चाहिए जिससे कि आसानी से समझ में आ सके।

(7) अनुवाद की प्रक्रिया में स्रोत भाषा की प्रतीक-व्यवस्था को लक्ष्य भाषा के अनुरूप परिवर्तित करना होता है। इसलिए स्रोत भाषा के समानार्थी प्रतीक ही लक्ष्य भाषा में खोजना चाहिए।

(8) अनुवाद जीवन्त हो तथा उसकी भाषा में प्रवाहमयता हो।

(9) शब्दों को स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में रूपान्तरित करते समय उसके लिंग, वचन और व्याकरणिक रूपों की संगति का ध्यान रखना आवश्यक है।

(10) एक अच्छा अनुवादक वह होता है जिसे स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा पर पूरा अधिकार हो, दोनों भाषाओं की संरचनात्मक बनावट, पदबंध - प्रयोग, वाक्य गठन आदि को अच्छी तरह समझता हो।

****

- डॉ.ए. सरला देवी

MODEL QUESTION PAPER

MA. HINDI DEGREE EXAMINATION

THIRD SEMESTER

PAPER – IV - TRANSLATION

अनुवाद विज्ञान

Time: Three hours **Maximum:70 Marks**

किन्ही **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (5x14=70)

1. (a) अनुवाद की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

अथवा

(b) अनुवाद की परिभाषा देते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

2. (a) मुहावरों तथा लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याओं का सोदाहरण परिचय दीजिए।

अथवा

(b) साहित्यक अनुवाद की समस्याओं को सोदाहरण समझाइए।

3. (a) काव्यानुवाद की समस्याओं की समीक्षा कीजिए।

अथवा

(b) वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।

4. (a) अनुवाद और भाषा विज्ञान के अंतः संबन्ध को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

(b) कार्यालयीन साहित्य के अनुवाद की समस्याओं की समीक्षा कीजिए।

5. (a) किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए।

1. अनुवाद – पुनरीक्षण और मूल्यांकन।

2. श्रेष्ठ अनुवादक के लक्षण।

3. अनुवाद की शैलियाँ।

4. अनुवाद क्या है ? शिल्प , कला या विज्ञान।

अथवा

(b) किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए।

1. पारिभाषिक शब्दावली के अनुवाद की समस्याएँ।

2. पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के प्रमुख सिद्धांत।

3. अनुवाद और वाक्य विज्ञान।

4. अनुवाद के प्रकार।